ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

ब्राह्मीयम्

अन्ताराष्ट्रिय-वैदिक-सम्मेलनम्

SOUVENIR
INTERNATIONAL VEDIC CONFERENCE



वेदानां विश्वस्मै योगदानम्

CONTRIBUTION OF THE VEDAS TO THE WORLD

गुरुकुल काङ्गडी विश्वविद्यालय, हरिद्वारम्

GURUKUL KANGRI VISHVAVIDYALAYA, HARIDWAR

सामवेद

२७, २८, २९, ३० जनवरी २००५
January 27-28-29-30. 2005

अथर्ववेद

मुख्य-संरक्षकः
कर्नल प्रो० स्वतन्त्र कुमारः
(कुलपतिः)

संरक्षकः
प्रो० वेदप्रकाशः शास्त्री
(आचार्योपकुलपति.)

निदेशकः
प्रो० भारतभूषण विद्यालंकार
(अध्यक्षः प्राच्य-विद्या संकाय, वेद-विभागस्य च)

प्रशासनिक-समन्वयक.
प्रो० ए०के० चोपडा
(कुलसचिवः)

वित्तीय-समन्वयकः
डॉ० सत्येन्द्रपाल सिहः
(वित्ताधिकारी)

भारत के उप-राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE PRESIDENT OF INDIA
नई दिल्ली/NEW DELHI - 110011
TEL 23016422 / 23016344 FAX 23012645



MESSAGE

Hon'ble Vice-President of India, Shri Bhairon Singh Shekhawat is glad to know that Gurukul Kangri Vishvavidyalaya, Haridwar is organising an international Vedic Conference on "Contribution of the Vedas to the World" during January 27-30, 2005

The Vice-President of India wishes the Conference all success

NEW DELHI

2ND December, 2004

(DR K B THAKUR)

अर्जुन सिंह
ARJUN SINGH

मानव संसाधन विकास मंत्री
भारत
नई दिल्ली-११० ००१
MINISTER OF
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
INDIA
NEW DELHI 110 001

MESSAGE

I am pleased to know that the Gurukul Kangri University Haridwar is organizing an International Conference on the Contribution of Vedas to the World' from the 27th to 30th January 2005

The most ancient eminent and richest repositories of Indian Literature and the foundation of our Culture the Vedas have left an indelible impact on various aspects of knowledge the development of human civilization and world thought The concept of globalization was recognised in the philosophy of Vasudhaiva Kutumbakam and it is because of the Vedas that our Culture is known as Vishvawara and our country Vishwaguru The need of the hour is to work out harmonious synthesis of the physical and spiritual which can enrich each other and flourish together The conference will I hope, go a long way in underscoring the importance of the Vedas in the modern age and spreading the message of its continued relevance to mankind

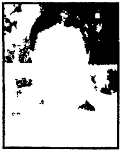
I convey my best wishes for the success of the conference being conducted in the Holy City of Haridwar

(ARJUN SINGH)

सुदर्शन शर्मा
कुलाधिपति
SUDARSHAN SHARMA
CHANCELLOR

ओ३म्

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार – 249404 (भारत)
GURUKUL KANGRI VISHWAVIDYALAYA
HARDWAR-249 404 (INDIA)



क्रमाक / Ref No
दिनाक / Date 26/11/2004

शुभ कामना सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गुरुकुल काङ्गडी विश्वविद्यालय हरिद्वार एक अन्ताराष्ट्रिय वैदिक सम्मेलन का आयोजन कर रहा है, जिसमे विश्ववस्तरीय वैदिक विद्वानो को विविध विषयो पर विचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा, इसमे ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र मे नूतन एव विस्तृत आयाम उद्घाटित होगे। वस्तुत विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि ने इस क्षेत्र मे अपने प्रतिमानो एव आदर्शो से जनमानस को गहनता से प्रभावित किया है। इसी दिशा मे यह सम्मेलन मील का पत्थर सिद्ध होगा। जिसका श्रेय निश्चित रुप से गुरुकुल काङ्गडी विश्वविद्यालय एव आयोजको को मिलेगा।

गुरुकुल की पवित्र भूमि पर पवित्र उद्देश्य को लेकर आयोजित होने वाली कान्फ्रेस एव इस अवसर पर निकलने वाली स्मारिका व कार्यवाही प्रकाशन की सर्वविध सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभाशसा व कामनाए है।

Sudershan

सुदर्शन शर्मा
कुलाधिपति

406 एल मॉडल टाऊन जालन्धर सिटी (पजाब) फोन न० 0181 277567
406 L Model Town, Jalandhar City (Punjab) Ph No 0181-277567

प्रो0 स्वतत्र कुमार
कुलपति
PROF SWATANTRA KUMAR
VICE CHANCELLOR

ओ३म्

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार – 249 404 (भारत)
GURUKULA KANGRI VISHWAVIDYALAYA
HARDWAR 249 404 (INDIA)

क्रमाक/*Ref No*

दिनाक/*Dated*



सुस्वागतम् – अभिनन्दनम्

अज्ञानान्धकार मे भटक रही, निजगौरव को विस्मृत भारतीय जनता को जगा कर विश्व मे सम्मान पूर्ण स्थान दिलाने के लिए युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य कर उद्घोष किया था 'वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है, वेद का पढना, पढाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' अपने आचार्य के इस विश्व कल्याणकारी सन्देश को जन – जन तक पहुँचाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने मार्च 1902 मे हरिद्वार मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। यहा प्रारम्भ से ज्ञान विज्ञान की उच्च शिक्षा प्रदान की जाती रही किन्तु इस शिक्षा सस्थान का सर्वोच्च उद्देश्य था – 'वेद विद्या का देश – देशान्तर एव द्वीप िपान्तर मे व्यापक प्रचार ग्मार कर ससार को चारित्रिक शिक्षा के साथ – साथ प्राचीन विज्ञान से अवगत कराना।

इसी पवित्र भावना से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का वेद विभाग 27 से 30 जन0 2005 तक अन्ताराष्ट्रिय वेदिक सम्मेलन आयोजित कर रहा है। इस सम्मेलन मे पधारने वाले देश – विदेश के विभिन्न विषयो के मूर्धन्य मनीषियो, युवा विद्वानो और भावी भारत की आशाभूत शोधार्थी प्रतिभागियो का मै गुरुकुल की पावन भूमि मे हार्दिक स्वागत एव अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पुण्य भूमि से वेद, सस्कृति और प्रेम का सन्देश लेकर आप जायेगे। आप इस सम्मेलन मे अपने विद्वत्तापूर्ण शोध – लेखो से विश्व को कुछ ऐसा सन्देश दे सकेगे, जिससे भौतिकता की चका चौध मे आकण्ठ डूबा हुआ ससार पुन वेद ज्ञान से स्वय को धन्य कर सकेगा।

हम यह पूर्ण प्रयास कर रहे है कि शीत – ऋतु मे भी आपका हरिद्वार वास सुखप्रद रहे। पुनरपि यदि कोई कमी रह जाये तो आप हमे क्षमा करते हुए कष्ट को विस्मृत कर देगे, ऐसी प्रार्थना है।

आयोजन की सफलता के लिए सचिव एव सयोजक डॉ0 रूप किशोर शास्त्री अनथक परिश्रम कर रहे हैं, मै उनको हार्दिक बधाई देता हूँ और आप सबका पुन हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

प्रो0 स्वतन्त्र कुमार
कुलपति

नान्दी वाक्

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने पुण्य सलिला गगा के पावनतट पर कागडी नामक ग्राम मे आज से 103 वर्ष पूर्व 4 मार्च 1902 मे गुरुकुल के रूप मे राष्ट्र निर्माण की एक ऐसी सुदृढ आधार शिला रखी थी जो आगे चलकर न केवल भारतीय शिक्षा पद्धति के भव्य प्रासाद का आधार बनी अपितु स्वातन्त्र्य-समर के केन्द्र बिन्दु और विश्ववारा कालजयी वैदिक (भारतीय) सस्कृति की पाषिका के रुप म विश्वविख्यात हुई।

पराधीनता के भयावह कालखण्ड मे राष्ट्र के गौरव और सम्मान को नष्ट करने वाली लार्ड मैकाले की दूषित शिक्षा पद्धति के स्थान पर राष्ट्रीय स्वाभिमान एव अस्मिता को जगान वाली प्राचीन एव अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान के साथ चरित्र और देशभक्ति का पाठ पढाने वाली गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति ने इस शिक्षा सस्थान के माध्यम से प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा को पुनरुज्जीवित किया।

सौ वर्षो का इस विश्वविद्यालय का गौरवशाली इतिहास है। वेद, दर्शन, सस्कृत इतिहास, आयुर्वेद, याग, गणित, रसायन, भौतिकी आदि विषयो के सहस्रो, विद्वान् स्नातक इस सस्था ने राष्ट्र को दिये। गुरुकुल के चरित्रवान, विद्वान्, स्नातको, उपाध्याया एव आचार्यों ने अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्था का हिन्दी, सस्कृत एव आग्ल भाषा मे निर्माण कर स्वस्थ चिन्तन धारा प्रवाहित की।

वेद दर्शन एव सस्कृत की उच्च शिक्षा के साथ इन प्राचीनतम ज्ञान धाराओ का विज्ञान क साथ जाडने का अभिनव प्रयोग गुरुकुल विश्वविद्यालय मे प्रभावशाली रूप मे चल रहा है। यही कारण है कि वेदिक अभियान्त्रिकी, वैदिक गणित, वैदिक रसायन, वैदिक भौतिकी, वैदिक पर्यावरण विज्ञान, वैदिक सूक्ष्म विज्ञान, वैदिक प्रबन्धन का एक-एक प्रश्नपत्र स्नातकोत्तर कक्षाओ के पाठ्यक्रम मे निर्धारित किया गया है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी प0 जवाहरलाल नेहरू, डॉ0 राजेन्द्रप्रसाद, डॉ0 राधाकृष्णन् भारतरत्न इन्दिरा गान्धी, ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मेक्डोनल्ड, भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफार्ड, जैसे विश्वविख्यात राष्ट्र नेताओ ने इस पुण्यभूमि मे पधारकर स्वय को कृतकृत्य माना। वही इस दश का प्रसिद्ध शिक्षा सस्थान दूसरी शताब्दी मे प्रवेश कर चुका है और विद्या की पुण्यस्थली के रूप मे सारस्वत पुत्रा का तीर्थस्थान बना हुआ है।

विज्ञान के वर्तमान युग मे नेत्रदीपक भौतिक उपलब्धियो एव द्रुतगामी सचार माध्यमो के हाते हुए भी मानव जीवन मे आत्मिक शान्ति एव सन्ताष घटता जा रहा है। प्रेम, करूणा, दया विश्वबन्धुत्व की भावना आदि जीवन मूल्यो का क्षरण हो रहा है, कालजयी वैदिक सस्कृति क्षीण हो रही है। मानवता कराह रही है। ऐसी विषय परिस्थिति मे वैदिक ज्ञान ही विश्व को कल्याण और आनन्द का मार्ग दिखा सकता है, अत वैदिक ज्ञान से धरती को आलोकित करना इस सस्थान का मुख्य उद्देश्य है।

आधुनिक ज्ञान, विज्ञान के साथ ससार के प्राचीनतम ज्ञान कोष वेद की उच्च शिक्षा प्रदान करने का श्रेय इस सस्थान को प्राप्त है। विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति **प्रो० स्वतन्त्र कुमार** के मार्ग

दर्शन मे गुरुकुल सफलता के नये-नये आयाम और कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। माननीय कुलपति जी की शिव सकल्पना का विराट् रूप अन्ताराष्टिय वैदिक सम्मेलन के रूप मे 27, 28, 29, 30, जन0 2005 को साकार होने जा रहा है सभवत. पहली बार देश, विदेश के वैदिक विद्वान् इतनी बडीसख्या मे हाड-कपा देने वाली ठण्ड मे उत्तराञ्चल ही नही अपितु भारत की सास्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक नगरी मे उत्साह, प्रेम एव श्रद्धा पूर्वक पधार रहे हैं। ऐसे सैकडो चिकित्सक, अभियन्ता, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, राजनेता, अधिवक्ता और आध्यात्मिक व्यक्तित्व इस विराट् सारस्वत अनुष्ठान मे सम्मिलित हो रहे है, जो भौतिक ज्ञान विज्ञान मे परम नदीष्ण होते हुए वैदिक ज्ञान गङ्गा मे भी अवगाहन का आनन्द प्राप्त करेगे।

प्रारम्भिक दिनो मे हम 300-400 प्रति निधियो के आगमन की सभावना कर रहे थे, किन्तु हम आश्चर्य मिश्रित हर्ष अनुभव कर रहे है कि अब यह सख्या 800 को पार कर चुकी है। सब ओर से स्नह, शुभकामना और सफलता के सन्देश प्राप्त हो रहे हैं। माननीय कुलपति प्रो0 स्वतन्त्रकुमार जी, आचार्य एव उपकुलपति प्रो0 वेदप्रकाश जी, कुलसचिव डॉ0 ए0 के0 चोपडा, वित्ताधिकारी डॉ0 एस0 पी0 सिह का उन्मुक्त सहयोग, एव मार्ग दर्शन आयोजको का उत्साह वर्धन कर रहा है। इस महायज्ञ के यजमान के रूप मे वेद विभाग के डॉ0 रूपकिशोर शास्त्री जोकि सम्मेलन के सचिव एव सयोजक है अहर्निश, भोजन, विश्राम, परिवार की चिन्ता न करते हुए आयोजन की सफलता मे जुटे हुए हैं।

अनेक विश्वविद्यालयो के कुलपति एव सस्कृत, वेद, दर्शन के वरेण्य विद्वान् अपनी गरिमामयी उपस्थिति से अनुष्ठान को आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

देश, विदेश के विद्वानो ने सम्मेलन मे प्रस्तुत किये जाने वाले विद्वत्ता पूर्ण शोध लेख हमारे पास भेज है। हम शोध-पत्रो का साराश अत्यन्त सक्षेप मै इस स्मारिका मे प्रकाशित कर रहे हैं। विद्वान लेखक हमे क्षमा करेगे क्योंकि हम उनके साराश को भी अविकल रुप मे प्रकाशित नहीं कर पा रहे है। भविष्य मे पृथक्-पृथक् विषयो को लेकर आकर्षक ग्रन्थ रूप मे प्रकाशित करने का हमारा दृढ सकल्प है।

डॉ0 रूपकिशोर शास्त्री, सचिव एव सयोजक एव उनकी टीम जिस उत्साह एव समर्पण की भावना से कार्य कर रही है, उनके प्रति हार्दिक प्रशसा, शुभाशसा अर्पित करते हुए शोध-पत्रो की साराश सकलना प्रतिनिधियो के कर कमलो मे समर्पित की जा रही है। इसमे जहाँ जा त्रुटिया रह गई हो वे हमारी हैं, विबुधगण उदारता पूर्वक हमे क्षमा करेगे इस विश्वास के साथ।

डॉ० महावीर
प्रोफेसर संस्कृत विभाग

विषय-सूची

वैदिकयुगीना शासनव्यवस्था

डॉ0 रूपकिशोर शास्त्री उपाचार्य
वेद-विभाग गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

प्राचीनभारतस्य वैदिकयुगीनाया. शासनव्यस्थाया विकासस्य स्वरूपस्य चाध्ययन विविधै स्रोतोभि विधीयते प्रतिपाद्यते च। विविधविद्याना विज्ञानाना च मूलस्रोतांसि वेदेष्वेव संनिहितानि वर्तन्ते। अत. शासनव्यवस्थाया आदर्शस्वरूप विकासस्य च व्यापक विवरणमपि वैदिकसंहितासु स्वाभाविकरूपेण विद्यत एव। वैदिकसहिताना नैरन्तर्येण विरचित साहित्य ब्राह्मणग्रन्था , आरण्यकानि, उपनिषद , पुराणानि, सूत्रग्रन्था , स्मृतय इत्यादय , तत्तद्युगस्य शासनतन्त्रस्य विस्तृत व्यापक च परिचयमभिव्यञ्जयन्ति। वर्तमानकाले यादृशी शासनव्यवस्था लोके कालेदेशानुसारिणी प्रचलिता वर्तते, तत्र परिष्कारे जनजनहितसम्पादने वैदिकसाहित्यस्याध्ययनमेवानिवार्यरूपेण लोकहितसाधकम्।

वैदिकसंहितासु, वैदिकसाहित्ये उत्तरवर्तिनि च वैदिकसाहित्ये शासनव्यवस्थाया यादृशमतिविकसित सुप्रतिष्ठित च स्वरूपमभिव्यञ्जितमवलोक्यते, तन्निश्चयरूपेण विस्मयकरम्। विभिन्नयुगेषु स्थानसमयानुरूप जनपदाना राष्ट्राणा सीमानामपेक्षया यानि परिवर्तनानि सजातानि शासनपद्धतय परिवर्तिता प्रशासननियमेषु, विभागेषु, पदेषु विकासा बभूवु तत्र वैदिकसाहित्यमवश्यमेव नियामकमवगन्तव्यम्।

वैदिकयुगे प्रशासनस्य एकैकानि ग्रामसमूह जनस्वरूप चोपलक्ष्य सघटितानि बभूवु। नैकेषा ग्रामाणा समूहा सम्मिलित्य जना , जनपदा विशो वाऽभिधीयन्ते स्म, राजनीतिकदृष्ट्या ह्येते जनपदा राष्ट्राणि ज्ञेयानि। बहुसख्यका अप्येते आकारेण जनसख्यया च स्वल्पाकाराण्येव समवस्थितानि। वैदिकसाहित्ये नैकेषा विशा जनपदाना राष्ट्राणा वा अभिधान-स्थिति-परिचया समुपलभ्यन्ते। तथाप्यैतस्य तथ्यस्य विस्तरपरिचयप्रदानस्य नायमवसर. तथापि वैदिकयुगस्य प्रशासनसस्थाना शोधदृष्ट्या परिचयोऽस्मिन् लेखे विधीयते इति।

वैदिकसाहित्ये राजनयिक-प्राशासनिक-संस्थानां स्वरूपम्

आचार्य डॉ0 रामानुग्रह शर्मा
न्यू मधुकम चौक राँची (झारखड)

आर्यजनाना श्रुतिनिर्धारितशासनव्यस्थैव जनकल्याणकारिणी। इय च वैदिकी राज्यशासनव्यवस्था-वेद- संहिता-ब्राह्मणारण्यक ग्रन्थाना दृष्टया प्रतिपादिता। वैदिकी राज्य शासन व्यवस्था सम्मत ऋषीणा घोषणा-**स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्य पारमेष्ठ्यं राज्य**

महाराज्यमाधिपत्यमय समन्तपर्यायी स्यात्। सार्वभौम सर्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति।

अत्र मन्त्रे ऋषिजनाना तपसा तदानीन्तनाना राज्य शासनाना गणना विद्यते। स्पष्टतयाधोलिखिता सख्या 1 साम्राज्यम् 2 भौज्यम् 3 स्वराज्यम् 4 वैराज्यम् 5 पारमेष्ठ्य राज्यम् 6 राज्यम् 7 महाराज्यम् 8 आधिपत्यम्। एतेषामतिरिक्त जनराज्य-गणराज्य-राज्याना च वर्णन वेदे प्राप्यते। एतेषा राज्याना स्वरूपस्य विवेचन पश्चाद् भविष्यति प्रथम मुख्यघोषणोपरि विचार ।

'पृथिव्यै समुद्रपर्यान्ताया एकराडिति' आसमुद्र यावती पृथ्वी तस्योपरि एकैव आर्य राजा भवेत्। सम्पूर्णा सर्वसहा वैदिकशासनेन शासिता स्यादिति। अखिलार्यपरिवारो भूमण्डलोपरि भवेत्। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** स्यात् **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** ऋगवेदस्यास्य वाक्यस्यायमेव स्पष्टार्थ । उदाहरणार्थम् एकस्य स्वराज्यस्य विवेचनम्-**यतेमहि स्वराज्ये॥**

अथर्ववेदे राष्ट्रसभायाः सिद्धान्ताः

डॉ विनोद कुमार झा
प्रवक्ता--सस्कृत, दर्शन एव वैदिक अध्ययन विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ, जिला टोक, राजस्थान

वैदिक-साहित्ये वेदे च राष्ट्रसभा। इति प्राशासनिक-सस्थाया अनेकेषु स्थानेषु चर्चा कृता वर्त्तते, किन्तु मया पत्रेऽस्मिन् अथर्ववेदस्य राष्ट्रसभाया अनुमति इति शीर्षक-सम्बन्धिन चतुरो मन्त्रान् आधीरकृत्य चर्चा विहिता विद्यते। तत्र प्रथम-मन्त्रे राज्य-शासनस्य समीचीनतया सचालनाय कथ ग्रामे ग्रामसभाया , राष्ट्रे राष्ट्रिय-महासभाया आवश्यकता वर्त्तते। ग्रामसभासदस्याना चयन कथ स्यात्, तस्या कि कार्यं वर्त्तते। तस्या अधिकारे कि किम् आगच्छति, कि कि न आगच्छति। अत्र कि कारण वर्त्तते। एवमेव राष्ट्रीयमहासभासदस्याना चयन कथ स्यात्। तस्या के के अधिकारा सन्ति, कानि कर्त्तव्यानि वर्त्तन्ते। राष्ट्रीयमहासभाया सदस्याना योग्यता-निर्धारणम् राजान प्रति प्रजा च प्रति राष्ट्रियमहासभाया मदस्याना कि कर्त्तव्य विद्यते। राज्ञ तद्गतान् सदस्यान् प्रति कि कर्त्तव्य वर्त्तते। उभयो मध्ये अर्थात् राज्ञ. सदस्याना च मध्ये कीदृश व्यवहारो भवेत् कीदृश. सम्बन्धो भवेत्। केन शब्देन सम्बोधन कर्त्तव्यमिति सर्वमुक्तमस्ति।

अथर्ववेदे शासनप्रबन्धोऽर्थव्यवस्था च

डॉ0 राजेश्वरमिश्र
कुरुक्षेत्र-विश्वविद्यालय·

अथर्वकालिके राजतन्त्रे सुष्ठु शासनाय विविधाना परिषदा सङ्गठनेनापि शासनप्रबन्धस्य विशिष्टप्रणाल्या· सूत्रपात कृत. यया शासने सामान्यजनाना सहभागित्व भवति स्म। ता सस्था - सभा, समिति , विदथमिति 'नाम्ना प्रसिद्धा । एता सभा समितयश्च शासनप्रबन्धे साक्षात् सलग्ना आसन्। ग्रामीणजना. सभाया. प्रतिनिधयो भवन्ति स्म। एषा सभा समितेराधीना आसीत् (7 12 1-2) या राष्ट्रस्य महती सभा भवति स्म। तस्या च सभाया सर्वेषा वर्गाणा प्रतिनिधित्व भवति स्म। अस्या प्रमुख कार्यं शासकस्य निर्वाचनमासीत् (3 42, 6 87 1, 6 88 3)। समग्रराष्ट्रस्य शासनकार्याणि समितेरनुज्ञयैव प्रवर्तन्ते स्म (18 11 26)। विदथमेका धार्मिकसभा आसीत् यस्या नाना धार्मिकानुष्ठानानि निर्णीयन्ते स्म (1 13 4, 1 32 1)।

अथर्वकालिकी अर्थव्यवस्थाऽपि सुदृढासीत्। यद्यपि तेषामार्थिकव्यवस्था प्रामुख्येन कृषिकर्मणि पशुपालने चाश्रिता, परमथर्ववेदे-प्रातिपण. (3 15 4), प्रपणम् (3 15 6), वणिक् (3 15 1), प्रकी , क्रय. (4 7 6), विक्रय (3 15 4), अपक्रीत (8 7 11), इत्यादीना व्यापारपरकपारिभाषिकपदाना प्रयोगेणानेकविधाना व्यापाराणा सूचनाऽप्युपलभ्यते। अन्यायेनाधर्मेण वार्जितोऽर्थ कदापि सुखदो न भवतीत्यथर्ववेदे प्रतिपादितार्थव्यवस्थाया वैशिष्ट्यम्। एतस्मात् कारणादथर्वाङ्गिरा ऋषिर्जनानेवमुपदिशति-**एता एना व्याकर खिले गा विष्ठिता इव। रमन्ता पुण्या लक्ष्मीर्या पापीयास्ता अनीनशम्।** (7 115 4) एवमथर्ववेदे उपलब्धसाक्ष्येन तस्मिन् सुदूरे कालेऽपि शासनतन्त्रस्यार्थव्यवस्थायाश्च सुदृढाधारभूमिर्दरीदृश्यते।

भारतीय धर्मशास्त्रीय विधिक चिन्तन

आलोक व्यास

व्यास भवन, चादपोल बाजार, जयपुर।

भारतीय धर्मशास्त्रीय चितन का आधारभूत सप्रत्यय 'धर्म' रहा है तथा अन्य सम्प्रत्ययो यथा-आचार, व्यवहार (विधि) आदि की मूल्यवत्ता इनकी धर्म से अनुकूलता मे ही देखी गई है। इसीलिए धर्मशास्त्रकार व्यवहार या विधि का अंतिम ध्येय धर्म की स्थापना व अधर्म के निराकरण को मानते हैं। 'दण्ड' व्यवहार के इसी साध्य का सबसे प्रभावी साधन है। दण्ड का तात्पर्य नियामकता से है अर्थात् मनुष्यो को अधर्म से धर्म की ओर नियमित करना। वास्तव मे धर्मशास्त्रकार दण्ड का औचित्य इसी मे देखते हैं कि दण्ड के भय से ही मनुष्य मे धर्मानुसार प्रवृत्ति होती है। उल्लेखनीय है कि शास्त्रकार इस प्रश्न पर विचार नहीं करते हैं कि मनुष्य को किन साधनो द्वारा धर्म मे स्थित रखना उचित होगा? उनके लिए सबसे प्रधान विचार यह है कि मनुष्य धर्म मे स्थित रहे चाहे साधन

कोई भी हो। सभवत यही कारण है कि हम धर्मशास्त्रो मे कही-कहीं अत्यधिक कठोर दण्ड का प्रावधान पाते हैं। किन्तु साथ ही, विधिक दण्ड के समानान्तर प्रायश्चित के रूप मे हम, दण्ड का सुधारात्मक विचार जो कि अपराधी की आत्मशुद्धि से सम्बन्धित है, भी पाते हैं।

वैदिक काल में दण्डविधि का विकास

डॉ ए वी कौर
प्रवक्ता- इतिहास विभाग परिसर
चौ0 चरण सिह विश्वविद्यालय, मेरठ।

आपराधिक-विधि न्याय-व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण अग है। प्राचीन भारत में विधि के एक अनिवार्य अग के रूप में अपराधविधि का उद्भव व विकास हुआ। वैदिक काल से ही हम नैतिकता के मूलभूत आधारों को विद्यमान पाते हैं। विभिन्न वैदिक ऋचाओं में पाप-पुण्य की विस्तृत व्याख्याएँ की गयी हैं। इन व्याख्याओ मे 'पाप' और 'अपराध' परस्पर सम्मिश्रित हैं। अपराधो की सूची मे ऋत, दैवी इच्छा, सदाचार व वेदविरुद्ध तथा विरोधी (तत्कालीन) समाजो के आचार व्यवहार आदि की गणना की गयी है। वैदिक साहित्य मे अपराध के प्रत्युत्तर मे पीडित पक्ष को क्षतिपूर्ति प्रदान किए जाने के प्रमाण भी प्राप्त होते हैं।

वेदों में प्रतिपादित संविधान की अवधारणा: आधुनिक सदर्भ मे

डॉ0 भारतेन्दु द्विवेदी, प्रवक्ता-सस्कृत
डॉ0 देवेन्द्र नारायण सिह, प्रवक्ता-राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर, उ0प्र0

सृष्टि की रचना के बाद समाज मे सुव्यवस्थित बनाये रखने के लिए कुछ विधान और नियम बनाए गए तथा इनके अनुपालन को समान रूप से अनिवार्य बनाया गया। इसके क्रमबद्ध विकास का वर्णन वेदो मे तथा ब्राह्मण ग्रन्थो में प्राप्त होता है। इसके व्यवस्थित रूप को देश के संविधान की सज्ञा दी गयी। आज प्रत्येक देश मे सुव्यवस्थित रूप से शासन चलाने के लिये अपना-अपना संविधान है। इसी संविधान के प्रावधानो के अनुरूप शासन का सचालन होता है। वैदिक युग मे ऋषियो ने समाज मे व्यवस्था स्थापित करने के लिये विधानो की रचना की थी। वेदो और ब्राह्मण ग्रन्थो में इन विधानो का उल्लेख प्राप्त होता है। वेदों में संविधान शब्द का यद्यपि स्पष्ट उल्लेख नहीं है। तथापि ये विधान शासन सचालन और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक थे। इनका उल्लघन दण्डनीय था। वैदिक युग में ये विधान कठोर थे। प्रस्तुत शोध पत्र मे संविधान-निर्माण,

संविधान का वर्गीकरण तथा वैदिक संविधान की विशेषताओ का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोधपत्र जहाँ पाश्चात्य विद्वानों की भ्रान्ति का खण्डन करता है वही वेदो के महत्त्व को स्थापित करता है।

वेद और राजस्व

डॉ रामकृष्ण आर्य
(वरुणमुनि वानप्रस्थ)
विज्ञान नगर कोटा, राजस्थान।

राज्य एक स्वाभाविक और अत्यावश्यक व्यावहारिक व्यवस्था है। इसलिए वेद मे इसका अति विस्तार से विवेचन मिलता है। राज्य की व्यवस्था गतिशील रखने के लिए धन की आवश्यकता और राज्य के कोष को धन से भरा रखने के लिए एक व्यवस्था की आवश्यकता होती है। जिसे वेद मे कर, भाग या बलि की व्यवस्था का नाम दिया गया है। यह एक कारण था कि प्रारम्भ मे राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र समानार्थक शब्द थे और अर्थशास्त्र के अन्तर्गत ही राजनीतिशास्त्र का अध्ययन होता था। धीरे-धीरे जब अर्थशास्त्र एक स्वतन्त्र शास्त्र बन गया तो राज्य की कोष व्यवस्था का अध्ययन, कर-व्यवस्था या बजट (राज्य का आय-व्यय) के अध्ययन के रूप मे अर्थशास्त्र के अन्तर्गत होने लगा। जिसे अर्थशास्त्र का एक अग या मूल तत्त्व मानकर "राजस्व" नाम से सम्बोधित किया गया। आज राजस्व का क्षेत्र अति व्यापक हो गया है। उसकी पूरी व्यापकता के मद्देनजर वेद मे उसके बीज या प्रमाण नहीं मिल सकते। पर जितने भी मिलते हैं वे राजस्व की व्याख्या करने मे पर्याप्त हैं। जिनका हमने इस शोध आलेख मे संक्षिप्त वर्णन किया है।

वेदों में आर्थिक जीवन का परिदृश्य

डॉ राजीव शर्मा
प्रवक्ता- अर्थशास्त्र
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

प्रस्तुत शोध पत्र मे वेदो मे कृषि, सिचाई, पशुपालन, शिल्प एव उद्योग धन्धो, वाणिज्य एव व्यापार, ऋण एव ब्याज आदि आर्थिक परिस्थितियो का वर्णन किया जा रहा है। वैदिक काल मे अर्थव्यवस्था मे प्रथम स्थान पशुचारण का था। ऋग्वैदिक काल के अधिकाश भाग मे अर्थव्यवस्था मुख्यत. पशुचारण पर ही आधारित रही और कृषि का अत्यन्त गौण स्थान रहा। ऋग्वेद मे पशुओ की तुलना में खेती या कृषि के उल्लेखों की सख्या बहुत कम है परन्तु ऋग्वैदिक काल के अन्तिम

भाग मे कृषि के महत्त्व मे वृद्धि हुई थी और आर्यों ने कृषि प्रणाली में कुछ प्रगति भी की थी। अथर्ववेद एव तैत्तिरीय सँहिता मे कृषि शब्द बहुत बार आया है उत्तर वैदिक ग्रन्थों के कई सन्दर्भ कृषि के महत्त्व मे हुई वृद्धि का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। वैदिक काल मे सिचाई के लिए अधिकाशत वर्षा पर ही निर्भर करना पडता था। ऋग्वेद के विवरणानुसार वृत्र' नामक दैत्य वृष्टि रोकता था। और इन्द्र' पानी बरसाते थे। अथर्ववेद के एक मन्त्र में वर्षा करने के लिए पर्जन्य' देवता से प्रार्थना की गई है। उत्तर वैदिक काल मे कृषि का विकास एव प्रसार होने से उस पर आधारित शिल्पों और उद्योगो मे उन्नति हुई और अनेक नए व्यवसायो का जन्म हुआ। वैदिक ग्रन्थो मे वणिज' (बनिया या व्यापारी), वाणिज' (वणिजपुत्र), वाणिज्या' (वाणिज्य-व्यापार) एव श्रेष्ठिन' शब्दों का कई बार प्रयोग किया गया है। अथर्ववेद में वस्त्र, दुर्श (एक प्रकार का ऊनी कपडा), चादर (पवस्त) एव खालों (अजिन) को व्यापारिक धातुए बताया गया है अथर्ववेद के एक सन्दर्भ में एक साहसिक एव महत्त्वाकाक्षी व्यापारी का विवरण है वैदिक काल में विभिन्न प्रयोजनो के लिए ऋण लिए जाते थे। अथर्ववेद मे उधार लिए गए अनाज को वापस लौटाने का उल्लेख है।

वैदिक ऋषियों का आर्थिक चिन्तन

डॉ0 गणेशदत्त शर्मा, पूर्व प्राचार्य
लाजपतराय पोस्ट ग्रेजुएट कालिज, साहिबाबाद
10/98, सेक्टर-3, रोजन्द्रनगर, साहिबाबाद

वैदिक चिन्तन अपने में परिपूर्ण है। वेद मे मानवोपयोगी किसी भी वस्तु की उपेक्षा नहीं की गयी है। धर्म के साथ-साथ वहाँ अर्थ को भी पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। वेदमन्त्रों में धनसम्पत्ति की प्रार्थनाए की गई हैं- (क) **दा नो अग्ने धिया रयि सुवीर स्वपत्य सहस्व प्रशस्तम्।** (ऋक् 7-1-5) (ख) **वय स्याम पतयो रयीणाम्** (यजु 10-2) (ग) **स नो वसून्याभर।** (यजु 15-30) अर्थ के विषय मे वैदिक प्रार्थनाए अधिकाश रूप से बहुवचन मे हैं, जिससे वैदिक चिन्तन की उदारता के साथ-साथ वेद मे निहित सार्वजनिक व सामुदायिक समृद्धि के सिद्धान्त को भी पुष्टि होती है।

वाणिज्य में वेदों का योगदान एवं उसकी प्रासंगिकता

डॉ हरिप्रकाश शर्मा, डॉ श्रीमती विजेश्वरी शर्मा
अध्यक्ष-सस्कृत-विभाग, अध्यक्ष-वाणिज्य विभाग
गुरु नानक खालसा कॉलेज, दयानन्द महिला महाविद्यालय

यमुनानगर (हरियाणा) कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

धनार्जन के उत्तम साधनों मे वाणिज्य का विशेष स्थान है। वाणिज्य व्यवहार कैसा हो? व्यापार का स्वरूप किस प्रकार का होना चाहिए? व्यापार के विरोधी तत्त्व कौन से हो सकते हैं? इन तथ्यो का उल्लेख वेद में उपलब्ध है। **धन, वणिक्, धनदा, प्रपण , विक्रय., प्रतिपण , फली, शुन, चरित, उत्थितं, भूय** आदि व्यापार विषयक शब्दो का उल्लेख अथर्ववेद के मन्त्रों में मिलता है। **सातघ्न , देव., परिपन्थिन्, मृग , अराति , कनीय** आदि व्यापार-विरोधी शब्द भी मन्त्रो मे वर्णित हैं, इनके कारण व्यापार व्यवहार मे हानि होती है। जहाँ खाद्यसामग्री उपलब्ध हो वहीं पर व्यापारी को धनार्जन का व्यवहार करना चाहिए। व्यापार की दृष्टि से बतलाया गया है कि ज्ञानपूर्वक अर्थात् अच्छी प्रकार सोच विचार कर व्यक्ति व्यवहार करे। **'तस्मिन् रुचिं आ दधातु'** मन्त्रो से स्पष्ट है कि व्यापारी जिस कार्य को करे उसमे रुचि स्थिर होनी चाहिए। इस विषय से अभिप्राय व्यक्ति चचलता रहित होकर पूरी रुचि से व्यापार-व्यवहार करे। इन सभी तथ्यो का आधुनिक सदर्भ मे विस्तृत वर्णन शोध-पत्र मे प्रस्तुत किया गया है।

वेद में नक्षत्र और ग्रह-उत्पति-विज्ञान

डॉ विष्णुकान्त वर्मा

बिलासपुर (छत्तीसगढ)

वेद ज्ञान के आगार है। ज्ञान के अन्तर्गत जो कुछ आता है, वेद मे विद्यमान है, चाहे विषय चेतना सबन्धी हो या सृष्टि उत्पत्ति विज्ञान का। ऋग्वेद मडल 10 सूक्त 72 मे नक्षत्र और ग्रह की उत्पत्ति का विज्ञान है। सूक्त की प्रथम ऋचा मे यह प्रतिज्ञा है कि देवो के जन्म का रहस्य विशिष्ट प्रकार से कहा जायगा। सूक्त के पूर्वार्ध मे जिन देवो की उत्पत्ति का विज्ञान है वे हैं नक्षत्र और ग्रह।

ब्रह्मणस्पतिरेता स कर्मार इवाधमत् (कारणमव्यक्तंनित्य सदसदात्मकम्) असत् सत् वाची मूलतत्त्व का अग्निदाह किया तब अग्निदाह किया तब भूर्जज्ञे उत्तानपदो, भुव आशा अजायन्त प्रकृति के स्थिर भू भाग से उद्गतस्थानो विस्तारो ऐसे सूक्ष्म से स्थूल अवस्था को विस्तार पाने वाले रासायनिक द्रव्य और भुव भाग से (आशा) कामना को धारण करने वाले (बायोलॉजीकल) वनस्पति प्राणवर्ग उत्पन्न हुए। आदिकाल मे मूल आद्या शक्ति अदिति से (अदितेर्दक्षो अजायत) सृष्टि उत्पादक सामर्थ्य दक्ष प्रादुर्भूत हुई। आगामी ऋचाओ मे पृथिवी की उत्पत्ति के माध्यम से ग्रहो की उत्पत्ति का विज्ञान है।

वेदों मे ज्योतिर्विज्ञान

डॉ. भगवानदास शास्त्री
प्रवक्ता- धर्मशास्त्र वैदिक कर्मकाण्ड एव ज्योतिष विभाग
गु का विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

प्राचीन आचार्यों ने ज्योतिष शास्त्र को सिद्धान्त, संहिता और होरा इन तीन स्कन्धों के रूप मे विभाजित किया है। सिद्धान्त स्कन्ध में ग्रह गणित विज्ञान का वर्णन, संहिता स्कन्ध में भूगर्भ विज्ञान का वर्णन और होरा स्कन्ध मे षोडश सस्कारो मानव जीवन से सम्बन्धित घटनाओ के विज्ञान का वर्णन किया गया है। लोगों की धारणा है कि ज्योतिष विज्ञान, विज्ञान नही है बल्कि यह एक अतीत काल से चला आ रहा एक अधविश्वास है, लेकिन अन्य विज्ञानो की तरह ज्योतिष भी गणित पर आधारित विज्ञान है। गणित के सिद्धान्त और नियम ही नक्षत्र विज्ञान अकशास्त्र हैं। किसी विषय के सम्बन्ध में व्यवस्थित ज्ञान का भडार जिसको परखा भी जा सके, उसको विज्ञान कहा जाता है, जितने भी विज्ञान हैं उनका सीधा सादा आधार यह है कि उनसे सम्बन्धित तथ्यों को बडे श्रम से एक करके जो भी जानकारी प्राप्त होती है। उसके प्रयोग करने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान हो या अन्य कोई भी विज्ञान यही प्रक्रिया प्रत्येक विज्ञान मे अपनान के बाद ही नियम ओर सिद्धान्त प्रतिपादित किए जाते हैं, ठीक यही स्थिति ज्योतिष विज्ञान की है। वेदो में सृष्टि का काल निर्धारण सूर्यादि, ग्रह, नक्षत्र, तारे महीनों के नाम, ऋतु, अयन, अधिकमास, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण इन सभी का वर्णन आता है। इन सभी का प्रभाव मानव जीवन पर ही नहीं परन्तु पशु-पक्षी, वनस्पतियो पर भी पडता है। आयुर्वेद का कथन है कि ज्योतिष एक विज्ञान है। इसमें नक्षत्रो की गति आदि का ज्ञान किया जाता है। ग्रह और नक्षत्रों को देखकर उनके स्थान, गति आदि का अध्ययन विज्ञान है। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शनम्। -यजुर्वेद- 30-10

गणितीय शून्य और वेद

डॉ0 ए0 बी0 चन्द्रमौलि
रीडर, स्नातकोत्तर गणित अध्ययन एव शोध विभाग
एम0 एस0 कालेज, सहारनपुर, उ0प्र0)

शून्य' शब्द अशून्य' के साथ ऋग्वेदीय खिलसूक्त मे आया है, जिसका अर्थ है 'खाली'। बाद के वाङ्मय में भी इस शब्द का इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है। अमरकोश में **'शून्यं तु वशिक तुच्छरित्येके'** द्वारा शून्य का यही अर्थ दिया गया है। 200 ई0 पू0 में पिगल ने अपने छन्दसूत्र में मात्राओं की गणना के सदर्भ में, शून्य शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु, उन्होने **'द्वि शून्ये'** मे दो

और शून्य का प्रयोग किन्ही विशेष अर्थों में किया है। ऋग्वेद में शून्य के समीप 'खे' शब्द भी आता है। जिसका अर्थ है छिद्र'।

'शून्य' 'शून' शब्द की भाववाचक सज्ञा है। 'शून' का अर्थ है 'अत्यन्त सूजा हुआ' या बढा हुआ। अमरकोश में शून्य मे पर्यायवाची वाशिक', तुच्छ तथा रिक्तक शब्द दिये हैं। इनमे से शून्यार्थक 'तुच्छ्य' और 'रिक्त' शब्द ऋग्वेद में भी मिलते हैं। 'वशी' शब्द श्रौतसूत्र में भी इसी अर्थ मे मिलता है। ऋग्वेदीय खिलसूत्र तथा ब्राहाणग्रन्थो में 'शून्य' शब्द 'रिक्त' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ससार की अन्य भाषाओ में इन्ही चारो शब्दों से मिलते-जुलते 'जीरो' सिर्फ आदि शब्द पाये जाते है।

'शून्य' एक सख्याविशेष है और बिन्दु उसका चिह्न। भिन्न-भिन्न देशों के विभिन्न कालखण्डो मे 'शून्य' का आकार (चिह्न) भिन्न-भिन्न प्रकार का रहा है। भारत मे 8वीं शती तक 'शून्य' का लघुवृत्त के रूप मे जो रूप विकसित हुआ, वही आज का इसका सर्वमान्य चिह्न बन गया है।

वेदों में गणित विद्या

डॉ0 वन्दना वागीश्वरी

जम्मू व कश्मीर

भारतीय सस्कृति के मूलभूत आधार वेद हैं। वेदों मे अक्षराम्भ से लेकर समस्त ज्ञान-विज्ञान मूलरूप में विद्यमान है। मनुष्य का समस्त क्रिया-कलाप, व्यवहार, गणना मूलक है, अत· उसके जीवन मे गणित विद्या की उपयोगिता नि सन्दिग्ध है। वेदाङ्गों मे ज्योतिष की उपमा नेत्र से दी गई है और ज्योतिष मे भी गणित को मूर्धाभिषिक्त स्थान पर माना गया है-**यथा शिखा मयूराणां नागाना मणयो यथा। तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणा गणितं मूर्ध्नि वर्तते॥** अर्थात् जिस प्रकार मयूरों की शिखाये (कलगी) और सर्पो की मणियाँ उनके मस्तक पर विराजमान होती हैं, उसी प्रकार वेदाङ्गशास्त्रों मे गणित शिरोमणि है। इस अद्वितीय गणितविद्या का उत्स भी हमें वेदो से ही प्राप्त होता है। गणितविद्या के तीन भेद - अङ्कगणित, बीजगणित एव रेखागणित का वर्णन वेदो मे मिलता है।

विश्व-गणित पर वैदिक भाषा का प्रभावः एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

डॉ0 सुद्युम्न आचार्य,

रीडर-स्नातकोत्तर सस्कृत-विभाग,

मु0म0टाउन कालेज, बलिया (उ0प्र0)

विश्व मे प्रचलित गणितशास्त्र के शब्दो, उनकी व्युत्पत्तियों आदि पर वैदिक भाषा ने अमिट छाप अंकित की है। वैदिक सख्या शब्दो की भारत तथा यूरोप की भाषाओं से तुलनीयता को विश्व के विद्वान् स्वीकार करते हैं। वैदिक ध्वनियो का सरक्षण- इन भाषाओ ने वैदिक भाषा से प्रेरणा प्राप्त करके अपनी-अपनी सुविधानुसार इसकी ध्वनियो का सरक्षण किया है। परिणामत• इसके अनेक रूप प्रचलित हो गए। इन शब्दो की तुलना से ध्वनि-सरक्षण की विधा का परिज्ञान होता है। उदाहरणत सस्कृत मे सप्तन्, नवन्, दशन् आदि सख्याओं के नकारयुक्त रूप नही, अपितु उसके प्रभावजनित विकार उपलब्ध हैं। पाणिनि ने षट् सज्ञा का विधान करते हुए इन्हे स्पष्टत नकारान्त प्रातिपदिक माना है। इसी प्रकार सस्कृत के पूरणार्थक शब्दों मे कही म, कही थ प्रत्यय लगता है। पर यूरोपीय भाषाओ मे सर्वत्र थ का प्रयोग है। वैदिक भाषा के पञ्चथ , सप्तथ जैसे शब्दो से प्रेरणा प्राप्त करके कि यूरोपीय भाषाओ ने थ पर सस्कृत ने म की सुरक्षा की है।

अंकाक्षर तथा वेद

डॉ0 कँवल किशोर शर्मा

प्रवक्ता, आई0 टी0 ई0,

कादराबाद गाजियाबाद (उ0प्र0)

ऋग्वेद के कुछ मन्त्रो से सकेत मिलता है कि वैदिक काल मे अको को लिखने की कोई-न-कोई पद्धति अवश्य थी। अथर्ववेद का एक मन्त्र सकेत करता है कि वैदिक काल मे लिखने की विधि (लिपि) का आविष्कार हो चुका था। चार हजार ईसा पूर्व के मोहनजोदडो तथा हडप्पा की खुदाई मे मिले तथा कथित सिन्धु सभ्यता के सिक्को तथा अन्य अवशेषो पर 1 से 13 तक अक खडी रेखाओ द्वारा सूचित किये गए हैं। भारतेतर ससार की प्राचीन सात अकपद्धतियाँ आज कालबाह्य हो चुकी हैं। प्राचीन भारत में प्रचलित पाँच अक-पद्धतियों मे से आज केवल स्थानमान-पद्धति (दाशमिक प्रणाली) सर्वमान्य हुई है। इस अकपद्धति में 1 से 9 तक सख्याओ के लिए नौ अकसकेत माने हुए हैं, जिनके साथ दसवाँ सकेत शून्य (0) का है। पहली शताब्दी ई0 पू0 के बाद शून्य के आकार का प्रयोग विकसित हुआ, जो आज ससार मे सर्वत्र प्रयुक्त हो रहा है। आज यह पता नहीं कि भारत की स्थानमान-पद्धति को किस व्यक्तिविशेष या व्यक्तियो ने खोजा। इसी प्रकार, किसी निश्चित स्थान या आश्रम का नाम बताना आज सम्भव नहीं है। प्रमाणो से सिद्ध होता है कि इस पद्धति का आविष्कार उत्तरी भारत मे दूसरी शताब्दी ई0 पू0 मे हुआ था। आठवीं शताब्दी ईसवी तक यह पद्धति भारत मे भलीभाँति प्रचलित हो गई थी। स्थानमान-अकपद्धति का ज्ञान भारत से अरब, मिस्र, यूनान और स्पेन होता हुआ यूरोप तथा ससार के अन्य देशो मे फैला।

अंक संज्ञाओं का आदि स्रोतः वेद

रजना सूरी

मेरठ

ससार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद मे अक सज्ञाओं के लिए जो नाम मिलते हैं वे हैं - एक, द्वि, त्रि, चतुर, पञ्च, षट्, सप्त, अष्ट, नव आदि। इन सज्ञाओं की सहायता से किसी भी सख्या (अक) का उच्चारण किया जा सकता हैं। वेद द्वारा दी गई अकसज्ञाएँ, देश-काल के अनुसार परिवर्तित होकर, ससार की विभिन्न भाषाओं मे विद्यमान हैं। हमारी आज की अकसज्ञाएँ वेदो में प्रयुक्त अक सज्ञाओ से ही बनी हैं। सस्कृत भाषा में जिस क्रम का अनुसरण किया जाता है वही आज ससार की विभिन्न भाषाओ में प्रयुक्त हो रहा है। जब कोई सख्या केवल दो अको की होती है तब इकाई वाला अक पहले बोला जाता है और दहाई वाला अक उसके बाद। जब कोई सख्या अधिक अको की होती है तब बडे मान वाले अक पहले कहे जाते हैं और छोटे मान वाले अक क्रम से उनके बाद। ससार की सभी भाषाओ मे प्रयुक्त अकसज्ञाओ को बोलने में सस्कृत के इसी नियम का पालन हो रहा हैं अथर्ववेद में ऋषि गोपथ ने 1 से 9 तक का 10 से 90 तक के साथ सम्बन्ध बतलाया है। ऋषि मेघातिथि ने सर्वप्रथम 10 की घात के रूप मे गिनती की सकल्पना दी। यद्यपि यह अवधारणा ऋग्वेद मे बीजरूप मे विद्यमान थी। तथापि इसका विकसितरूप यजुर्वेद मे ही देखने को मिलता है। यजुर्वेद में मेघातिथि ने दस खरब तक की अकसज्ञाओं के नाम दिये हैं, जिनको तैत्तिरीय संहिता मे उद्धृत किया गया है।

वैदिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक वैश्वीकरण एवम् बौद्धिक सम्पदा

भावना स्वामी

शोध छात्रा, सस्कृत-विभाग,

बीकानेर विश्वविद्यालय, बीकानेर, (राजस्थान)

विश्व व्यापार सघ की स्थापना एव विभिन्न अतार्राष्ट्रीय समझौतो के परिणामस्वरूप आधुनिक वैश्वीकरण एव उदारीकरण की नीतियाँ मुक्त व्यापार एव अर्थ-व्यवस्था को जन्म दे रही हैं। इसके व्यापक प्रभाव विकसित और विकासशील राष्ट्रो की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था पर पड रहे हैं। वैदिक सस्कृति मे अनादिकाल से **'वसुधैव कुटुम्बकम्', कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', आत्मवत् सर्वभूतेषु0', सर्वे भवन्तु सुखिन '** आदि अनेक सूत्र हैं, जिनमे वैश्वीकरण की जडे निहित हैं। इन सूत्रों में समग्र मानवजाति को एक इकाई माना है तथा मानवहित चिन्तन (आर्थिक

अथवा सामाजिक) मे देशकाल की परिधि को स्वीकार नहीं किया है। दूसरे शब्दो मे वैदिक वैश्वीकरण की अवधारणा में मानवीय सवेदना के सन्दर्भ मे क्षेत्रीयता का अथवा अन्य किसी सकीर्णता का बोध नहीं होता। इसके विपरीत पाश्चात्य सस्कृति से उत्पन्न वैश्वीकरण प्रथम दृष्ट्या एव समसामयिक रूप से उचित जान पडता है, लेकिन वास्तव मे आर्थिक उदारीकरण के नाम पर विकसित राष्ट्र अप्रत्यक्ष रूप से विकासशील राष्ट्रो की सप्रभुता, आर्थिक विकास एव सामाजिक व्यवस्था के क्षेत्र में वर्चस्व, प्रभुत्व एव अवरोध स्थापित कर रहे हैं। अत विकासशील राष्ट्रो के परिप्रेक्ष्य मे आधुनिक वैश्वीकरण के दूरगामी परिणाम अवश्यम्भावी हैं।

आथर्वणज्योतिषे नक्षत्रजातकम्

प्रो बृजेशकुमारशुक्ल
सस्कृत-प्राकृत-भाषाविभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय , लखनऊ,

ज्योतिषशास्त्रे होराशाखाया. प्रारम्भो वैदिककालेऽभूत्। तैत्तिरीयसंहिताया नक्षत्रकल्पस्य वर्णनमुपलभ्यते। तत. परमेकस्मिन्नाथर्वणज्योतिषे नामधेये ग्रन्थे नक्षत्राणा विवरण सुष्ठु प्रत्तम्। तत्र सूक्ष्मतयाऽवलोकनेन नक्षत्रजातकस्य बीजोपन्यासो निश्चप्रचमेव प्राप्यते। आथर्वणज्योतिषे नक्षत्राणा वर्गीकरण नवधा विहितम्। सप्तविशतिर्नक्षत्राणा त्रिक विभाजन विधाय नववर्गास्तत्र कृता.। क्रमेण त्रिकाणा नामानि जन्मसम्पद्विपत्क्षेमप्रत्वरसाधकनैधनमित्रपरममैत्राख्यानि वर्तन्ते-

परवर्त्तिज्योतिषग्रन्थेषु नक्षत्राणामेतेषामेतद्वर्गीकरण तारारूपत्वेन दरीदृश्यते। परन्त्वत्राथर्वणज्योतिषे नक्षत्राणामेतस्माद् वर्गीकरणाज्जातकशास्त्रस्य विकासोऽभूदिति स्वीकर्तुं शक्य तत्र नक्षत्रपीडनफलस्योक्तत्वात्। एष नक्षत्रवर्गो यदा ग्रहोल्कावज्रघातै कम्पैर्दाहैश्च पीडितो भवति तदा किं भयरूप फल भवतीति सर्वमाथर्वणज्योतिषे लिखितम्। अत एव होराशास्त्रस्य जातकगोचरयोरुभयोरपि विकास आथर्वणज्योतिषकालादङ्गीकर्तुं शक्यते। सङ्क्षेपतया मानवाना भाविफलनिरूपणाय ज्योतिषस्य होराशाखा वैदिकवाङ्मये प्राप्यत एव, न ग्रीकयवनदेशेभ्य आगतेति सुनिश्चित भवति। एतत्सर्व शोधपत्रेऽस्मिन् सम्यक्रूपेण चर्चितम्।

रुद्र के वैदिक स्वरूप की समीचीनता एवं व्यापकता-एक ज्योतिषीय दृष्टिकोण

डॉ0 भारत भूषण मिश्र
वरिष्ठ व्याख्याता ज्यो0
रा स स वि वि रणवीर परिसर, जम्मू

वैदिक देवताओं मे रुद्र को महनीय स्थान प्राप्त है। उग्र रूपधारी देव यदि रुद्र कहलाते हैं, तो वे ही रुद्र साधन करने के कारण शिव कहलाते हैं, जा रुद्र हैं, वही शिव हैं। एकादशवे रुद्रावतार मे हनुमान् जी की अर्चना एव उपासना वर्तमान मे अधिकाश मनुष्यो द्वारा अपनायी जाती है। ज्योतिष शास्त्रीय विवरणानुसार महामृत्युजय मन्त्र, शिव की अर्चना का ही प्रतिपादक है, जिसकी प्रासंगिकता एव समीचीनता आज विश्व में व्यापक रूप में प्रचलित है। ऋग्वेद के तीन सूक्तों में रुद्र के विषय मे जानकारी मिलती है, प्रथम मण्डल का 114वाँ सूक्त, द्वितीय मण्डल का 33वाँ सूक्त, एव सातवे मण्डल के 46वें सूक्त मे, जबकि यजुर्वेद में एक अध्याय रुद्राध्याय में रुद्र विवेचन उपलब्ध मिलता है। ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि से वैदिक देवता रुद्र एव उनकी उपासना सामान्य जन के लिए कितनी प्रभावशाली है, एव रुद्र के वैदिक स्वरूप को आज सामान्य जन द्वारा कैसे किस रूप में अपनाया जाता है, दोनों का मणिकाचन सयोग प्रस्तुत शोधपत्र में द्रष्टव्य होगा।

वैदिकव्यवस्थायां शिक्षायाः सामाजिकजीवनस्य च अवधारणा

युद्धवीर सिह

ए-3,अशोक विहार-2

दिल्ली - 52

शिक्षाशब्द· 'शिक्ष विद्योपादाने' इति धातो टाप् प्रत्ययकृते सिद्धो भवति। शिक्षा सैव यया विद्या उपादीयते-शिक्ष्यते उपादीयते विद्या यया सा शिक्षा। शिक्षया वय या विद्या प्राप्नुम , सा तदैव सार्थका भवति, यदा अज्ञानान्धकार नाशयति-सा विद्या या विमुक्तये। वैदिकपरम्पराया शिक्षाया उद्देश्यमस्ति-सर्वाङ्गीणविकास परमनि श्रेयसप्राप्तिश्च। वैदिकसस्कृतेरनुसार मनुष्यस्य मूलप्रकृतिराध्यात्मिका वर्तते। अनया प्रकृत्या एव स कला, साहित्यसगीतधर्मादिद्वारा स्वात्मान अभिव्यनक्ति। अत एव स अन्येभ्य प्राणिभ्य विलक्षणोऽस्ति। अत एव वैदिकव्यवस्थाया शिक्षाया. विद्याया वावधारणाया· तात्पर्यमस्ति- अध्यात्मप्रतिष्ठा। प्राचीनग्रन्थेषु अस्या एतेष्वर्थेषु एव उल्लेख प्राप्यते। मुण्डकोपनिषदि शिक्षा सा परिभाषिता यया मानवीयता, विनम्रता, अप्रगल्भतायाश्च प्राप्ति स्यात् अर्थात् शिक्षित सोऽस्ति य. विज्ञ. कुशल· वा स्यात्। छान्दोग्योपनिषदि अपि उक्तम्-यद् शिक्षाया. उद्देश्यम् ग्रन्थाना परायणम्, रटनमात्र न विद्यते अपितु सार्थकज्ञानप्राप्ति वर्तते।

वैदिकव्यवस्थायां शिक्षायाः अवधारणा

डॉ0 कामेश्वर शुक्ल

भौतिकविज्ञानस्य कलाकौशलादीना चोन्नत्या सार्द्धमाध्यात्मिकमुन्नयन मनुजानामन्त करणे

विद्यमानाया आत्मसत्तायाश्च स्वाभाविक प्रकाशनमेव वैदिकी शिक्षावधारणेति वक्तु युज्यते। एषाऽवधारणैव यजुर्वेदे विद्याऽविद्येति नाम्नाऽभिहिताऽस्ति। मुण्डकोपनिषदि वर्णिते पराऽपरे चेति विद्ये द्वे एतामवधारणामेव समर्थयत। वैदिकशिक्षावधारणानुसारमुभयोरपि पराऽपरयो॰ समन्वयोऽपरिहार्यः समन्वयमन्तरेण आत्मज्ञानस्योपलब्धिरसम्भवा। वैदिकव्यवस्थायामात्मज्ञानञ्च शिक्षाया सर्वप्रमुखमुद्देश्यम्। वेदाना समग्राणा विद्यानाञ्च परम प्रतिपाद्यमात्मतत्त्वमेव। तस्यात्मतत्त्वस्य च ज्ञान केवलेन पुस्तकीयज्ञानेन भवितु नार्हति। यथोच्यते-यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति, य इत्तद्विदुस्त इमे समासते (ऋ01-164-39) इति। अस्मिन् प्रसङ्गे छान्दोग्योपनिषदः सप्तमे प्रपाठके प्रथमे खण्डे नारद-सनत्कुमारयो सवाद॰ उल्लेखमर्हति। बृहदारण्यकोपनिषद॰ पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयब्राह्मणस्य त्रिविधस्य दकारस्य शिक्षाऽपीमामेवावधारणा पोषयति। अस्या शिक्षाया सपूर्तये चरित्रनिर्माणस्य चोपरि समधिक ध्यान प्रदीयते। अतएव जन्मन. पूर्वकालादेव गर्भवस्थायामेव सस्कारपद्धत्या शिक्षणव्यवस्था विधीयते। वैदिकसस्कृतौ विहिता गर्भधान-पुसवन-जातकर्मोपनयनसस्कारा अस्या शिक्षणव्यवस्थाया एव विविधानि स्तराणि सन्ति। एतेष्वपि शिक्षादृष्ट्या उपनयनसस्कार सर्वाधिक महत्त्व भजते।

वैदिकी शिक्षाव्यवस्था गुरुकुलीया यज्ञप्रधाना च वर्तते। परिवेशस्य सरक्षणमस्या अभिन्नमङ्गम्। समग्रस्य विश्वस्य पवित्रता सर्वत्र ^शान्तिश्च तस्या. उद्देश्यम्। अतएव अस्या. शिक्षाव्यवस्थाया त्रीणि पोषकतत्त्वानि स्वीक्रियन्ते-सस्कार गुरुकुल यज्ञश्चेति। सस्कारपद्धतिमाश्रित्य प्रवर्तमानतयैव वैदिकी शिक्षापद्धति मनोवैज्ञानिकी इत्याख्यायते।

वैदिकव्यवस्थायां शिक्षायाः सामाजिकजीवनस्य च अवधारणा

शिव ज्योति शर्मा, (शोधछात्र)

सस्कृत-विभाग

जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू

वैदिक काल में विद्यार्थी के उपनयन सस्कार के साथ शिक्षा प्रारम्भ होती थी। शिक्षा का प्रारम्भ व्रत की दीक्षा से होता था। अग्नि को साक्षी रखकर व्रत लिया जाता था कि मैं असत्य को छोडकर सत्य को ही ग्रहण करूगा। तथा- **अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छकेय तन्मे राध्यताम्। इदमदमनृतात् सत्यमुपैमि।** (यजु। 5) इस विधि के साथ ही उसे गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी जाती थी। गायत्री मन्त्र का अर्थ उसे हृदयगम कराया जाता था। गुरु के लिए वाचस्पति शब्द आया है। गुरु के कर्त्तव्य के प्रति निर्देश है कि वह **देवेन मनसा सह** दिव्य मन से अर्थात् शुद्ध हृदय से शिक्षा दे। शिक्षा में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। इसकी ओर **नियच्छतु** शब्द से ध्यान आकृष्ट किया गया है। आचार्य स्वय अनुशासन में रहे और शिष्यों को अनुशासन में रखे। यथा-**वाचस्पतिर्नियच्छतु** (अर्थ

1 1 2)। एक मन्त्र मे प्राश् (प्रश्नकर्त्ता) और प्रतिपाश (उत्तरदाता, प्रतिवादी) शब्द आए हैं। इससे सकेत मिलता है कि प्रश्नोत्तर की विधि भी प्रचलित थी। यथा-**प्राशं प्रतिपाशो जहि** (अ 2 17 1)।

स्वातन्त्रोयत्तरभारते वैदिकशिक्षापरम्परा

अजय कुमार मिश्र

शान्तिनिकेतन प बगाल

प्रथमावस्थाया वेदा प्रस्तुतिप्रक्रियायामासन् तस्मिन् युगे संहिताना ब्राह्मणाना छन्दसा तथा च प्रमुखोनिषदामुद्भवो जात । तेषा पठन-पाठनादिक च प्राचीनगुरुपरम्परायामासीत्। तदनन्तर द्वितीयावस्थाया लौकिकशिक्षाया उद्भवो जातः। लौकिकशिक्षा-परम्परया सह वैदिकशिक्षा परम्परा परिवर्धिता। अस्मिन् युगे वेदरक्षणपरम्परा समानीता, वेदरक्षणपरम्पराया वेदोत्तरधार्मिकशिक्षाणामुद्भवेन साक तेषा पठन-पाठन परम्परापि तथा च व्याख्यान परम्परा देशेऽस्मिन् समायाति। तृतीये सोपाने अर्थात् वैदेशिकाक्रान्ते भारतवर्षे राजकीय-अनुदान-रहिता वैदिकशिक्षापरम्परा पुन॰ व्यवहता भवति। एवमेव क्रमेण वेदोत्तर-युगीय-वेदाश्रित-शिक्षापरम्परा शैथिल्य गता। परञ्च अस्माक प्राच्य-शिक्षापरम्पराया प्रभावोऽनुभूत । फलत. वेदाना वैदेशिकभाषानुवादेन साक नूतनरीत्या तेषामध्ययनाध्यापन तथा गवेषण-परम्परा समागता। चतुर्थ सोपाने अर्थात् स्वातन्त्र्योत्तरभारते एषा परम्परा वैदेशिक-प्रभावानुरूपैण प्रचलित।

मानवतासमेधने वैदिकी शिक्षा

प्रोफेसर स्वप्ना देवी

सस्कृत-विभाग

असमविश्वविद्यालय , शिलचरः, कछाड, असम

भारतवर्षं शाश्वतनीतिनिचयस्य मूलाधार , सदाचारस्य अभ्यासभूमि , सत्यस्य तथा तितिक्षाया शिक्षासदनम्। सर्वज्ञानमयो वेदो हि अखिलभारतीयसभ्यताया. सस्कृतेश्चोद्गाता। वसुधैव कुटुम्बकम्, स्वदेशो भुवनत्रयम् इति मर्मवाणी भारतमृत्तिकात एव समुद्भूता। नैतिकतामाधारीकृत्यैव मानवता मूर्त्ता भवति। नीतिमूला शिक्षा एव याथार्थ्येन शिक्षापदवीं विन्दते। सत्सस्कारो यथार्थशिक्षाबलेन हि लब्धु शक्यते, यदाश्रित्य पृथिव्या सर्वेषा सौभ्रातृत्व चरितसौन्दर्यं च सघटित भवितुमर्हति, एतत् निगूढ तत्त्व भारतस्य ऋषिभि कविदार्शनिकादिभि सम्यक् अनुभूतम्, समाजाभ्युदयाय काव्यशास्त्रादिक विनिर्मितम्, शिक्षाप्रणाली च विनिर्मिता। मनुष्याणाम् अन्तर्निहित- शक्तेरुन्मेषसाधन हि शिक्षा। शिक्षाया प्रमुखमुद्देश्य

हि आदर्शमनुष्यनिर्माणम्, मानवोचितगुणाना विकाससाधनञ्च। अतो भारतवर्षस्य त्रिकालदर्शिभि ऋषिभि॰ शिक्षाविषये नीतिवर्जं किमपि चिन्तन न कृतम्। एतद्वशादेव वेदोपलब्धशिक्षाया उद्देश्यम् आधुनिकमननेऽपि प्रामुख्य लभते। उक्त हि -

विद्या विनयोपेता हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य।

काञ्चनमणिसयोगो न जनयति कस्य लोचनानन्दम्॥ इति।

विद्यासरक्षणाय गुरुशिष्ययो. उभयो सञ्जीवनमावश्यकम्। अत आम्नातम्–**ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।** एतेन गुरुशिष्ययो॰ सुमधुरसम्पर्क उद्भासित। वैदिकयुगे श्रोत्रिय अप्रतिग्राहक आचार्यो विद्यार्थिभ्य शिक्षादानार्थमर्थं न स्वीकुर्वन्ति स्म। शिष्यलब्धभैक्ष्येण गुरुकुलाश्रमे गुरुशिष्याणा जीवननिर्वाहो भवति स्म। एतेन छात्रा त्यागानुशीलनतितिक्षादिगुणगरिम्न शिक्षा प्राप्नुवन्ति स्म। तदा कायेन मनसा वाचा भवति स्म सत्यस्यानुशीलनम्। अत आम्नातम्- **ॐ वाङ् मे मनसि** इत्यादिकम्। वेदे छात्रजीवन दीर्घसत्ररूपेण उद्दिष्टम्। तदानीन्तनकाले न केवल नराणा नारीशिक्षाविषयेऽपि चिन्तन कृतम्। आम्नातञ्च- **अथ यो इच्छेत् दुहिता मे पण्डिता जायेत।** इति तदा ज्ञानसाधने नारीणामपि महत् योगदानमासीत्।

प्रकृतसन्दर्भे वैदिकीं शिक्षाप्रणालीं तथा आदर्शमनुष्यनिर्माणे तस्या महत्त्वमधिकृत्य समासत आलोचन विधास्यते।

वैदिक शिक्षा प्रक्रिया

श्रीमती लक्ष्मी देवी

रिसर्च स्कालर- वेद विभाग

गु का वि वि , हरिद्वार।

हमारा ब्रह्माण्ड हमारी जिज्ञासाओ को जागृत करने के लिए अपूर्व गुरुत्व से परिपूर्ण है। परमेश्वर द्वारा ऋषियों के हृदय में प्रकाशित वेदज्ञान प्राणिमात्र के कल्याणार्थ सतुरुत्व का अनुपम उपहार है। अथर्ववेद मे आचार्य द्वारा प्रदान की गयी शिक्षा की प्रक्रिया (अथर्व 11/5) ब्रह्मचर्यसूक्त में दर्शाते हुए स्पष्ट लिखा है कि **"आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त.।"** अर्थात् आचार्य (शिक्षक) गर्भवती माता के समान अपने शिष्य का उपनयन करके ऐसे ब्रह्मचर्य प्रदान करता है, जैसे माता गर्भ में बालक को पोषण एव सरक्षण प्रदान करती है अर्थात् प्रकृति के प्रत्येक आघात से सरक्षण करते हुए आचार्य मातृगर्भवत् भरण-पोषणादि सभी कर्मो को दिव्यकर्मा होकर प्रदान करता है। आचार्य का ब्रह्मचारी होना, ब्रह्मचारी का प्रजापति होना, प्रजापति के रूप में विराजना विराट् को

वश में करने वाला इन्द्र ही होता है। इसीलिए आचार्य को मृत्यु, वरुण, सोम औषधि तथा पय कहा है। आचार्य ही वह सतत् सत् प्रवाह युक्त मेघ है जो साधक (शिष्य) में नूतन आत्मबोध का भर्ता है। इसी ब्रह्मचर्य रूप तप के द्वारा (जो उसने अपने आचार्य की तपस्या से प्राप्त किया है) देवों (दिव्यकर्माओं) ने मृत्युं तक का निवारण किया। अन्यत्र कहा भी है- ब्रह्मचर्यपूर्वक तप के द्वारा राजा राष्ट्र को विशेष रूप से सुरक्षित करता है।

वेदों में शिक्षा-दर्शन

डॉ0 योगेश शास्त्री

(विद्यालय विभाग)

गुरुकुल कागडी वि विद्यालय, हरिद्वार

चारों वेद ईश्वरकृत हैं, वैसे ही उपवेद, ब्राह्मण एव वेदाग षड्दर्शन, ऋषि-मुनि प्रणीत वैदिक शिक्षा के अभिन्नतम अग हैं। अथर्ववेद (11 वें काण्ड) ब्रह्मचर्य सूक्त में आचार्य एव ब्रह्मचारी का जो समन्वय प्राप्त होता है, वह वैदिक शिक्षादर्शन को सत्कृत करता है। यजुर्वेद में **यथेमा वाचं कल्याणीमावदानी जनेभ्यः** मन्त्र द्वारा जहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के लिए कल्याण कारक उपदेश दिया गया है, वहाँ निरुक्तकार ने ब्रह्मचारी के सर्वांगीण विकासार्थ, चारो वेदो के स्वर, शब्द, अर्थों को क्रियासहित पढने को अनिवार्य वर्णित किया है। वेदों में आयुर्वेद-अर्थ, क्रिया, शस्त्र, छेदन, भेदन, लेप, चिकित्सा, निदान, औषध, पथ्य, शरीर, धनुर्वेद के अन्तर्गत-शस्त्र विद्या, राजविद्या, गान्धर्ववेद के अन्तर्गत-स्वर, राग, समय, ताल, नादित्र और नृत्यादि निहित हैं। अथर्ववेद के अन्तर्गत-शिल्पविद्या, पदार्थ, गुण, विज्ञान, पृथिवी से आकाश पर्यन्त, क्रियाकौशल, भूगोल, खगोल, भूगर्भ, विद्यादि, बीजगणित, अकगणित, यन्त्रकला, जलसरचना, गुरुत्वाकर्षणादि का ज्ञान एव विज्ञान वर्णित है। ऋषि दयानन्द के शब्दों मे वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, जो वैदिक शिक्षा पद्धति का अभिन्नतम अग एव मूलाधार है। प्रस्तुत शोधपत्र में ऋषि दयानन्द के अनुसार वैदिक शिक्षा पद्धति का वर्तमान समय मे उपयोगिता का विवेचन है।

वैदिक व्यवस्था में शिक्षा एवं सामाजिक जीवन की अवधारणा

कु0 कृष्णा दुबे

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

वेद हमारे धर्म एव सस्कृति के प्राण हैं। इन्हें ज्ञान का अक्षय एव आदिम स्रोत कहा गया है। वेदों मे ऋग्वेद भारतीय सस्कृति का पुरातन ग्रन्थ है। इसकी ऋचाओ में वैदिक युगीन सभ्यता

और सस्कृति मूर्त रूप से निहित है। ऋग्वेद मे आर्यों की शिक्षा एव सामाजिक जीवन का जो वर्णन प्राप्त होता है सक्षेपतया इस प्रकार है- वैदिकव्यवस्था मे शिक्षा- वैदिक युगीन सर्वविध समृद्धि का मुख्य आधार उस काल की शिक्षा व्यवस्था थी। वैदिक युगीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य **"सा विद्या या विमुक्तये"** था।

वैदिक व्यवस्था में शिक्षा और सामाजिक जीवन की अवधारणा

डॉ0 दीपशिखा

भारत की मूल परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, इसमे सदेह नही है। उसके बीज वेदो मे पाये जाते है। प्राचीनतम ऋग्वेद मे भी, जितना कि आज वह उपलब्ध है। भारतीय सभ्यता मे शिक्षा का बहुत अधिक महत्त्व है। क्योंकि उच्चशिक्षा ही हमारे सामाजिक जीवन के मूल्यो का निर्धारण करती है। ज्ञान को भारतीय परम्परा मे सबसे ऊचा स्थान दिया है। उसे परम पवित्र माना गया है। ज्ञान का अर्थ किसी बात की सिर्फ बाहरी जानकारी नही हो निरन्तर चिन्तन के द्वारा तत्त्व की गहराई मे उतरकर प्रत्यक्ष अनुभूति को ज्ञान कहा गया है। यह त्याग, सयम और तप से प्राप्त किया गया जाता है। अर्थात वेद धर्म का मूल है उसमे समस्त ज्ञान भरा हुआ है। चारो वर्ण, तीनो लोक चारो आश्रम, भूत, वर्तमान और भविष्य इन सबका पूरा ज्ञान वेद से होता है। 'वेद' शब्द विद् ज्ञाने' धातु से बना है। इसीलिए इसका मौलिक अर्थ ज्ञान ही है। 'विद्या' शब्द भी इसी धातु से निकला है। इसीलिए मूल मे 'विद्या' और 'वेद' शब्दो का अर्थ समान ही है। 'वेद' शब्द का इस सामान्य अर्थ मे प्रयोग 'आयुर्वेद' 'धनुर्वेद' आदि शब्दो मे प्राचीन काल से चला आया है। वेदो को ठीक प्रकार से पढकर उसका सही अर्थ जानने वाला ही वेदो के मर्म को जान सकता है।

वैदिकव्यवस्था में शिक्षण और सामाजिक जीवन की अवधारणा

डॉ0 योगिनी हिमाशु व्यास

अध्यक्ष सस्कृत-विभाग

उमा आर्टस महिला कॉमर्स कॉलेज गाधी नगर

वेदो मे दृष्टिगोचर कविता, धर्म और समाज के अभ्यासी को यह बात ज्ञात होती है कि वैदिक युग मे शिक्षण क्षेत्र के पथ पर गतिशील था। उस समय ज्ञान की प्रतिष्ठा पराकष्ठा पर पहुँची हुई थी। वेदकालीन विद्वानो ने अक्षर ज्ञान के साथ-साथ अनुभूति का ज्ञान भी आत्मसात् किया था।

यज्ञ का प्रभाव-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश- इन पञ्चभूतो से सृष्टि का निर्माण हुआ है। इस सृष्टि को सुन्दर, स्वस्थ, रखने के लिये पञ्चतत्त्वो को प्रदूषण मुक्त रखना आवश्यक है, जिसकी

सामर्थ्य यज्ञ मे है। यज्ञ में प्रज्वलित अग्नि-प्रकाश और उन्नति का सूचक है, अग्नि मे आहुत घी, समिधा और अन्य सामग्री से सुगन्धित तथा उत्थित धूआ वायु को पवित्र बनाता है, धूम से बादल बनते हैं जो पृथ्वी पर शुद्ध जल की समय-समय पर वर्षा करते हैं, मन्त्रोच्चारित शब्द ध्वनियाँ ऊपर की ओर उठती हुई आकाश को पवित्र करती है। इन पञ्चतत्त्वों के प्रदूषण मुक्त होने से मनुष्य अनेक व्याधियो से मुक्त हो जाता है। यज्ञ करते समय देवताओं को दी गई आहुतियो के साथ 'इदन्न मम' का उच्चारण करने से मनुष्य में निःस्वार्थता की भावना उत्पन्न होती है।

वैदिक व्यवस्था में शिक्षा तथा सामाजिक अवधारणा

श्रीमती सुमन शर्मा

प्रवक्ता सस्कृत देव समाज गर्ल्स कॉलेज फिरोजपुर, पजाब

सर्वांगपूर्ण विकास के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप, धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष था। वैदिक शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य को व्यवहार कुशलता के साथ साथ अपनी धार्मिक सीमाओं का अभ्यस्त बनाना भी था। चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति-**'सा विद्या या विमुक्तये।'** तत्कालीन शिष्य गुरु के आश्रम मे रहकर वेद एव वेदेतर विषयो की मौखिक शिक्षा के साथ साथ सामाजिक व वैयक्तिक अनुशासन, सत्यनिष्ठा तथा अपने कर्तव्यों के प्रति सतत जागरूक रहने की शिक्षा ग्रहण करते थे।

वैदिक व्यवस्था में शिक्षा एवं सामाजिक जीवन की अवधारणा

कु0 कृष्णा दुबे

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

वेद हमारे धर्म एव सस्कृति के प्राण हैं। इन्हें ज्ञान का अक्षय एव आदिम स्रोत कहा गया है। वेदों मे ऋग्वेद भारतीय सस्कृति का पुरातन ग्रन्थ है। इसकी ऋचाओ मे वैदिक युगीन सभ्यता और सस्कृति मूर्त रूप से निहित है। ऋग्वेद मे आर्यों की शिक्षा एव सामाजिक जीवन का जो वर्णन प्राप्त होता है, सक्षेपतया इस प्रकार है- वैदिकव्यवस्था मे शिक्षा- वैदिक युगीन सर्वविध समृद्धि का मुख्य आधार उस काल की शिक्षा व्यवस्था थी। वैदिक युगीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य **"सा विद्या या विमुक्तये"** था। इस प्रकार वैदिक युगीन शिक्षा एव सामाजिक जीवन की अवधारणा का पूर्ण ज्ञान ऋग्वेद से प्राप्त होता है।

वैदिकव्यवस्था में शिक्षा और सामाजिक जीवन की अवधारणा

डॉ0 श्रीमती जया तिवारी,

प्रवक्ता- सस्कृत-विभाग
कुमाँऊ विश्वविद्यालय

वैदिक काल पूर्व तथा उत्तरवैदिककाल के रूप में विभाजित है। पूर्ववैदिकाल का समाज सुसस्कृत, परिश्रमी, पराक्रमी, ज्ञानी एव समृद्ध माना गया तथा उत्तरवैदिकाल में कुछ शिथिलता आ जाने से समाज में अव्यवस्था देखी गयी, जिसे सुव्यवस्थित करने के लिए शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य समझी गई। शिक्षा प्राप्ति के लिए वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ चतुष्टय तथा सस्कार आधार रहे तथा धर्म को लक्ष्य मानते हुए सामाजिक जीवन को समुन्नत किया गया, इसीलिए शिक्षा के प्रति समाज की अनेक अवधारणाएँ रहीं।

वैदिक-व्यवस्था में शिक्षा और सामाजिक जीवन की अवधारणा

विजय कुमारी गुप्ता
डी0ए0वी0 कालेज, जालन्धर शहर।

वेदकालीन समाज पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होता है कि तत्कालीन सामाजिक जीवन में भौतिकता एव आध्यात्मिकता के मध्य या ऐहिकता एव पारलौकिकता के मध्य सुन्दर सामञ्जस्य स्थापित किया गया था। वेदकालीन समाज के पाँच आधार-स्तम्भ थे- (1) पारिवारिक-जीवन (2) तीन ऋण (3) वर्ण-व्यवस्था (4) आश्रम-व्यवस्था (5) पुरुषार्थ चतुष्टय। विश्व के किसी अन्य मानव समाज ने इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का विकास नहीं किया था। वेदकालीन समाज में पितृपक्ष प्रधान परिवार प्रथा के कारण पिता का सर्वोच्च स्थान था। परिवार के अन्य सदस्यों को पिता के आश्रय में रहना पडता था। माता का भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। पारिवारिक जीवन में पञ्च महायज्ञों का तथा सस्कारों का विशेष स्थान था। वेदकालीन समाज मे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष वर्गचतुष्टय को मानव-जीवन का ध्येय मानकर वर्णाश्रम व्यवस्था को उसकी प्राप्ति का मूल साधन निर्धारित किया गया था। इस प्रकार वेदकालीन समाज सत्य-सनातन सिद्धान्ता पर आधारित था।

वेदाः वैदिकी सभ्यता आर्याश्च

स्वामी अनन्त भारती
स्वामी केशवानन्द योगसस्थान
बी-2/139-140 से 6 रोहिणी

दिल्ली-110085 भारत

गत्यर्थत्वाद् ऋ धातो· निष्पन्न आर्यशब्द: प्रगतिशीलानामभिनिवेशरहिताना पुरुषाणा वाचकोऽस्ति। आर्या: वेदविहितान्येव कर्माण्याचरन्ति। वेदो ज्ञानराशि. सृष्टिकर्ता परमेश्वरेण सृष्टेरादौ निर्मलचित्तभ्यो महर्षिभ्य: प्रदत्ता:, ये प्रथम श्रुतिपरम्परयाऽद्यत्वे च मुद्रितग्रन्थरूपेण चाद्यावधि सुरक्षिता. सन्ति। वेद एक एव, परन्तु ज्ञानकर्मोपासनाविज्ञानरूपाद् विषयभेदाद् ऋग्यजु·सामाथर्वनामभिश्चत्वारो वेदा. भवन्ति।

चतुर वेदानधिकृत्य प्रवर्त्तिता सभ्यता वैदिकी सभ्यता निगद्यते। यतो हि वेदेषुलौकिकी. आध्यात्मिकीश्च सर्वाविद्या सन्ति, ततो वेदेभ्यो प्रवर्त्तिता सभ्यता सर्वाङ्गीणसर्वहितकारिणी चास्ति। अन्य सभ्यताया प्राणभूता भवत्याध्यात्मिकता। अतएवार्या· सृष्टे वार्त्तारम्भे एकमेवाद्वितीय परमेश्वरम्मन्यन्ते एष सर्वव्यपक सर्वान्तर्यामी अजरोऽमरो नित्यश्च स्वीकृत। पितेव स: सर्वं जगत्पालयति, सैव सर्वविद्यान्यान्युपयोगसाधनान्युपभोगसाधनानि च भूतेभ्य. प्रददाति। तेन अत्र सभ्यताया लोकस्य सरक्षणाय राजसत्ताऽङ्गी कृतास्ति। राजा शूरवीर· प्रजारक्षक न्यायकृत् दस्यूनान्निवारकश्च स्वीकृत। प्रजासु मैत्रीभाव , पारिवारिकेषु जनेषु सौमनस्यम्माधुर्यमत्र सभ्यताया प्राधान्येन दृश्यते। असपत्नतात्र प्रतिष्ठिता भवति।

सामाजिकी व्यवस्थात्र वर्णाश्रमव्यवस्थामाश्रित्य प्रवर्तते। अनया व्यवस्थयाजीवनम्परिचालयन्त आर्या सर्वात्मभावसाधनायै प्रयतन्ते। अन्ये जना आत्मनि सर्वभूतानि सर्वभूतेषु चात्मान द्रष्टु यतन्ते। अस्या साधनाया सिद्धाया मोह· शोकश्च सर्वथा निवर्त्तते। तथा चोक्तम्-यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानत·। तत्र को मोह·क:शोक एकत्वमनुपश्यत.।। (यजुर्वेद 40 7) आर्या· धर्मार्थकाममोक्षान्परम पुरुषार्थान्मन्यन्ते। जीवने इमान्साधयन्यस्तेऽन्ततो मोक्षसुख लभन्ते।

वैदिक सभ्यता और उसके प्रभाव

डॉ0 सुचित्रा मलिक

वरिष्ठ प्रवक्ता-हिन्दी-विभाग

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ससार की प्रचीनतम सस्कृतियो मे वैदिक सभ्यता-सस्कृति सबसे प्राचीन मानी गयी है। (सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा। (यजुर्वेद 7 14) जबकि यूनान मिस्र रोम आदि की सस्कृतियाँ काल

कवलित हो चुकी है। वैदिक सस्कृति वह सदानीरा है, जो अपने ससर्ग मे आने वाले सभी नदी नालो को समेट कर अनवरत बहती चली आ रही है। भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यताओ मे राक्षस, वानर, मुण्डा, कोल, किरात, द्रविड, गन्धर्व, यक्ष, असुर, शक, पल्लव और हूण आदि का इसमे समय-समय पर या तो समागम होता रहा है। मुस्लिम सस्कृति ने इससे घात-प्रतिघात करके साथ रहना कुबूल किया। सुमेरियन और यूनानी इससे बहुत कुछ ले गयी। अनेक सकटो की मार झेलती यह वैदिक सस्कृति आज भी अपनी पूर्ण ऊर्जा से समन्वित ओर सुगठित है तो इसका कारण इसकी वह गुणवत्ता है जो अन्य सस्कृतियो मे अन्य नही है।

आर्य और उनका उद्भव

कृष्णमोहन पाण्डेय

सस्कृत-विभाग, महात्मा गाधी काशी विद्यापीठ

वाराणसी।

किसी भी सस्कृति की पहचान उसके आचार से होती है "आचारमूला जाति "। अर्थात् आचार को देखकर जाति का निर्माण होता है। आर्य जाति की सर्वप्रमुख विशेषता है कि वह जीवनयात्रा निर्वहण मे रजोवीर्यशुद्धिमूलक वर्णव्यवस्था तथा प्रवृत्तिरोधक और निवृत्ति पोषक आश्रमव्यवस्था मे विश्वास करती है। जिस मनुष्य जाति मे रजोवीर्य शुद्धिमूलक जातिभेद का सिद्धान्त, सतीत्व-धर्ममूलक स्त्रीजाति की पवित्रता, प्रवृत्तिमूलक ब्रह्मचर्य एव गृहस्थाश्रम और निवृत्तिमूलक वानप्रस्थ एव सन्यास आश्रम, ऐसे धर्मों के लक्षण पाये जाते हो वही मनुष्य जाति आर्य जाति कहलाती है, ये सभी आर्य जाति के मूल सिद्धान्त है। इस प्रकार की जातियो का गुणधर्म जब से हमे प्राप्त होता है तब से हम आर्य सस्कृति अथवा भारतीय सस्कृति को उद्भूत मानते है। सस्कृति का तात्पर्य परम्परागत अनुस्यूत सस्कार से है। यह सिद्धान्त भी है कि सस्कार रूपी बीज के ही अनुसार कर्म रूपी वृक्ष उत्पन्न होता है। व्यक्ति के जैसे पूर्व सस्कार होगे वैसे ही कर्म बनेगे। आर्यों की प्राचीन रहन-सहन, आचार व्यवहार धर्म, कर्म, सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था, शास्त्रीयसिद्धान्त शिक्षाप्रणाली आदि जिसके प्रधान-प्रधान अवलम्बन हो, वही आर्य सस्कृति कही जा सकती है।

वैदिक युग में वर्णव्यवस्था

राम निवास जैन

पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

वैदिक युग मे कर्म पर आधारित चार वर्णो का उल्लेख मिलता है। ये चार वर्ण है ब्राह्मण,

क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। इन चारों वर्णों का दर्शन सर्वप्रथम हमे ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में मिलता है, जहाँ इनकी उत्पत्ति इस प्रकार दर्शायी गई है-**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत। उरू तदस्य यद्वैश्य· पद्भ्यां शूद्रोऽजायत॥** वर्णव्यवस्था का उल्लेख यजुर्वेद में भी किया गया है। वैदिक युग की व्यवस्था कर्म पर आधारित थी, न की जन्म पर इसका प्रमाण भी हमें ऋग्वेद मे स्पष्ट मिलता है। अपने कर्म के कारण कोई भी व्यक्ति राजा या ऋषि हो सकता था

अथर्ववेद में वर्णित ब्रह्मचर्य आश्रम तथा उसकी उपयोगिता

कु0 रुचि गुप्ता

प्रवक्ता (सस्कृत-विभाग)

दि0 जैन महाविद्यालय बडौत उ0प्र0

भारतीय सस्कृति के अन्तर्गत मानव जीवन को चार आश्रमों में विभक्त किया गया है। इनमें ब्रह्मचर्य आश्रम सबसे पहला आश्रम माना जाता है। जो ब्रह्म मे विचरण करता है, वह ब्रह्मचारी है। ब्रह्मचारी का भाव ही ब्रह्मचर्य है। जिस प्रकार सभी वृक्षों का मूल महत्त्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार मानव जीवन का मूल ब्रह्मचर्य है। इसके पालन से मानव शारीरिक, मानसिक सुख को प्राप्त करके कल्याणमय जीवन यापित करता है। इस प्रकार अथर्ववेद में ब्रह्मचर्य का अति विस्तार से महत्त्व प्रतिपादित किया गया है यह स्पष्ट है। अब प्रश्न उठता है कि वर्तमान समय में इसकी क्या उपयोगिता है? आज पाश्चात्य सस्कृति के अन्धानुकरण ने हमारी युवा पीढी को पथ भ्रष्ट कर दिया है। आज का छात्र नैतिक पतन के गर्त मे गिरता जा रहा है। सयम, अनुशासन आदि उससे कोसों दूर जा रहें हैं। इलैक्ट्रोनिक मीडिया यथा टी0 वी0, इटरनेट, प्रिट मीडिया, पाश्चात्य सस्कृति का अधानुकरण आदि सभी आज के छात्र को दिग्भ्रमित करने में अहम् भूमिका निर्वाह कर रहे हैं। ऐसे समय मे अथर्ववेद में वर्णित ब्रह्मचर्य आश्रम के महत्त्व से सम्बन्धित ये सूत्र उसका दिशा निर्देश करने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर सकते हैं।

ऋग्वेद में न्याय-व्यवस्था

विवेक कुमार पाठक

बरेली।

वैदिक काल में न्याय शब्द का अर्थ 'धर्म' ग्रहण किया गया है। यहाँ न्याय से आशय कर्तव्याकर्तव्यज्ञान और व्यवहार ज्ञान से है। वैदिक कालीन प्रजातन्त्रीय व्यवस्था मे प्रजा के अधिकारो की रक्षा के लिए एक स्वतन्त्र न्यायालय होता था जिसे 'विदथ' कहते हैं। इस विदथ' शब्द का अर्थ

कुछ वेद विद्वानों ने 'यज्ञशाला' भी माना है। शब्दकल्पद्रुम में 'विदथ' की उत्पत्ति विद् धातु से मानी गई है। जिसका अर्थ सत्य की खोज करना है। इसलिए विदथ' वह सस्था है जिसमें सत्य की खोज करके न्याय दिया जाता है। उस काल में यह एक महत्त्वपूर्ण सस्था थी, जिसका ऋग्वेद में लगभग 122 स्थलों पर प्रयोग हुआ है। ऋग्वैदिक कालीन यह विदथ तर्क-वितर्क का स्थल होता था। यह सम्पूर्ण समाज को वैचारिक निर्देशन देने एव विधि को सबल बनाने का कार्य करता था। ऋग्वैदिक कालीन यह न्यायपालिका वैदिककालीन जनतन्त्र या प्रजातन्त्रीय प्रणाली की मेरुदण्ड थी। ऋग्वैदिक न्याय व्यवस्था में व्यवहार पदों (दण्ड के कारण) एव अपराध के आधार पर ही दण्ड का निर्धारण भी होता था। वैदिक दण्ड व्यवस्था में दण्ड दो प्रकार का (आन्तर एव बाह्य) होता था। जिसके चार उप प्रकार भी होते थे। ऋग्वेद में सात प्रकार के अपराधों के आधार पर दण्ड निर्धारण पन्द्रह प्रकार का बताया गया है। धर्मकोशों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि ऋग्वैदिक दण्ड व्यवस्था वर्णों के आधार पर थी अर्थात् एक ही अपराध करने पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि को पृथक्-पृथक् दण्ड का विधान था।

पारिवारिक जीवन के सन्दर्भ में वेदों का योगदान

डॉ0 (श्रीमती) मनोरमा गुप्ता
विभागाध्यक्षा-सस्कृत
कानपुर विद्या मंदिर महिला (पी जी)
महाविद्यालय, कानपुर

व्यक्ति और समाज के मध्य पारिवारिक जीवन का बहुत अधिक महत्त्व है। परिवार एक शाश्वत व स्थायी समूह है, जो न केवल सामाजिक स्थिति मे आधारभूत स्थिति रखता है, अपितु सार्वभौम भी है। मनुष्य अपने जीवन का प्रारम्भ परिवार द्वारा ही करता है, और उसी से अपने उन गुणों व विशेषताओं को विकसित करता है, जो प्रत्येक व्यक्ति मे अन्तर्निहित रूप से विद्यमान रहती हैं। परिवार ही उन परिस्थितियों को प्रदान करता है, जिनके द्वारा बच्चे का पालन-पोषण होता है। वह अपनी जन्मजात शक्तियों का विकास करता है और फिर अधिक व्यापक समाज का अग होने के योग्य बनता है। व्यक्तियो से परिवार और परिवारों से समाज का निर्माण होता है। परिवार मे कैसे व्यवहार करना चाहिए, इसकी मर्यादा वेद ने बताई है।

वेदो में सामाजिक न्याय

जीवानन्द झा

सस्कृत-विभागाध्यक्ष

ए. पी एस एम कॉलेज, बरौनी, बिहार-851112

वेद शब्द का ,निर्माण विद् ज्ञाने धातु से घञ् प्रत्यय द्वारा हुआ है। इस आधार पर इसकी व्युत्पत्ति 'विदन्ति येन स वेदः' है, अर्थात् वास्तविकता का ज्ञान कराने से इसे वेद कहा जाता है। 'सर्व कान्तमात्मीय पश्यति' अर्थात् सबको जो अपना हो वह प्यारा लगता है, इसीलिए नहीं, अपितु समाज-विज्ञान के यथार्थ परिज्ञान हेतु हम वेद के शरण में जाते हैं। अथर्ववेद अखिल मानव को अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहते हुए मिलकर चलने समान विचार रखने आदि की आज्ञा देता है-**संगच्छध्वं संवदध्वं.**। **''जन बिभ्रती बहुधा विवाच.**'' में धार्मिक समानता एव स्वतन्त्रता की भावना व्यक्त है। उनकी दृष्टि में समस्त मानवता एक परिवार है। सह अस्तित्व ही उनका आदर्श है।

ऋग्वेद की सामाजिक अवस्था

डॉ0 रचना अजय

यद्यपि ऋग्वेद के अधिकाश सूक्त विभिन्न देवताओं की स्तुति के रूप में हैं, तथापि अनेकों सूक्त ऐसे भी हैं जो उस समय की राजनैतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, नैतिक तथा दार्शनिक अवस्था पर भी प्रकाश डालते हैं। ऋग्वैदिक समाज की कुछ प्रमुख विशेषताऐं इस प्रकार हैं कि वैदिक आर्य मूर्तिपूजा तथा मंदिरो की सत्ता मे विश्वास नहीं करते थे। वे उन देवताओं की पूजा करते थे। जो प्रकृति के मानवीयकरण थे। नैतिकता का स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा था। ऋग्वेद कालीन समाज सुसभ्य शिक्षित सम्पन्न तथा सुसस्कृत था। वैदिक सूक्तो के अनुसार वैदिक आर्य प्रसन्नचित्त, युद्धकला, मे प्रवीण आशावादी शूरवीर, दानप्रिय व देवताओं से डरने वाले लोग थे। जो सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे।

वैदिक काल में कन्या का स्वरूप

डॉ0 सिद्धार्थ शकर सिह

अध्यक्ष सस्कृत-विभाग

जगदम महाविद्यालय छप्परा, (बिहार)

नारी एव नर मानवसृष्टि के प्रधान स्तम्भ हैं, दोनो की रचना प्रकृतित. भिन्न है। नारी नर की अपेक्षा कोमल, दुर्बल और सतानोत्पत्ति के समय पराश्रिता है। इस मौलिक अन्तर के उपरान्त भी नर-नारी एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण, असर्व और अधूरा ही है। अर्ध नारीश्वर की परिकल्पना नर एव नारी के एक दूसरे के पूरक होने का प्रमाणीकरण ही तो है। प्रमादवश

प्राकृतिक सबलता के गर्व से भरा हुआ नर नारी को अपनी आश्रिता समझने लगता है एव सम्पत्ति के समान उस पर अपना अधिकार आरोपित करने लगता है। प्रस्तुत शोध पत्र मे वैदिक काल मे कन्या की स्थिति का वर्णन किया गया है। **'कन्या कमनीया भवति'** यास्क के निर्वचन से ही स्पष्ट है कि वैदिककाल में कन्या का स्वागत परिवार में होता था। साथ ही पुत्रों की तुलना में कन्याओ की स्थिति एव उनकी स्वतन्त्रता इस पत्र का आकर्षण है। वर्तमान में घटते लिङ्गानुपात के सन्दर्भ में यह पत्र कन्याओं के सम्मानजनक परिपोषण सम्वर्धन एव सरक्षण को बल देने की दिशा में एक प्रयास है। महिला-सशक्तीकरण एव महिला जागरण शताब्दी वर्ष में, कन्या पहली कडी है एव इसकी स्थिति वैदिककाल में वर्णनीय है। समाज का दूसरा स्तम्भ अगर कमजोर है, समाज पगु हो जायेगा। अतः हम में वृक्ष के प्रारम्भिक अवस्था 'पौधे' का ध्यान रखना ही होगा, अन्यथा वात्सल्य की छाव सदा के लिए लुप्त हो जायेगी।

वैदिक संस्कृति और नारी

डॉ0 शोभा रानी सहाय, शोधार्थी

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

वेदो की यह मान्यता है कि स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध सबके शरीरो मे समान प्रकार की आत्मा का निवास होता है। उसमे स्वत कोई लिगभेद नहीं होता। प्रत्युत एक ही जीवात्मा कर्मानुसार कभी पुरुष शरीर धारण करता हैं और कभी स्त्री शरीर-**'त्वं स्त्री त्व पुमानसि त्व कुमार उत वा कुमारी।'** अथर्ववेद- 10 8 27 अत मौलिक रूप से वैदिक सस्कृति मे स्त्री और पुरुष में कोई अन्तर नही हैं। समाज मे स्त्री पुरुष की समान स्थिति का होना भी परमावश्यक है। इसका यह कारण है कि दोनो अन्योन्याश्रित हैं और एक के बिना दूसरे की सत्ता नही हो सकती। दोनो का समान श्रम, त्याग और उत्तरदायित्व ही समाज को पूर्ण बनाता है। आज भी इसी तथ्य की आवश्यकता समीचीन है। इन्ही समीचीन धारणाओ के साथ यह शोध-निबन्ध निर्मित है।

वेदों में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

विभा चौधरी

वनस्थली विद्यापीठ

राजस्थान।

समाज एव राष्ट्र मे स्त्री एव पुरुष का योगदान समकक्ष है, अत. पुरुष के समान ही नारी शिक्षा की आवश्यकता स्वाभाविक है। वैदिक काल मे सन्तान के जीवन निर्माण का उत्तरदायित्व

माता-पिता के ऊपर ही होता था। (बृहदारण्यकोपनिषद् 1 57) वेदों में नारी के जो कर्त्तव्य निर्धारित किये गए हैं, उनसे यह स्पष्ट है कि वैदिक कालीन नारी शिक्षित, कला निपुण एव ज्ञानी भी थी। वैदिक युग में विद्याध्ययन प्रारम्भ करने के लिए उपनयन सस्कार को अनिवार्य कृत्य माना गया है। जो कि कन्याओ का भी किया जाता था तथा वह ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई विभिन्न विषयो मे शिक्षा ग्रहण करती थीं। अत· स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान उच्च शिक्षा ग्रहण किया करती थी। ऋग्वेद मे नारी ने आत्मगौरवपूर्वक घोषणा की है "मैं ज्ञानवती हूँ" घर की प्रमुख और शत्रुनाशिका हूँ।-(ऋग्वेद 10 159 2) ऋग्वेद का विदुषी' शब्द स्त्री के सुशिक्षित होने का परिचायक है।

अथर्ववेद में विद्याप्राप्ति पद्धति का स्पष्टत उल्लेख किया गया है अथर्वा ऋषि ने यज्ञ मे कन्या के वर्चस्व को स्वीकार किया है। उपर्युक्त विषय के आलोक मे इस शोधपत्र में वेदकाल में नारी शिक्षा के विविध आयाम जैसे- धर्म, अध्यात्म, दर्शन, व्याकरण, आगम, चित्रकला, गान्धर्वविद्या, वीणा, गणित आदि विषयो में नारी की शैक्षणिक स्थिति पर विचार किया गया है।

वैदिक काल में स्त्री शिक्षा

डॉ सरोज नौटियाल

रीडर- कन्या गुरुकुल महाविद्यालय

सस्कृत-विभाग, देहरादून।

प्राचीन भारत मे दीर्घकाल तक शिक्षा का तात्पर्य वैदिक शिक्षा रहा, जो वैदिक युग में बिना किसी लिग भेद के स्त्री-पुरुष दोनों को उपलब्ध होती थी। स्त्रियाँ वैदिकसाहित्य का अध्ययन करती थी, धार्मिक, दार्शनिक विचार-विमर्श करती थीं, यहाँ तक कि कुछ वैदिक ऋचाओ की रचयिता भी थीं। वे ब्रह्मचर्य आश्रम व्यतीत करती एव पवित्र यज्ञोपवीत धारण करती थीं, अथर्ववेद के अनुसार ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति के उपरान्त ही कन्या विवाह के योग्य होती थी। स्त्रियो के शैक्षिक अधिकारो की पुष्टि के लिए वैदिक साहित्य मे पर्याप्त एव सन्तोषजनक प्रमाण उपलब्ध होने के बाद भी वैदिक तथ्यो के आलेक मे ही विचारणीय है कि तत्कालीन सामाजिक सगठन पितृसत्तात्मक था। राजनैतिक जीवन मे भी पुरुषो का वर्चस्व था। सभाओ मे स्त्रियों की उपस्थिति राजनीति मे उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका की ओर सकेत नही करती। ऐसी स्थिति मे शिक्षा की अधिकारी होते हुए भी समाज मे कितनी स्त्रियाँ विधिपूर्वक शिक्षा प्राप्त कर रही थी, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। यद्यपि कुछ वैदिक स्त्रियो को वैदिक मन्त्रो की रचयिता एव उद्गात्री के रूप मे स्मरण किया जाता है परन्तु तथ्य यह है कि परवर्ती परम्परा मे उनकी सख्या को बढा-चढा कर प्रस्तुत किया गया है। ऋग्वेद मे प्राप्त 27 विदुषी स्त्रियो के सन्दर्भों मे से अधिकाश दैवी, अर्द्धदैवी पौराणिक चरित्र एव अमूर्त

भावनाओ के द्योतक शब्द हैं। मात्र 9-10 ब्रह्मवादिनी स्त्रियों को ही वास्तविक मानवीय स्त्रियों की सज्ञा दी जा सकती है।

इसी सन्दर्भ मे उल्लेखनीय है कि वैदिक शिक्षा का स्थान पितृगृह नहीं अपितु गुरुगृह होता था। तत्कालीन सामाजिक सरचना में सभी स्त्रियों का पुरुषों के समान गुरुकुल में जाकर विद्याध्ययन करना सभव प्रतीत नहीं होता। पुत्रियाँ सामान्यत. पितृगृह में रहकर भावी जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा ग्रहण करती थीं। कुछ विद्वान् आचार्यों की पुत्रिया पिता के द्वारा पूर्ण शिक्षा प्राप्त करती थीं। अथर्ववेद में मृत्युपर्यन्त पिता के पास रहने वाली पुत्रियों का उल्लेख प्राप्त है। याज्ञिक कार्यों के सम्पादन मे विशिष्टीकरण के अभाव में ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक कर्मकाण्डो में भी स्त्रियो की मौन सहभागिता ही थी।

वेद और नारी स्वातन्त्र्य

डॉ0 शुभदा वाजपे

असोशिएट प्रोफेसर हिन्दी-विभाग

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद -500007

वैदिककाल मे बालविवाह और दहेज जैसी कुरीतियाँ नहीं थी। सबसे महत्त्वपूर्ण सस्कार 'उपनयन' कन्याओं का भी होता था और तब वे वेदपठन हेतु पात्रता प्राप्त करती थी। वे जानती थी कि उन्हें वेदाध्ययन का अधिकार है। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार एक युवती ने अपने प्रेमी से विवाह करने के लिए इसलिए इन्कार कर दिया, क्योंकि वह उसे कुछ वैदिक सिद्धान्त और विचार बताने को तैयार नहीं हुआ (2 3 10) घोषा प्रौढावस्था तक कुआरी रहीं। सुलभा को उचित पति नहीं मिला, किन्तु दहेज की वजह से विवाह न होने के उदाहरण नहीं हैं। अध्ययन करने वाली कन्याएँ 'सद्योवधू' और 'ब्रह्मवादिनी' श्रेणियों में विभक्त की गई हैं। वधू पति के कुल की रक्षिका और पालनकर्ता बताई गई है। (अथर्ववेद-1 काण्ड 14 सूक्त) वर्तमान समाज के अनेक वर्गों मे बालविवाह और दहेज जैसी कुप्रथाएँ प्रचलित हैं। इनके निराकरण हेतु कानून होते हुए भी हम उन पर विजय नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। अत नैतिक और धर्मशास्त्रीय दबाव बनाने हेतु यह वेदवाणी हमारी सहायक है।

वेदे राष्ट्रवादः

ज्योत्स्ना त्रिपाठी

प्रवक्ता-सस्कृत-विभाग

ग प स पी जी कालेज, सुल्तानपुर-उ० प्र०

राष्ट्रवादोऽद्यतनचिन्तने विशिष्ट महत्त्वमावहति। राष्ट्रविषयिकी विचारणा विविधान् विकल्पान् विदधाति। तत्र सामाजिक-धार्मिक-राजनैतिक-सास्कृतिकादिधारान् अवधृत्य राष्ट्रस्य या सकल्पना प्रस्ताविता सन्ति तासा सर्वासापि सकल्पनाना सुविशद स्वरूप वेदे वरीवर्ति। सैवावधारणा च सर्वासामापि परवर्तिनीनामवधारणाना मूलमस्ति। तत्र सर्वेष्वापि राष्ट्रनिर्माणघटकेषु सामञ्जस्यमस्ति। क्वापि कश्चित् सघर्षो नास्ति, अस्यैव सामञ्जस्यस्वरूप प्रस्तोतुमस्मिन् शोधपत्रे सप्रमाण प्रयासः कृतो वर्तते।

वेदेषु-राष्ट्रिय-भावना

प्रकाशचन्द्र पन्त (शोधच्छात्र)

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय

हरिद्वारमुत्तराञ्चलम् (भारतम्)

अस्माक भारतीयाना सुदृढोऽय विश्वास. यत् यावन्त उदात्तभावा. सन्ति, ते सर्वेऽपि चतुर्षु वेदेषु क्वचित् सूत्ररूपेण क्वचिच्च विशदरूपेण प्राप्यन्ते। राष्ट्रियतायाः भावनेय सर्वप्रथम चतुर्षु वेदेष्वेव दृष्टिपथमुपैति। अथर्ववेदस्य भूमिसूक्त पाठ पाठ श्राव श्राव वा कस्य हृदये देशभक्तिभावना नोत्पद्यते, अस्माक मतमिद सर्वथा सत्य, यत् यादृशी राष्ट्रियभावना पृथिवीसूक्ते विद्यते न तादृशी अन्यस्मिन् कस्मिन्नप्यन्यभाषाविरचिते साहित्ये। केचन जना. व्याहरन्ति राष्ट्रशब्द आग्लानामवदानमिति। परमसत्यमिद कथनम्। अस्माक वैदिकवाङ्मये राष्ट्रशब्द वैदिकै ऋषिभि मुहुर्मुहु प्रयुज्यते। स्वराज्यस्योद्घोषोऽपि **"अर्चन् ननु स्वराज्यम्"** इत्यादिषु अमृतमयवचनेषु नितरा दरीदृश्यते। शोधपत्रेऽस्मिन् वैदिकसाहित्ये प्रतिपादिता. राष्ट्रियताया. भावा नातिविस्तरेण प्रस्तूयन्ते।

राष्ट्रिय एकता एवं अखण्डता की वेदमूलकता

डॉ० (श्रीमती) वसुन्धरा रिहानी,

दयानन्द वैदिक शोधपीठ,

पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ- 160014

राष्ट्रिय एकता एक भावना है और राष्ट्रिय अखण्डता एक स्थिति है। वेदो में मानव की आध्यात्मिक, वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक व राष्ट्रोन्नति के नानाविध उपदेश यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। अथर्ववेद का पृथिवीसूक्त, जिसमें तिरेसठ मन्त्र हैं, मातृभूमि के यशोगान तथा राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत सूक्त हैं और इसका प्रत्येक मन्त्र अभिधा, लक्षणा और व्यजना इन तीनो

वृत्तियों में से किसी एक वृत्ति के माध्यम से राष्ट्रिय एकता एव अखण्डता की भावना को सजोये हुए है। यहाँ इतना और स्पष्ट हो जाना चाहिए कि जिस राष्ट्रिय एकता एव अखण्डता की हम बात करते हैं उसे न तो केवल पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से बताया जा सकता है और न ही सभा-समितियो मे बौद्धिक चर्चा से। उसके लिए आवश्यक है कि अथर्ववेद के बारहवे काण्ड के प्रथम सूक्त का पारायण कर उस पर चिन्तन और मनन किया जाए। उक्त सूक्त मे कहा गया है कि किसी भी राष्ट्र की एकता एव अखण्डता के लिए उसके नागरिकों के मन में **सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ** अर्थात् सत्यप्रियता, धर्मनिष्ठा, सयम, स्वाध्याय, परस्पर सौहार्द्र, सौमनस्य स्वार्थत्याग आदि गुणो का होना परमावश्यक है। **माता भूमि पुत्रो अह पृथिव्या.** की उक्ति तभी सार्थक होगी जब देशवासियों को उनका भरण-पोषण करने वाली और स्वर्ण आदि रमणीय पदार्थो को देने वाली- विश्वभरा, वसुधानी, हिरण्यवक्षा, जगत् निवेशिनी धरती माँ के प्रति अपने कर्त्तव्यो का बोध होगा और यह कर्त्तव्यबोध और निजत्वबोध तभी सम्भव होगा, जब राष्ट्रवासी राष्ट्र के भौतिक स्वरूप और उसके भौगोलिक विस्तार से परिचित होगे। इस प्रकार हम देखते है कि अथर्ववेद का पृथिवीसूक्त मातृभूमि की पूजा अर्चना के साथ राष्ट्रिय एकता एव अखण्डता का भी अनुपम निदर्शन कराता है।

वैदिक राष्ट्र की परिकल्पना

वन्दना (शोध-छात्रा)

सस्कृत-विभाग, पजाब विश्वविद्यालय

चण्डीगढ।

वेदो मे राष्ट्र की न केवल परिकल्पना ही वर्णित है, अपितु उसके आधारभूत-तत्त्वों, उपयोगिता, महत्ता तथा उसके प्रति लोगो के दायित्वो एव कर्त्तव्यो का भी भलीभांति उपदेश दिया गया है। '**वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता** ' अर्थात् हम राष्ट्र मे रहते हुए राष्ट्र के प्रति अग्रणी होकर जागरूक रहें। इसी प्रकार अथर्ववेद मे '**अभिवर्धताम् पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम्**' कहकर राष्ट्र को दुग्धादि से समृद्ध करने की कामना की गई है। यजुर्वेद से उद्धृत वैदिक राष्ट्रिय प्रार्थना '**आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो**' वेद के सर्वोदयात्मक सर्वांगपूर्ण उदार दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है तथा अथर्ववेद के भूमिसूक्त के अनेक सूत्र राष्ट्रियता के परिचायक हैं, जिनमे मातृभूमि की वन्दना का माहात्म्य वर्णित है। वेदों में सामूहिक जीवन व्यतीत करने का सदेश मिलता है।

वैदिक वाङ्मय में राष्ट्रिय भावना

डॉ सुनीता जायसवाल

विभागाध्यक्षा- संस्कृत
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चकिया, चन्दौली (उ0प्र0)

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में वैदिक ऋषियो एव मनीषियों ने भारतीय नागरिको के हृदय मे भारतभूमि के प्रति आकर्षण एव समर्पण का भाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से भारत की रत्नगर्भा वसुन्धरा, ऋतुओं, रत्नों, वन, पर्वत, झरने, नदी, सरोवर, अन्न, जल, औषधियो, पशु-पक्षी आदि विभिन्न प्राकृतिक सम्पदाओं एव भारत के नैसर्गिक सुषमा की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए स्वराष्ट्र को स्वर्ग से भी अधिक गरीयसी बताकर उसे 'जननी' के पद से अलकृत किया है। अपने देश, अपनी धरती तथा अपनी जन्मभूमि को माता' एव 'मातृभूमि' की सज्ञा से सम्बोधित करने की शिक्षा सर्वप्रथम हमें वेदो से ही प्राप्त होती है। अथर्ववेद में कहा गया है- **'माता भूमि. पुत्रो अहं पृथिव्या '** अर्थात् भूमि मेरी माता है और हम उसके पुत्र अर्थात् सन्तान हैं। वैदिक वाङ्मय में मातृभूमि को अपना सर्वस्व स्वीकार करते हुए स्वराष्ट्र की स्वतन्त्रता, समृद्धि, सतत् उन्नति, राष्ट्र की रक्षा, राष्ट्र की एकता, अखण्डता एव सगठन, राष्ट्रिय शक्ति एव सामर्थ्य के विकास, राष्ट्र के शत्रुओ के सहार, राष्ट्र के नागरिको को जाति धर्म एव भाषागत भेदभाव से सर्वथा रहित होने तथा मातृभूमि की प्रतिष्ठा को बनाए रखने, स्वराष्ट्र के कल्याण में सदैव तन-मन-धन से तत्पर रहने, राष्ट्र भक्ति, राष्ट्रप्रेम एव राष्ट्राराधना की विविध राष्ट्रिय भावनाएँ प्रभूत एव अपरिमित रूप मे परिलक्षित होती हैं।

वेदों में राष्ट्रियता का आह्वान

राजकुमार उपाध्याय मणि
वाराणसी।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद मे विवेचित राष्ट्रिय चिन्तन आधुनिक समय मे अत्यन्त प्रासंगिक एव उपादेय है। इसमे वर्णित राष्ट्र की अवधारणा एव राष्ट्रिय एकता के लिए उद्‌बोधन किसी भी राष्ट्रजागरण के लिए नव सदेश है। इन वैदिक ऋचाओं के राष्ट्रिय आह्वान से आज पुन भारत को गौरवशाली राष्ट्र के साथ अत्यन्त समृद्धिशाली राष्ट्र के रूप मे बनाया जा सकता है। विश्व में भारत देश के अग्रणी होने पर ही विश्वशान्ति की कल्पना की जा सकती है तभी विश्व-बन्धुत्व की कल्पना साकार हो पायेगी।

वैदिक कर्ममीमांसा

डॉ0 महावीर, डी लिट्
आचार्य, सस्कृत-विभाग
गुरुकुल कागडी, वि वि हरिद्वार

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा.। एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।' वेद, कर्म करते हुए सौ वर्ष जीवित रहने का सन्देश देता है। भौतिक और आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये कर्म ही एक मात्र उपाय है। वैदिक सस्कृति में श्रमशील एव कर्मनिष्ठ जीवन को श्रेष्ठ माना गया है। ऋग्वेद मे कहा गया है- जो मनुष्य श्रम नहीं करता, देवता भी उससे मित्रता नहीं करते'- **न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।** ऋग् 4/33/11 अथर्ववेद का ऋषि कर्म पर विश्वास को अभिव्यक्त करता हुआ घोषणा करता है- **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित**। अथर्व 7/52/8 न केवल वैदिक संहितायें अपितु ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद्, रामायण एव महाभारत आदि ग्रन्थ भी कर्म की महिमा प्रतिपादित करते हैं। वैदिक मनीषा सासारिक विविधता का मूल आधार अथवा कारण कर्म को मानती है। सुख-दुख, ऐश्वर्य-अनैश्वर्य, अमृत-मृत्यु, मान-अपमान,सफलता-असफलता, जय-पराजय आदि का हेतु कर्म ही है। महाभारतकार वेदव्यास कहते है- **यथा धेनुसहस्त्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्। एवं पुराकृत कर्म कर्त्तारमनुगच्छति।।** कर्म और पुर्नजन्म ऐसे प्रबल सिद्धान्त है, जिन पर वैदिक सस्कृति का भव्य प्रासाद अधिष्ठित है। कर्म को सामान्य रूप से पापकर्म और पुण्यकर्म की दो श्रेणियो मे विभक्त किया जाता है, किन्तु सूक्ष्म विचार करने पर कर्म के अनेक रूप परिलक्षित होते हैं। कर्म को कर्त्तव्य का वाचक मान लेने पर चारो आश्रमो एव चारो वर्णो के कर्म, पारिवारिक सदस्यों के कर्म, राजा और प्रजा, गुरु और शिष्य के कर्म आदि इसके अनेक रूप देखे जा सकते है। इन कर्मो को पूर्ण निष्ठा, योग्यता के साथ सम्पादित करना कल्याण का हेतु है। कृत कर्म का फल अवश्यमेव प्राप्त होता है- **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम्।** वैदिक वाङ्मय मे यत्र-तत्र-सर्वत्र कर्म सम्बन्धी चिन्तन प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध लेख मे कर्म की इस अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय दर्शन का वैदिक आधार

डॉ0 जयदेव वेदालकार
पूर्व प्रोफेसर एव अध्यक्ष दर्शन-विभाग
गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यायल, हरिद्वार

वेदों में दर्शन की सभी प्रकार की धारणाये या मान्यतायें उपलब्ध हैं। मध्यकालीन युग मे

दर्शन अनेक वादों एव सम्प्रदायो में विकसित हुआ है, जिसमें मुख्य धाराए द्वैतवाद, त्रैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद आदि दर्शन के अनेक सम्प्रदाय माने जाते हैं। मध्यकालीन समस्त आचार्य अपने दर्शन का स्रोत वैदिक साहित्य में ढूँढने का प्रयास करते हैं। वेदों मे दर्शन के प्रमुख सूक्त, जिन सूक्तों में दार्शनिकों ने अपने-अपने दार्शनिक मतो को पुष्ट किया है, उन सूक्तो मे सर्वप्रथम सूक्त नासदीय-सूक्त माना जाता है। इस सूक्त में जगत् उत्पत्ति का बहुत ही सूक्ष्म एव गम्भीर विवेचन प्रस्तुत हुआ हैं। इसमें वेद स्वय प्रश्न उपस्थित करता है कि यह सृष्टि कहाँ से आई है? किसने इस की रचना की है? सृष्टि से पूर्व न असत् था नहीं सत् था। वेद के भाष्यकारो ने इस सूक्त की व्याख्या अनेक प्रकार से की है। पुरुषसूक्त में दार्शनिक अवधारणाओं को विस्तार रूप मे प्रस्तुत किया गया है। यह सूक्त ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में समान रूप से विवेचित है। इस सूक्त में पुरुष का विस्तृत दार्शनिक अध्ययन सूक्ष्म रूप में मिलता है। उसी पुरुष से अखिल ब्रह्माण्ड का निर्माण होता है। यह विश्वरूप पुरुष बह्माण्ड की अपेक्षा बहुत बडा है। यह समस्त विश्व उसके एक पाद मे निहित हैं, उसके तीन पाद अमृतरूप द्युलोक मे स्थित हैं। अथर्ववेद के स्कम्भ-सूक्त में सर्वाधार ब्रह्म को प्रश्नात्मक दृष्टिकोण से लेते हुए विस्तृत वर्णन किया गया है। यह जो ऋत, श्रद्धा, आप जिस ब्रह्म मे स्थित हैं, वह ब्रह्म कौन है? ऋग्वेद के अदिति सूक्त में सृष्टि सरचना का वर्णन रहस्यमय दृष्टि कोण से प्रस्तुत किया गया है।

ऋग्वेद में 'धर्म' पद प्रयोग

डॉ0 वेदपाल, रीडर सस्कृत
जनता वैदिक कालेज
बडौत (बागपत)

भारतीय मनीषा की दृष्टि मे इहलौकिक एव पारलौकिक उन्नति का आधार 'धर्म' है, किन्तु जर्मन विद्वान् फारबाख के मत मे धर्म एक पुरातन बुराई है, जो मनुष्य मात्र में है। मनुष्य का बीमार हृदय ही सब धर्मों का मूल है, सब दु खो का कारण है। हेराक्लिटोज ने इसे पवित्र बीमारी का नाम दिया है, फिटशे ने इसे पूर्णत अव्यावहारिक कहा है तो कैण्ट के अनुसार धर्म सदाचार है। हर्बर्ट डब्ल्यू श्नेडर की दृष्टि मे धर्म पूर्वजो के विश्वास से कुछ भी ज्यादा नहीं हैं कुछ पश्चिमी विद्वान् धर्म को अफीम तक कहते रहे हैं। धर्म के सम्बन्ध मे वर्तमान में सर्वाधिक जानकारी धर्मसूत्रो मे उपलब्ध होती है। उपलभ्यमान धर्मसूत्रो मे गौतम (600-300 ई0पू0) को प्राचीनतम माना जाता है गौतम के अनुसार धर्म का मूल वेद और वेदज्ञों का आचरण है आपस्तम्ब, वसिष्ठ आदि धर्मसूत्रकार भी वेद को ही धर्म का मूल स्वीकार करते हैं। प्रस्तुत पत्र में मात्र ऋग्वेद संहिता के आधार पर ही

धर्म' पद का विवेचन किया जा रहा है। ऋग्वेद के 74 मन्त्रों में 75 बार धर्म' या अधर्मन्' शब्द उपलब्ध होता है। वहाँ पर यह शब्द प्रायः सज्ञा या विशेषण के रूप में सामान्यत नपुसकलिग में प्रयुक्त हुआ है। कुछ स्थलों पर इसका प्रयोग पुल्लिग मे भी मिलता है। ऋग्वेद मे धर्म शब्द कर्म, जगदुपकार कर्म, धार्मिकविधि, प्राचीन नियम, अग्निहोत्रादिक कर्म, सत्यभाषणादि व्रत तथा ब्रह्मचर्यादि आश्रम अर्थ का अभिधायक है।

शास्त्रयोनित्वात्- वल्लभ का श्रौत दृष्टिकोण

श्रीमती डॉ वसुन्धरा रिहानी

भारतीय वैदिक दर्शन परम्परा मे जगत् कारणत्कव पक्ष को लेकर गम्भीर चिन्तन हुआ है। यद्यपि वैदिक दार्शनिक गौतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि, जैमिनी, वादरायण आदि अनेक ऋषियों ने इस पक्ष पर गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है किन्तु सभी एक मत नहीं है। किसी ने जगत् सृष्टि के कारण को अचेतन स्वीकार किया है तो किसी ने चेतन। जैसे- न्याय-वैशेषिक ने परमाणु, साख्य-योग ने प्रकृति वेदना ने ब्रह्म को स्वीकार किया है। यहाँ पर प्रश्न सहज ही उत्पन्न होता है कि जगत् कारणत्व मे यह मतभेद कैसा है? जब सभी वैदिक श्रुतियों को ही प्रमाण रूप में ग्रहण करते है तो विभिन्नता क्यो है? इस विभिन्नता, मतभेद के स्पष्टीकरण के लिए यह प्रस्तुत शोध पत्र प्रस्तावित है, जो जगत के परमकारणभूत ब्रह्म को शुद्ध अद्वैत मानने वाले वल्लभ के श्रौत दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमे शास्त्र को कारण या प्रमाण के रूप मे समन्वित किया गया है।

वेदमूलकं भर्तृहरिदर्शनम्

डॉ कामदेव झा

सस्कृत विभागध्यक्ष

डी ए.वी कालेज, नन्योला, अम्बाला, हरियाणा (भारत)

वाक्यपदीयकारभर्तृहरे· दर्शन वेदमूलकमस्तीत्यत्र नास्ति किल सन्देहावकाश। कृत्स्न तस्य दर्शन वेदाधृतमस्ति। नामाख्यातोपसर्गनिपताना परिकल्पना, शब्दस्य नित्यानित्यविचारः, सप्तविभक्तिविभागविचार·, सर्गोद्भवप्रलयमोक्षाणा विचारा वैदिकमन्त्रदेवोद्भूताः। विचारवैविध्यमेतदेकस्मिन्नेव मन्त्र अनुस्यूत दरीदृश्यते।

व्यष्टिसमष्टिश्रेयस्साधने त्रिवर्गप्राधान्यम्-वैदिकमनुशीलनम्

न्यालि अनुपमा (शोधच्छात्रा)

राष्ट्रिय-सस्कृत-विद्यापीठम्, तिरुपति ।

वेदसंहितासु भारतीयताया तत्त्वनिरूपणार्थम् आवश्यक समग्र परिकर सर्वत्र लभ्यते। तेन साक वसुधैव कुटुम्बभावनाऽपि लोके सर्वप्रथम वेदेष्वेवोपलभ्यते-**'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** इत्युद्घोषियद्भि वैदिकमन्त्रद्रष्टृभि समस्त विश्वम् आर्य भवत्विति तत्साधनमार्गोऽपि आविष्क्रियते।

आर्य्याणां वैदिकत्वमतप्रत्याख्यानविवेचनम्

डॉ0 गणेशीलाल सुथार, निदेशक

पण्डित मधुसूदन ओझा, शोधप्रकोष्ठ

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

आर्या मूलतो भारतवासिन॰ परदेशाद्वा इहागता विषये पाश्चात्या भारतीया पुराविदोऽतितरा विप्रतिपद्यन्ते। एशियामध्यदेशादागता आर्य्यवीरा भारतवर्षीयमूलनिवास्यनार्यतातिपरिभावका इति प्रत्यपादि मोक्षमूलरप्रभृतिभि पाश्चात्यविपश्चिद्भि । तन्मतानुयायिभिरनेकैर्भारतीयविद्वद्भिरपि आर्य्याणा वैदिशिकत्व समर्थितम्। कतिपयैर्भारतीयविद्वद्भि पाश्चात्यवित्परिकल्पितमतमेतत् प्रत्याख्याय आर्य्याणा मौलिकभारतीयत्वसिद्धान्त तर्कप्रकरै स्थापित । यथार्थावधारण कृत्वा विप्रतिपत्तेरस्यापाकरणमत्यन्तमपेक्षितम्।

विपर्यय के बीच सत्य की अन्वेषणात्मक कथा है कठोपनिषद्

डॉ0 दीपक कुमार

अध्यक्ष सस्कृत-विभाग महाराजा कॉलेज, आरा,

वीर के0 सिह वि0वि0, आरा

कठोपनिषद्' नचिकेता तथा यम सवाद मे निबद्ध एक रोचक एव गभीर दार्शनिक कथा है, जिसमे लोभ के बीच त्याग या दान, प्रेय के मध्य श्रेय, जीवन के बीच मृत्यु, मिथ्या-जगत् के बीच एकमात्र सत्य परम-तत्त्व आदि की चर्चा है। सम्पूर्ण दार्शनिक-कथा पर दृष्टि डाली जाए। तो 'कठोपनिषद्' की कथा के प्रत्येक चरण में विपरीत अवस्थाओं में ही सत्य की अभिव्यक्ति होती है। यही कारण है कि कालान्तर मे शङ्कराचार्य ने 'ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या' कह कर मिथ्यात्व के बीच सत्य की स्थापना की। यू तो यदि प्रमुख उपनिषदो मे निहित श्वेतकेतु-प्रवहण गैवालि (छान्दो) आरुणि-अश्वपति कैकेय (छान्दो0), गार्ग्य 31 अजातशत्रु (बृहदा) आदि सम्वादो पर भी ध्यान दें, तो सत्य की स्थापना के प्रयास दिखते हैं किन्तु कठोपनिषद् की अन्वेष्णात्मक शैली धाराप्रवाह एव

स्पष्ट है।

भारतीय षड्दर्शनों की वेदमूलकता

डॉ0 रामप्रकाशवर्णी, डी लिट्
रीडर एव अध्यक्ष सस्कृत-विभाग
एल आर.(पी जी) कॉलेज जसराना
फीरोजाबाद (उ0प्र0)

भारतीय प्राच्यपरम्परा में सर्वज्ञानमयो हि स:' कह कर वेद को विविध ज्ञान-विज्ञान का आकर' माना जाता रहा है। महर्षि स्वा0 दयानन्द सरस्वती भी इसे सभी सत्यविद्याओं का पुस्तक' मानते हैं। अत जिस प्रकार अन्यान्य अनेक विद्याओं का मूल वेद में विद्यमान है ठीक उसी प्रकार भारतीय षड्दर्शन भी सर्वात्मना वेदमूलक हैं। दर्शनविद्या के उच्चकोटिक सिद्धान्त जो कि तत्तद् दर्शनमें विशाल वटवृक्ष की भाँति पुष्पित और पल्लवित दृष्टिगत होते हैं, वे सभी बीज रूप से वेद मे उपन्यस्त हैं। हम उन्हें यहाँ एकैकश उद्देशमात्र ही प्रस्तुत कर रहे हैं। इन सभी का विस्तृत विवरण शोध लेख मे प्रस्तुत किया गया है।

वेदों में एकेश्वरवाद की अवधारणा

पवन कुमार
गुरु नानक अध्ययन विभाग
गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय
अमृतसर, पजाब

ज्ञेय का अर्थ परब्रह्म परमात्मा है। विचार करने पर प्रतीत होता है कि ज्ञेय उसे कहते हैं जो जाना जा सके, जानने योग्य हो अथवा उसे जानना आवश्यक हो। इन तीनो में प्रथम जाना जा सकने वाला ज्ञेय है ससार, क्योंकि यह नश्वर जगत् ही इन्द्रियो के द्वारा या अन्त.करण के द्वारा जाना जाता है तथा जिन साधनों से हम ससार को जानते हैं, वह साधन वास्तव मे इस ज्ञेय ससार के ही अन्तर्गत है। इस ससार का जानना भी उपयोगी है, पर वह जानना है उसके त्याग के लिये। अर्थात् यह ससार ज्ञेय होते हुए भी त्याज्य है। वस्तुत· ज्ञेय एकमात्र ईश्वर ही है। वह एक है। वेद मे अग्नि, इन्द्र, वरुण, रुद्र, मरुत् आदि देवता वाचक नामों को देखकर अनेक देवो की कल्पना की गयी परन्तु वेद की अन्त.साक्षी से यह विदित होता है कि वेद का उपास्य देव एक है। इसको प्रजापति, ओम्,

परमेश्वर आदि नामों से अभिहित किया जाता है। अग्नि, इन्द्र, वरुण, रुद्र आदि नाम उस एक देव के ही विभिन्न गुणवाचक नाम हैं।

विश्वकर्मा-सूक्त में ईश्वरास्तित्त्व की सिद्धिः न्याय-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

डॉ0 अनीता राजपाल

वरिष्ठ-प्रवक्ता संस्कृत-विभाग

हिन्दू-महाविद्यालय, दिल्ली-विश्वविद्यालय, दिल्ली

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' इस अभेद-बुद्धि का पल्लवन दशम-मण्डल के दार्शनिक सूक्तों मे हुआ। सृष्टि के निर्माण में एक व्यापक शक्ति 'विश्वकर्मन्' का, एक बार इन्द्र की (8 87) और एक बार 'सर्वस्रष्टा' के रूप मे सूर्य की उपाधि के रूप में उल्लेख मिलता है। ऋग्वैदिक काल के उत्तरार्द्ध में सर्वोच्च देवता के रूप में दशम मण्डल के दो सूक्तो (81, 82) में 'विश्वकर्मन्' की स्तुति आयी है। उन्हें विश्वतश्चक्षु, विश्वतोबाहु, विश्वतोमुख, विश्वतस्पाद् पदों द्वारा सर्वदर्शी अंकित किया गया है। उन्हें 'धाता, विधाता' और 'परमसदृक्' कहा है। ब्राह्मणों में विश्वकर्मन् प्रजापति के तद्रूप हैं, किन्तु पुराणो में देवों के शिल्पी के रूप मे इनकी धारणा विकसित हुई। नैयायिक उदयानाचार्य ने 'न्यायकुसुमाञ्जलि' मे विश्वकर्मन्-सूक्त के आधार पर जगत् के सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर तत्त्व के अस्वीकार करने वाले चार्वाकादि के मत का खण्डन करके ईश्वरास्तित्त्व की सिद्धि तथा जगत्स्रष्टा के रूप मे ईश्वर की प्रतिष्ठा की है। परमेश्वर में सर्वात्मकत्व सर्वव्यापकत्व होने से ईश्वर का जगत् कर्तृत्व कुम्भकारादि के कर्तृत्व से विलक्षण है। यदि परमेश्वर जगत् का स्रष्टा है। तो वह जगत् सृष्टि में अधिष्ठान है या उपादान है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए आचार्य उदयन ने विश्वकर्मन्-सूक्त के द्वितीय मन्त्र (10 81 2) को आधार बनाया है तथा मन्त्र में प्रयुक्त छ विषेशणो के आधार पर ईश्वर स्वरूप की समीक्षा प्रस्तुत की है। सर्वज्ञ, सर्वव्यापक ईश्वर अधिष्ठान और उपादान के निरपेक्ष होकर जगत् का सृजन करता है। जयन्त भट्ट तथा आचार्य विश्वनाथ ने भी इसी मन्त्र के आधार पर ईश्वर की निमित्तकारण के रूप मे सिद्धि की है।

आस्तिक दर्शनों की वेदमूलकता

डॉ श्रीमती प्रमोद बाला मिश्रा

रीडर, सस्कृत-विभाग

बरेली कालेज, बरेली (उ0प्र0)

आस्तिक दर्शन परम्परा में प्रमा, प्रमाण, प्रमाता, प्रमिति आदि शब्दों का प्रयोग ज्ञानमीमासा

के अन्तर्गत किया जाता है। वेद में प्रमा, प्रमेय, प्रमिति, प्रमाता आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है जिनकी सूक्ष्म विवेचना से उनका दार्शनिक पक्ष स्पष्ट होगा। ऋग्वेद के एक मन्त्र में प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द-तीनों प्रमाणों का मूल दृष्टिगत होता है। वेद स्वय ही शब्द प्रमाण के सर्वोच्च निदर्शन हैं। वेद-मन्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति के विषय मे अनेक सिद्धान्तों का सूत्र रूप में सकेत है। वहाँ असत् को जगत् का उपादान कारण माना गया है। साख्य द्वारा स्वीकृत सृष्टि का मूल कारण प्रधान व प्रकृति का सकेत भी वेद मन्त्रों में प्राप्त होता है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि-प्रक्रिया का विशद वर्णन है। इस सूक्त से स्पष्ट है कि सृष्टि के आरम्भ में एक कोई अव्यक्त चेतन था जिसे कालान्तर मे तपस् कहा गया। वस्तुत· यही सर्वव्यापी शक्ति है। इसी से ज्ञान-शक्ति, इच्छा-शक्ति और क्रिया-शक्ति की अभिव्यक्ति होती है। वेद-मन्त्रो से स्पष्ट है कि उस समय के लोग सृष्टि के घटक तत्त्वो से पूर्णतया अभिज्ञ हैं। उन्हें क्षिति, जल, तैजस्, वायु आकाशादि के गुणों का पूर्ण परिचय है। वे कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड दोनो से परिचित हैं। कर्मकाण्ड मे उपासना का तथा ज्ञानकाण्ड में अध्यात्मपरक विवेचन है। कर्मकाण्ड के नियमानुसार साधक को सदाचार का पालन और अन्तःकरण की शुद्धि अवश्य करनी चाहिए। इस प्रकार पवित्र अन्त करण सवेष्ठित, सदाचारयुक्त जीवन-शैली को आस्तिक दर्शनो के कर्ममीमासा का मूलस्रोत कहा जा सकता है। इस शोध-पत्र के माध्यम से मैंने वेद मे निर्दिष्ट आस्तिक दर्शन के मूल तत्त्वो को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

सांख्यदर्शन की वेदमूलकता

डॉ ज्ञानप्रकाश शास्त्री

प्रोफेसर एव अध्यक्ष श्रद्धानन्द वैदिक शोधसस्थान

गु का वि वि हरिद्वार

भारतीय मनीषा यह मानती है कि समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूलस्रोत वेद है। इसका कारण यह है कि वेद अपौरुषेय हैं। जिस परमपिता परमात्मा ने जीवसृष्टि के जीवन के लिये सभी प्रकार के ससाधन प्रदान किये, उसीने जीवन यापन तथा उससे आगे भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के पथ को प्रशस्त करने के लिये वेद का ज्ञान मानवमात्र को प्रदान किया।

जीव और ईश्वर में यद्यपि अनेक विषमतायें हैं, तथापि इन दोनो के मध्य एक ऐसी विषमता है जो ईश्वरत्व का आधार बिन्दु है और वह है कि जहाँ जीव भोक्ता है, वहाँ ईश्वर भोक्ता नहीं है। इसको यदि दर्शन की भाषा में कहें तो कह सकते हैं कि नित्य साक्षी होने से एक ईश्वर है और दूसरा साक्षी न हो पाने के कारण ही जीव है। इसी सत्य का उद्घाटन **'द्वा सुपर्णा'** मन्त्र के **'अश्नन्'** और **'अनश्नन्'** के माध्यम से व्यक्त किया गया है। उक्त सत्य का विस्तृत विवेचन

शोधपत्र में किया जायेगा।

पुरुषविज्ञान की वैदिकीय अवधारणा

डॉ० रामबहादुर शुक्ल
वरिष्ठ प्रवक्ता, स्नातकोत्तर सस्कृत-विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू 180006

ऋग्वेद (10-192-3)- यथापूर्वमकल्पयत्, यजुर्वेद (40-8) याथातथ्यतोऽर्थान् शाश्वतीभ्य. समाभ्य., ऋग्वेद (10-90-7-6) का पुरुषसूक्त एव शुक्ल यजुर्वेद के माध्यन्दिन संहिता (30-17) के विवरण पुरुष विज्ञान की वैदिकीय अवधारणा के मूलस्रोत हैं। वास्तव मे पुरुष विज्ञान की वैदिकीय अवस्थिति त्रिक् पर आधारित् है, मन-प्राण-वाक्, सत्त्व-रज-तम, तीनलोक, तीन छन्द, तीन मात्राओं के साथ-साथ इसमें मैत्रायिणी उपनिषद् में विवर्णित ओम् की मीमासा भी सम्पृक्त है।

वेदों में अध्यात्म

डॉ दीनदयाल वेदालकार
प्रवक्ता- गु का विश्वविद्यालय
675, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार।

वेद मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। विश्व सस्कृति के विकास मे वेदो का अद्वितीय योगदान है भारतीय सस्कृति का तो प्राण ही वेद है। आज भी भारतीय समाज वेद ज्ञान से चैतन्य बना हुआ है। आचार्य सायण वेद के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए ऋग्वेदभाष्यभूमिका मे लिखते हैं-**इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारस्या- लौकिकमुपायं यो वेदयति स वेद**। अभीष्ट को प्राप्त करने और अनिष्ट से छूटने का जो उपायबोध कराये वह वेद है। महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदो को सभी सत्य विद्याओ का पुस्तक स्वीकार करते हैं। वेद ज्ञान, कर्म और उपासना के साथ साथ आधिभौतिक, आधिदैविक एव आध्यात्मिक तीन प्रकार के मन्त्रो से परिपूर्ण हैं। यास्काचार्य इनका विभाजन इस प्रकार करते हैं-**तास्त्रिविध ऋच**। ऋचाये तीन प्रकार की हैं-**परोक्षकृत, प्रत्यक्षकृत और आध्यात्मिक।** आध्यात्मिक मन्त्र उत्तमपुरुषयोगी होते हैं, अहम् इस सर्वनाम से सयुक्त होते हैं। शोध-पत्र मे आध्यात्मिक सूक्तों अर्थात्- प्रजापति स्कम्भ, पुरुष के साथ ईश्वर का स्वरूप, जीवात्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष प्राप्ति के उपाय आदि आध्यात्मिक ज्ञान के मूल जो वेदो मे विद्यमान है उन्हीं की प्रस्तुति है।

वेद में योगविद्या

(सुधा सिह) शोध छात्रा

सस्कृत-विभाग, कला सकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

वेद मे प्राप्त इन सभी विद्याओ का मूल मुख्यतः योगविद्या' मे सन्निहित दृष्टिगोचर होता हैं, क्योंकि बुद्धि की जिस परम स्थिति पर पहुँचकर इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, वह स्थिति योग में ही सम्भव है। जैसा कि यजुर्वेद के इस मन्त्र द्वारा स्पष्ट हैं, जिसमे योगी के लिए कहा गया है-**अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्। सजूर्देवेभिर्वरै· परैश्चान्तर्य्यामे मघवन् मादयस्व॥** (यजु0 7/5) इस मन्त्र का आशय यह है कि हे मधवन् योगी। परमात्मा ने तेरे अन्दर ही सूर्य, पृथिवी, अन्तरिक्ष को स्थापित किया हुआ है। इनमें सयम करने से तुझे इन सबसे सम्बन्धित समस्त ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तथा अपने शरीर के अन्दर ही विद्यमान 33 देवताओं का ज्ञान प्राप्त करके अपने से जो न्यून स्थिति वाले हैं और जो अपने से अधिक योगैश्वर्य वाले हैं उनसे अन्तर्मुख होकर उपासना योग मे निमग्न होकर आनन्द प्राप्त करके उन सबको भी परमानन्द का प्रसाद वितरित करके प्रसन्न किया कर।

प्रस्तुत मन्त्र से यह भी स्पष्ट हैं कि मानव शरीर मे ही सृष्टि के सम्पूर्ण तत्त्व निहित हैं। इस देह मे ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ प्रतिनिधिवत् कार्य कर रही हैं। अत यदि इस ब्रह्माण्डरूपी विराट् शरीर मे निवास करने वाले परमपुरुष का ही ज्ञान प्राप्त कर लिया जाए तो सब कुछ ज्ञात हो जाएगा क्योंकि **पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्** (यजु0 31/2) और इसे जानने का मार्ग योग' हैं। इसी विद्या से ऋषियों ने सभी तत्त्वों का साक्षात्कार किया।

वेदों में योग

कमलप्रीत धरनी (शोधच्छात्र)

पजाब विश्वविद्यालय,

चण्डीगढ।

योग भारतीय सस्कृति की प्राचीन विद्याओं में से एक समीचीन सम्पत्ति है। योग ही सर्वोत्तम 'मोक्षोपाय है' यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है। योग ऐहिक और आमुष्मिक कल्याण का हेतु है, इसमें किसी प्रकार का भी विवाद नहीं है। भगवान् से मिलने मे योग कर्म, भक्ति व ज्ञान का प्रधान सहायक है। नास्तिक दर्शनों में भी योग को किसी न किसी रूप में मान्यता दी है। धर्म प्रचारकों

तथा दार्शनिकों ने योग का विवेचन अपनी-अपनी दृष्टि से किया है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों में योग का वर्णन कहीं न कहीं मिल ही जाता है। इनमें योग का स्वरूप कोई विशेष सुनिबद्ध रूप से प्राप्त नहीं होता है। आज भी वेदों में योग का मूल प्राप्त होता है। इसको पतञ्जलि ने ई0पू0 200 के लगभग सुनिबद्ध रूप से प्रस्तुत किया। अष्टाग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) ब्रह्मरूपी परमात्मा को पाने के लिए सीढियों का काम करते हैं। यही सर्वजीवहितकारी सब सम्प्रदायों के अनुयायियों, उपासको साधको के परम हितकर योग का संक्षिप्त विज्ञान है।

ईशावास्योपनिषद् में कर्मतत्त्व

देवाशु कुमार शोध-छात्र

जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)

मनुष्य को आत्यन्तिक शान्ति भोगों से प्राप्त नही हो सकती है। यह सर्वमान्य सत्य दुनिया के सभी चिन्तक मानते हैं। इस शान्ति के लिये अनन्त पर की सत्ता में शरणस्थली बनानी ही होगी। उस अन्त पर की उपलब्धि एव मार्ग ही समस्त दार्शनिकों का अटल लक्ष्य रहा है। इस सत्ता का भिन्न-भिन्न मार्ग एव भिन्न प्रकार से अनुभव के कारण अनेक वादों की उत्पत्ति हुई। इस सत्ता का शोध सवर्धन अनादिकाल से होता आया है एव सभी समवेत स्वर से सहमत भी हैं कि इसका प्राथमिक एव प्रामाणिक विवरण वेद ही देता है। वेद अनादि एव मन्त्र अजन्मा है। वेदो को तीन काण्डो में विषय की दृष्टि से विभक्त किया गया है। प्रस्तुत शोध-निबन्ध वेदों के ज्ञानकाण्ड से सम्बन्ध रखता है एवम् जीवन का सरल एव सुगम मार्ग शान्ति के साथ प्रशस्त करता हैं सभी कुछ ईश का है और हम ईश के है पुन अतिक्रमण क्यों? आक्रमण क्यों? केवल ईश की ही प्राप्ति हो जाने से सब कुछ अपना ही तो है। '**शुद्धमपापविद्धम्**' की अवस्था मे आते ही '**को मोह क शोक एकत्वमनुपश्यत** ' की दृष्टि प्राप्त होते ही, सदेह मुक्त होना ही वेदों का प्रथम ज्ञान है एव इसे आज के सासारिक प्रयोगशाला में बुद्व, विवेकानन्द, गाधी आदि महर्षियों ने सफल परीक्षोपरान्त इसकी जयपताका भी लहरायी है। जरूरत है इस पर पुन व्यावहारिकता की। ससार एव समाज दोनो ही इस वैज्ञानिक पद्धति से अपने चरम पर पहुँचेगे। सत्ता का मार्ग एव जीवन का उद्देश्य ही इस शोधपत्र में 'ईशोवास्योपनिषद्' के सन्दर्भ मे इंगित किया गया है।

ईशावास्योपनिषद् में ब्रह्म का स्वरूप एवं कर्मवाद

सत्येन्द्र कुमार सिह (शोध-छात्र)

जयप्रकाश विश्वावद्यालय, छप्परा (बिहार)

ईश्वर की व्यापकता एव निष्काम कर्म का समूल मन्त्र ही ईशोपनिषद् में समाहित कर दिया गया है। गीता के सम्पूर्ण निष्काम योग या ज्ञानयोग एव भक्तियोग का निचोड ईशोपनिषद् है। जिससे मनुष्य को आत्यन्तिक शान्ति प्राप्त होती है। इस सर्वमान्य सत्य को दुनिया के सभी चिन्तक मानते है। शान्ति के लिए अनन्त परम सत्ता में जाना ही होगा। इस सत्य का मार्ग भिन्न-भिन्न होने पर भी ईश्वरार्पण का कोई विकल्प नही है। सभी कुछ ईश का है और हम भी ईश्वर के हैं। पुन. अतिक्रमण, आक्रमण, आक्रोश इनका अस्तित्त्व ही शेष नही रहता। ईशप्राप्ति होने मात्र से ही सब कुछ अपना हो जाता है।

सामवेद में गंधर्व-विद्या

रचना शर्मा

(आध्यापिका) सगीत विभाग

4/4 मैत्रेयी निवास, वनस्थली विद्यापीठ

राज, जिला (टोंक), पिन 304022

वेद, सगीत के उद्गम-स्थल और प्राचीनतम रूप के सरक्षक माने गये हैं। ऋग्वेद मन्त्रद्रष्टा ऋषियों का आर्षकाव्य है, सामवेद ऋग्वेदीय ऋचाओं का सगीतबद्ध सग्रह है। गन्धर्ववेद सामवेद का उपवेद है। वैदिक काल में सामवेद के मन्त्रो से निस्सृत होकर सगीत आज हमारे सामने विभिन्न रूपों में व्यक्त हो रहा है। सगीत का आधारभूत ग्रन्थ गन्धर्ववेद लुप्त माना जाता है, लेकिन नारद, नन्दिकेश्वर, मतग, कोहल, शारगदेव, भरतमुनि आदि विद्वानों द्वारा प्रणीत ग्रन्थों में नाद, ध्वनि एव सगीत शास्त्र विषयक अतुल सिद्धान्त उपलब्ध हैं, जिनके आधार पर गन्धर्व वेद को समझा जा सकता है। गन्धर्ववेद गुरुमुखी विद्या होने के कारण पूर्णतया लुप्त नहीं होने पाया। हमारे पूर्वजों ने अपनी स्मृतियों में जिस सगीत को सुरक्षित रखा था, उन्हे आने वाली पीढियो को मौखिक रूप से विरासत में दे दिया।

मन-मीमांसाः- शुक्ल यजुर्वेद के सन्दर्भ में

डॉ0 निरञ्जन पटेल,

प्रवक्ता-सस्कृत-विभाग,

सरदार पटेल विश्वविद्यालय,

पल्लभ विद्या नगर आणद

शुक्ल यजुर्वेद के 34 वे अध्याय मे शिवसकल्प सूक्त प्राप्त होता है। इस सूक्त मे निरूपित मन्त्र मनोविज्ञान का सार प्रस्तुत करते है। इस सूक्त मे मनोविज्ञान के मूलभूत गूढतत्त्व को काव्यमयी भाषा मे व्यक्त किया है। ऋषि ने अपने मन को कल्याणकारी सकल्पो से युक्त होने की कामना की है। मन के द्वारा ही सभा कर्मेन्द्रियाँ एव ज्ञानेन्द्रियाँ अपने अपने विषयो को ग्रहण करने मे समर्थ होती है। दर्शनो मे निरूपित मन (मीमासा) का मूल वेद है-**तन्मे मन· शिवसंकल्पमस्तु'**। वेद काल का मन शुभ सकल्पो से युक्त होगा व उसे इस जीवन मे किसी प्रकार के दुःख का सामना नही करना पडेगा

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

श्रीमती माला प्यासी

सहायक प्राध्यापक सस्कृत

शास महाकोशल कला एव वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म प्र)

शुक्ल यजुर्वेद के शिवसङ्कल्प सूक्त मे यह प्रार्थना की गई है कि मेरा मन कल्याणकारी सकल्प वाला हो। वैदिक ऋषियो की धारणा बडी विलक्षण थी, कही वे **सर्वे भवन्तु सुखिन** की बात करते है तो कही मेरा मन शिव सकल्प वाला होवे यह प्रार्थना करते हैं। सगच्छध्व वाले ऋषि की दृष्टि मन के विषय मे आत्मकेन्द्रित सी दिखाई देती है। इस स्वार्थपरक चिन्तन मे एक वैज्ञानिक सच की धारा प्रवाहित हो रही है। शिवसङ्कल्प सूक्त मन के गुण-धर्म के सबध मे निम्न सूत्र देता है-1 मन अजर और अमर है। 2 श्रोत्रादि इन्द्रियाँ बाहर रहती है किन्तु मन प्राणियो के अन्दर रहता है। 3 मन ज्ञान का जनक एव प्रकाशक है। 4 मन इन्द्रियो का प्रकाशक एव आत्मा का दर्शक है। समग्र विश्व में प्रागैतिहासिक काल से लेकर अद्यतन युग तक मन पर एक गहन चिन्तन की समृद्ध परम्परा देखी जाती है। मन के सबध मे भारतीय दर्शन भी पर्याप्त प्रकाश डालते है। आधुनिक विचारको ने तो मन को लेकर मनोविज्ञान अभिधान वाले एक नए शास्त्र का ही गठन कर दिया है अत मन के चिन्तन का नवीन एव महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ मनोविज्ञान से भी प्राप्त होता है। इस प्रकार दर्शन औन मनोविज्ञान के सन्दर्भो को लेकर वैदिक वाङ्मय मे मन की अवधारणा एव उसकी शिवसङ्कल्पमयता का प्रकाशन ही प्रस्तुत आलेख का लक्ष्य है।

वैदिक मनस्तत्त्व विमर्श

' बलराम प्रसाद शर्मा

7 हनुमान नगर दुर्ग (छत्तीसगढ)

वेद मन्त्र में सुनिश्चित घोषणा है कि मन ज्योति विशेष है। सभी ज्योति का अग्नि में समावेश है जिसे यजुर्वेद के अन्य मन्त्र में **अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः** (3-9) इस प्रकार कहा गया है। मन से चन्द्रमा की उत्पत्ति को **चन्द्रमा मनसो जात.** इस मन्त्रभाग में सिद्ध किया गया है। अवश्य ही यह चन्द्रमा नामक तत्त्व पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा से व्यापक अर्थ वाला होगा। वेद में निर्विवाद रूप से मन के सबध में हुई यह विवेचना सबको आकर्षित करने के साथ ही साथ चमत्कृत भी करती है। यह विषय किसी सीमित देश, काल, धर्म, वर्ण अथवा जाति-समूह के लिए नहीं है, अपितु सार्वकालिक एव सर्वव्यापी है तथा प्रत्येक व्यक्ति के मन और बुद्धि को प्रभावित करता है। मन तो प्रत्येक चेतन प्राणी, विशेष करके मनुष्य को अत्यत परिचित लगता है। परन्तु प्राय जनसाधारण यह मान लेता है कि मृत्यु होने पर शरीर के साथ मन भी मर जाता है। यहाँ वेद मे मन को अमर बताकर यह भी घोषणा की गई है कि उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान को पूरी तरह पकडने की शक्ति है। इतना ही नहीं मन की गति सबसे तेज है, यहाँ तक कि प्रकाश की गति से भी अधिक है। वस्तुतः प्रकाश की गति नापी जा चुकी है, परतु मन की गति मापना सभव नहीं हो सका है।

संस्कृतवाङ्मयोक्तसंस्काराणां वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये उपादेयता

पूजा देवी

शोधच्छात्रा कालिदास अकादमी

(सस्कृत सगीत एव फाईन आर्टस्)

सञ्चारक्रान्तिविज्ञानययोः द्रुतगामि शृखला यया गत्या वर्धमानायते, तत्रैव कस्मिंश्चित् कोणे उपेक्षिता. वैदिकसस्कारा. अद्य मानवस्य पुनराह्वान कुर्वन्तस्सन्ति।

वर्तमान संदर्भ में भारतीय संस्कार

प्रो0 भगवान् देव पाडेय

हिन्दी-विभाग गु0 का0 वि0 वि0, हरिद्वार

वेद ससार के प्राचीन लिखित ज्ञानकोश हैं, मनुस्मृति में बताया गया है कि-वेद का ज्ञाता सेनाओ का सघटन, न्याय व्यवस्था का पालन, राज्य सचालन तथा समृद्ध समाज का निर्माण कर विश्वकल्याण कर सकता है- वेद में वर्ण, आश्रम व्यवस्था तथा इनके कार्यों को व्यवस्थित ढग से बताया गया है, लेकिन सस्कारों के सम्बन्ध में सूत्र स्मृतिकारों, सस्कृत नीतिकारों ने अनेक मार्ग

सुझाते हुए जीवन क्रम को निर्धारित कर सोलह सस्कार बताए है, इनके अतिरिक्त देशकाल एव परिस्थितियो के अनुसार सस्कारो का सृजन होता रहा है सस्कार भारतीय जीवन पद्धति है, जिनसे वर्तमान परिस्थितियो मे सघर्ष की शक्ति अर्जित की जाती है, हमारे सास्कृतिक विकास का कोई स्वरूप नही बन पाया है, जिससे हम आधुनिकता की अधड मे भटकते जा रहे है। आचग्ण का द्वैतता बौद्धिकता का मानदण्ड बन गई है। ऐसे मे हमारे सस्कारो की क्या स्थिति है, इस पर विचार आवश्यक प्रतीत होता है, इन्ही बातो को ध्यान मे रखकर भारतीय सस्कारो की दशा पर विचार प्रस्तुत किया गया है।

सूत्रसाहित्य में जातकर्म संस्कार

देशराज शर्मा (शोध छात्र)

सस्कृत-विभाग, पजाब विश्वविद्यालय

कुन्दन कॉटेज, समर हिल, शिमला

जातकर्म सस्कार नवजात शिशु के शारीरिक-बौद्धिक विकास स्वास्थ्य रक्षा एव आयुष्य की पुष्टि का प्रतीक है। शिशु के जन्म के समय जो सस्कार किया जाता है वह जातकर्म' कहलाता है। यह सस्कार नालच्छेदन से पूर्व किया जाता है। जिसमे स्वर्ण शलाका/चम्मच के साथ नवजात-शिशु को शहद, घी, दही का सम्मिश्रण चटाया जाना अभीष्ट है। जिससे शिशु विवेकी, यशस्वी, दीर्घजीवी एव नीरोग होता है। इसी के साथ आयुर्वेदीय ग्रन्थो मे इस सम्मिश्रण का चटाया जाना वैज्ञानिक आधार माना गया है, जहाँ इसे वात-पित्त एव कफ का उपशामक मानते हुए विविध अनिष्टजन्य सम्भावित दुष्परिणामो से सहज सुरक्षा का प्रतीक माना गया है।

श्रौतयज्ञानां विद्याप्रकाशकत्वम्

वेदव्रत.

वेदा· सर्वसत्यविद्याना प्रकाशका सन्तीति वय मन्यामहे। तत्र चतुर्णामपि वेदाना सर्वासाञ्च शाखाना विज्ञान कर्म-उपासना-ज्ञानकाण्डभेदात् चत्वारो विषया· सन्ति। यथा आधुनिकशिक्षाया विद्याग्रहणस्य प्रकारद्वय तथैव वेदविद्याग्रहणेऽपि शाब्द प्रायोगिकञ्च प्रकारद्वय वर्त्तेते। यतो हि आधुनिकशिक्षाप्रणाली वृत्तिविशेषमधिकृत्य प्रवर्तते तस्मात् सदैव सर्वत्र अशतयौव प्रवर्त्तनात् तस्या प्रायोगिकस्वरूप व्यावहारिकरूपवृत्तिविशेषेण सह स्पष्टतया सम्बध्नाति प्रतिभाति च, तथा वेदविषये नास्ति, यतो हि वेदा. सर्वांसा विद्याना प्रकाशका. सन्ति। तत्र अशतया विद्यायाः प्रकाशन प्रायो न भवति, परन्तु प्रायोगिकप्रकारे प्रतीकरूपेण पदार्थान् क्रियाश्च स्वीकृत्य, शाब्देन प्रकारेण विवृत्य

अनेकविधविद्या प्रकाश्यते, तच्च विवरण नैरुक्तप्रक्रियया निदानगाथादिप्रक्रियया वा भवति। एतस्मात् कारणात् महर्षिदयानन्दसरस्वतीस्वामिभिरुक्तम्-

तत्र द्वितीयो विषय कर्मकाण्डाख्य•, स सर्वः क्रियामयोऽस्ति। नैतेन विना विद्याभ्यासज्ञाने अपि पूर्णे भवत । कुत•? बाह्यमानसव्यवहारयोः बाह्याभ्यन्तरे युक्तत्त्वात्। स चानेकविधोऽस्ति। परन्तु तस्यापि खलु द्वौ मुख्यौ भेदौ स्त., एक• परमपुरुषार्थसिध्यर्थोऽर्थाद्य ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाज्ञापालनधर्मानुष्ठानज्ञानेन मोक्षमेव साधयितुम् प्रवर्त्तते। अपरो लोकव्यवहारसिद्धये धर्मेणार्थकामौ निर्वर्त्तयितु सयोज्यते। (ऋ0 भा0 भू0 वेदोत्पत्तिविषये) अपि च कर्मसपत्तिर्मन्त्रो वेदे कर्मणामग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ताना शिल्पविद्यासाधनाना च सम्पत्ति• सम्पन्नता सयोगो भवति येन स मन्त्रो वेदे देवताशब्देन गृह्यते। (ऋ0 भा0 भू0 वेदोत्पत्तिविषये)। अर्थं द्योतयति क्रियारूप ज्ञानरूप वा इति सतो मन्त्राणा देवत्वम् अर्थात् अर्थप्रकाशकत्वमस्ति, स च अर्थ ब्राह्मणग्रन्थेषु पूर्वं ऋषिभिः मुख्यतया कर्मकाण्डम् अधिकृत्य प्रायोगिकरूपेण प्रकाशित•। ब्राह्मणग्रन्थाश्च श्रुतित सरक्षिता , तस्मात् तत्र प्रकाशित कर्मकाण्ड श्रौतकर्मनामधेयम्, स च पुन• कल्प• समर्थनादिति।

एवञ्च श्रौतकर्मकाण्डसाहाय्येन बहव्य. विद्या• प्रकाश्यन्ते। यदि वय वेदविद्याप्रसारयितुकामाश्चेत्, श्रौतयज्ञसस्थाना ज्ञानम् आयोजनञ्च करणीय अस्माभि•। उत्तरभारते तु श्रौतयज्ञा• प्रायः नष्टमूला किन्तु दक्षिणापथे परपरया अद्यावधिरक्षिता सन्ति। विद्यारक्षणे प्रसारे च व्यावहारिकरूपेण तस्या अनुष्ठान प्रकाशनञ्च आवश्यकमिति, स च पुन कल्पसूत्रेषु प्रतिपादित, तेषा व्यवहारप्रतिपादने समर्थत्वात्। तत्र च वेदविद्याया नित्योपयोग । नित्योपयोगत्वात् अभ्यास. तेन च विद्याया. रक्षण वर्धनञ्चेति।

वेदों में यज्ञ विधान

पुरोहित प्रफुल्ल एम वरोडा

सस्कृत महाविद्यालय

एम एस यूनिवर्सिटी वडोदरा, गुजरात।

विद् धातु से धञ् प्रत्यय लगाकर वेद शब्द बना है। विद् धातु का अर्थ है- जानना अर्थात् वेद के विषयों को जानना वेद का विषय है- धर्म (कर्त्तव्य) और अधर्म (अकर्त्तव्य) सत्य और असत्य, स्वरूप और अस्वरूप ये सब वेद के विषय हैं। वेद मे सम्पूर्ण यज्ञों का विधान निहित है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र **'यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्'** में यज्ञ को प्रतिपादित करने के लिए बतलाया गया है।

वैदिकयज्ञस्य महत्त्वम्

डॉ धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

हरमू हाउसिग कॉलोनी, राँची (झारखण्ड)

वेदा· खलु ज्ञानराशय.। एतद्देशस्य भारतस्य महत्सौभाग्यमास्ते यत् अत्र विश्वस्य प्राचीनतमममतिविपुल सुसमृद्ध ससारस्य अज्ञानान्धकारापह विश्वकल्याणविधायक वैदिकवाङ्मय विद्यते। विविधविद्याना सकलशास्त्राणा सर्वधर्माणा विश्वसस्कृतीना विभिन्नदर्शनाना कमनीयकलाना च स्रोतांसि वैदिकवाङ्मये विविधयज्ञाना चर्चा पदे पदे दरीदृश्यते। वैदिकसाहित्यस्य महत्त्व सार्वदेशिक सार्वकालिक चास्ते। महर्षिपाणिने. यज-याच-यत-विच्छ-प्रच्छ- रक्षो नङ्' इत्यष्टाध्यायीसूत्रेण 'यज्' धातो· 'नङ्' प्रत्ययसयोगे 'यज्ञ' शब्द. व्युत्पद्यते। 'यज्ञ' शब्दस्य मूलार्थोऽस्ति-देवपूजा-सगतिकरण-दानञ्च। इत्थ यज्ञ विशदार्थे प्रयुज्यते। वस्तुत· कस्यापि देशस्य, समाजस्य, मनुष्यस्य, प्राणिमात्रस्य च कृते यानि कल्याणकराणि श्रेष्ठकर्माणि सन्ति तानि सर्वाणि कर्मजातानि 'यज्ञ' शब्देन व्यपदिश्यते-**'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'**। होमादयस्तु शुभकर्मरूपस्य यज्ञस्य एकम् अशमात्रम्। वेदा., वेदाङ्गानि, उपनिषद·, पुराणानि, दर्शनशास्त्राणि, काव्यादीनि च वैदिकयज्ञस्य माहात्म्य बहुश प्रतिपादयन्ति। यजुर्वेदे यज्ञस्य महत्ता इत्थ प्रतिपादिता- **यज्ञेन यज्ञमजयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यसन्। ते ह नाकं महिमान· सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवा.।'**

हविर्यज्ञेषु चातुर्मास्यानि

डॉ शम्भू कुमार झा

यजुर्वेद-ऋग्वेद-साहित्य धर्मशास्त्राचार्य

प्रवक्ता-सस्कृत-विभाग

अखिला. ऋगादिवेदा यज्ञाय प्रवृत्ता.। शुक्लयजुर्वेदस्य प्रथमे मन्त्रे श्रेष्ठतमाय कर्म्मणे दृश्यते। वैदिक आर्याणा प्रशस्यतम कर्म यज्ञ·। आसीत्। मीमासाया· भाष्यकार शबरस्वामी लिखति- यो हि यागादिकमनुतिष्ठति त धार्मिकमिति समाचक्षते। इति न केवल लोके वेदेऽपि यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्निति यजति शब्दवाच्यमेव धर्मं सम्मानन्ति। दृष्टफलकस्य वेदस्य प्रयोजन यज्ञाना सम्पादनम्। इदानी प्रकृतमनुसृत्य चातुर्मास्य विषये विचारयामि चतुर्मासशब्दात् चातुर्मासाद्यज्ञे ण्यो वक्तव्यः इति वार्तिकेण 'ण्य' प्रत्यये कृते सति चातुर्मास्य शब्द. निष्पद्यते, अर्थात् चतुर्षु भवन्ति चातुर्मास्यानि यज्ञकर्माणि।

यज्ञ और आरोग्य

डॉ0 सुषमा

127/1, राजेन्द्रनगर लेन न0 4, स्ट्रीट न0 4,

देहरादून - 248001

वैदिक ऋषियो को इस बात की पूर्ण जानकारी थी कि आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, ओषधियाँ, अन्न, रेतस् और अन्नरसमय पुरुष ये शृखलान्याय से परस्पर सम्बद्ध है। इनमे से किसी एक मे भी विकृति उत्पन्न होने पर उत्तरवर्ती प्रत्येक मे अनिवार्यतः अनायास ही विकार उत्पन्न होगा, जिसका परिणाम पुरुष (प्राणिमात्र) को भुगतना होगा। यतः प्राणियो की उत्पत्ति अन्न से होती है, अन्न का मूल पर्जन्य है, पर्जन्य यज्ञ से उत्पन्न होता है, अत. मनुष्य को सुखी जीवन जीने के लिए यज्ञकर्म मे निरन्तर प्रवृत्त रहना चाहिए। यजुर्वेद के ऋषि ने चक्षु, श्रोत्र, कर्ण, वाणी आदि बाह्य इन्द्रियो, मन आदि अन्तरिन्द्रियो की ही नही, अपितु सम्पूर्ण आयुष्य की एव सुखमय जीवन की कल्पना यज्ञ से की थी। सुखमय जीवन जीने के लिए यज्ञ की इस अनिवार्यता को समझकर वैदिक ऋषियो ने यज्ञ और जीवन को अभिन्न माना था तथा ऋतु, मास एव सवत्सर आदि के द्वारा उसकी पूर्णता की कामना की थी। निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा सकता है कि यज्ञ आयुष्य का आधार है। इसे जीवन मे अपनाकर कोई भी मानव न केवल पश्येम शरद शतम् की कामना को पूर्ण कर सकता है, अपितु भूयश्च शरद शतात् की भावना को मूर्त रूप देता हुआ आरोग्यमय जीवन को जी सकता है।

वैदिक-यज्ञीय-संस्थाः तथा तासां प्रभावः

मीमासा विद्वान् श्रौती वासुदेव पराञ्जपे

वैभवम्' स 745, 4 मार्ग

24 तम. उपमार्ग विद्यारण्यप्रम्, मैसूर

वैदिकयज्ञविषयके प्रस्तावे प्रथम यज्ञ शब्दविषये विचारो विधेय.। तेन यज्ञस्य समस्तस्य प्रयोगक्षेत्रस्य परिज्ञान समायाति।

यज-देवपूजा-सङ्गतिकरण-दानेषु इति देवपूजाद्यर्थकाद् 'यज' धातोः भावे नङ् करणात् समुत्पन्नोऽय यज्ञ शब्दः। अतः यज्ञशब्दस्य- देवपूजा, सगतिकरण, दान इति त्रयोऽपि अर्था. सम्भवन्ति। देवेति पूर्वपद पूजेति उत्तरपदम्। **'दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु'** इति अनेकार्थाद् दिवु धातोः निष्पन्नः दिव्यतीति देवशब्द.। तस्मात् देवशब्दोऽपि बह्वर्थवान्। पूजेति-सत्कारः, योग्यव्यवहारवाचक.। अत. देवपूजा इत्यस्य शब्दार्थ सर्वै सह यथायोग्य व्यवहरण

सत्कारपूर्वकर्मिति भवति।

प्राकृताना पदार्थाना यथोचितमात्रासु तथा सगतिकरणम्, येन प्राणिना कल्याण, उत्कर्षो वा स्यात्, श्रेष्ठाना धर्मात्मना विदुषा सगश्च। स्वय उपार्जितस्य द्रव्यस्य धन-सम्पत्ति-विद्यादीना प्राणिमात्रस्य कल्याणाय उत्सर्जनम्। एव यज्ञशब्दस्य प्रयोगक्षेत्रम् अतिविस्तृतम्। अत्र च द्रव्ययज्ञे एव मनो-वाक्-कायरूपा त्रिकरणात्मिका क्रिया प्रवर्तते। अत· वैदिक-यज्ञेषु द्रव्ययज्ञस्यैव प्राधान्य पश्याम।

वैदिक यज्ञीय संस्थायें तथा उनका प्रभाव

ऋषिकेश श्रीमाली

शोध छात्र, भारतीय विद्याभवन, मुम्बई

वेद अपौरुषेय है और वेद मे यज्ञ होने के कारण ये भी अपौरुषेय एव अनादि है। स्वय साक्षात् विष्णु ही यज्ञमय है। एव यज्ञो का मूल भी वेद है। वेद मे कर्मकाण्ड प्रधान मन्त्र ज्यादा है यह उपासना एव ज्ञान का प्रथम सोपान है। इसी से परमेश्वर की प्राप्ति होती है। यज्ञ के द्वारा ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, जिसमे सम्पूर्ण सृष्टि के सचलन मे यज्ञ ही प्रधान है। यज्ञ से ही मनुष्य देव बन सकता है। इससे ही प्रेय-श्रेय की प्राप्ति होती है। व्यापक वेददृष्टि से द्रव्यत्यागरुप हवन को ही यज्ञ नही माना है, लेकिन ससार की सभी क्रियाओ को यज्ञ से जोडा है, जिसमे श्रम, भूमि, अन्न सेवा भी यज्ञ मे ही ओत-प्रोत है। यज्ञो मे विशेष 'श्रौतयज्ञ' एव 'स्मार्तयज्ञ प्रधान है।

वेदों में यज्ञीय संस्थाएं एवं उनका प्रवाह

डॉ0 (कु0) अरुण कुमारी सिह

विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र

शास महाकोशल कला एव वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर

साधारण अर्थ मे यज्ञ को एक ऐसी साधारण क्रिया कहा जाता है जिसमे एक विशेष आकार के कुण्ड जो जमीन या धातु का हो सकता है जिसमे अग्नि प्रज्वलित करके समिधाओ को घृत अन्न एव औषधादि मिश्रित सामग्री वेद मन्त्रो के साथ अग्नि मे यजमान द्वारा देवताओ को प्राप्त करने या उन्हें प्रसन्न करने के लिये डाली जाती है, परन्तु यजुर्वेद (5/45) मे इसे हवन कुण्ड से नही जोडा गया। ऐसी धारणा है कि कृत युग के अन्तिम चरण एव त्रेता के प्रथम चरण मे यज्ञ का विधान नही था, परन्तु त्रेता के अन्तिम चरण मे जब लोगो की मेधा शक्ति का ह्रास होने लगा ब्राह्मण एव पिण्डपरक वैदिक विषय समझने मे कठिनाई होने लगी, परस्पर सबध अव्यवस्थित होने लगे, तब पुनः इन्हे समझने के लिये यज्ञरूपक की कल्पना की गयी। वास्तव मे यज्ञीय विधान का

प्रधान वेद यजुर्वेद है। यज्ञ को ईश्वर से जोडते हुये शतपथ ब्राह्मण (1/1/8/8) मे **यज्ञो वै विष्णु** कहते हुये **यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म** माना है। अत यह कहा जाता है कि वर्तमान समय मे जब हम वैश्वीकरण की तरफ बढ रहे है, हमे यज्ञ को पुन॰ सस्थागत रूप मे स्वीकार करना होग।

वेदों में यज्ञ विधान

पुरोहित प्रफुल्ल एम वरोडा

सस्कृत महाविद्यालय

एम एस यूनिवर्सिटी

वडोदरा, गुजरात।

विद् धातु से घञ् प्रत्यय लगाकर वेद शब्द बना है। विद् धातु का अर्थ है- जानना अर्थात् वेद के विषयो को जानना वेद का विषय है- धर्म (कर्त्तव्य) और अधर्म (अकर्त्तव्य) सत्य और असत्य, स्वरूप और अस्वरूप ये सब वेद के विषय हैं। वेद मे सम्पूर्ण यज्ञो का विधान निहित है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र **'यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्'** मे यज्ञ को प्रतिपादित करने के लिए बतलाया गया है। यज्ञ दो प्रकार के होते है-1 श्रौत यज्ञ 2 स्मार्त यज्ञ।

वैदिक यज्ञ का सामाजिक व आर्थिक प्रभाव

डॉ0वी0डी0शर्मा

यजुर्वेद मे विभिन्न प्रकार के यज्ञो की चर्चा की गई है। कर्म के सोपान पर चढने के लिए यजुर्वेद प्रेरित करता है इसलिए इसे कर्मवेद भी कहते है। यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र मे कर्म करने का आदेश है। वेदो मे यज्ञ को कर्म (सत्कर्म) का पर्याय माना गया है। आहुति-यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि, सभी रोग-व्याधियो का इलाज, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कीटपतगो, जीवाणुओ एव रोगाणुओ का शमन समय से पर्याप्त वृष्टि व उसके प्रभाव से धन-धान्य मे वृद्धि, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य मे सुधार यज्ञ-कर्म (सत्कर्म) करने से सामाजिक समरसता मे वृद्धि, कर्तव्य भाव के बोध से राष्ट्रिय स्तर पर सामाजिक आर्थिक गतिविधियो मे शुचिता, ईमानदारी, भ्रष्टाचार पर निरोध के साथ ही आर्थिक समृद्धि, राष्ट्रिय एकता, भाई चारा मे वृद्धि के लिए हमारा वैदिक काल का इतिहास गवाह है। उपर्युक्त यज्ञ-कर्म के आधार पर हम विश्व शक्ति, विश्वगुरु रहे है। हम आर्थिक सामाजिक, सास्कृतिक, आध्यात्मिक रूप से विश्व की महाशक्ति रहे है। विश्व के सारे देश चाहे वे आज की महाशक्तियाँ क्यो न हो हमारा पिछलग्गू बनकर हमे धोखा देकर लूटा और हमारी वैदिक

सस्कृति को नष्ट-भ्रष्टकर दिया। हमारे वेदो पर से हमारा विश्वास समाप्त कर दिया और पहले राजनैतिक आर्थिक रूप से और अब तो मानसिक- मनोवैज्ञानिक रूप से भी हमे गुलाम बना लिया है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः

श्री वल्लभ पाठक, उपाध्यापक
श्री वरोडा सस्कृत महाविद्यालय
वडोदरा, गुजरात।

परमात्मा के नि श्वास भूत वेदो की मुख्य प्रवृत्ति यज्ञो के अनुष्ठान स्वरूप है, यज्ञो द्वारा पर्जन्य-वृष्टि के द्वारा ससार का पालन पोषण होता है। इस प्रकार परमात्मा यज्ञो के निमित्त से ही विश्व का सरक्षण करते है, और यज्ञकर्ता को आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक त्रिविध ताप स्वरूप का आनायास समूल नष्ट होता है तथा सुख आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है। वेद वाङ्मय मे यज्ञ आदि का विवरण विदित होता है, इसमे सर्व प्राचीन सस्कृत भाषा है इसमे अतुलनीय ज्ञान राशि वाले चार वेद के स्वरूप प्राप्त है इसके दो विभाग है प्रथम वैदिक वाङ्मय और दूसरा भौतिक वाङ्मय। वैदिक वाङ्मय मे वेद उपवेद ब्राह्मण ग्रथ, आरण्यक, उपनिषद्, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द इत्यादि माने जाते है। जिस प्रकार सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय मे दृष्टिपात करने से भारतीय सस्कृति के भौगोलिक तत्त्व का ज्ञान प्राप्त है उसी प्रकार यज्ञ यागादिक का विवरण भी प्राप्त होता है।

विविध विज्ञान के आदिस्रोत वेद

डॉ विजयवीर विद्यालकार
पूर्व प्राचार्य, पण्डित नरेन्द्रप्राच्य महाविद्यालय, हैदराबाद
उस्मानिया विश्वविद्यालय

कहा जा सकता है कि वेदो मे नाना विज्ञानो का भण्डार भरा पडा है, जिसके खोज की आवश्यकता है, खोज किये जा रहे है, और उन्हे जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे उपयोगार्थ अपनाया जा रहा है। समय की आवश्यकतानुसार भौतिक विज्ञान और यात्रिक प्रगति ने पाश्चात्य विद्वानो को भी वेदो की वैज्ञानिकता को मानने को विवश किया। अमेरिकावासी विदुषी लिसेज ह्वीलन विल्लोकल के अनुसार वेदो मे धर्मतत्त्व के साथ वैज्ञानिक तथ्यो का भी समावेश है। बिजली, रेडियम, एलैक्ट्रानिक्स, विमान (हवाई जहाज) विद्या आदि सब बीज वेदो के द्रष्टा ऋषियो को ज्ञात प्रतीत

होता है।'

वेदों में अणु बृहत्

डॉ0 आशा शर्मा

प्राचीन काल के जिन विज्ञो ने जगत् की प्रतिष्ठा को समझाने मे **असौ लोक** उपनिषदो मे जिसे-**'ऊर्ध्वमूलमधः शाखम्'** और गीता मे कृष्ण भगवान् ने **'ऊर्ध्वमूलमधःशाखम्'** महान् वृक्ष के रूप मे वर्णित किया, उसी का नाम है ससार, और उसका मूल ऊपर की ओर किसी देश मे है। यहाँ तक की आज विज्ञान भी ऊपर की ओर अगुली करता है। कभी कोपर्निकस ने आदित्यमण्डल की ओर अगुली दिखाकर कहा कि इस सूर्य ने ही हमारी पृथ्वी को तथा नक्षत्रो को धारण किया हुआ है। इसी बात को उषस्ति ने कहा था आदित्य ही वह देवता है जिसका गान स्थावर जगम करते है। **सर्वाणि एव इमानि भूतानि।** सूर्य केवल विश्व मे शक्ति सचार के लिये ही है ऐसा नही। सूर्य जड पदार्थों का मर्म खोलता और मोटी मोटी वस्तुओ को भी प्रकाशित करने के साथ, जड पदार्थो के अणुओ के भीतर ये इलेक्ट्रोन जैसी व्यूह रचना कर रहे है। प्रस्तुत शोधपत्र मे अणु और बृहत् का वेदो मे प्राप्त मूल की प्रस्तुति है।

आधुनिकतम सन्दर्भ में वैदिक वैमानिकी

उमेश कुमार सिह शोध छात्र

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

Hypersonic X- 43 नामक अमेरिकी विमान की तकनीक एव ऋग्वेद के दशम मण्डल के एक ऋषि अनिल वातायन के द्वारा दृष्ट चार मन्त्रो वाले सूक्त की तुलना के साथ ही अन्य भी सम्भावनाओ पर इस शोधपत्र मे विचार प्रस्तुत किये गए है। ध्यातव्य है कि महर्षि वातायन वैमानिकी के आचार्य रहे है, जिनके द्वारा उपदिष्ट वातायन-तन्त्र का उल्लेख हमे महर्षि भरद्वाज के 'बृहद्विमानशास्त्र' मे प्राप्त होता है।

वैदिक साहित्य में जल सम्बन्धी वैज्ञानिक जानकारी

डॉ0 डी डी ओझा एव एफ एम, गोलानी

भूजल-विभाग, जोधपुर 342003

हमारे वेद न केवल आध्यात्मिक ज्ञान वरन् विज्ञान के अपार स्रोत हैं। वेदो मे निहित जानकारी पूर्णतया विज्ञान सम्मत है तथा इस कारण पाश्चात्य वैज्ञानिक भी इस ज्ञान को अपनी भाषा

मे प्राप्त करने हतु लालायित रहते हैं। वैदिक ग्रन्थो मे जल को उत्पत्ति, महत्त्व, जल चक्र, गुणवत्ता, प्रदूषण, सरक्षण, जल सचयन एव उपयोग के बारे मे विस्तृत जानकारी सुलभ है। अथर्ववेद के अनुसार वेदो मे ऑक्सीजन के लिए अग्नि, मित्र, वैश्वानर अग्नि और मातरिश्वा आदि शब्दा का प्रयोग हुआ है तथा हाइड्रोजन के लिए सोम, आपः, सलिल आदि शब्दो का प्रयोग हुआ है। जल मे अग्नि तथा सोम दोनो ही विद्यमान है। यजुर्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण मे जल चक्र का वैज्ञानिक ढग से निरूपण किया गया है। अथर्ववेद मे जल के विविध प्रकारो का वर्णन है जो शरीर विज्ञान की दृष्टि से भी उपादेय है। ऋग्वेद के मन्त्रो मे सृष्टि की उत्पत्ति का कारण भी जल को बताया है। अथर्ववेद की ऋचा मे जल के भैषजीय गुणो का भी विवेचन किया गया है। आयुर्वेद के अनेकानेक ग्रन्थो मे भी जल के औषधिय गुणो का भी वर्णन मिलता है। प्रदूषण, जो वर्तमान सभ्यता का लाभाश है, के रोकने तथा जल एव वायु को प्रदूषित नही करने के स्पष्ट निर्देश कई वैदिक मन्त्रो मे निहित है। जल सचयन हेतु तालाब, कुए आदि जल स्रोतो के निर्माण एव रख रखाव के निर्देश भी वैदिक साहित्य मे मिलते है। अत निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि वैदिक ग्रन्थो मे निहित जानकारी विज्ञान सम्मत है और उसका व्यापक प्रचार प्रसार किया जाना वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे नितान्त आवश्यक है।

आर्य-सभ्यतायां युद्धविज्ञानम्

डॉ0 जर्नादन प्रसाद पाण्डय

साहित्याध्यापक

वी0 यन्0 मेहता सस्कृत महाविद्यालयप्रतापगढस्थ (उ0 प्र0)

कस्यापि राष्ट्रस्य रक्षा तद्देश्यीयनृपतिवर्गेष्वाधारिता तिष्ठति। नृपतयश्च राज्यसचालनार्थं, प्रजाना परिपाललनार्थ राष्ट्रमण्डलस्य निर्माण कुर्वन्ति।1 यतो हि राष्ट्रसरक्षण तेषा मुख्यो धर्मो भवति। राष्ट्रसरक्षणाभावे प्रजासु स्वेच्छाचारिता वर्धते। यथोक्त महामुनिना मनुना-**अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्। रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभु ॥** ऋग्वेदे राजसचालनार्थं राजसभाया 'व्यवस्था त्रिधा भवतीति परिज्ञायते। एका राजार्यसभा तत्र विशेषतो राजकार्याणि भवेयु। द्वितीया-आर्यविद्यासभा तत्र विशेषतो विद्याप्रचारोन्नतिरेव भवति। तृतीया आर्यधर्मसभा तत्र विशेषतो धर्मोन्नतिरधर्ममहानिश्चोपदेशेन कर्तव्या। परन्त्वेतास्तिस्त्रस्सभा सामान्ये कार्येमिलित्वैव सर्वानुत्तमान् व्यवहारान् प्रजासु प्रचारयेयुरिति। (1 ऋग्वद अध्याय 3 उद्धृत ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पृष्ठ-236)

वेदवर्णित संहारक अस्त्र-शस्त्र

अमल चनद्र राय वेदालकार,

गुरुकुल कागडी, विश्वविद्यालय।

वेदो मे शान्ति और प्रेम का सन्देश भी दिया गया है और युद्ध तथा मारक अस्त्र-शस्त्रो का वर्णन भी है। इस विरोधाभास का परिहार यह है कि युद्ध का बिगुल उन आततायी आतकवादियो के लिए बजाया गया है, जो शान्ति की भाषा नही समझते। वेदवर्णित प्रमुख अस्त्र-शस्त्र अप्वा, अग्नेस्त्र, पायव्यास्त्र, पर्जन्यास्त्र, तामसास्त्र, समोहनाम्त्र, ब्रह्मास्त्र, वज्र, पाश, ऋष्टि, धनुष-बाण, सकृ, हेतिवाशी, परशु, नेमि, कुलिश स्वधिति, मेनि आदि है। इसी प्रकार आकाशीय अरमान (बम) और विकराल अस्त्रो का भी वेदो मे वर्णन मिलता है। इस शोधपत्र मे सहारक अस्त्र शास्त्रो का विशद वर्णन प्रस्तुत है।

वैदिक खगोल भौतिकी आकर ब्रह्माण्डीय सृष्टि

महेन्द्र कुमार मिश्र

रीडर श्री वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ

सृष्टि विज्ञान के विवरणो से भरपूर वैदिक वाङ्मय पुराण और महाभारत आदि खगोल भौतिका के आधार ग्रन्थ है। प्राचीन भारतीय विज्ञान को सर्वप्रथम महात्मा बुद्ध ने आहत किया। प्रस्तूयमान शोध निबन्ध मे सृष्टि की आदिम अवस्था क्षोभ, सम्पीडन, अन्तरिक्ष, वायु, अग्नि, आप सूर्य, ग्रह नक्षत्र आदि की सृष्टि पर वैदिक खगोल शास्त्रीय पक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। सस्कृत विज्ञान के अनुसार विद्युत् के शुष्क (नेगेटिव) आग्नेय एव आर्द्र (नेगेटिव) आप तत्त्व है। वैदिक मनीषा मानती है कि सूर्य के ताप का कारण आप परमाणु है। आप का दिव्य बनना और अन्तरिक्ष का मरुत् चक्र एव उससे उत्पन्न वैद्युत् चुम्बकीय क्षेत्र की उत्पत्ति एव इसी के प्रभाव से अयस्मयी पृथ्वी भी चुम्बकीय बनती है। आशाओ और दिशाओ आदि का कर्म और परिधियाँ आज भी अज्ञात है। द्यौ और भू का नैकट्य तद्नु इनका दुरगमन अन्तः इनका दृढण आदि आज भी विज्ञेय है प्रस्तुत शोध पत्र मे खगोल भौतिकी के ऐसे ही कुछ पक्षो पर वैदिकी मनीषा का उद्घाटन किया जायेगा।

विज्ञानगत मूल सूत्रों की व्याख्या एवं आर्यों द्वारा उनकी क्रियान्विति:

रीना सिह (शोध-छात्रा)

सस्कृत-विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

ज्ञान को प्रकट करने वाले न्यूनतम शब्दो का छन्दोबद्ध समूह ही मन्त्र है, जिसका प्रत्येक शब्द सारगर्भित है। वेदो मे न केवल धर्म दर्शनादि है अपितु विज्ञान के वे तत्त्व भी निहित है जिनका

वर्तमान मे प्रयोग हो रहा है। प्राचीन ऋषि वैज्ञानिक वर्तमान ज्ञान-विज्ञान के नियमो से परिचित थे। जिसे सूत्रबद्ध वेदो मे सकेतित किया गया है।

विज्ञान में प्रतिपादित समानता व असमानता की वैदिक विवेचना

प्रो वेद प्रकाश शास्त्री
आचार्य एव उपकुलपति
डॉ आर डी कौशिक प्रोफेसर, रसायन
गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वैदिक साहित्य के अनुसार मानव जगत् मे समानता हेतु नियम बनाए गये, फिर भी वेद के अनुसार असमानता रहती है। कार्य करने का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है, परन्तु कर्मफल का दाता ईश्वर है तथा उसी के नियम प्रकृति के नियम है। अत कर्मफल मे समानता नही है। मैक्सवेल व वोल्ट्जमेन की साख्यकीय सम्भावना गणना पर आधारित एव बाद मे प्रयोगो द्वारा सिद्ध किया गया, सूक्ष्म कणो के मध्य ऊर्जा व गति वितरण भी इसी वैदिक असमानता के अनुरूप है जिससे समाज मे- निम्न, मध्यम व उच्चवर्गों की उत्पत्ति होती है। विज्ञान मे प्रतिपादित यह असमानता वैदिक साहित्य मे वर्णित बिन्दुओ के अनुरूप है।

वेदों में विज्ञान के मूलसूत्र

डॉ0 कमलश कुमार

चत्वारि शृंगा त्रयोऽस्य यादा· .. . ॥' (ऋग्वेद 1 1) जैसे मन्त्रो मे यज्ञ, काव्य, व्याकरण, इत्यादि अनेक शास्त्रीय ज्ञान-विज्ञान के सकेत घटाए गये है। इस प्रकार के उपक्रम से वेद मे तत्तत् शास्त्रो के ज्ञान का विज्ञान ढूँढा गया है। पूर्व काल मे हुए ऐसे प्रयत्नो मे प्राय किसी एक या एकाधिक सम्पूर्ण मन्त्र या मन्त्रो को लेकर उसमे निहित ज्ञान-विज्ञान को देखने-दिखाने का प्रयत्न हुआ है। हमने इस विषय मे एक दूसरी दृष्टि से विचार किया है। वेद का भाषा के रूप मे अध्ययन करने पर पता चलता है कि यहाँ प्राय सभी मन्त्रो मे पादान्त वाक्य की योजना है। यह स्वीकार कर ऐसे वाक्यो मे स्वतन्त्र विचार बिन्दु मानकर पूर्व पर आने वाले वाक्यो से उसका कोई सकलित अर्थ न भी बन सके, तो भी उस मे ज्ञान-विज्ञान के सूत्र देखे जा सकते है। उदाहरण के रूप म **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा.।'** (यजुर्वेद अ 40 1) इसको ही लेवे। इसका पूर्वापर वाक्यो से कोई सम्बन्ध न रख कर, इसे एक स्वतन्त्र वाक्य मान लिया जाय, और फिर उसे अनूदित किया जाय, तो **'त्याग के द्वारा अनन्तर भोग करे।'** यह सन्देश प्राप्त होता है। यह विचार सन्देश आयुर्वेद या चिकित्साशास्त्र

का प्रथम मूल मन्त्र है। इसे कई रूप से घटाया जा सकता है। यह दिनारम्भ के क्रियाकलाप का मार्गदर्शक-सूचक वाक्य है। प्रत्येक मनुष्य को दिन के प्रारम्भ मे प्रथम त्याग (अर्थात् शौच क्रिया) तथा बाद मे भोग (अर्थात् भोजन-पानादि क्रिया) करने के 'स्वास्थ्यसरक्षकसूत्र' तथा प्रथम रोग का त्याग तदनन्तर भोग (अर्थात् रोग के रहते भोग निषेध) का भी इस वाक्य मे सूचन होता है। ऐसे कई विचार इस लेख मे प्रस्तुत है।

काण्व-प्राकृतिक-प्रयोग-विज्ञानम्

डॉ0 लक्ष्मी चन्द्र शास्त्री
वेदवाचस्पति निदेशक
वैदिक-शोधसस्थान कण्वाश्रम
कोटद्वारम् (246149)

शुक्लयजुर्वेदसंहिताअप्रतिरथ-मेधातिथिप्रभृति काण्वर्षिभि प्रोक्ता काण्व सहिता एवेति विश्वविश्रुतम्। विश्वस्य प्रथमा सभ्यता 'विश्ववारा सस्कृति ' यजुर्वेदे (7 14) प्रस्तुता। 'वह्नय पावयन्तु' इति प्राकृतिकप्रयोग विज्ञानसूत्रम्। भवितव्याना द्वाराणि भवन्ति सर्वत्रेति सार्वदेशिक प्रचार। तापसतरु समिद्वन्तो वह्नय., यज्ञवेदि परित सस्तीर्णदर्भा॰ क्लृप्तधिष्ण्या॰ हव्यगन्धै दुरित अपघ्नन्त होतम्रणा परिक्रमावसरे पावयन्ति विश्व इति काण्वाना-प्राकृतिक-प्रयोग-विज्ञानम्।

काण्वीया वैदिकाश्रमनिवासिन सर्वे जना तापसा। सप्तपर्णवेदिका, माधवीलतामण्डपम्, वनज्योत्स्ना, सहकार , समिदाहरण-वृक्षाणामालवालपूरणे च नियुक्ता ब्रह्मचारिण , आज्यधूमोद्गमेन किसलयरुचा भिन्नो राग नदी सैकतलीनहसमिथुना. वानप्रस्था॰, गौरी-गुरो पावना पादा आश्रमे निषण्णा हरिणा , शाखालम्बितवल्कला सन्यासिन , कृष्ण-मृगस्य वामनयन कण्डूयमाना गृहस्थिन एकत सूर्योदय., अपरत चन्द्रास्तगमन, इत्थ तेजोद्वयस्य युगपत् व्यसनोदयाभ्या लोक आत्मदशान्तरेषु नियम्यत इवेति प्रतीयते।

विद्युदूर्जाक्षेत्रे वैदिकवाङ्मयस्य योगदानम्

डॉ0 नवलता, रीडर,
विक्रमाजीतसिहसनातनधर्म महाविद्यालय, कानपुर

ऊर्जाशक्ते वर्तमानयुगे विद्युत् मानवजीवनस्यापरिहार्याङ्गत्वेन कल्प्यते। शक्तिचालितानि यन्त्रोपकरणानि दैनन्दिनजीवनत आरभ्य विश्वस्तरीयप्रकल्पाना शरणमिव सञ्जातानि। निरन्तर वृद्धि गता

जनसड्ख्या, भौतिकजीवनदृष्टिः, वैश्विकविकासस्य ब्रह्माण्डोद्भेदिपरिकल्पनाया. व्यापकस्वरूपमित्येतत्सर्वं साध्यसाधनाभावेऽनुक्षण समस्याक्रान्तमिव दृश्यते। ऊर्जाशक्तेरापूर्त्यनुकूल, विशेषत पर्याप्तपरिमाणे विद्युन्निर्माणस्य ससाधनानामभाव. वैज्ञानिकाना चिन्ताविषयो वर्तते।

सन्दर्भेऽस्मिन् विद्युद्विज्ञानस्य नूतनसरणौ तत्सम्बन्धिमूलसिद्धान्तानामुपेक्षणेन तद्विषयकवर्तमानाना मनागतानाञ्च समस्याना समाधाने वैदिकवाड्मस्य कीदृग्योगदान वर्तते, भवितुमर्हति चेति विचार्य विद्युच्छक्तेः मूलाधारत्वेन वैदिकाग्ने· स्वरूपविश्लेषणमस्मिच्छोधपत्रे कृतमस्ति। प्रसङ्गेऽस्मिन् छान्दोग्योपनिषद मूलाधारत्वेन वैदिकाग्ने स्वरूपविश्लेषणमस्मिच्छोधपत्रे कृतमस्ति।

वेदे कृषि विज्ञानम्

डा0 सुधा बाजपेयी

ए-2 बटलर पैलेस कालोनी,

लखनऊ 226001

वेद· सर्वसत्यविषयाणा कोषो मन्यते तथा रीत्या कृषिविज्ञानस्यापि वेदेषु सम्यक् निदर्शन लभ्यते। भूमे कर्मण· बीजारोपण सिचनम् प्रभृत्य कृषिकर्माणि यत्र तत्र वैदिकवाड्मये वर्णितानि। एतेन परिज्ञायते यत् वैदिका कृषिकर्मस्य वैज्ञानिक परिचय रक्षन्ति स्म अथर्ववेदो विशेषेण कृषिकर्मणा परिचय कारयति, अनेन निश्चयो जायते यत् आथर्वणा. ऋषयः कृषिकर्मविषये वैज्ञानिकीमवधारणा विकासयितु समर्था· समभवन्।

संस्थायी कृषि विकासः वैदिक कृषिचिन्तन

डॉ0 नीरज शर्मा

प्रवक्ता एव यू जी सी रिसर्च अवार्ड फैलो

जी डी गवर्मेंट गर्ल्स कॉलेज अलवर(राज0)

कृषि-सम्बन्धी विभिन्न आयामो पर वैदिक वाड्मय मे पर्याप्त, सूक्ष्म किन्तु व्यापक विचार प्राप्त होते है। कृषि कर्म का महत्त्व, भूमि और वर्गीकरण, जलससाधन तथा सिचाई, कृषि-उपकरण, खाद-बीज तथा उर्वरता, फसल सरक्षण तथा पोषण, वृक्ष-वनस्पति, वृष्टिविद्या, आदि अनेक विषयो पर प्रसगत विवेचन उपलब्ध होते है। ये सभी विवेचन प्रकृति की विराट् शक्तियो के मौलिक महत्त्व के अधीन ही प्रायोज्य है तथा यही सस्थायी कृषि के विकास का जन्म होता है। वैदिक कृषिपद्धति शताब्दियो तक हमारी परम्पराओ मे सुरक्षित रही है। तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्रान्ति ने उत्पादन को

चरम स्थिति तक पहुँचाया है, किन्तु इसने अधिकाधिक उत्पादकता के सघर्ष से गुणात्मकता ह्रास के साथ घोर पर्यावरण-पारिस्थितिकी सकट भी उपस्थित कर दिया है। रासायनिक उर्वरक प्रतिवर्ष हजारो हेक्टेयर भूमि को बजर, अनुर्वर तथा क्षारीय बना रहे है। निरन्तर सूखते जलस्रोत, बढता-तापमान, अनियमित वृष्टि, खाद्यो मे आ रहे कीटनाशी तत्त्व इसी क्रान्ति की ही देन हैं। प्रस्तुत विषय के सन्दर्भ मे परम्परा के इन अनुदेशो के पालन की आवश्यकता है और इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये वैदिक वाड्मय के मार्ग से गुजरना अपरिहार्य है।

वेदः कृषि के विकास के मूल स्रोत

डॉ0 देवेन्द्र सिह सोलकी

रीडर एव अध्यक्ष सस्कृत सजय गाँधी पी जी कॉलिज

सरूरपुर (मेरठ) उ0प्र0

कृषि मानव जीवन के मूल उद्देश्यो मे अन्यतम है, क्योकि प्राणो का पर्याय कहलाये जाने वाले अन्न की उत्पत्ति केवल कृषि कर्म से ही सम्भव है। प्राचीन काल मे हमारे ऋषियो ने वेद के माध्यम से खराब, अनुपजाऊ, बजर, उसरीली एव पथरीली भूमि को किस प्रकार उपजाऊ बनाया जा सकता है, इस तथ्य को भलीभाति सीखा था। वेदो मे स्थान-स्थान पर कृषि से सम्बन्धित मन्त्र भरे पडे है। अथर्ववेद मे कृषि सूक्त मन्त्रो मे किसान को विभिन्न विशेषणो से अलकृत किया गया है और उन्नत कृषि यन्त्रो एव बीज द्वारा खेती करने का आदेश दिया गया है। वर्षा हरित क्रान्ति का मूल आधार निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न औषधय पच्यन्ताम्, यजु 22/22 के द्वारा उक्त कथन की पुष्टि की गई है। वेद मे भूमि सस्कार का सरल उपाय यज्ञ बताया गया है। वेद मन्त्र मे वर्णित है कि यज्ञ के माध्यम से पृथ्वी को सामर्थ्यवान् बनाना चाहिए। कृषि योग्य भूमि मे नित्यश प्रात साय यज्ञ करना चाहिए क्योकि यज्ञ से वनस्पतियो को लाभ व भूमि मे उत्पादन वृद्धि कृषि के लिए हानिकारक तत्त्वो का ह्रास एव पर्यावरण मे शुद्धता एव फसलो का उचित समय पर पकना आदि कृषि के लिए आवश्यक सभी कार्य उचित- रूप से निष्पन्न होते है। यज्ञ मे मन्त्रोच्चारण से कृषि को लाभ होता है, साथ ही यज्ञ राख (भस्म) का भी कृषि की उन्नति मे महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

वेदों में कृषि कर्मः एक अध्ययन

डॉ0 सगीता शर्मा

(जम्मू)

खेतो के माप का भी वर्णन ऋग्वेद मे मिलता है। वैदिक काल के कृषि-कर्म के प्रकारो पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उस समय कृषि आज की भाति होती थी। खेत को हल से जोतकर बीज के योग्य बनाया जाता था। उनके उपजाऊ न होने पर खाद डालने की व्यवस्था थी। खाद के लिए गाय का गोबर (करीष) काम मे लाया जाता था। पक जाने पर हँसुआ से काटते थे, तथा खलिहान मे लाकर भूमि पर माँडते थे, जिससे अनाज डठल से अलग हो जाता था। अनाज को भूसे से अलग किया जाता था। इसे करने वाले व्यक्ति को धान्यकृत कहते थे। बर्तनो से नापकर कोठिलो मे रखते थे। नापने वाले बर्तन को ऊर्दर' कहते थे। तथा उस बडे घर को जिसमे अनाज इकट्ठा रखा जाता था, स्थिवि कहते थे। बोये जाने वाले अनाजो के नाम मन्त्रो मे मिलते है। कृषि की रक्षा के लिए भी मन्त्रो का प्रयोग किया जाता था। वैदिक कृषिकर्म मे बीज बोने की विधि, सिचाई की व्यवस्था, उपज काटने की प्रक्रिया व पशु-पालन इत्यादि का वर्णन शोध-पत्र मे विस्तार से किया जाएगा। वैदिक कालीन कृषि के इस सक्षिप्त वर्णन से विदित होता है कि कृषि प्राचीन आर्यों की सम्पन्नता, समृद्धि एव महिमा की प्रतीक थी।

वेदेषु भूगर्भविज्ञानं सूचनाश्च

डॉ0 श्रीमती कुमुदिनी
रीडर-भारती कालेज
जनकपुरी सी-4 नई दिल्ली-58

वैज्ञानिकयन्त्राभावेऽपि ध्यानानुभवमात्रेण वैदिकमनीषिभि भूगर्भविषयका. बहवः सिद्धान्ता. सूचनाश्च प्रतिपदिता.। ते सर्वे प्रामाणिकाः वैज्ञानिकदृष्टिकोणेन समीचीना.। वेदेष्वनेकविधधातूना बहुमूल्यखनिजाना वर्णन तथा च स्फटिकाश्माभ्रकसीसाचन्द्रस्वर्णञ्जनलौहायस्केत्यादीना धातूना विभिन्नमन्त्रेषु सूचना लभ्यन्ते। प्रमुखत शोधपत्रेऽस्मिन् भूगर्भविज्ञान सूचनाश्च वर्णयिष्यन्ते।

कृषिविज्ञानक्षेत्रे वेदानां योगदानम्

डॉ0 जनार्दन प्रसाद पाण्डेय मणि
वरिष्ठ प्राध्यापक , सस्कृत विभाग , राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लैंसडौन, पौडी-गढवाल, उत्तराचल

वेद· सर्वविधज्ञानविज्ञानकोषो विश्वस्येति प्रसिद्धसारस्वत सवादस्तदाऽत्यन्त समीचीनता बिभर्ति यदा जीवनस्य मुख्याऽऽधारभूताऽन्नाद्युत्पादनविषये महत्त्वपूर्णनिर्देशरहस्य स्वमुखेनाभिव्यनक्ति। **'अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित् कृषस्व'** इति निगदन्ती ऋग्वेदऋचाऽवान्तरकालीनब्राह्मणग्रन्थपर्यन्ता कृषिकर्मणो

वैज्ञानिकी व्याख्यामुद्भावयति। **'योनौ वपतेह बीजम्, नेदीय इत्सृण्य पक्वमेयात्'** इति पक्तिद्वये उर्वराया भूमौ लागूलरेखाकितायामान्तर- पक्तिमध्ये बीजवपन करणीय तदैव सुष्ठु बीज शस्यसम्पत्ति प्रदास्यतीति, तथा च सर्वथा पक्वमेव शस्य मर्दनार्थं कर्तनीयमिति निगदित वर्तते। लागूलकर्षण-वृषभसयोजन-जलसिचन-उर्वरकप्रक्षेपण-कीटादिनिवारणसम्बन्धिन्यो वैज्ञानिका व्यवस्था: सर्वप्रथम विश्वस्मिन् वेदपुरुषकुक्षौ जनिमवापु:। पुनश्च तस्या. प्रचारा. प्रसारा. परिष्काराश्चानुदिन सजाता। शतपथब्राह्मणे तु कर्षण-वपन-लवण-मर्दनरूपे कृत्यचतुष्टये समग्रोऽतिकृषिव्यापारो निरूपित. सम्यक् नियमानुरूप:। वर्षर्तौ बीजवपन शरदृतौ शस्यकर्तनम्, पुनश्च शीतर्तौ बीजवपन ग्रीष्मर्तौ शस्यकर्तनमिति वारक्ष्य शस्योद्गमनमिति व्याख्यात। इदानी कृषकजगत् तामेव व्यवस्था विधिनिषेधनियमै· सह स्वीकृत्य प्रचलति। वेदाना क्षेत्रपतिदेवताऽद्यापि तथैवाभिभासते।

वैदिक-परमाणुविज्ञानम्

डॉ0 शिवशकर मिश्र

व्याख्याता (सर्वदर्शन)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय

सस्कृत विद्यापीठ, नईदिल्ली 17

परमाणुविषयक चिन्तन सहिताब्राह्मणारण्यकोपनिषद्ग्रन्थेषु यत्र तत्र विशृखलित रूपेण प्राप्यते, विशेषत उपनिषदि एतस्य बहुधा विवेचनम्। सम्प्रति निखिलेऽस्मिन् विश्वे परमाणुविषये नूतनातिनूतनान्वेषण क्रियते आधुनिकविज्ञानकविदै। नास्तीदानी परमाणु चरमतम तत्त्वमपितु तन्मध्ये प्रोट्रॉन-न्यूट्रॉन-इलैक्ट्रॉन एतत्त्रिविध तत्त्वाना समवाय. इति विज्ञातम् इत्यग्रे भवत्यनुसन्धानम्। वैदिकपरमाणुविज्ञान भारतीयविज्ञानविदुषा कृते अद्यापि अन्वेषणीयम्। किमसौ परमाणु जगत उपादानकारणम्? किमसौ सूक्ष्मतम: पदार्थ? किमेते गुणवन्त निर्गुणा वा? किमेतन्नित्यमनित्य वा? सादिरनादिर्वा एतत्सर्वं शोधपत्रे वैशद्येन विवेचनीयम्।

वैदिकसंहितासु वास्तुकला

डॉ मीरा द्विवेदी

रीडर, सस्कृत-वैदिकाध्ययन-विभाग

वनस्थलीविद्यापीठम्, टोक (राज)

भारतीयसभ्यतासस्कृतेर्मूलाधारा वेदा एव विद्यन्ते।

धर्मसस्कृतिसाहित्यभाषेतिहासज्ञानविज्ञानकलाना- माधारीकृत्यैतेषा महत्त्व पौरस्त्यपाश्चात्त्यमनीषिभिर्निर्विवादमुररीकृतम्। प्राकृतिकशक्तिसौन्दर्येणाभिभूतैर्वैदिकर्षीभ· कलाक्षेत्रेऽपि स्वप्रतिभाया ललितविलासा. सदर्शिता·। फलत· कारुकलाना (जीवनोपयोगिनीना) चारुकलाना (ललितकलाना) च बहूनि निदर्शनान्युपुलभ्यन्ते सहितासु। ललितात्मकचारुकलामध्ये वास्तुमूर्तिचित्रसगीत- काव्यकलान्तरे च वास्तुकलाया महत्त्वमसंदिग्धमस्ति। क्षेत्रेऽस्मिन्नप्यवलोकयितु शक्यते तात्कालिकजनाना परिष्कृता रुचिमनेकेषु सहितामन्त्रेषु। यद्यपि शास्त्रभूता वास्तुनिर्देशा न दृश्यन्ते तत्र तथापि कलात्मकदृशा या काश्चित् सामग्रय: प्राप्यन्ते ताभिरुत्तरवैदिककाले कल्पादिग्रन्थेषु मानसारमानसोल्लाससमरागणसूत्रधारापराजितपृच्छाप्रभृति- शिल्पशास्त्रग्रन्थेषु च वर्णिताया वास्तुशास्त्रीयपरम्पराया विकासोऽभूदित्यत्र नास्ति काचित् विप्रतिपत्ति·।

समासेन कथयितु शक्यते यत् वैदिकसहितासु विकसितवास्तुकलाया· सुस्पष्टानि निदर्शनानि निहितानि। उत्तरवैदिककाले विकास प्राप्ता इयमेव वास्तुकला शनै. शनै. शास्त्रोन्मुखी जाता। गृह्यसूत्रेषु शास्त्रीयविधानानुसार वास्तुकर्ममगलयागपरीक्षाभूचयनकाष्ठहरणञ्चेत्यादिविविधावास्तुविषया कर्मकाण्डीय-विधानपुरस्कृता प्रोक्ता। सहितासु वर्णिता वास्तुकलैवैतेषामादर्शीभूता आसीदित्यत्र नास्ति सशीतिलव।

वेदेषु वास्तुविज्ञानम्

डॉ0 हरिप्रसाद पाण्डेय

वेदेषु वास्तुविद्या विषयिकी पर्याप्तचर्चा दृश्यते। वैदिकयुगे वास्तुशास्त्रस्य महत्त्वपूर्णं स्थानमासीत्। **'नम वास्तव्याय च वास्तुपाय'** शुक्लयजुर्वेदे रुद्राष्टाध्याय्या द्रष्टु शक्यते। अनेनेद ज्ञायते यत् तस्मिन् युगे वास्तुविद्याया व्यापकत्वमासीत्। वास्तुदेवताया. पूजा-अर्चना-जप-हवनादिकर्माणि अद्यापि गृहे सुखशान्ति धनधान्य-अभिवृद्ध्यर्थं च क्रियते। वेदे वर्णिता एव वास्तुदेवता रूपेण प्रसिद्धि प्राप्तवान् इति वक्तु शक्यते।

विश्वकल्याणाय वैदिकविज्ञानस्य विज्ञापनम्

डॉ0 के सत्यनारायण
प्रवाचक तेलुगु-सस्कृतविभाग
आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय
आन्ध्रप्रदेश. (भारतम्)

धर्मार्थकाममोक्षरूपचतुर्विधपुरुषार्थसाधनेनैव जीवनलक्ष्यसिद्धि भवति। एतत् पुरुषार्थसाधनाय

वैदिकसाहित्यमनवरतमुपयुज्यते। वसुधैव कुटुम्बकमिति उत्पन्नभावना एव विश्वकल्याणाय प्रमुखबीज भवति। एतादृशानि बीजानि वेदेष्वनेकत्रोपलभ्यन्ते विविधमन्त्रेषु। विश्वकल्याणाय विश्वप्रेमपरिवर्धन, कर्तव्यनिर्वहण, आरोग्यपरीक्षण, स्त्रीणामादरण, न्यायमार्गेण धनोपार्जन, जागृतेः वर्धनसकल्पशक्तेः, उदारता, सत्यभाषण, सत्सगम. सुपथगमनमित्याद्यशाः सर्वदोपयुक्ताः भवन्तीति वैदिकसाहित्य विज्ञापयति। एते अशाः वेदेषु विविधमन्त्रेषु सुष्ठु वर्णिताः। एव सर्व मङ्गलकामिता समुपदेशतत्परता प्राक्तनता विविधविषयविचारतादिगुणैस्त्रिष्वपि कालेषूपशोभित वैदिकविज्ञान सर्वदा सर्वथा विश्वकल्याणाय उपकरोतीति विविधैर्मन्त्रैः शोधपत्रे निरूप्यते।

वेदेषु पक्षीणां सूक्ष्मजीवानाञ्च विचारः

डॉ0 (श्रीमती) छायारानी,

वरिष्ठ प्राध्यापक एव अध्यक्ष सस्कृत-विभाग

राज0 स्नात0 महावि0 अगस्त्यमुनि,

रुद्रप्रयाग (उत्तराचल)

अस्य शोधपत्रस्य विषय पशु पक्षीणा सूक्ष्मजीवाना विचारस्यानुसार वेदेष्वाद्यसृष्टौ मानवजीवनमपि जीवविशेषवर्गे अस्ति। अत एव मानवजीवनमपि अध्ययनक्षेत्रे वर्णितम्, तत्पश्चाज्जन्तूनामध्ययनमपेक्षितम्।

वेदों मे पक्षी एवं सूक्ष्मजीवों का विचार

डॉ0 रमेशचन्द्र मुरारी

सस्कृत एकेडमी द्वारका,

गुजरात-361335

सृष्टि मे चतुर्वर्ग की उत्पत्ति बतायी है (1) उद्भिज (2) स्वेदज (3) अण्डज (4) जरायुज। इन मे पक्षी तथा सूक्ष्मजीवो की चर्चा यहाँ की गयी है- सर्व प्रथम नभचर जीवो मे असख्य पक्षियो का वेद वाङ्मय मे नामोल्लेख है। इसी प्रकार वर्तिका, श्येन, बाज, हस, कपिञ्जल, कृष्णशकुण, उलूक (उल्लू) के विषय मे गहन रूप मे कहा गया है-**यदुलूको वदति .. ... .। यस्य दूत प्रहित एष एतत्तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे।** (ऋ 10/166/4) यहाँ उलूक को यम का भविष्यवक्ता दूत कहा गया है, यह पक्षीमृत्यु की सूचना देता है-**तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे।** कपोत, चकवा, तोता (शुक) गीध, मधुमक्खी, की चर्चा अति सूक्ष्म रूप मे की गयी है। पतङ्ग,

मूषकादि, टिड्डियो से अन्न की रक्षा करने की सूचना अथर्ववेद 6/50/2-3 मे व्यवस्थित रूप मे दी गयी है। (ऋ 10/97/1)

अथर्ववेदे-ओषधिविज्ञानम्

डॉ0 सुदेश गौतम

सस्कृत-विभागाध्यक्ष

डी ए वी. कालेज कोटरबाई, शिमला पिन-171202

अथर्ववेदमार्युर्वेदस्य पितरौ स्थानभूत तथ्यमिदम् सर्वविदिमस्ति। अस्मिन् वेदे बहुविधचिकित्सादिना वर्णन मिलति, यथा-सूर्यकिरणचिकित्सा, नीरचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, मृदाचिकित्सा, मणिचिकित्सा, योगचिकित्सा, ध्यानचिकित्सा, यज्ञचिकित्सा शल्यचिकित्सा, व्रतोपवासचिकित्सा, प्राकृतिकचिकित्सा परश्च सर्वेषा चिकित्साविधीनामोषधिचिकित्सा प्रथममास्पद लभते। एषारोग्यलाभ पद्धतिः सर्वसामान्यसुलभास्ति परञ्चास्य ज्ञान न तादृश सुलभ अस्या. ज्ञानाध्यनेन साक प्रयोगविज्ञानस्य समयस्थानस्य चातुरस्य दैहिकशक्ते· ज्ञानमवश्य भवितव्यम्। ओषधि शब्दस्य निष्पत्ति ओष्+धा+कि, स्त्रिया डीप् अपि वा उष्+घञ् वात्र ओष, (दाहे) च धेट् पाने धातो सयोगेन भवति भावोऽस्य यत् देह दाहका ये रोगा· शरीर दहन्ति तान् रोगान् ओषधि धयति चूषति, प्लोषति वा। अस्मिन् शोधसाराशे तासामोषधीना प्रयोगविधि. तथा रोगनिवारणस्य वर्णन नामोल्लेखपूर्वक सम्पूर्ण शोधपत्रे करिष्यामि।

अथर्ववेद में चिकित्सा सिद्धान्त

दीप्ति रस्तोगी (शोध छात्रा)

सस्कृत-विभाग,

वनस्थली विद्यापीठ (राज)

मनुष्य को अपने जीवन मे पुरुषार्थ चतुष्टय का भली प्रकार निर्वहण करने हेतु महत्त्वपूर्ण है कि वह अपने शरीर को स्वस्थ व नीरोगी रखे। इसके लिए चिकित्साशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। अथर्ववेद मे सृष्टि के आरम्भ मे ही इस शास्त्रविषयक ज्ञान का उपदेश दे दिया गया है। इसके अन्तर्गत-शरीर रचना विज्ञान, रक्त प्रवाहचक्र का वर्णन, जलचिकित्सा, सूर्य की किरणो से चिकित्सा, रोगजनक कृमियो को सूर्य-किरणो तथा अग्नि-ताप द्वारा नष्ट करना एव विभिन्न रोग निवारक औषधियो का वर्णन, पुत्रदा औषधि आदि वर्णन दिये गए है। अथर्ववेद मे जन्म के कारण, जन्म व जन्म के बाद की प्रक्रिया एव नीरोगी शरीर हेतु विभिन्न चिकित्सा सिद्धान्तो का वर्णन किया गया है

जिनका आज भी आयुर्वैदिक चिकित्सा विधि के अन्तर्गत प्रयोग किया जा रहा है।

वेदों में चिकित्सा विज्ञान

डॉ0 शक्ति कुमार शर्मा शकुन्त
वरिष्ठ शोध अधिकारी साहित्य सस्थान
जनार्दनराय नागर राज विद्यापीठ उदयपुर (राज0)

अथर्ववेद के कौशिक सूत्र मे रोगो के दो विभाग किये गये हैं-(1) आहार-निमित्तज रोग और (2) अन्य जन्म-पाप निमित्तज रोग। आहार निमितज रोगो की चिकित्सा औषधियो से, अन्य जन्म पाप निमित्तज रोगो की चिकित्सा मन्त्र, हवन, दान आदि से कही गयी है। अथर्ववेद मे रोग को उत्पन्न करने वाले कृमियो को मारने की चर्चा भी की गई है। रोगो के वर्गीकरण मे अभुज, शुष्म और वातज रोगो की चर्चा भी है, अभुज का अर्थ सायण ने कफज व शुष्क का अर्थ पित्तज किया है।

अथर्ववेद में आयुर्वैदिक चिकित्सा एवं ओषधि-निरूपण

प्रो मुरारि वि भट्ट
शामलदास कालेज
भावनगर गुजरात

आयुर्वैदिक चिकित्सा का मूल स्रोत वेद है। धन्वन्तरि ने वेद से उत्पत्ति बतायी है। सुश्रुत के प्रारम्भ मे वेद शब्द का प्रयोग आया है। तथा च सुश्रुतारम्भे- **अथातो वेदोत्पत्तिमध्याय व्याख्यास्याम**। महर्षि चरक आयुर्वेद को शाश्वत मानते है। **सोऽयमायुर्वेद शश्वतो निर्दिश्य तेऽनादित्वात् स्वभावससिद्धिर्लक्षणत्वात् भावस्वभावो नित्यत्वाच्च।** (च सु अ 30) 'आयु' का ज्ञान जिस शिल्प से प्राप्त किया जाता है, वह आयुर्वेद है। उसकी व्याख्या-**आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वा आयुर्विन्दति आयुर्वेद.**। ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल मे **पुनश्च्यवान् चक्रथु युवानम्** उल्लेख है। वेदो मे शिव को प्रथमो दैव्यो भिषक् कहा है तो पुराणो मे **आरोग्य भास्करादिच्छेत्** कहकर सृष्टि को आरोग्यप्रद कहा है।

वेदों में स्वास्थ्य-विज्ञान एवं जीवन-पद्धति के मूल तत्त्व

यतेन्द्र दत्त अमोली

योगविज्ञान-विभाग, देव सस्कृति विश्वविद्यालय
शान्तिकुज, हरिद्वार-249411

प्रस्तुत शोध मे वेदो मे जिस स्वास्थ्यविज्ञान एव जीवनपद्धति की चर्चा करने का हमने प्रयास किया है, वह वेदो से ही नि.सृत हुए आयुर्विज्ञान का वह पहलू है, जिससे मनुष्य मे विराट् के झरोखे खोलने की सामर्थ्य आती है। मनुष्य पृथ्वी माता के वक्षस्थल पर निवास करता है और केवल इस मर्त्यलोक से ही अभिज्ञ है। परन्तु इससे बहुत ऊँचाई पर एक अतिचेतन लोक है, जहाँ दिव्य लोक, प्रकाशमय गुहा मे अवस्थित है। मनुष्य की जाग्रत चेतना के उपरितलीय सस्कारो के नीचे एक अवचेतन या निश्चेतन लोक है और सब वस्तुओ को गर्भरूप मे धारण करने वाली उस रात्रि से लोक-जैसा कि वह उन्हे देखता है, उत्पन्न हुए है। किन्तु ऊपर के ज्योतिर्मय समुद्र तथा नीचे के इस अधकारमय समुद्र के बीच स्थित इन अन्य लोको के विषय मे तथ्य क्या है? ये यहाँ अस्तित्त्व रखते हैं। मनुष्य प्राणजगत् से अपनी प्राणमय सत्ता को और मनोमय जगत् से अपनी मन सत्ता को ग्रहण करता है। वह सदा ही इनके साथ गुप्त आदान प्रदान करता रहता है। यदि वह चाहे तो सचेतन रूप से इनमे प्रवेश कर सकता है और इनके अदर उत्पन्न हो सकता है। वेदो मे वर्णित स्वास्थ्यविज्ञान एव जीवनपद्धति के नवीन आयामो से परिचित होकर ही हम यह जान पाएगे कि यह साकेतिक चर्चाए जीवन के किस स्वास्थ्य को समझाने का प्रयास कर रही है? एव जिस जीवनपद्धति का वर्णन वेदो मे किया गया है, उनसे किस प्रकार जीवन की अन्योन्यतम उपलब्धि को पाया जा सकता है? यही प्रस्तुत शोध की विषय वस्तु होगी।

वैदिक साहित्य में वानस्पतिक चिन्तन

डॉ0 सन्ध्या
जम्मू

भारतीय सस्कृति के इतिहास मे वेदो का स्थान गौरवपूर्ण है। भारतीय आचार-व्यवहार, रहन-सहन, धर्म-कर्म, को भली-भाँति समझने के लिए वेदो का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। वेदो से ही हमे वैदिक सस्कृति का ज्ञान होता है। वैदिक साहित्य मे पर्यावरण चिन्तन का प्रतीक है, उसका प्रकृतिवादी चित्रण। वैदिक युग मे प्रकृति पूजा का विधान था। वैदिक साहित्य मे पर्यावरण से सम्बन्धित पृथ्वी, आकाश, सूर्य, समुद्र, नदियाँ, सभी से सम्बद्ध ऋचाएँ वैदिक-साहित्य मे पर्यावरण बोध कराती है। यजुर्वेद का यह मन्त्र कितनी सुन्दरता के साथ हर तत्त्व के लिये शान्ति कामना करता है- **ॐ द्यौ. शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति· पृथिवी.....शान्तिरेधि।'**

अथर्ववेद मे आयुर्वेद के सिद्धान्त तथा व्यवहार के अनेक महनीय जिज्ञास्य तथ्य है। इनके

अनुशीलन से औषध के विषय मे अनेक उपयोगी तथ्य प्राप्त होते है जो पर्यावरण-सम्बन्धी परिचय देते है। महत्त्वपूर्ण यह है कि सभी औषधियाँ वनस्पति से प्राप्त होने वाली है। ऐसी वनस्पतियो का वर्णन भी मिलता है जो रात्रि मे प्रकाश देती थी। ज्योतिष्मति, सजीवनी, रुदन्ति, सोमवल्ली आदि ऐसी ही दुर्लभ वनस्पतियाँ थी। अनेक औषधियो तथा वृक्षो की प्रशसा मे भी मन्त्र मिलते हैं। इन्द्र और वृत्र युद्ध अकालरूपी दानव के ऊपर विजय की वर्षा का प्रतीक है। यहाँ भी पर्यावरण का महत्त्व स्पष्ट होता है।

झारखण्ड में प्रयुक्त औषधियाँ-एक समीक्षा

क्षितीन्द्र कुमार सिह, कुमार बीरेन्द्र एव आशा गुप्ता

केन्द्रीय खनन अनुसधान सस्थान, धनबाद, (झारखण्ड)

मनुष्य एव पेड पौधे सदियो से एक दूसरे के पूरक ही है। मानव की मानसिक एव शारीरिक जरूरतो के साथ-साथ उनके आरोग्य उपचार के वाहक पौधे ही होते है। भारत के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद मे उल्लेख मिलता है कि वनौषधियो के माध्यम से आश्विनी देवो ने परावृत का अधापन दूर किया था। ऋग्वेद का नौवा मण्डल वनस्पति को समर्पित है, जिसमे रोगो को दूर करने एव प्रतिरोधक क्षमता बढाने की अद्भुत शक्ति थी प्राचीन काल मे हिन्दू लोग ऋषि मुनियो आदि को देशज दवाओ की पर्याप्त जानकारी थी। स्वतन्त्रता के बाद 1947 से भारत सरकार ने इस दिशा मे अधिक रुचि दिखाई। जिससे औषधियो पर आधारित उद्योग-धधे किये जाने लगे, ताकि इस पर विशेष अनुसधान एव व्यापक खोज-बीन की दिशा मे प्रगति की जा सके। झारखण्ड प्रदेश यानि-झाड-झखाड से आच्छादित प्रदेश, तरुण लता बल्लरियो का प्रदेश। झारखण्ड की जलवायु कर्क रेखा के कारण सुखद मनोरजक और निवास के ख्याल से आकर्षक है।

ऋग्वैदिकारोग्यम्

डॉ0 रामजियावन पाण्डेय.

रीडराध्यक्षः, सस्कृत-विभागस्य,

डॉ0 रामलो0-अवधविश्वविद्यालय-त्रिलोकनाथ-स्नातकोत्तर-महाविद्यालयस्य,

टाँडा-224190 (अम्बेडकरनगर, उ0प्र0)

मया ऋग्वेदस्य मन्त्रेषु आयुष्यसन्दर्भाः बहुश. प्राप्ता. येषु वायुजलवनस्पतीनामुपभोगे रोग-निवारणस्य स्वास्थ्य-लाभस्य च निर्देशः सामान्य। का कथा साधारण-चिकित्सायाः कृत्रिमाङ्गरोपणस्यापि चिकित्सा विकसितासीत् वैदिकयुगे। युद्धे अङ्ग-क्षतिषु लौहजङ्घायाः प्रत्यारोपणाय

अश्वियुगलदेवाना पुरोहितेन कृता प्रार्थना वैदिकयुगीनस्य कृत्रिमाङ्ग-प्रत्यारोपण-दक्षता प्रमाणयति। (ऋ0 1/176/15)

ऋग्वेदस्य-01/116/16 मन्त्रेऽश्विनाभ्यामन्धत्व-निवारणाय पित्रा विषगिरेण शप्तय ऋजाश्वाय नेत्र-दान वैदिकयुगीननेत्र-प्रतिष्ठापनस्य सङ्केत करोति। एवमेव ओषधि-विज्ञान-दक्ष-कृमिभूतराक्षसदलन-क्षमभैषज्ञ-समूल-रोगनाशकद्रव्यवैद्यवर्णनेनोत्कृष्ट-शल्यौषधिदक्ष-चिकित्साया प्रमाण मिलति। स्वास्थ्याय वैयक्तिकस्वच्छतावश्यकी इति वैदिकै: ऋषिभि नख-कर्त्तन-क्षौर-स्वच्छ-श्वेतवस्त्र-धारणस्नानादीनाम् अनिवार्यतया सहैव सद्विचाराणमिपि प्रावधान कृतम्। कायिक-मानसिक-पवित्रतायाः विशेषोल्लेख. स्वास्थ्य प्रति तेषा जागरूकता रेखाङ्कयति, यतो हि तप स्वस्थेनैव शरीरेण सम्भाव्यते न तु रुग्णेन। कृमिभिरेव रोगा जायन्ते, विस्तार्य्यन्ते, अतो हि तेषामुन्मूलनाय श्वेतसर्सप-निम्बपत्र-घृत-सैन्धवै. प्रात: साय हवन विहितम्। ऋग्वेदे ओषधिमातृत्वेन वर्णिता-या ओषधी पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुग पुरा।

आथर्वणी चिकित्सा

डॉ0 सोमदेव शताशु

प्रवाचक· सस्कृत-विभागे,

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालये, हरिद्वार (उत्तराचल)

सर्वज्ञानमयेषु वेदेषु चिकित्साविज्ञान सविस्तर प्रतिपादितम्। आयुर्वेदो हि नाम अथर्ववेदस्य उपवेद·। अथर्ववेदे विविधाचिकित्साविधयो वर्णिता.। ता च आसुरीमानुष्यो दैवी चेति त्रिविधा। थर्वतिश्चरतिकर्मा तदभावत्वम् अथर्वत्वम्। चिन्ताचाञ्चल्यनिरोधजयोगवृत्त्या मन्त्रजपहोम प्राणायामध्यानादिसाधनै या क्रियते सा आथर्वणी आम्नायते। एषा दैवी चिकित्सा आरोग्यप्रदममृतत्त्वप्रदायिनी च वर्तते।

शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम् इत्युक्त दिशा स्वस्थशरीरमेव धर्मार्थकाममोक्षाणा मूलसाधनम्। वेदेषु सर्वविधरोगनिवृत्तिपुरस्सर स्वास्थ्यलाभाय अनेके दिव्योपाया: वर्णिता । अथर्ववेदे विविधचिकित्सा विभिन्नचिकित्सापद्धतय प्रपञ्चिता.। अथर्ववेदे चतुर्विधचिकित्साविधीनामुल्लेखो दृश्यते अथर्ववेदीयचिकित्सासु यज्ञचिकित्सापद्धतिरन्यतमा। एताम् अग्निचिकित्साऽपि कथ्यते। अस्या यज्ञाग्नौ विविधौषनधीनाम् आहुतिप्रदानेन विविधा. रोगा· नश्यन्ति। अथर्ववेद उक्तम् **अग्नि कृणोतु भेषजम्** यज्ञाग्नौ सुगन्धितद्रव्याणि केशरकस्तूरी चन्दनादिपुष्टिकारकाणि घृतदुग्धफलान्नादीनि मिष्ठानि शर्कराक्षुधाहरद्राक्षादीनि रोगनाशकानि-अमृता-गुग्गुल-अपामार्गादीनि हूयन्ते। एतज्जन्यधूमेन पर्यावरण सुरक्षित वाययुमण्डलञ्च पवित्र भवति। एव यज्ञाग्नौ विविधौषधीना होमेन धूमरूपेण

औषधीयद्रव्यप्रयोगेण अनेक रोगाः निवर्तन्ते शरीर नीरोगञ्च भवति।

वैदिकसंहितासु शल्यचिकित्सास्वरूपः

प्रीति सिन्हा

उपाचार्य सस्कृत

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

वेदेषु विज्ञानसन्दर्भे चिकित्साशास्त्रस्य अतिविकसितरूपः दरीदृश्यते। अस्यान्तर्गतवेदेषु अनेकविधा चिकित्सा वर्णिता. सन्ति यथा प्राकृतिकचिकित्सा, सूर्यकिरणचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, जलचिकित्सा, मन्त्रचिकित्सा, होमचिकित्सा, श्वासचिकित्सा, वनस्पतिचिकित्सा, शल्यचिकित्सादय.।

वैदिक-वाङ्मय में आयुर्वेद

डॉ0 रामचन्द्र गुप्त

स्वामो-गुप्ता औषधालय

चौक-टाण्डा अम्बेदकर नगर

वेद के मन्त्रो मे देवतावाद है। प्रत्येक सूक्त का कोई न कोई देवता होता है। जिस सूक्त मे जिस देवता की प्रार्थना हो, वह उसका देवता होता है। इस प्रकार से अग्नि, आप आदि देवताओ के समान रुद्र आदि देवता हैं, उनके ही साथ अश्विनौ भी देवता हैं। अश्विनौ का मुख्य सम्बन्ध चिकित्सा-विज्ञान के साथ है। अश्विनौ ने वैदिक देवताओ की चिकित्सा की थी। (चरक चि 12/4/44)

ऋग्वेद मे आयुर्वेद - चिकित्सा का सम्बन्ध यद्यपि अथर्ववेद से अधिक है तथापि ऋग्वेद मे आयुर्वेद के आचार्यो का उल्लेख है। ऋग्वेद के ऐसे आचार्य मुख्यत दिवोदास और भारद्वाज है। इनसे शल्य और काय चिकित्सा का प्रचार पृथ्वी पर हुआ है। इन्होने उसे इन्द्र से सीखा, इन्द्र ने अश्विनौ से सीखा था। इसलिए दिवोदास, भारद्वाज और अश्विनौ इन तीन का ही नाम मन्त्रो मे आता है। (ऋग्वेद 1/8/11)

वेदों में शरीररचना शास्त्र

डा प्रज्ञना जोगेश जोशी

लेक्चरर महर्षि वेद विज्ञान अकादमी

अहमदाबाद, गुजरात, भारत

अगो सहित शरीर का वर्णन शरीरविज्ञान अथवा शरीर-रचना शास्त्र' कहलाता है। इसका ज्ञान वास्तव मे प्रयोगिक रीतियो द्वारा अगो का छेदन कर शरीर से अलग कर के होता है। इस प्रकार वह जीवविज्ञान की एक शाखा है। आयुर्वेद का मूल आधार शरीर-विज्ञान है। चिकित्सा के लिए सर्वप्रथम शरीर के सभी अगो और उनकी विशिष्ट क्रियाओ का ज्ञान होना आवश्यक है। अथर्ववेद मे इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है।

अथर्ववेद (10/2) मे मनुष्य के सिर से लेकर पैरो तक शरीर के मुख्य मुख्य सब अगो और प्रत्यगो का वर्णन किया गया है। चरक संहिता (4/6/6) ने 360 हड्डियाँ मानी है। अथर्ववेद (10/8/4) मे भी 360 अस्थियो का उल्लेख हुआ है। एक अन्य सूक्त (2/33) मे भी अवरोह से शरीर के अगो का नामोल्लेख हुआ है। इस सूची मे बाहर से अद्रश्य हृदय, चकृत आदि अगो का भी परिगणन किया गया है। अथर्ववेद (1/17/3) मे दोनो प्रकार की नाडियो (धमनियो और शिराओ) का उल्लेख है और उनकी सख्या क्रमश एक सौ और एक सौ बतायी गयी है। एक स्थल पर आठ मन्त्रो का उल्लेख है, जिसे सायण ने गर्दन की नसे कहा है। अन्य स्थलो पर स्नायु का निर्देश है। इतना ही नही आयुर्वेदीय ग्रन्थो मे वर्णित सात मूल धातुओ (रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र) का निर्देश भी हुआ है। इस के अतिरिक्त गर्भविज्ञान और प्रसवशास्त्र का भी अथर्ववेद मे सविस्तार वर्णन हुआ है। इस प्रकार प्रस्तुत लेख मे वेदो मे उल्लेखित शरीररचना शास्त्र के बारे मे सविस्तार सप्रमाण चर्चा की गयी है।

वेदों में आयुर्वेद

डॉ0 जीवन आशा

डी ए वी कालेज जालन्धर (पजाब)

आयुर्वेद परम्परा और आगम शुद्धि-अमृत की तरह सब रोगो के नाश करने वाले सर्व हितकारी अविनाशी आयुर्वेदामृत का स्मरण कर ब्रह्मा जी ने दक्ष प्रजापति को, दक्ष प्रजापति ने देवताओ के वैद्य अश्विनी कुमारो को और अश्विनी कुमारो को इन्द्र ने दिया। तदनन्तर इन्द्र के आयुर्वेद ज्ञान के परिपूर्ण हो जाने पर धर्म, अर्थ काम, मोक्ष इनमे विघ्न डालने वाले रोगो से बचाने के लिए महात्मा धन्वन्तरि भारद्वाज आदि द्वारा इसको ग्रहण किया गया। इसका प्रयोजन स्वस्थ मनुष्य के आरोग्य की रक्षा करना, और रोगी व्यक्ति के रोग से मुक्त करना है।4 इसके आठ अङ्ग माने गये हैं- काय चिकित्सा, बाल, ग्रह, ऊर्ध्वाङ्ग, शल्य, द्रष्ट्रा, जरा, वृष। चरक ने आयुर्वेद को शाश्वत कहा है क्योकि जब से आयु का प्रारम्भ हुआ तब से जीव को ज्ञान हुआ तभी से आयुर्वेद की सत्ता

प्रारम्भ होती है5 सुश्रुत ने यहाँ तक कहा कि ब्रह्मा ने सृष्टि के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की।6 आचार्य चरक एव सुश्रुत ने आयुर्वेद को अथर्ववेद के रूप मे माना है परन्तु कश्यप ने आयुर्वेद को ही पञ्चम वेद का है।

वेदेषु सूर्यरश्मिचिकित्सा

डॉ0 उमा रानी त्रिपाठी
ल वि वि लखनऊ

वेदेषु चिकित्साविज्ञानस्य वर्णन प्राचुर्येण सदृश्यते। अथर्ववेदस्तु भैषज्यविज्ञानस्य मूलस्रोत एव वेदेषु प्राकृतिकचिकित्साविषय अत्युपयोगी सामग्री वर्तते। प्राकृतिकादिचिकित्सापद्धतीना सूर्यरश्मिचिकित्सा विशेषतया उल्लेखनीया। वेदेषु सूर्यः स्थावरजङ्गमात्मकस्य विश्वस्य आत्मा इति वर्ण्यते- **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च** (ऋ0 1/115/1, यजु0 7/42, अथर्व0 13/2/35, तैत्ति0स0 1/4/43/1)। मन्त्रोऽय ऋक्-यजुरथर्व-त्रिष्वेव वेदेषु उपलभ्यते। अनेन मानवजीवनस्य कृते सूर्यस्य महत्त्वमनिवार्यतया दरीदृश्यते। प्रश्नोपनिषदि "सूर्य" प्राण प्राणानाम् (1/6) अर्थात् प्राणिना प्राण - जीवनाधायक॰ सजीवनीशक्ति प्रोक्त। मत्स्यपुराणे समुदीरितम् यत् आरोग्यकामाया सूर्य एव शरण नान्येति-**"आरोग्यं भास्करादिच्छेत्"**। अतस्तु वैदिका॰ ऋषय सूर्योपासना सूर्यनमस्कार वा विशेषतया आदिश्यन्ते।

आयुर्वेद में सूर्य-किरण-चिकित्सा

भावना शर्मा (शोध छात्रा)
सस्कृत-विभाग
पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

चरक ने आयुर्वेद का लक्षण दिया है- **'आयुर्वेदयति इति आयुर्वेद.।'** जो आयु का ज्ञान कराता है वह आयुर्वेद है। (वेदो मे आयुर्वेद, पृ0 4) सुश्रुत का कथन है कि जिसमे आयु के हितकर और अहितकर तत्त्वो का विचार हो और जो दीर्घ आयु प्राप्त कराता है, वह आयुर्वेद है।' रोगी को रोग से मुक्त करना और स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा करना, ये ही दो आयुर्वेद के मुख्य प्रयोजन है। इसमे आयुर्वेद से सबद्ध कई चिकित्सा विषयो का वर्णन प्राप्त होता है। इन्ही विषयो के आधार पर मेरे शोध का विषय प्राकृतिक चिकित्सा मे सूर्य-किरण-चिकित्सा है।

प्रकृति मनुष्य के लिए वरदान है। प्रकृति के सभी तत्त्व पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र आदि किसी न किसी रूप मे मनुष्य का हित करते है। इनमे भी सूर्य की किरणो का योग

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सूर्य को इस चराचर जगत् की आत्मा कहा गया है। सूर्य रोगो को दूर करता है। सूर्य रोगो को दूर करने के साथ ही बुद्धि को भी शुद्ध करता है और ज्ञान की वृद्धि करता है। वेदो मे उदय होते हुए सूर्य की किरणो का बहुत महत्त्व बताया गया है। उदय होता हुआ सूर्य मृत्यु के सभी कारणो को नष्ट करता है। उदय होते हुए सूर्य से अवरक्त (हल्की लाल) किरणे निकलती है। इन लाल किरणो मे जीवनी शक्ति होती है और रोगो को नष्ट करने की क्षमता होती है। इसलिए ऋग्वेद मे कहा गया है कि उदय होता हुआ सूर्य हृदय के सभी रोगो को, पीलिया और रक्ताल्पता को दूर करता है। प्रात.काल सूर्याभिमुख बैठकर सध्या करने का यही रहस्य है कि अवरक्त किरणो के प्रभाव से व्यक्ति सर्वदा नीरोग रहेगा। सूर्य का प्रकाश शरीर के लिए अनिवार्य है। सूर्य की सात किरणो से सात प्रकार की ऊर्जा प्राप्त होती है। सूर्य की किरणे मृत्यु से बचाती है, सूर्य रोग के कीटाणुओ का नाशक है। सूर्य से जल, वायु आदि स्वच्छ रहते हैं। सूर्य की सात प्रकार की किरणो को सात रग का कहा है- बैगनी, गहरा नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारगी, लाल। इन सात रगो को मिलाने पर सफेद रग बनता है। दवा बनाने के लिए उसी रग की काच की साफ बोतल मे पीने का शुद्ध पानी भरकर 6 से 8 घटे धूप मे रखने से दवा तैयार हो जाती है।

वेदों मे सूर्यस्तुति कल्याणकारक एवं रोगनिवारक

डॉ मधु अग्रवाल

रीडर एव अध्यक्ष (सस्कृत-विभाग)

रानी भाग्यवती देवी महाविद्यालय

बिजनौर (उ0प्र0)

सूर्य सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक ज्योतिर्मय नेत्र है जगत् की आत्मा है और प्राणिमात्र को सत्कर्मों मे प्रेरित करने वाले देव है। देवमण्डल मे इनका अन्यतम एव विशिष्ट स्थान इसलिए भी है क्योकि ये जीवमात्र के लिए प्रत्यक्षगोचर है। ये सभी के लिए आरोग्य प्रदान करने वाले एव सर्वविध कल्याण करने वाले है। अत समस्त प्राणधारियो के लिए स्तवनीय है वन्दनीय है। पृथ्वी से भी अधिक उपकारक भगवान् सूर्य है। अत हमारे पूर्वज ऋषि-महाऋर्षियो ने श्रद्धाविभोर होकर सूर्यदेव की स्तुति प्रार्थना और उपासना के सुन्दर मन्त्रो की उद्भावना की है। शोधपत्र के लघु कलेवर की सीमा के कारण कतिपय चयनित मन्त्रो को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। वैदिक ऋषियो ने सूर्य की स्तुति, उपासना एव प्रार्थना से प्राणधारियो का विशिष्ट कल्याण देखा और सूर्य को विशेष रूप से कतिपय रोगो का निवारण करने वाला पाया। जिनमे सूर्य को मुख्यत हृदय रोग व पीलिया रोग निवारण करने वाला माना गया है। सूर्य नमस्कार से समस्त अगो मे शक्ति एव ऊर्जा का सचार

होता है, सूर्य को नेत्रो मे ज्योति बढाने वाला भी वेदो ने माना है। साथ ही, सूर्य उपासना व स्तुति आयुवर्धक है।

वेदों में सौरशक्ति का माहात्म्य

डॉ0 रवीन्द्र कुमार पी0पटले

(रतनपुर, गुजरात)

अज्ञान के अधकार मे से प्रकाश के प्रति प्रस्थान करने की, मृत्यु लोक मे से प्रकाश लोक मे जाने की मानव की शाश्वत प्रार्थना **है-तमसो मा ज्योतिर्गमय।** प्रकाश-प्राप्ति की कामना मे से तेजोपुज-स्वरूप सूर्य की उपासना स्वाभाविक रीति से ही वेदयुग मे उदित हुई। सूर्य, चन्द्र, उषा, नक्षत्र, अग्नि इत्यादि जीवन शक्ति-स्वरूप प्रकाश के, ऊर्जा के स्रोत है। हजारो वर्ष पूर्व वैदिक ऋषि-मुनियो ने प्रकाश की आराधना की, सूर्य जैसे प्रकाशित तत्त्वो को उन्होने देव का स्वरूप दिया और सूर्योपासना का प्रचलन हुआ, सौर शक्ति का महिमागान हुआ। विश्व की समृद्धि और सुन्दरता का आधार सूर्य की ऊर्जा-शक्ति पर है। प्रस्तुत शेध-पत्र मे वैदिक सूक्तो के आधार पर सौरशक्ति के विभिन्न स्वरूपो का सोदाहरण निरूपण कर के सौर-शक्ति का माहात्म्य प्रदर्शित किया है।

आयुर्वेद में सूर्यकिरण-चिकित्सा- एक समीक्षा

भावना शर्मा (शोध-छात्रा)

सस्कृत-विभाग,

पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ

वेद विश्व-सस्कृति के आधार स्तम्भ है। मनु ने वेदो को सर्वज्ञानमय कहा है अर्थात् वेदो मे सभी प्रकार का ज्ञान और विज्ञान निहित है। चारो वेदो मे आयुर्वेद के विभिन्न अगो और उपागो का यथास्थान विशद् वर्णन हुआ है। चरक ने आयुर्वेद का लक्षण दिया है-**'आयुर्वेदयति इति आयुर्वेद.।'** प्रकृति मनुष्य के लिए वरदान है। प्रकृति के सभी तत्त्व पृथिवी, जल, अग्नि, वायु सूर्य, चन्द्र आदि किसी न किसी रूप मे मनुष्य का हित करते है। इनमे सूर्य की किरणो का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सूर्य को इस चराचर जगत् की आत्मा कहा है।

भगवान् सूर्यः एक वैज्ञानिक विश्लेषण

राजाराम यादव, धर्मन्द्र कुमार पाण्डेय एव आलोक कुमार गुप्त

भौतिकी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

प्रस्तुत शोध लेख मे प्रकाश उत्पादन की तीन प्रक्रियाओ का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के आधार पर गुणात्मक रूप से साधारण आकाश द्वितीय श्रेणी आकाश तथा सर्वोत्तम श्रेणी आकाश वर्गीकृत किया गया है। सूर्य के आकाश उत्पादन की वैज्ञानिक प्रक्रिया के आधार पर सूर्य को भगवान् के रूप मे मान्यता प्रदान की गई है। सम्पूर्ण विश्लेषण को सामाजिक जीवन के नैतिक एव आध्यात्मिक उत्थान मे उपयोगी दर्शाया गया है। निष्कर्षरूप मे भगवान् सूर्य की वैदिक अवधारणा तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान के सिद्धान्त का समानान्तर अध्ययन सामाजिक उत्थान हेतु प्रस्तुत करने का मौलिक प्रयास किया गया है।

वैदिक संहिताओं में अध्यात्म-चिकित्सा

डॉ0 क्षमा मिश्रा

अवकाश प्राप्त रीडर

जे डी वी एम पी जी कालेज

कानपुर

वर्तमान समय मे आधुनिक जीवनचर्या, पर्यावरण असतुलन, अनैतिकता, अनास्था आदि के कारण मानवजीवन तथा प्रकृति मे अनेक प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो गयी है, जो विभिन्न प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक रोगो को उत्पन्न करती है। इनके उपचार हेतु आधुनिक वैज्ञानिक तथा चिकित्सक निरन्तर प्रयासरत है। भिन्न-भिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ नित-नूतन आविष्कारो के द्वारा इनके उपचार हेतु प्रयत्न मे सलग्न है, परन्तु उनके दुष्परिणाम सभी को ज्ञात है। शारीरिक तथा मानसिक रोगो के उपचार हेतु आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति अत्यन्त उपयोगी है, जिसका वर्णन वैदिक सहिताओ मे प्राप्त है। यह प्राणतन्त्र का भलीभाँति अध्ययन कर रोगो का उपचार करती है तथा मानव को वास्तविक अर्थ मे स्वस्थ बनाती है। आध्यात्मिक चिकित्सा विधि और चिकित्सक की योग्यता के विषय मे मन्त्र प्राय समस्त वेदो मे प्राप्त है जिसमे अथर्ववेद प्रमुख है। ऐतरेय तैत्तिरीय शतपथ ताण्ड्य, षड्विश आदि ब्राह्मणग्रन्थो मे भी आध्यात्मिक चिकित्सा का उल्लेख है। प्रस्तुत शोधपत्र मे यह सिद्ध करने का प्रयास किया जायेगा कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियो के दुष्परिणामो को देखते हुए, आध्यात्मिक चिकित्सा पद्धति के द्वारा ही मानव स्वस्थ तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

संजीवनी की पहिचान तथा उसकी औषधीय क्षमता

डॉ0 जी प्रसाद एव प्रो0 ए के चोपडा
वनस्पति एव सूक्ष्म जीवविज्ञान-विभाग
जन्तु एव पर्यावरणविज्ञान-विभाग
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराचल)

प्रस्तुत लेख मे लगभग 7200 वर्ष पूर्व मे हुए राम-रावण युद्ध मे लक्ष्मण को शक्ति लगने के कारण मूर्छित होने पर जीवन प्रदान करने हेतु श्रीलका के श्री शुषेण वैद्य से एक निश्चित अवधि के अन्दर (सूर्योदय पूर्व) सजीवनी के उपलब्ध होने की आवश्यक अनिवार्यता पर जोर दिया था। उपर्युक्त बूटी के स्वरस को देने पर लक्ष्मण चैतन्यता को प्राप्त हुए थे। चूँकि लक्ष्मण की मूर्छा मे एक निश्चित अवधि बतायी गयी थी। जिसके अन्दर ही दवा प्रभावी हो सकती थी तथा उसके बाद दवा का प्रयोग निरर्थक था।

वर्तमान मे मस्तिष्क की रक्त धमनियो मे थक्का (Blood Clot) बनने के कारण होने वाले Strock मे यदि एक निश्चित अवधि मे औषधि द्वारा नष्ट नही किया जाता तो रोगी फिर अगली अवस्था मे मे जाने के बाद ब्रेनहेमरेज एव मृत्यु की स्थिति को प्राप्त हो जाता है। श्री लक्ष्मण की मूर्छा की स्थिति भी शायद कुछ इसी प्रकार की थी क्योकि औषधि के प्रभावी होने हेतु निश्चित अवधि दी गयी थी।

भारत सरकार को श्रीलका सरकार के माध्यम से सूषेण जी की चिकित्सा पद्धति एव नुस्खो पर मानव कल्याण हेतु शोध फाउन्डेशन की स्थपना की दिशा मे विचार करना चाहिए। सूषेण वैद्य का चिकित्साक्षेत्र मे समर्पित भाव एव जीवन अद्वितीय उदाहरण एव प्रेरणा का स्रोत है। गौर करे कि उस काल मे एव वैसी परिस्थितियो मे औषधीय पौधो का सर्वेक्षण इतनी दूर दूर स्थानो पर पैदल जाकर किया जाना तथा अन्य चिकित्सीय परिक्षण कैसे किये होगे अकल्पनीय है। इसके साथ ही भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद मे ऐसे पौधो की खोज एव चिकित्सीय क्षेत्र मे परीक्षण किए जाने चाहिए जिनमे रक्त थक्को को शीघ्र समाप्त करने की क्षमता हो तथा इस पौधे का परीक्षण एव अन्य बीमारियो के निदान मे भी किया जाना चाहिए।

ओषधिसम्बद्धसामग्रयवभासकम् एकमथर्वदृष्टं सूक्तम्

डा भारतेन्दुपाण्डेय
वरिष्ठप्रवक्ता, सस्कृत-विभाग.
नानकचन्द आग्लसस्कृतमहाविद्यालय , मेरठम् (उ प्र)

यद्यप्यथर्वसंहितायाम् आयुर्वेदादिविज्ञान प्रतिपदमेव विकीर्णमवाप्यते तथापि प्रोक्तसहिताया अष्टमकाण्डस्य अष्टाविशतिर्मन्त्रमय सप्तम सूक्तमेतादृशमस्ति, यत्रौषधिसामान्यसम्बद्ध भूयसी ज्ञानसामग्री अनुस्यूता। अत्रौषधिशब्द तत्पर्यायतया व्यवहृत वीरुच्छब्द वा ऋषि: उद्भिजभेदविशेषात्मके कस्मिश्चित् सकीर्णे अर्थे नैव प्रयुक्त·। एतद्द्वारा स अग्नेर्घासरूपभोजनभूतम् अपा गर्भभूत च यक्ष्मादिरोगोपचारकम् उदिभजमात्र गृह्णाति।

ऋषिरथर्वा प्रतिपादयति यत् सूर्य: पिता (पालयिता) पृथिवी माता (जनयित्री) आपश्च मूलम् अस्ति ओषधिस्वरूपाणा सर्वेषामेव वीरुधाम्। यतस्तत्र आपो अग्रे दिव्या ओषधय इति चोक्तम्, अत एतासामोषधीनाम् अमृतत्त्व सिद्धमेव। इत्थम्, आथर्वणे अस्मिन् सूक्ते प्रतिपादित प्रतिभासित चौषधिज्ञान बहुसमृद्धमस्ति।

ऋग्वेद में पादप पारिस्थितिकी

डा नन्दिता सिघवी

व्याख्याता सस्कृत

राजकीय स्नातकोत्तर डूँगर महाविद्यालय

बीकानेर विश्वविद्यालय, बीकानेर 334001 (राज)

पारिस्थितिकी की अवधारणा जितनी अधुनातन है, उतनी ही पुरातन है। भारतीय मनीषी हजारो वर्ष पूर्व भी इस अवधारणा से परिचित थे। पादप पारिस्थितिकी के अन्तर्गत विभिन्न पादपो के मध्य तथा पादपो एव उनके पर्यावरण के मध्य होने वाली अन्योन्यक्रियाओ का अध्ययन किया जाता है। इसमे पौधो को मूल रूप मे प्रधानता दी जाती है तथा प्राणियो को पर्यावरण का एक अग मानते हुए अध्ययन किया जाता है। ऋग्वेद मे पादप पारिस्थितिकी विषयक विवरण विशद रूप से प्राप्त होता है जिसका सप्रमाण उल्लेख शोध लेख मे निहित है।

वेदों में वायुमण्डल रूपी सुरक्षा कवच

डॉ0 धीरज कुमार

गाँव व डा0- रमाला

जिला-बागपत (उ0प्र0)

आर्यों के जीवन मे वेदो का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। सृष्टि के आदि से ही वेद ईश्वरीय ज्ञान के रूप मे मे श्रद्धा व आदर प्राप्त करते रहे है। वेदो को सनातन चक्षु कहा गया है

उतना ही सनातन जितना कि सूर्य चक्षु। यदि सूर्य चक्षु का अभाव होता तो प्राणियो की चर्मचक्षु निष्प्रयोजन ही होती। तथैव वेदचक्षु के अभाव मे मनुष्यो का बुद्धि रूपी आन्तरचक्षु भी अशक्त होता, क्योकि दोनो मे घनिष्ठ सम्बन्ध है। अत॰ वेद ईश्वरोक्त, सृष्टि के आदि मे प्रादुर्भूत तथा ज्ञान का आदि स्रोत माना जाता है। वेदो की अपौरुषेयता के सन्दर्भ मे ब्रह्म सूत्रकार ने स्वशास्त्र मे एक महान् युक्ति तत्तु समन्वयात् अर्थात् समन्वय करने से वेद ईश्वरोक्त सिद्ध होते है, दी है। यही शोधलेख का लक्ष्य है।

यजुर्वेद का जीव-जन्तु जगत्

डॉ0 विजेन्द्र कुमार तोमर, प्राचार्य

कृषक पी0जी0 कॉलेज मवाना, मेरठ (उ0प्र0)

वैदिक-साहित्य मे अनेक प्रकार के पशु-पक्षियो, कीट-पतगो सरीसृपो और मत्स्य आदि के नामो और उनकी विशेषताओ की सुविस्तृत जानकारियाँ प्राप्त होती है। 'यजुर्वेद' मे तो पूरा एक चौबीसवाँ अध्याय ही जीव-जन्तुओ के विवेचन से व्याप्त है। उक्त अध्याय मे विविध जन्तुओ के गुण, कर्म लक्षण तथा स्वभाव आदि के बारे मे बडी आधिकारिक जानकारियाँ दी गई है। वहाँ पर प्रमुख रूप से पक्षी वर्गीय स्तनधारी वर्गीय, सरीसृप वर्गीय, कीट वर्गीय जीवो का विवरण प्रस्तुत किया गया है। आज के जीव-जन्तु जगत् से यदि उनकी तुलना की जाए तो यह सरलता से जाना जा सकता है कि आज उस काल के बहुत से जीव जन्तु विलुप्त हो चुके है। जन्तु

वेदों में प्रदूषण नाशक वृक्ष एवं औषधियाँ: एक अध्ययन

डॉ0 कमला अग्रवाल

रीडर, सस्कृत-विभाग,

दिगम्बर जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बडौत (बागपत)

वर्तमान समय मे प्रत्येक प्रकार के प्रदूषणो के निवारण के लिये अनेक उपाय प्रयोग मे लाये जा रहे है। प्रदूषणमुक्त वातावरण की सरचना मे वृक्षो की अहम् भूमिका भी असंदिग्ध है इन अगाध ज्ञानराशि वेदो से ऋषियो, महर्षियो, योगी, यति, विद्वानो ने अथक श्रम से अनेक जीवन-रक्षक रत्नो को खोज निकाला है, जिन्होने मानव-जीवन को आलोकित किया है। जीवनोपयोगी किसी भी पदार्थ, वस्तु अथवा सामग्री को वेदो मे खोजा जा सकता है। पर्यावरण प्रदूषण आज की सर्वाधिक ज्वलत समस्या बनकर उभर रहा है, जो जीव-जगत् को लीलने के लिए सुरसा का मुँह' बन रहा है। इस विकट समस्या का समाधान वेदो मे वृक्ष, वनस्पति व औषधियो के द्वारा सम्भव है, इसका स्पष्ट

उल्लेख मिलता है। वेद कहते है कि वनस्पतियाँ वह सम्पत्ति है। जिनके द्वारा वायुमण्डल मे ऑक्सीजन (व्2) और कार्बन डाई ऑक्साइड (ब्व2) का सन्तुलन बना रहता है। वृक्ष विविध औषधियो द्वारा रोग नाशक कार्यों का दायित्व तो पूर्ण करते ही है साथ ही प्रदूषण को दूर कर पवित्रता प्रदान करते है। इनसे स्वस्थ और स्वच्छ प्राणवायु प्राप्त होती है। वेदो मे वृक्ष को प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखने वाला साधन बताया है। इनके द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायुमण्डल की पवित्रता, विविध रोगो का नाश, शारीरिक व मानसिक उन्नति तथा रोग-निवारण के कारण दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। अतः प्रस्तुत शोध-लेख के माध्यम से सप्रमाण वेद-वर्णित वनस्पतियो के महत्त्व व इनसे होने वाले लाभो की ओर, इनकी उपादेयता के आशय से विद्वत् वर्ग का ध्यानाकृष्ट करना ही मेरा उद्देश्य है।

यज्ञ और पर्यावरण

प्रो0 गिरा टी अटालीवाला

शाह आर्टस कॉलेज अहमदाबाद गुजरात

'अय यज्ञो वि श्वस्य भुवनस्य नाभि ' यजुर्वेद मे यज्ञ के बारे मे कहा गया यह विधान, यज्ञ को समस्त ससार की नाभि के रूप मे प्रस्तुत करना हुआ अपना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारे शरीर मे शरीरविज्ञान की दृष्टि से जिस प्रकार नाभि का अति विशिष्ट स्थान है, वैसे ही वि श्व मे यज्ञ का स्थान है। शरीर के बीच मे रहने वाली नाभि पर ही पूरा शरीर निर्भर है, क्योकि नवजात शिशु जन्म से पूर्व नाभि के माध्यम से ही माता के शरीर से जुड कर रस प्राप्त करता है और उसके माध्यम से ही वह जीवित रहता है, ठीक उसी प्रकार ससार भी यज्ञ से जुडकर ही जीवन को प्राप्त करता है, क्योकि यज्ञ ससार का पोषक, प्राणदाता, जीवनदाता और आधार स्थान है। यज्ञ का उद्देश्य केवल पर्यावरण शुद्धि तथा रोगनाशक ही नही अपितु यज्ञ मनुष्य को देवत्वकी ओर ले जाने का साधन भी है, इसीलिये तो उसकी तुलना शरीर के महत्त्वपूर्ण अग नाभि के साथ की गयी है।

वेदों में पर्यावरण चिन्ता

डॉ0 प्रणव

हिन्दी-विभाग

उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत (उ0प्र0)

वेदो मे पर्यावरण का वर्णन अनेक स्थानो पर मिलता है। पर्यावरण का अर्थ है- पृथ्वी पर

विद्यमान, जल, वायु, ध्वनि, रेडियोधर्मिता एव रासायनिक पर्यावरण। जब ये समृद्ध होते हैं तो हमे जीवन एव नीरोगता प्रदान करते है। जब ये पर्यावरण के आवश्यक तत्त्व दूषित हो जाते हैं तो हमारी चिन्ता का विषय बन जाते हैं। यही पर्यावरण चिन्ता प्रदूषण का पर्याय बन गया है। चारो ओर पर्यावरण मे विकृति ही प्रदूषण को जन्म देती है। वेदो मे कहा गया है कि जीवधारी अपने विकास और व्यवस्थित जीवनक्रम के लिए एक सन्तुलित पर्यावरण एव वातावरण पर निर्भर रहते हैं। सन्तुलित पर्यावरण मे प्रत्येक घटक एक निश्चित मात्रा मे उपस्थित रहता है। वातावरण मे कुछ हानिकारक घटको का प्रवेश हो जाता है परिणामत, समस्त जीवधारियो के लिए किसी न किसी रूप मे हानिकारक सिद्ध होता है जो पर्यावरणीय चिन्ता को जन्म देता है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता से हम आने वाले समय मे और अधिक अच्छा एव स्वास्थ्यप्रद जीवन व्यतीत कर सकेगे। और आने वाली पीढी को प्रदूषण के अभिशाप से मुक्ति दिला सकेगे।

वेदों में पर्यावरणीय चेतना

डॉ0 किरण जैन,
विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय महाकोशल कला एव वाणिज्य महाविद्यालय
जबलपुर (म प्र)

ऋग्वेद के प्रमुख देवता अग्नि, इन्द्र वरुण आदि है। दूसरा वेद यजुर्वेद है इसमे यज्ञ एव पूजा विधान प्रमुख है। यज्ञो मे इस वेद के मन्त्र उच्चरित होते है। सामवेद का मूल सगीत है गान है। देवताओ की आराधना एव स्तुति इस वेद के मन्त्रो को लय के साथ की जाती है। चतुर्थ वेद है अथर्ववेद। इसमे मन्त्रो के विधि रूप दृष्टिगोचर होते है। अथर्ववेद लोक से सम्बन्धित है, अथर्ववेद के बारहवे काण्ड के पृथिवी सूक्त मे तिरेसठ मन्त्र है। ये पर्यावरण चेतना की पहली समावेशी अभिव्यक्तियाँ है ऋषि अथर्वा ने इनमे पृथ्वी की स्तुति की है, और उसके प्रति मानव कर्त्तव्य ो का बोध भी कराया है। इसमे वर्णित कल्याणकारी सूक्त को यदि विश्व का पहला राष्ट्रगीत की सज्ञा दे जिसमे पृथ्वी को सर्वप्रथम माँ के रूप मे स्वीकार किया है तो अत्युक्ति न होगी। भारतीय सस्कृति प्रकृतिमयी है। हमारे ऋषियो ने हजारो वर्ष पहले ही पर्यावरण के प्रति सचेत रहने की बात की है। भारतीय सस्कृति वनस्पति तथा पदार्थों के प्रति सम्मान प्रकट करती है। वेद हमारे पथ प्रदर्शक ही नही जीवन भाग्य विधाता है। वे सच्चे अर्थो मे मानव का कल्याण करते है। शोध-पत्र की इन पक्तियो मे पर्यावरणीय समस्या व समाधान की ओर सकेत है-**यत् ते भूमि विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।** (अथर्ववेद 12/1/35)

वायु-प्रदूषण का वैदिक समाधान

कुलदीप सिह आर्य
अध्यक्ष, सस्कृत-विभाग
डी ए वी कालेज, अमृतसर।

वेदो मे सभी पर्यावरणीय प्रदूषणो से आत्यन्तिक निवृत्ति सहज एव सरल ही सम्भव है। वेदो मे सौ वर्ष से अधिक देखने, सुनने, बोलने और अदीन रहने की प्रार्थना, मानवमात्र को ऐसी समस्याओ से सचेत करती है। इस पत्र का प्रारूप निम्नलिखित है.-1 वायु शब्द विचार- वा गच्छति स्थानात् स्थानान्तर प्राप्नोति इति वायु.। व्युत्पत्ति एव अर्थ। आक्सीजन की उत्पत्ति। 2 वायु के पर्यायवाची एव प्रकार- शब्द कल्पद्रुमकार ने वायु के 32 और बृहत्पर्यायवाची कोश मे 85 पर्याय कहे है। प्राण, अपान, समान उदान और व्यान के रूपो मे वायु के अनेक प्रकार है और शरीर मे उनके अनेक स्थान। 3 वायु प्रदूषण-अर्थ एव परिभाषाऐ- प्राचीन एव आधुनिक सदर्भ मे। 4 वायु प्रदूषण के कारण-1 सल्फर डाई ऑक्साइड्स 2 नाईट्रोजन ऑक्साइड्स, 3 हाईड्रोकार्बन, 4 कार्बन मोनो ऑक्साइडस, 5 कणिकीय पदार्थ आदि। 5 वायुप्रदूषण के स्रोत- 1 खनिज तेलो का दहन, 2 खनिजो का पिघलना, 3 रासायनिक उद्योग, 4 ज्वालामुखियो का फटना, 5 परमाणु परीक्षण आदि। 6 वेदो मे वायु सुरक्षा के भाव-वायु को प्रत्यक्ष देवता शुद्ध वायु का महत्त्व, सुरक्षा आदि। 7 वेदो द्वारा वायु शोधन-1 वनस्पति की रक्षा एव उपयोग से, वेदो के सम्बन्ध मे वनो के स्वामी, वृक्षो के स्वामी को अभिवादन, वेदो मे वृक्ष महिमा उनके द्वारा प्राणवायु की उत्पत्ति। 2 अग्निहोत्र द्वारा वायु शोधन अग्निहोत्र के प्रमाण, समय, प्रयोग, सामानो का वैज्ञानिक विवेचन एव वैदिक साहित्य मे उनका समन्वय। आयु को यज्ञ से बढाओ एव शान्तिपाठ की पर्यावरण परक व्याख्या।

वायु प्रदूषण निवारकः अग्निहोत्र

डी0 आर0 खन्ना एव राकेश भुटियानी
जन्तु एव पर्यावरण विज्ञान विभाग
गुरुकुल कागडी, विश्वविद्यालय हरिद्वार

आज विकास की अधी दौड ने हमारे पर्यावरण को पूर्णत प्रदूषित कर दिया है, विकास की इस दौड मे कारखानो, वाहनो आदि की निरन्तर बढोत्तरी हो रही है, जिस कारण हमारा पर्यावरण वायुप्रदूषण का शिकार होता जा रहा है। पर्यावरण को प्रदूषित पदार्थों से मुक्ति दिलाने अर्थात् प्रदूषण पर नियन्त्रण के लिए वेदो ने हमे अग्निहोत्र के बारे मे विस्तार से बताया है। प्रस्तुत शोध पत्र मे

परीक्षणो के पश्चात् अग्निहोत्र को वायुप्रदूषण निवारक माना गया, जब अध्ययन के दौरान, अग्निहोत्र से पूर्व एव अग्निहोत्र के पश्चात् तापक्रम मे वृद्धि, सुगन्ध की उपस्थिति, श्वसनीय निलम्बित सूक्ष्मकण एव सामान्य सूक्ष्म कणो मे कमी, वायु मे प्रदूषण करने वाली विभिन्न गैसे जैसे नाइट्रोजन ऑक्साइड, नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन के अन्य ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड,एव ओजोन का पूर्ण रूप से समापन पाया गया। इसके अतिरिक्त प्रामाणिक सूक्ष्म जैविक गणना मे भी काफी बडी सख्या मे कमी पायी गयी।

वैदिक पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 अरुण कुमार मिश्र

हिन्दी-विभाग, शासकीय मानकुँवर

बाई कला एव वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म पु)

वेदो मे सृष्टि का मूलाधार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एव अथर्ववेद जीवन के आधार है। ऋग्वेद मे सारी सृष्टि, ग्रह पृथिवी एव जीवन निर्माण की प्रक्रिया मिलती है। वेद मानव समुदाय का हित करते है और इसी रूप मे वे जीवन के पञ्चभूतो के प्रति आस्था व्यक्त करते है। वेद के अनुसार सृष्टि का मूल सूत्र ही ऋत और सत्य है जो सब ओर समिद्ध तप या उष्णता से उत्पन्न होते है। उन्ही से व्यक्त ससार से पहले अव्यक्त प्रकृति रूप रात्रि उत्पन्न होती है और गतिशील सूक्ष्म कणो के रूप मे व्यापक जल बनता है।' 'ऋग्वेद' 10/190/1 अथर्ववेद (12 1 1) के अनुसार पृथ्वी को धारण करने वाले ये दो प्रमुख तत्त्व हैं। सत्य जहॉ बृहत् महान् या व्यापक हैं, वही ऋत, उग्र, कठोर शाश्वत है। वेद जीवन देने वालो के प्रति कृतज्ञता सिखलाते है। उस शक्ति के प्रति जिसने सारी सृष्टि को बनाया वेद कहते है। हम उसकी आराधना करे। वेदो मे सूर्य पृथ्वी, आकाश, जल, पशुपक्षी एव वनस्पतियो का विधान सर्वमान्य विधान रहा है। पर्यावरणीय चेतना के सदर्भ मे यदि दृष्टि डाले तो वेद मे पर्यावरण को सरक्षित करने के उपाय है। विश्व मे पर्यावरण के प्रति आज चिता हो रही है जबकि वेदो ने अनन्तकाल से पर्यावरण सतुलन बनाये रखने को निरतर प्रेरित किया है।

पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान

प्रो वेद साहनी

सेवानिवृत्त, शाहपुरा बाग, बी एड कॉलेज

जवाहर नगर, जयपुर-4

आज विश्व की सबसे ज्वलन्त और भयावह समस्या पर्यावरण प्रदूषण है जिसकी देश

देशान्तर तक कोई सीमाए नही है। पर्यावरण प्रदूषण को अनेक भारतीय तथा विदेशी विद्वानो ने अपनी-अपनी दृष्टि से परिभाषित किया है, परन्तु जो परिभाषा देववाणी सस्कृत मे दी है वह अपने आप मे पूर्ण व अनूठी है तथा इस परिभाषा का कोई सानी नही है। सस्कृत भाषा मे सुख का विलोम दु.ख है और सु=अच्छा और दु:=बुरा और ख=वातावरण। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि प्रसन्नता अच्छे पर्यावरण तथा अप्रसन्नता प्रदूषित वातावरण का नाम है। तथा प्रदूषण मानव मे दिल, मस्तिष्क तथा शरीर पर कुप्रभाव डालता है। परम्परागत विधि से पर्यावरण प्रदूषण को 12 प्रकार का बताया गया है परन्तु इस पत्र मे प्राप्त स्थान को दृष्टिगत रखते हुए केवल वायुप्रदूषण, जलप्रदूषण, भूमिप्रदूषण तथा ध्वनिप्रदूषण का वैज्ञानिक उल्लेख करते हुए इनके कारणो पर भी प्रकाश डाला गया है। मुख्य रूप से सभी प्रकार के प्रदूषणो के वैदिक समाधान को वैदिक मन्त्रो तथा विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानो पर किये गए प्रयोगो की सहायता से यह सिद्ध किया गया है कि अग्निहोत्र तथा वैदिक आदेश ही केवल मात्र प्रदूषण दूर करने के उपाय है।

वेदों में पर्यावरण रक्षा

प्रो0 देवदत्त भट्टि

निदेशक वैदिक शोधशाला

दिल्ली गेट, मालेरकोटला (प)

वेदो मे पर्यावरण रक्षा की भरपूर चर्चा है। यद्यपि पर्यावरण प्रदूषित होने की समस्या इस युग मे विकराल रूप धारण कर चुकी है, फिर भी वैदिक युग मे क्रान्तदर्शी ऋषियो का इस ओर काफी ध्यान था। उन्हे भविष्य मे इस समस्या के भयकर होने का आभास था। अतः वेदो मे इस समस्या के समाधान के लिए ठोस उपाय बताए है। पर्यावरण की सीमा मे जल, वायु, आकाश, पृथ्वी वनस्पति, पशु-पक्षी आदि आते है। जनसख्या के बढ जाने, मशीनी उद्योगो के बढ जाने, वनो के कम हो जाने, हवन समाप्त हो जाने और गन्दगी के बढ जाने से यह समस्या सामने आई है। आजकल वातावरण के प्रदूषण मे ध्वनि प्रदूषण का भी स्थान है इन सब से बचने के लिए वेदो मे उपाय बताये गये है। वेदो मे दर्शाये उपायों से हम आज भी प्रदूषण की समस्या से बच सकते है। वेदो मे प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखने का भी स्पष्ट विधान है। प्राकृतिक सन्तुलन मे छ ऋतुओ के निर्बाध रूप मे यथा-समय प्रवर्तित होने का महत्त्व है। ऋतुओ का क्रम तथा ऋतुओ की विशेषताए (गुण) बने रहने चाहिए। इनमें किसी प्रकार का परिवर्तन करने की चेष्टा करना, प्रकृति से छेडछाड करना प्राकृतिक सन्तुलन को बिगाडना है। ऋतुओ के क्रम को और ऋतुओ की प्रक्रिया को अथर्ववेद मे प्रकृति के यज्ञ' की सज्ञा दी है.- स यज्ञियो यजति यज्ञिया ऋतून्।। (18 1 18) प्रकृति

के लगातार हो रहे यज्ञ के साथ घर-घर मे भी प्रतिदिन हवन करने का विधान है। यदि घर-घर मे आज भी यज्ञ (हवन) हो, जिसमे सुगन्धित एव औषधीय गुणो वाले द्रव्यो की आहुति दी जाए, तो प्रदूषण को निष्प्रभावी बनाया जा सकता है।

वेदों में वर्णित प्रदूषण नाश एवं पर्यावरण संरक्षण के उपाय

अमन कुमार शर्मा (शोधच्छात्र)

सस्कृत-विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू-180006

प्राचीन समय मे जलवायु को शुद्ध एव स्वच्छ रखने मे वेदो मे विहित यज्ञो का अन्यतम योगदान होता था। हवन-यज्ञो मे जलने वाली समिधाओ तथा अन्य सामग्रियो से ऐसी गैसे उत्पन्न होती थी जो अनेक प्रकार के कीटाणुओ को नष्ट कर जलवायु को शुद्ध कर देती थी। यह बात त्रिले' एव टाटलिक' नामक विद्वानो के अनुसधान से सिद्ध हो चुकी है। यजुर्वेद (मन्त्र 1/1) के अनुसार हवनसामग्री मे प्रयुक्त गुड, शक्कर तथा किशमिश, मुनक्का आदि पदार्थो के धुएँ से चेचक हैजा, टी बी तथा टाइफाइड आदि रोगो के कीटाणु नष्ट हो जाते है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार यज्ञाग्नि मे जो पदार्थ डाले जाते है, वे सूक्ष्म परमाणु बनकर ऊपर बादलो मे मिलकर वर्षा करते है। वर्षा से औषधी, औषधी से अन्न, अन्न से धातु और धातु से शरीर बनता है। यज्ञ केवल प्रदूषण का ही नाश नही करता, अपितु दीर्घायु, नीरोगता आदि गुणो के साथ-साथ यज्ञ ब्रह्मप्राप्ति का भी साधन है।

वेदाः

डॉ0 रेखा सेमवाल

टिहरी गढवाल

'वेद' शब्द वैदिक युग मे सम्पूर्ण वाङ्मय के पर्यायवाची शब्द के अर्थ मे प्रयुक्त होता था। जिस प्रकार आज धर्मशास्त्र, व्याकरण शास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि से अनेक विषयो का बोध होता है। शास्त्र शब्द किसी विशिष्ट अर्थ का प्रतिपादन न कर पूर्व मे जुडे हुये शब्द की सम्पूर्णता को ही दर्शाता है। उसी प्रकार 'वेद' शब्द का प्रयोग प्राचीन समय से सामान्य रूप से सम्पूर्ण साहित्य के लिए किया जाता है। इस प्रकार वेदो मे चारो वेदो के साथ उनके ब्राह्मण, उपनिषद्, आरण्यक आदि सभी आ जाते हैं। कहा भी है-**मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्** अर्थात, मन्त्र और ब्राह्मण दोनो वेद ही हैं, लेकिन आगे चलकर वेद शब्द केवल चार वेदो ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद और अथर्ववेद का सूचक ही रह गया। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् वेद की मर्यादा के

अन्तर्गत होते हुये भी मूल वेदो से सर्वथा अलग किये गए। उपनिषद् ब्राह्मण, आरण्यक आदि ग्रन्थ मन्त्रो की व्याख्या तथा महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं। यद्यपि वेद और ब्राह्मण आदि जो भी वेद के व्याख्या ग्रन्थ, आज पृथक् रूप मे जाने जाते है, फिर भी हमारी सारी क्रियाओ का मूल उक्त सभी वेद है। सस्कृति, धर्म, दर्शन, साहित्य और ज्योतिष आदि जितने भी विषय है, उनकी नीव वेदो पर ही अवस्थित है। इसलिए मनु मैक्समूलर आदि कई आधुनिक युग के विद्वानो ने सर्वज्ञानमय स्वरूप को स्वीकार किया है।

स्वामी दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य का विश्व को योगदान

डॉ0 रामनाथ वेदालकार

वेदमन्दिर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद के अपूर्ण भाष्य के अतिरिक्त वाजसनेय माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेदसहिता सम्पूर्ण का भी भाष्य किया है। उससे पूर्व उव्वट तथा महीधर इस पर भाष्य लिख चुके थे। उव्वट तथा महीधर का भाष्य उस कर्मकाण्ड का अनुसरण करता है, जिसके अनुसार उक्त सहिता मे दर्शपौर्णमास, अग्निष्टोम, वाजपेय, राजसूय, सौत्रामणी, अश्वमेघ, पुरुषमेघ, सर्वमेघ, पितृमेघ आदि के विधि-विधानो का वर्णन हुआ है। स्वामी दयानन्द का भाष्य इस कर्मकाण्ड के विनियोगो से स्वतन्त्र है, अथवा यह कहना चाहिए कि उन्होने मन्त्रो के अपने ही विनियोग किये है, जो प्राय स्वामी दयानन्द के मत मे पूर्वकृत विनियोग कोई ऐसी अटल रेखा नही है कि उसका अनुसरण करना अनिवार्य हो। पूर्व विनियोगो के सम्बन्ध मे उनकी यह सम्मति है कि जो युक्तिसगत एव वेदादि के प्रमाण के अनुकूल हो तथा जो मन्त्रार्थनुसारी हो, वही विनियोग ग्राह्य हो सकता है। साथ ही उनका यह भी कथन है कि वेद केवल उस पूर्वोक्त कर्मकाण्ड तक ही सीमित नही है, उसके इतर कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड तथा विज्ञानकाण्ड परक अर्थ भी किये जा सकते है। अपने भाष्य मे स्वामी जी ने तदनुसार ही अर्थ किये हैं।

उदाहरणार्थ कर्मकाण्डपरक व्याख्या मे षष्ठ अध्याय के मन्त्र 7 से 22 तक अग्नीषोमीय पशु का प्रयोग आता है। इसमे छाग (बकरे) को देवताओ के लिए काटा जाता है। चतुर्दश कर्मकाण्ड का **'वाच ते शुन्धामि प्राण ते शुन्धामि'** आदि मे पूर्वकर्मकाण्डानुसार यजमानपत्नी काटे हुए बकरे के समीप बैठकर इस कण्डिका मे प्रोक्त मन्त्रो से उसके मुख, प्राण आदि अगो, का जल से स्पर्श करती हुई शोधन करती है। परन्तु स्वामी दयानन्द के अनुसार आचार्य शिष्य को कह रहा है कि विविध शिक्षाओ से मै तेरी वाणी, कर्ण, नेत्र आदि को पवित्र करता हूँ। यजुर्वेद का 16 वाँ अध्याय रुद्राध्याय कहलाता है, जिसके आधार पर कर्मकाण्ड मे शतरुद्रिय होम कल्पित किया गया है। इसमे

रुद्र जहाँ अनेक उत्कृष्ट रूपो मे वर्णित हुआ है, वहाँ ठग, चोर, लुटेरे, तस्कर, आदि निष्कृष्ट रूप भी कहे गये हैं। पशुपालक, राजमन्त्री, न्यायाधीश आदि का सत्कार करना चाहिए, किन्तु ठग, चोर आदि पर दण्ड-प्रहार करना चाहिए।

अश्वमेघ के कर्मकाण्ड मे घोडे को काटना, उसके अगो को सुइयो से गोदना, अग्नि मे उसके अगो की आहुति देना आदि माना है। किन्तु दयानन्द **'राष्ट्रं वा अश्वमेघ '** (श० 13 1,6 3) के प्रमाण से राष्ट्र का पालन करना ही क्षत्रियो का अश्वमेघ यज्ञ है, ऐसा मानते हैं। पितृमेध के कर्मकाण्ड मे वह **'वपां ज्ञातवेद· पितृभ्यो'** (अ0 35, कण्डिका 20) आदि से पितरो की व्यप्ति के लिए अग्नि मे गाय की चर्बी नही प्रत्युत बीज बोने योग्य भूमि करते हैं। मन्त्रार्थ यह करते हैं कि राजा का कर्तव्य है कि वह श्रेष्ठ पितृजनो को खेती योग्य भूमि प्रदान करे और सिचाई का प्रबन्ध करे।

इस प्रकार सर्वत्र अपने यजुर्वेदभाष्य मे उव्वट एव महीधर से प्रतिपादित पूर्व कर्मकाण्ड से भिन्न व्याख्याए स्वामी दयानन्द ने की है। यह उनका विश्व को एक नवीन योगदान है।

वेदेषु नित्यानित्यैतिह्यसम्बन्ध्यवधारणा

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री

सस्कृत-विभागाध्यक्ष·, खालसा कॉलेज दिल्ली

1 वेदशब्दस्यार्था.- विभिन्नानामाचार्य्याणा टीकाकाराणा व्याख्याकाराणाञ्च मतम्।

2 वेदेषु इतिवृत्तमस्ति न वेति प्रश्नोदये प्रश्नद्वय वर्तते। एक पक्ष इतिहासवादी अपर इतिहासाभाववादी।

3 वेदेषु ऐतिह्यमस्ति न वेति ज्ञानार्थम् सहायकभूताः विभिन्ना. प्रक्रिया, शैल्यश्च (1) आध्यात्मिकी, (2) आधिदैविकी, (3) आधियाज्ञिकी वा। अत्र यास्कमतम्:-**अर्थं वाच पुष्पफलमाह याज्ञदैवते पुष्पफले, देवताध्यात्मे वा।'** (निरुक्ते 1 20)

4 अन्ये च कतिपय सिद्धान्तपक्षाः- (1) आख्यानशैली (2) ऐतिहासिकी शैली (3) नैरुक्तप्रक्रिया च।

5 नित्येषु सत्सु वेदेषु, अनित्याभाववादिनाम् ऐतिह्यस्वीकरणे केचन प्रश्नाः, विप्रतिपत्तयश्च, तेषा यथामति समाधानञ्च।

निर्गलितञ्च शोधपत्रसारभूतम्:- एवंविधाः समस्ता अपि इतिवृत्तवदाभासमाना. कथाशा वैदिकैर्व्याख्यायन्ते। तेषा नयेन न मनाक् तत्रेतिवृत्तशङ्कावकाशः। ऐतिहासिकानाम् पक्षे पुनर्वेदवाणी

ऋषिप्रणीता पौरुषेयी॰च तास्तान् कथाशान् ते तथैव वृत्तरुपेणैव विवृण्वन्ति। सत्यम्। सन्ति ते खलु अल्पीयास एव। प्राधान्य तु वेदाना नित्यत्ववादिनामेव न खल्वितिहासवादिनाम्।।

वेदेषु विश्वबन्धुत्वम्

डॉ0 सन्तोष कुमार पाण्डेय

राजकीय-शिक्षक-प्रशिक्षण-महाविद्यालयः, राँची (झारखण्ड)

वेदो भारतीयानामाध्यात्मिकजीवनस्य तेषा सास्कृतिकविकासस्य सामाजिकचित्रस्य च निदर्शको विद्यते। मूलरूपेण ऋग्यजुः सामाथर्वरूपेणैव केवल चत्वारो वेदा वेदत्वेन प्रसिद्धाः पर मन्त्रब्राह्मणात्मक॰ शब्दराशिर्वेदः इत्यनेन वचनेन मन्त्रभागो व्याख्यानभूतो ब्राह्मणभागश्च वेदान्तर्भूतौ। ब्राह्मणभागस्य कर्मप्रधानत्वादारण्यकस्योपासना- प्रधानत्वादुपनिषदो ज्ञानप्रधानत्वाच्च तेषा समेषा शब्दराशिर्वेदत्वेन स्वीक्रियते। इमे वेदा न केवल भारतीयानामपितु विश्वस्मिन् विश्वे वसता मानवाना ज्ञानस्य पिपासा शमयन्ति स्वकीयैः सगीतमयैर्मन्त्रैर्भावपूर्णैर्वृत्तै परिष्कृतै शब्दविन्यासैर्विविधछन्दोभिराचारादिप्रख्यापनैश्च। ते सतत प्रयच्छन्ति नितरा तेषा जीवनमूल्यस्य ज्ञानम्। विश्वबन्धुत्वदृष्ट्या समग्रमानवा द्विधा विभक्ता विद्यन्ते आर्यरूपेणानार्यरूपेण च। विभागोऽय कर्मणा धर्मणा च वेष्टितो विद्यते अनार्या यथा स्वकीयेन वैदिकाचरणेन श्रेष्ठाचरणेन चार्यत्वमवाप्नुवन्तस्तथैव सर्वे मानवा. श्रेष्ठाचरणेन वैदिकाचरणेन चार्याः श्रेष्ठा भवितुमर्हन्ति। वेदस्य कर्मण सिद्धान्तेन मानवाना जयेष्ठत्व श्रेष्ठत्वञ्च निर्धारण समेषा कल्याणाय विद्यते। **'सा प्रथमा सस्कृति विश्ववारा'** इति वेदस्योद्घोष आर्याणा प्रथमसस्कृतेर्विश्वस्मिन् विश्वे प्रतिष्ठितस्य रूपान्तरेण प्रचलितस्य सास्कृतिक-विभवस्य समुद्घोष। शोधपत्रेऽस्मिन् वेदे व्यपदिष्टानामार्यसस्कृतेर्वृक्षाणा तेषा शाखान्तरालाना समाबद्धाना फलास्वादकानामेकसूत्रत्व विश्वबन्धुत्वञ्च समीक्षितो भविष्यतीति दिक्।

वेदों में मानवीय मूल्य

आचार्य अखिलेश शर्मा (अथर्ववेदी)

(सस्कृत-विभाग)

राजर्षि शाहू महाविद्यालय लातुर.

'सर्व ज्ञानमयो हि वेदः' इस वचन के अनुसार वेद सर्व ज्ञान के भण्डार हैं। चाहे वह ज्ञान आज का विज्ञान हो या प्राचीन अध्यात्म। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि **'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है'** आज मानवीय मूल्य जो ससार में बिखरते जा रहें हैं, सारा ससार अशान्ति की ओर अग्रसर हो रहा है, ऐसे समय में अथर्ववेद का यह मन्त्र-**सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि व '**

अर्थात् हे मनुष्यो। मै तुम्हे एक सहृदय तथा द्वेषभाव से रहित करता हूँ। सारे ससार को एक सूत्र मे बाधने वाला है। प्रस्तुत है 'वेदो मे मानवीय मूल्य' शोध पत्र।

वेदों में प्रार्थनाएं वैदिक विनय

डॉ0 मुमुक्षु आर्य

वेद सस्थान, जी-6, सैक्टर-12,

नोएडा-201301, उ0प्र0

चारो सहिताओ मे प्रार्थनाओ के स्वरूप को रेखांकित करते हुए उसको आध्यात्मिक लोक से सस्पृष्ट माना गया है, जिनका दिग्दर्शन स्वय वैदिक ऋचाओ मे प्रतिपादित है। आत्मिक भाव से प्रस्फुटित व्यक्ताव्यक्त ध्वनि द्वारा कृत प्रार्थना ही आत्मा का रस है। अध्यात्मवेत्ता को प्राप्त आनन्दानुभूति ही नि·श्रेयस् लोक का प्रथम सोपान माना गया है। यही उक्त लेख का सार है।

वेद में आतङ्कवादोन्मूलन के उपाय

डॉ हेमलता बोलिया

सहाचार्या सस्कृत विभाग

मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर(राज0)

आज विश्व के सम्मुख यो तो नाना समस्याएँ नर्तन कर रही हैं, परन्तु उनमे आतङ्कवाद की समस्या सबसे प्रमुख है। जिससे जीव-जगत् के विनाश का प्रश्न ही उपस्थित नही हुआ, अपितु वनस्पति जगत् और प्रकृति के नाश का भी। आज मानवता त्राहि-त्राहि करने लगी है। इसका समाधान वैज्ञानिको के लिये एक चुनौती है। जहाँ विज्ञान समस्या का समाधान करने मे असमर्थ होता है, वहाँ हमारे ध्यान स्वत: ही धर्मशास्त्रो की ओर जाता है। अपौरुषेय वेद देवस्तुतियो का सग्रहमात्र नही है, उनमे हमारे साक्षात्कृतधर्मा ऋषियो ने जीवन की विभिन्न समस्याओ के समाधान के उपायो का सम्यक् सयुक्ति प्रतिपादन किया है। यद्यपि 'आतङ्कवाद' शब्द आज का बहुचर्चित और प्रचलित शब्द है, तथापि वैदिक साहित्य मे देवासुरसग्राम के माध्यम से इसकी विस्तृत मीमासा की गयी है। यथा आतङ्कवाद प्रसार के कारण, उसके उन्मूलन के उपाय, उपायो की प्रयोगविधि आदि है। इन्द्र-वृत्र युद्ध तो जग प्रसिद्ध है, जो आतङ्कवाद का कैसे समूलोच्छेद किया जाए का मार्ग प्रशस्त करता है।

ऋग्वेद में दौत्यप्रवृत्ति

वेद प्रकाश डिडौरिया

शोध-छात्र सस्कृत-विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दूत के माध्यम से सन्देश सम्प्रेषण की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक साहित्य से लेकर पुराण साहित्य, यहाँ तक कि, लोकगीतो एव लोक कथासाहित्य मे भी दौत्यप्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। ऋग्वेद मे भी इसके अनेक उद्धरण प्राप्त होते है। ऋग्वेद मे अनेक देवशक्तियो द्वारा दौत्यकार्य निष्पादन का वर्णन है, यथा अग्नि, इन्द्र वाक्, पूषा, सोम, वेन एव वायु आदि। इनमे सर्वाधिक स्थानो पर अग्नि का आह्वान किया गया है कि वे देवताओ के दूत है, दौत्य कर्म से पूर्णतया परिचित है, अत· हमारे हविष्यान्नो को देवो तक पहुँचाए। साथ ही देवो को यज्ञ मण्डप पर लेकर आए-**अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ आ सादयादिह॥** ऋग्वेद-8/44/3 ऋग्वेद मे जहाँ इन देवशक्तियो को दूत रूप मे वर्णित किया गया है तथा इन्हे जिन विशेषणो से अलङ्कृत किया गया है, वे सभी विशेषण परवर्ती काल मे धर्मशास्त्रियो, राजनीतिज्ञो एव साहित्यशास्त्रियो के द्वारा दूत के लक्षण मे कहे गये है। अग्नि की स्तुति मे कहा गया है-**आ जुहोता स्वध्वरं शीरं पावकशोचिषम्। आशुं दूतमजिर प्रत्नमीड्यं श्रुष्टी देव सपर्यत॥** ऋग्वेद-3/9/8, इसी प्रसग मे देवताओ के अन्य भी विशेषण प्राप्त होते है, यथा-सर्वज्ञ, महान् सत्यरूप, धनो को प्रदान करने वाले, प्रमुदित करने वाले, यशस्वी द्विज सचरणशील आलस्यरहित, क्रान्तदर्शी सुन्दर, शीघ्र गमनशील, विचारशक्ति से सम्पन्न, उपकारक, केतुस्वरूप, बुद्धि का प्रेरक, चक्षुरूप, अनुशासनप्रिय आदि जो कि दूत के सर्वश्रेष्ठ लक्षण हो सकते है।

वैदिक विचारों की सार्वभौमिकता

डॉ0 शशि तिवारी
वरिष्ठ रीडर, मैत्रयी कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली-110063

विश्व के प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद आदि वेद सहिताओ मे वैदिक ऋषियो ने व्यापक, अनन्त और सार्वभौमिक ज्ञान को प्रकट किया है। वेद के प्रमुख प्रतिपाद्य को चार भागो मे विभाजित किया जा सकता है- सृष्टिविद्या, यज्ञविद्या, देवविद्या और ब्रह्माण्डीय सरचना, जगत् के मूलकारण, आधार आदि के जो विवेचन मिलते है, वे आधुनिक वैज्ञानिक निष्कर्षो से परिपुष्ट होते है और कई दृष्टियो मे उससे भी आगे की बात रखते है।

यदि हम वैदिक विचारो को आलोचनात्मक दृष्टि से देखे तो अनेक विचारो किसी

स्थानविशेष या व्यक्तिविशेष के लिये न होकर सब स्थानो पर रहने वाले सब लोगो के लिए सर्वदा के लिए कल्याणकारी प्रतीत होते हैं। तदनुसार भूमि पर सभी मानवो का अधिकार है। मनुष्येतर प्राणी और पर्यावरण की सुरक्षा सब मनुष्यो का दायित्व है। विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व, अभय आदि वे उदात्तभाव है, जो सर्वकल्याण के आधार है। मानवीय अधिकारो और कर्त्तव्यो की चर्चा और उसके लिए सदाचरण की अनिवार्य, वैदिक मन्त्रो मे प्रतिपादित की गयी है। जीवन मे सर्वांगीणता और समग्रता के विकास की आवश्यकता पर वैदिक चिन्तन मे पुन. पुन. बल दिया है, जिसका महत्त्व भी सबके लिए है। प्रस्तुत पत्र मे इन तथ्यो को विस्तार से प्रतिपादित किया गया है।

अथर्ववेद में प्रतिपादित नैतिकता के सिद्धान्त

डॉ0 किरण टण्डन

रीडर, सस्कृत-विभाग

कुमाऊँ विश्वविद्यायल, नैनीताल (उत्तराचल)

मनु का कथन **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्** (2/6) इस बात को प्रमाणित कर देता है कि वेद मानव को उसके धर्म, आचरण, कत्तव्यादि का ज्ञान कराने मे पर्याप्त समर्थ है। भारतीय सस्कृति की आधारभूत विशेषताओ का विस्तृत वर्णन सर्वप्रथम हमे अपेन वैदिक वाड्मय मे ही उपलब्ध होता है। इसमे समस्त मानव समुदाय के लिए आवश्यकत एव कल्याणकारी तत्त्वो का जो निर्वचन किया गया है वह किसी न किसी रूप मे नैतिकता से सम्बन्धित है। ऋग्वेद, यजुर्वेद एव सामवेद के ही समान अथर्ववेद मे भी ईश्वर के प्रति आस्था, देवताओ से सहयोग के लिए प्रार्थना, माता-पिता एव गुरुजनो का आदर, सत्यनिष्ठा, राष्ट्रभक्ति, परोपकारपरायणता, कर्त्तव्यनिष्ठा, व्यवहार मे सौमनस्य, आत्मानुशासनादि मानव के लिए कल्याणप्रद बातो का उपदेश मिलता है। अथर्ववेद का एक मन्त्र-**मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा। सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया।।** 3/30

अथर्ववेदे दीर्घजीवनकामना

प्रो वेदप्रकाश शास्त्री

आचार्य एव उपकुलपति

गु का वि वि हरिद्वार

मानवजीवन सर्वोत्कृष्टमस्ति मतमिद निरन्तरायतया निखिलाना चिन्तनपराणा विदुषा नितरामभिमतम्। मानवाभ्युदयार्थ समभीप्सित यत् ज्ञान वेदेषु विद्यते ततोऽधिक नान्यत्र क्वचित्। अत एव **'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति' 'यत· सर्वा प्रवृत्तय ' 'सर्वज्ञानमयो हि स·'** इति निगद्य महर्षयो

निजवाग्ज्योतिषा सासारिकजनाना ज्ञानदीप दीपयन्ति। वेदमन्त्रान् तदर्थांश्च समालोक्य विश्वभद्रता प्रकटयन्ति। को न खलु कामयते दीर्घजीवित सुखे कस्य न रमते मन। दीर्घजीविकापहरणाणि कर्मजातानि सम्पादयन्नपि पुमान् न दु खे मतिमाप्नोति। विश्वतो जनाश्चिन्तयन्ति तानुपायान् यैरवाप्यते दीर्घजीवनम्। अथर्ववेदे दीर्घजीवनोपाया दीर्घजीवनप्रार्थनाश्च सन्ति।

वेदोक्त प्रजा-गुणों की समसामयिकता

डॉ0 वन्दना शुक्ला, डॉ0 अरुण शुक्ल

प्रजा के गुणो के सबध मे विभिन्न स्थलो पर वेदो ने हमे निर्देश दिये हैं जैसे अथर्ववेद का एक मन्त्र द्रष्टव्य है-सत्य बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न· कृणोतु।। अथर्व 12/01/01 बृहत् सत्य, बृहत् ऋत, उग्र, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ से सभी पृथिवी का धारण करते है। इनसे धारण की हुई हमारे भूत और भविष्य की रक्षा करने वाली हमारी मातृभूमि हमे महान् प्रकाश और उत्तम स्थान प्रदान करती है। इस मन्त्र मे सत्य आदि सात गुणो को भूमि अर्थात् राष्ट्र का धारण करने वाला बताया है। यदि किसी राष्ट्र की प्रजा मे महान् सत्व प्रदान करने वाला सत्य महान् सत्याचार वाला ऋत, क्षत्रियोचित तेजयुक्त उग्र, दृढ सकल्प सहिष्णुता और सरलता, विद्या-विज्ञान की अध्ययनशीलता तथा मिल जुलकर कार्य करने की क्षमता से सात गुण होगे तो उस देश का आध्यात्मिक और भौतिक विकास कभी अवरुद्ध नही होगा और न ही राष्ट्र का कभी पतन होगा। आज भी इन गुणो का महत्त्व कम नही हुआ है। उग्रवाद, आतकवाद इसके उदाहरण है। इसी दृष्टि से शोध आलेख प्रस्तुत है।

वर्तमान सन्दर्भ में वेदों की प्रासंगिकता

डॉ0 रेणु बाला

रीडर व अध्यक्ष, सस्कृत विभाग

गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय अमृतसर।

वेद विश्व ज्ञान के भण्डार है। आदिकाल से ही वेद तथा वैदिक साहित्य प्रेरणास्रोत रहा है। हमारी जीवन-पद्धति मे वेद का बहुत बडा योगदान रहा है। वेद के अद्वितीय महत्त्व को देखते हुए कहा गया है-**वेदोऽखिलोधर्ममूलम्**' हमारे जीवन से जुडे हुए पक्ष वैदिक साहित्य मे उपलब्ध है। प्राचीन काल से ही प्रत्येक क्षेत्र मे वेद की आवश्यकता रही है। वर्तमान युग मे निरन्तर विकृत हो रही सामाजिक स्थिति, सर्वत्र फैल रहे भ्रष्टाचार, गिर रहे नैतिक मूल्यो, टूट रहे पारिवारिक रिश्तो धनलिप्सा, भोगोन्मुख प्रवृति, शासकवर्ग की कर्तव्य-विमुखता आदि को देखकर हमे निर्दिष्ट जीवनमार्ग

अपनाने की आवश्यकता अनुभूत होती है। इसीलिए वेद की उपयोगिता पहले से कही अधिक प्रतीत होती है। सुव्यवस्थित तथा सगठित समाज के लिए अपेक्षित कुछ एक तत्त्वो के सम्बन्ध मे वेद का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जा रहा है।

वेदों में आदर्श जीवन

अवनीश कुमार, (शोध छात्र)

गढवाल विश्वविद्यालय

विश्व वाङ्मय का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। वेद सत्यविद्याओ का मूल स्रोत है। मनु महाराज ने समस्त धर्मो (कर्त्तव्यो) का मूल वेद के माना है- **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।** मनुस्मृति (2 6) वेद शब्द की व्याख्या करते हुए आचार्य सायण तैत्तिरीय सहिता की भाष्य भूमिका मे लिखते है-**इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेद**। प्रस्तुत शोध लेख के माध्यम से वेद समुद्र मे विद्यमान अनेक उपदेश रत्नो मे से प्रमुख आदर्श जीवन को अलङ्कृत करने वाले छन्द रूपी सीपियो मे गुप्त मोतियो को जीवन मे धारण करने से जीवन आदर्श पूर्ण होगा ही साथ मे परम लक्ष्य की प्राप्ति भी अवश्य हो सकेगी-आदि भावो को प्रकट करने का प्रयास है।

लोक जीवन के मार्गदर्शक वेद

सुजाता मगोत्रा

शोधच्छात्रा पी एच डी सस्कृत-विभाग,

जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू-180006

वेद प्रत्येक मनुष्य को सत्य बोलने तथा सत्य का व्यवहार करने का उपदेश देते है। वेदो के अनुसार सत्य के समान कोई तप नही तथा झूठ के समान कोई पाप नही। आज ससार मे प्रत्येक व्यक्ति सफलता एव विकास चाहता है। वेदो मे सफलता और विकास का मूलमन्त्र बताते हुए सत्य, मन, कर्म, वाणी की एकता, छलकपट रहितता, ईमानदारी, हृदय की विशालता, उदारता सहिष्णुता मर्यादा, सयम, कष्टसहन शक्ति तथा योग्यता आदि गुणो को सफलता का एक मात्र उपाय एव आधार बताया है। वाणी की मधुरता एव सगठन शक्ति का उपदेश भी वेदो मे निहित है। वेद मानव को भ्रष्टाचार को समाप्त करने का भी उपदेश देता है। वेदो के अनुसार मानव के भाव-विवेक, सहानुभूति, सहिष्णुता, समभाव सहयोग, सच्चरित्र, प्रेम, न्याय, सत्य अहिसा, उदारता, सहृदयता, आत्मीयता आदि गुणो से युक्त होना चाहिए। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेदो मे जहाँ आध्यात्मिक तत्त्वो का गूढ विवेचन है, वही दैनिक जीवन सम्बन्धी लौकिक बातो का बडी सरलता

से प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि लोकजीवन के मार्गदर्शक है वेद। सम्पूर्ण तथ्यो का निदर्शन शोधपत्र मे सन्निहित है।

वेदों में राजा के कर्त्तव्य

डॉ0 उमा जैन

रीडर सस्कृत-विभाग

मु0 ला0 एण्ड जय0 ना0 खेमका गर्ल्स कॉलिज, सहारनपुर

चारो वेदो मे सैकडो मन्त्रो मे राजा के कर्त्तव्यो का निर्देश है। ऋग्वेद ओर यजुर्वेद मे वरुण का सम्राट् रूप मे वर्णन है और उसके लिए विशेषण दिया गया है-'**धृतव्रतः**' अर्थात् निर्धारित नियमो और कर्त्तव्यो का पालन करने वाला। व्रत शब्द निर्धारित नियम, अनुशासन, प्रतिज्ञा और सकल्प के अर्थ मे आता है-'धृतव्रत·' से ज्ञात होता है कि राजा के लिए भी कुछ कर्त्तव्य निर्धारित है और उनका पालन करना राजा का कर्त्तव्य है। अथर्ववेद मे प्रकृति रजनात्, प्रजा का पालन (रञ्जन) करने के कारण राजा होता है। राजा के अभाव मे धनवान् असुरक्षित रहते है। कृषक एव ग्वाले द्वार बन्द करके सोते है। जिस प्रकार बिना जल के नदी, बिना घास के वन, बिना गो रक्षक के पशुओ का झुण्ड, उसी प्रकार बिना राजा के एक देश की स्थिति होती है। अत· देश मे सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए राजा का होना अत्यावश्यक है।

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम्

आचार्य डॉ0 नागेशचन्द्रपाण्डेय

9-10, सेनानी विहार, दहिलामऊ

प्रतापगढ (उ0प्र0)

विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद्लृ लाभे, विद् सत्तायामिति धातोर्घञ् प्रत्ययेन निष्पन्नो वेदशब्द सम्यग्ज्ञानस्य विचारस्य सत्तायाश्च बोधको विद्यते। **विद्यन्ते धर्मादय साधनोपाया यैस्ते वेदा.**-ऋक्प्रातिशाख्ये। '**इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेद.**'-तैत्तिरीयसहिताया सायणभाष्ये-1/1/1 इत्यादिकथनैर्वेदस्य महत्त्वमतितरा स्पष्टम्। वेदे प्रयुक्ता शब्दनिवहा: पद्यात्मका गद्यात्मका वा मन्त्रशब्देनाख्यान्ते।

त एव वेदे प्रयुक्ता मन्त्रा अर्थवन्तो निरर्थका वेति विद्वद्भिर्विचारितम्

यद् भद्रं तन्न आसुव

डॉ0 जयनारायण पाण्डेय·

(पूर्व प्रोफेसर· अध्यक्षय सस्कृत-विभाग·, राची विश्वविद्यालय·,

वैदिक देवाना कल्याणोन्मुखम् उत्कृष्टम् आदर्शस्वरूप ध्यात्वा ऋषय· धर्माचरणे प्रवृत्ता·। वैदिकधर्मीणामिदमेव लक्ष्यमस्ति यत् प्रोन्नतिविरोधिनी भावनासु शक्तिषु च विजय प्राप्य मानवा. आत्मन उत्तरोत्तर विकास कुर्यु.-**उद्वयं तमसस्परि स्व. पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥** (यजु. 20/21) उत्तरोत्तर समुन्नतिकरणमेव अमृतत्व स्वराज्यम्। वैदिकमन्त्रेषु अयमेव ज्योतिर्मय लोक·।'

वैदिक कर्मकाण्डसम्बद्ध. यजुर्वेद. उदात्तभावनया ओतप्रोत। वैदिक प्रार्थनाया. प्रथम वैशिष्ट्य विद्यते बहुवचनान्तनिष्ठम्। उदाहरणार्थम्-**विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।** (यजु0 30/3) अर्थात् हे देव सवित। ये अस्मदर्थं कल्याणकृता तान् ता अस्मान् प्रददातु। **'अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्'** अर्थात् हे प्रकाशमय देव। अस्मान् सन्मार्गे गमनाय प्रेरयतु। पुन **'धियो यो न. प्रचोदयात्'** अर्थात् अस्माक बुद्धि प्रेरयतु। वैदिर्कषय स्वार्थं परित्यज्य समष्टिभावनयायुक्ता आसन्।

वेदानां वैशिष्ट्यम्

आचार्या शिवदत्त शुक्ल

गुढाकला (छतरपुर म0 प्र0)

अस्मिन् शोधपत्रे वेदाना वैशिष्ट्यविचारचिन्ताया कतिपयेऽनुयोगा. पुरतोऽवतिष्ठन्ते। वेदाना वैशिष्ट्यविषये शोधपत्रेऽस्मिन् विस्तृता चर्चा विचारणा समीक्षणा च विशेषेण भविष्यति।

विश्वशान्तिसन्दर्भे वेदस्य योगदानम्

डॉ0 भगवत शरण शुक्ल, प्राचार्य

सौदामिनी सस्कृत महाविद्यालय, 149 विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद,

वेदा स्वकीयोपदेशमाध्यमेन, देवाराधनज्ञापनेन, यज्ञमाध्यमेन, रोगपापशमनार्थवैदिकानुष्ठानेन स्वकीयोक्तनियमपरिपालनेन शान्तिबोधकमन्त्रमाध्यमेन च विश्वशान्ति परिपालयन्ति। इत्थ विश्वशान्त्यै वेदो यदेकत्र नियमपरिपालनयागानुष्ठानधर्माचरणाद्युपायान् बोधयति एकत्र च स्वयमेव विश्वशान्ति कामयते-शान्ता द्यौ शान्ता पृथिवी शान्तमिदमन्तरिक्षम्। शान्ता उदन्वतीराप· शान्ता नः सन्त्वोषधी शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्त नो अस्तु कृताकृतम्। शान्त भूत च भव्य च सर्वमेव शमस्तु न.॥

अथर्ववेद-19/9/1।। इत्थ वेदो विश्वशान्तिसन्दर्भ स्वकीय महत्त्वपूर्ण योगदान विदधाति।

विविधक्षेत्रेषु ज्ञानस्रोतांसि वेदाः

डॉ0 आचार्या अन्नपूर्णा

द्रोणस्थली आर्षकन्या गुरुकुल देहरादून

सर्वविध ज्ञान वेदेषु निहितमस्ति। विविधक्षेत्राणा ज्ञानस्रोतासि वेदा एव सन्ति। आध्यात्मिकयज्ञस्य, दर्शनस्य, धर्मस्य समाजस्य विज्ञानस्य सर्वविधक्षेत्राणा यथा-भूगर्भ-वनस्पति-रसायन-प्राणीविज्ञान- आयुर्विज्ञानादीना सर्वक्षेत्राणा मूलस्रोतासि वेदा एव परिलक्ष्यन्ते।।

वेदस्य निष्कारणधर्मत्वम्

डॉ0 कृपा राम त्रिपाठी अभिराम

रीडर-सस्कृत-विभाग

एम एल के पी जी कालेज, बलरामपुर- उ0 प्र0

वेदो न केवलमेक ग्रन्थमात्रमपितु स साक्षाच्चेतनो धर्मो यदाश्रयेण कृत्स्नमपि ब्रह्माण्ड प्रतिष्ठित वर्तते। धर्मे सर्व प्रतिष्ठितमिति यदुच्यते तत्र वेदस्यैव तात्पर्यं विद्यते। नियतानपुर्वीवेदे केवल शब्दस्य प्राधान्य नास्ति। यथा जगद् ब्रह्मविवर्त तथा न तावद्वेदोऽपि ब्रह्मविवर्त प्रत्युत वेद. परमात्मनो वाङ्मयो विग्रह एवास्ति। सुतरामतो वेदस्य प्रामाण्यमाधारश्च सर्वेषा प्राणिना कल्याणाय सर्वथाऽपरिहार्यमस्तीति वेदस्य निष्कारणधर्मत्व विवृत्य वेदस्योपयोगिता प्रकाशनायास्मिन् शोधपत्रे सप्रमाण प्रयासो विहित ।

विभिन्नक्षेत्रेषु वेदाना योगदानम्

डा0 महेन्द्र पाण्डेय

प्राध्यापक शुक्ल यजुर्वेद

सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी

वेदविद्वासो वेदविज्ञानेन हौत्रज्ञानोपासनाचरणसस्कारादिकर्माणि समुपदिशन्ति। यथा शिक्षा कल्पो अथ व्याकरण निरुक्त छन्दो ज्योतिषमिति, आयुर्वेद-धनुर्वेद-गन्धर्वादिवेदाः, धर्मशास्त्रदीन्युपाङ्गानि च सन्ति तदुपदिष्टाः विषया. अस्माक जीवनदर्शने शान्ति प्रयच्छन्ति प्रकाशयन्ति च।

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

डॉ0 राममूर्ति चतुर्वेदी
वरिष्ठ-प्राध्यापक ऋग्वेद
सम्पूर्णानन्द-सस्कृत वि0वि0 वाराणसी-2

अस्यामेव वेदविहितवैश्विकभावभूमौ **'वसुधैव-कुटुम्बकम्' 'स्वदेशो भुवनत्रयम्' 'सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा' 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** इत्यादयः स्मृतय श्रुतयश्च सुतरा सगच्छन्ते। शोधपत्रेऽस्मिन् **'कुत्र विश्व भवत्येकनीडमि'**ति प्रश्नस्य वैदिकसमाधानार्थं वेदेषु बहुदेवतावाद निरूप्य तत्र सर्वेषा विश्व भवत्येकनीडमिति सप्रमाण समाधानप्रतिष्ठापनमपि विश्वस्मै वेदाना योगदानमस्तीति सामोद कल्पयितु शक्यत इति दिक्।

ज्ञानपथ प्रवर्त्तक सूर्य

भोलेन्द्र पाण्डेय
सहायक शिक्षक,
मनोहरलाल इन्टर कॉलेज,
चाकुलिया पूर्वी सिहभूम झारखण्ड

सूर्य की उत्पत्ति विराट् पुरुष की आँख से कही गई है। आँख का प्रमुख कार्य है देखना और देखना ही जानना है। पुरुष सूक्त में वर्णित मन्त्र **'चक्षो सूर्यो अजायत'** से यह अभिव्यक्त होता है कि सूर्य ही वस्तुओं को रूपायित करते हैं, दृश्य बनाते हैं, दृष्टिपथ मे लाते हैं, ज्ञान प्रदान करते हैं और बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित भी करते हैं, सम्भवत· इसीलिए उन्हे जगत् चक्षु, गुरूणा गुरु·, जगद्गुरु, कर्मसाक्षी, अज्ञाननाशक, ज्ञान प्रकाशक तथा अन्धकार को दूर करने वाला कहा गया है।

वाणी का वैभव स्वरात्मक तथा व्यञ्जनात्मक वर्णो पर आधारित है। सस्कृत वाङ्मय में व्यवहृत समस्तवर्ण किसी न किसी देवता से अधिष्ठित हैं, यद्यपि विभिन्न वर्णों के भिन्न-भिन्न देवता हैं, फिर भी भगवान् सूर्य समष्टि रूप से सभी वर्णों के देवता हैं। श, ष, स और ह को ऊष्म वर्ण कहा जाता है और इन वर्णों के देवता सूर्य हैं। जब सूर्य रश्मियाँ धूलिकण के साथ किसी छिद्र आदि से पार करती हैं तो उनके चञ्चल गति को देखकर अणुमात्रा का समय एव उनके गुरुत्व से त्रसरेणु का तौल बतलाया गया है। चार अणुमात्रा काल का सामान्य एकमात्रा काल होता है और एक मात्रिक वर्ण को ह्स्ववर्ण कहा जाता है। मन में त्वरित गति से यदि शब्दोच्चारण की भावना रहती है तो उस उच्चारण का प्रत्येक स्वरवर्ण एक अणुमात्रा काल का माना जाता है।

प्राचीन नक्षत्रों का आधुनिक परिचय

लेफ्टि कर्नल एम पी बडौला
9, विष्णु लोक तपोवन मार्ग
देहरादून।

मनुष्य ने तारागण व समूहो का प्रयोग, धर्म, ज्ञान व समाज सेवा आदि के लिए अपने अपने तरीके से किया। भारत मे इनका प्रयोग इसी तरह यज्ञ, कर्मकाण्ड व ज्योतिष मे किया गया जिसका वर्णन वेद, पुराण व अन्य वैदिक ग्रन्थो मे मिलता है। तारागणो का वर्गीकरण भारत व पाश्चात्य सभ्यताओ द्वारा लगभग समान रूप से किया जैसे ग्रह चन्द्रमा, राशियाँ व नक्षत्र आदि। भारत मे नक्षत्रो की ओर अधिक ध्यान दिया गया राशियो की ओर इतना नही, अत· इनका वर्णन प्राचीन वैदिक ग्रन्थो मे व साहित्य मे कम ही मिलता है। भारतीय ज्ञानियो ने अथर्ववेद के उन 28 तारागणो की ओर विशेष ध्यान दिया, जो सूर्य चन्द्र के क्रातिवृत पर व थोडी सी दूरी पर स्थित थे व हैं। इनको नक्षत्र माना व उचित नामावली दी व महीनो का नामकरण भी इन्ही नक्षत्रो के नाम पर किया गया।

वैदिक साहित्य में पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा

डॉ0 अनिता जैन
वरिष्ठ प्रवक्ता--सस्कृत
वनस्थली विद्यापीठ जिला टोक, राजस्थान

ससार के साहित्य मे वेद का अपना विशिष्ट स्थान है। 'वेद' जहाँ एक और हमारे निखिल ज्ञान-विज्ञान के स्रोत है, वही दूसरी और हमारी उदात्त सस्कृति के भी परिचायक है। भारतीय विचारको एव मनीषियो ने व्यक्ति एव समाज के उदात्त स्वरूप तथा सर्वाङ्गीण विकास के लिए चार पुरुषार्थों का विधान किया है। ये चार पुरुषार्थ है - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। पुरुषार्थ' शब्द का अर्थ है - पुरुषैर्ध्यते इति पुरुषार्थ अर्थात् पुरुषो के द्वारा जो इष्ट होता है वही पुरुषार्थ है। ये चारो पुरुषार्थ मानव जीवन के आर्थिक, बौद्धिक, नैतिक एव आध्यात्मिक आदि विभिन्न पक्षो से सम्बद्ध है। इनमे से अर्थ और काम प्रवृत्तिमूलक पुरुषार्थ है। मोक्ष निवृत्ति मूलक पुरुषार्थ है व धर्म प्रवृत्तिनिवृत्ति मूलक पुरुषार्थ है अर्थात् धर्म' ही एकमात्र ऐसा पुरुषार्थ है, जो ससार मे प्रवृत्त कराते हुए मोक्ष की ओर प्रेरित करता है, इससे भौतिक और आध्यात्मिक दोनो उन्नति सभव है। अर्थ' से अभिप्राय है- विद्या और क्षमता के अनुसार परिश्रम पूर्वक धनप्राप्ति और धर्म के अनुसार उसका

उपयोग एव उपभोग।

वेदों में मनुष्य का भोजन

कविता आर्या

बडौत (बागपत)

वैदिक मान्यता है कि ईश्वर के ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से वेदविद्या और कार्यरूप प्रकृति उत्पन्न होती है। ईश्वर ही मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियो के शरीर की रचना करता है मनुष्येतर समस्त प्राणियो का जीवन स्वाभाविक जातीय ज्ञान एव नैसर्गिक नियमो पर टिका होता है। विचारशक्ति के अभाव मे वे उन नियमो को तोडने का प्रयत्न नही करते है। अतः उनका जो स्वाभाविक भोजन होता है, वे सदैव उसे ही ग्रहण करते है। जो जीव शाकाहारी है वह शाकाहार और मासाहारी जीव-जन्तु मासाहार ही ग्रहण करते है। यही नही बल्कि शाकाहार मे भी पशु आदि भिन्न-भिन्न प्राणी भिन्न-भिन्न प्रकार का मास भक्षण करते है। किन्तु मनुष्य के साथ ऐसी स्थिति नही है। कोई मनुष्य शाकाहारी है तो कोई मासाहारी। अत मनुष्य को सर्वाहारी तक कहा जाता है। फिर प्रश्न होता है कि-मनुष्य को अन्तत ईश्वर ने शाकाहारी बनाया है या मासाहारी। ऋग्वेद मे ईश्वर उपदेश करता है-**अहं दाशुषे वि भजामि भोजनम्** अर्थात् मै सबको सुख देने हारे जगत् के लिए नाना प्रकार के भोजनो का विभाग पालन के लिए करता हूँ। **पय पशूना रसमोषधीना बृहस्पतिः सविता मे नियच्छत्।** यहाँ प्रार्थना की गई है कि- हे उत्पादक परमेश्वर। मुझे पशुओ का दूध और औषधियो का रस सदैव प्राप्त होता रहे। पशुओ के लिए वेद मे पशुपालन की आज्ञा प्राप्त होती है। वेद कहता है-**व्रजं न पशुवर्धनाय** अर्थात् पशु सवर्धन के लिए व्रज (गोशाला) बनाओ। व्रज मनुष्यो की दुग्धादि की आवश्यकता की पूर्ति करते है।

वैदिक लोक जीवन

डॉ0 श्रीमती कृष्णा जैन

सहायक प्राध्यापिका, सस्कृत,

महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट

महाविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश

जब हम वैदिक कालीन लोकजीवन पर बात करते है तो हमे यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि लोक क्या है? 'लोक' हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमे भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ सँचित रहता है। 'लोक' की परिधि व्यापक है। यह शब्द वर्ग भेदरहित, व्यापक एव

प्राचीन परम्पराओं की श्रेष्ठ राशि सहित अर्वाचीन सभ्यता-सस्कृति के कल्याणमय विवेचन का द्योतक है। भारतीय सस्कृति के रथ का यह एक चक्र वेद अर्थात् शास्त्र पर आधारित है, तो उसका दूसरा लोक पर टिका हुआ है। जीवन से सबन्धित सभी उपकरणों को लिए हुए उसका अपना एक सामूहिक व्यक्तित्त्व हैं। वस्तुत· जिसे सस्कृति की सज्ञा दी जाती है, वह लोक भिन्न नही है। उसका उत्स लोक ही है लोक का महत्त्व सर्वकालीन है।

मानव-कल्याणार्थ ऋग्वेद-प्रसूत 'सञ्ज्ञान-सूक्त'

श्रीमती दुर्गादेवी पाण्डेय

त्रिलोकनाथ स्नातकोत्तर

महा वि , टाँडा-24190 (अम्बेडकर नगर उ0 प्र0)

उसे सबसे मिलकर रहना होगा, सबके सुख में सुखी सबके दुःख में दु·खी होना पडेगा। अहकार त्यागकर समसरता और आत्मीयता को अपनाना होगा। वैदिक ऋषि को पुरोहित बनकर अह भावनाग्रस्त गृहस्थों के हाथ सें निजी हवनसामग्रियों को लेकर सबको एक में मिलाकर सामूहिक बनाकर सबके प्रतिनिधि के रूप में सार्वजनीन यज्ञ में सबके मन में विद्यमान धनी-निर्धन, उच्चावच सबल-दुर्बल के भेद को आहुति के साथ स्वाहा करना होगा, जिससे वैदिक सामाजिक समता की गङ्गा प्रवाहित होकर सबके मनोमालिन्य और कुभावों का आत्मसात् कर सबको एकता के सूत्र में निर्मल मन से आबद्ध कर सकें, और हमारे समाज में आर्यता का विस्तार हो और उच्चता और हीनता की ग्रन्थि का जन्म ही न हो। इस वैदिक पावन भावना का दिग्दर्शन आज भी सामूहिक योगों में भारतीय समाज के साथ विश्वसमाज में किया जा सकता है।

वैदिक जीवन मूल्य

श्रीमती अलका सिह

शोध छात्रा (सस्कृत-विभाग)

जितेन्द्र सिह

शोध छात्र (दर्शन विभाग)

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

वेद का अर्थ है विश्वात्म ज्ञान। वेदों का लक्ष्य मानव जीवन और विश्व जीवन की रचना की व्याख्या करना और उसे सुचारु रूप से चलाने के लिए जीवन मूल्यों को प्रतिपादित करना है।

वेदो ने मानव को स्वय का ज्ञान कराया है। मानव समाज जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र जिनमें परिवारों में पति-पत्नी सम्बन्ध, माता-पिता सम्बन्ध, भाई-बहन सम्बन्ध, विद्यालय में गुरु-शिष्य सम्बन्ध, राष्ट्र में प्रजा-राजा सम्बन्ध, बालक-बालिका सम्बन्ध हैं। ये सारा समाज हजारों लाखों वर्षों से एक व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य कर रहा है इस सामाजिक ढाँचे को, पारिवारिक ढाचे को सुचारु रूप से चलाने के लिए और इन्हें स्थिर रखने के लिए वेद ने व्यवस्थाओं के रूप में जीवन-मूल्यों को प्रतिपादित किया है।

वेदोन्मुखी मार्ग प्रवृत्तिमूलक

राजकुमार छाबरा

शोधार्थी- प्राचीन भारतीय इतिहास सस्कृति एव

पुरातत्त्व विभाग, गु.का वि वि , हरिद्वार।

वेदों की प्राचीनता के बारे में यहीं से अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व का सबसे प्राचीन ग्रथ ऋग्वेद' है। अर्थात् वेदों से ही मानव के अस्तित्त्व व ज्ञान का पता चलता है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद' के अन्दर विश्व के सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार है। वेदो की पवित्रता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है क्योंकि वेदों को मानवकृत न मानकर देवताओं द्वारा माना गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती' ने विश्व को प्रकाशमान करने वाले भारत को स्वय अज्ञान के अधेरे में डूबा देखकर कहा था कि वेदों की ओर लौट चलो आर्य समाज ने वेदों को घर-घर पहुँचाने का जो बीडा उठाया उससे प्रतीत होता है कि जल्दी ही एक बार फिर भारत वेदो के ज्ञान के माध्यम से विश्व के शिखर पर होगा।

वेदों में मानवीय कर्त्तव्यों का प्रतिपादन

विजेन्द्र शास्त्री

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय

(विद्यालय-विभाग) हरिद्वार

मानवीय जीवन के उद्देश्य और लक्ष्य पर विचार करते हुए एक मानव के सामने निम्न और उच्च स्थिति के लोगों के प्रति क्या कर्त्तव्य होने चाहिए। अतः मानव को परस्पर भ्रातृभाव तथा मित्रता दृष्टि धारण करनी चाहिए। अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए प्राणियों की हिसा करना अनुचित है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य वेदों के अनुसार दिव्य शान्ति, दिव्य ज्योति, दिव्य आनन्द अथवा मोक्ष प्राप्त करना है। इसके लिए शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास होना

नितान्त आवश्यक है। मानवीय कर्त्तव्यों का निर्णय ईश्वरीय ज्ञान वेद तथा पवित्र अन्तःकरण के द्वारा हो सकता है। मानव को सत्य की रक्षा करने के लिए सर्वस्व तक अर्पण करने को उद्यत रहना चाहिए। सत्य के ही कारण इस पृथ्वी का भी धारण हो रहा है। वेदों में निम्नलिखित मानवीय कर्त्तव्यों का प्रतिपादन किया गया है-1 वेदों में वैयक्तिक एव पारिवारिक कर्त्तव्य। 2 वेदों में सामाजिक एव राष्ट्रिय कर्त्तव्य। 3 वेदों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एव शूद्रों के कर्त्तव्य। 4 वेदो मे मानव की सर्वांगीण उन्नति का उपदेश।

वेदों में मानव मूल्य

डॉली जैन

व्याख्याता, सस्कृत, दर्शन व वैदिक अध्ययन विभाग

वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)

वेद धर्म का मूल है। वेद धर्म के साथ-साथ भारतीय नीति के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। वैदिक शिक्षाऐं अत्यन्त व्यापक व सार्थक हैं। जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित बातें वेदों के अध्ययन से ज्ञात होती हैं। समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए तथा उसको उच्छृखल अथवा मर्यादाहीन होने से बचाने के लिए विद्वानों ने अपने अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर कुछ नियम निर्धारित किए हैं। हम अपने चारों ओर रहने वाले मनुष्यों तथा इतर प्राणियों के सग किस प्रकार व्यवहार करें कि वह "उचित" हो- "सदाचार" की सज्ञा के योग्य हो। जिस शास्त्र में आचरण सम्बन्धी इन नियमों का विवेचन किया जाता है, उसे आचारशास्त्र कहते हैं, इसे "नीतिशास्त्र" तथा "व्यवहार शास्त्र" भी कहा जाता है।

वेदों में सदाचार-शिक्षा

डॉ0 प्रमोद योगार्थी

प्राध्यापक- दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय

हिसार (हरियाणा)

सज्जनों द्वारा किया जाने वाला आचार-व्यवहार ही सदाचार कहा जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सदाचार का महत्त्व और स्थान है। लौकिक और पारलौकिक विकास सदाचार के पालन मे ही सन्निहित है। सदाचारहीन पुरुष एक बार को लौकिक ससाधनों को तो एकत्रित कर सकता है, परन्तु ऐसे पुरुष की पारलौकिक उन्नति सर्वथा अवरुद्ध हो जाती है और पारलौकिक उन्नति के अभाव में मानव जन्म निरर्थक है। आचारहीन न पुनन्ति वेदाः अर्थात् आचरणहीन पुरुष को वेद भी

पवित्र नहीं करते हैं। जिसके जीवन में सदाचार नहीं उसका जीवन धरती पर भार स्वरूप है, पशुओं से भी गिरा हुआ है। मनुष्य का मूल्याकन उसके आचार-विचार से ही किया जाता है।

वेदों में आचार-व्यवस्था

डॉ0 रेणु गुप्ता
प्रवक्ता
गवर्नमैंट महिला कालेज
ऊधमपुर।

भारतीय परम्पराओं और मान्यताओं के अनुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वे ईश्वर की रचना हैं, नित्य हैं और अपौरुषेय हैं। वेदों में मानव जाति के लिए दिया गया उपदेश निहित है, वही आचार संहिता मानी गई हैं। वही आचार स्वरूप ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आदि मे ऋषियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वेद आर्यों का सबसे प्राचीन साहित्य है, इसकी ऋचाओं में वैदिक युग की सभ्यता और सस्कृति मूल रूप से निहित है। ऋग्वेद मे आर्यों के धार्मिक, राजनैतिक, सास्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि सभी प्रकार के विचारों का तथा उनकी प्रगति का विस्तृत वर्णन है।

वैदिक परिवार में आचार मीमांसा

शिशुपाल
सस्कृत-विभाग
पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

परिवार का प्रारम्भ विवाह से होता है तथा परिवार मृत्यु पर्यन्त रहता है। विवाह एक धार्मिक सस्कार के रूप में स्वीकृत है। विवाह के उपरान्त पति-पत्नी का साथ-साथ रहने का विधान है। वेद में शुभाशा की गयी है कि दम्पती प्रसन्न रहते हुए खेलते हुए पुत्रों के साथ अपने घरो मे रहें। पति पत्नी का मन हवा में धुए की तरह मिला हुआ हो। दोनों एक दूसरे को इस प्रकार स्नेह करे जैसे कि चक्रवाक् करते हैं। वे पति पत्नी के रूप में एक दूसरे की अभिलाषा करें अन्य की नहीं। पुत्र पिता के वचनों का उल्लङ्घन न करे। पुत्र माता पिता से प्रीत रखता हुआ शुभ कर्मों का अनुसरण करे। जिस घर के लोग मिथ्या वाणी नहीं बोलते उस घर में सुख-समृद्धि रहती है। भाई-भाई से, बहिन बहिन से द्वेष न करे। परिवार के लोगों का भोजन, स्नान, जलपान आदि सब साथ-साथ हो।

इसी प्रकार परिवार के कर्त्तव्यों व व्यवहार का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन वेद में यत्र तत्र मिलता है।

वेदों का महत्त्वः स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण

डॉ कृष्णा गुप्ता
सस्कृत प्राध्यापिका
फतेहचन्द महिला महाविद्यालय
हिसार-125001

वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार यह ईश्वरीय वाणी है। पाश्चात्त्य विद्वान् मैक्समूलर ने भी लिखा है कि- वेद मानव-जाति के पुस्तकालय में सदा सर्वदा के लिये प्राचीनतम पुस्तक रहेंगे।' वेदों में मूलरूप से सभी विधाऐं हैं- यथा ब्रह्मविद्या, सृष्टिविद्या, भूगोलविद्या, खागोलविद्या, गणितविद्या, योगविद्या आदि। वेद धार्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक सत्य का एक पूर्ण ईश्वरप्रेरित ज्ञान है। स्वामी दयानन्द ने वेद की धारणाओं को एक नई दिशा प्रदान की।

ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः

डॉ0मनुदेव बन्धु
प्रोफेसर वेद-विभाग,
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वैदिक परम्परा की सुप्रसिद्ध उक्ति है 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः'। वेद मन्त्रों के अर्थों का साक्षात्कार करने वालों को ऋषि कहते है। ऋषि कौन हो सकता है?- निरुक्त के लेखक महर्षि यास्क लिखते है- **साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मेभ्य उपदेशाय मन्त्रान्सम्प्रादु.। उपदेशेन ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदाङ्गानि च**'। (निरुक्त 1/1) सृष्टि के प्रारम्भ में ऐसे ऋषि उत्पन्न हुए थे, जो वेदमन्त्रों के साक्षात्कृतधर्मा थे अर्थात् जिन्हें परमात्मा की प्रेरणा से वेदमन्त्रों और उनके अर्थो का साक्षात्कार हुआ था। वे साक्षात्कृतधर्मा ऋषि अपने पीछे आने वाले असाक्षात्ककृतधर्मो ऋषियों को जिन्हें परमात्मा द्वारा वेद मन्त्रों और उनके अर्थो का बोध नही हुआ था। अपने उपदेश द्वारा वेदमन्त्रों को सिखाते रहे, बाद में इन पीछे आने वाले ऋषियों ने वेद को समझने के लिए वेद को तथा निरुक्त और वेदाङ्गों को ग्रन्थ रूप में सगृहीत किया। इस प्रकार यास्क की सम्मति में वेद सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषियों को परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। आदि ऋषियों ने वेदमन्त्रों का साक्षात्कार किया था, निर्माण नहीं। साक्षात्कार पहले से ही विद्यमान वस्तु का

हुआ करता है। वेदमन्त्र परमात्मा के नित्य ज्ञान मे पूर्व विद्यमान थे, उन्ही का साक्षात्कार किया। उन मन्त्रो को स्वय नही बनाया।

विविध क्षेत्रों में वेद ज्ञान का स्त्रोत

डॉ0 दीपा गुप्ता
प्रवक्ता:- प्राचीन भारतीय इतिहास,
सस्कृति एव पुरातत्त्व विभाग
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (हरिद्वार)

जगत् के प्रारम्भ मे जिस प्रकार पृथ्वी निवासियो की आँखो की सहायतार्थ जगत् रचयिता ने सूर्य की रचना की, उसी प्रकार मानस-चक्षु के लिए वेदो को प्रादुर्भूत किया, जिससे मानस-चक्षु उनसे ज्ञान प्राप्त कर सके। इसीलिए वेद किसी देश या जाति विशेष के लिए नही, अपितु समस्त भूमडल के लिए प्रादुर्भूत हुए थे। भारतीय दृष्टि मे सृष्टि का उष:काल वेद का आविर्भाव काल माना जाता है। भारतीय विद्वज्जन वेदो को विविध क्षेत्रो मे सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का मूल स्त्रोत मानते है। ऋषियो की घोषणा है कि जो कुछ ज्ञान-विज्ञान इस धरा पर अभिव्यक्त हो चुका है और हो रहा है, और भविष्य मे होगा, वह सब वेदो से ही प्रसूत होता है।

ऋग्वेद में व्यक्तित्व की अवधारणा

नवदीप कुमार
सस्कृत विश्वविद्यालय पजाब
चण्डीगढ।

ऋग्वेद मे अन्य विषयो के साथ आधुनिक विज्ञान की मूल अवधारणाओ का आध्यात्मिकता के साथ अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान की ही एक शाखा मनोविज्ञान का मूल निर्धारण ऋग्वेद मे प्रतीत होता है। आधुनिक-मनोविज्ञान के अनुसन्धानो मे व्यक्तित्त्व पर बहुधा चिन्तन होता है। किन्तु व्यक्तित्त्व की सरचना मे मूल विशेषक, आदर्श व्यक्तित्त्व की कल्पना व व्यक्तित्त्व की विभिन्नताओ के कारण, ये विषय आज भी रहस्यपूर्ण दिखलाई पडते है। ऋग्वेद मे इन विषयो की मूल अवधारणाये छुपी है। इस शोधपत्र मे इसी पर विचार हुआ है।

वैदिक वाङ्मय में पृथिवी तत्त्वः एक प्रतिक्रियात्मकस्वरूप

कु0श्वेता शर्मा (शोधछात्रा)
वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)

निघण्टु में पृथिवी शब्द के निम्नलिखित 21 पर्याय प्राप्त होते हैं-गौः। ग्मा। ज्मा। क्ष्मा। क्षा। क्षेणी। क्षितिः। अवनिः। उर्वी। पृथ्वी। मही। रिप.। अदितिः। इला। निर्ऋतिः। भूः। भूमिः। पूषाः। गातु। गोत्रेति पृथिव्याः। (निघण्टु) सम्पूर्ण जीवसृष्टि की आधारभूता पृथिवी माता को वैदिक वाङ्मय में वैविध्य के साथ चित्रित किया गया है। आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक स्वरूप के साथ पृथिवी के प्रतिक्रियात्मक स्वरूप को भी यहाँ उद्घाटित किया गया है।

विद्या वेदात्मा

डॉ0 सुखमय भट्टाचार्य , एम ए ,पी एच् डी
अध्यक्षचर , काछाड महाविद्यालय॰, शिलचर॰

मनुष्येतरप्राणिना स्वत.स्फूर्त्ततया जीवनार्था प्रवृत्ति॰। विद्यया हीनास्ते वर्त्तन्ते। परमार्थहीना अर्थभाजो जनाः कर्मकुशलेन प्रयुक्तिमनेकविधामाविष्कृत्य ता विद्यात्वेन अङ्गीकुर्वन्ति। विद्यैषा भोगसमृद्धये उपयुज्यते, न तु आत्माभ्युन्नतये। यया विद्यया पशुस्तरमतियातु न पारयन्ति जनाः सा विद्या तत्त्वतो विद्यापदवाच्या भवितुमर्हति किम्? यद्यपि अर्हति मनःप्रसारणे तस्या॰ उपयोगः कियान्? दृश्यते हि प्रयुक्तिमाश्रित्यापि नरा धिया तिष्ठन्ति पशुभि॰ समाना। अत. एतेन गृहशय्यासनाशनादिसुखातिरेकपरस्य जनस्य मनस अनुशीलनम् आत्मचिन्तन वा समुदेति।

अखण्डो वेदश्चतुर्धा। वेदमुपजीव्य वैदिकसाहित्य बहुधा पल्लवितम्। वेदवेदाङ्गोपाङ्गोपवेदभेदेन विद्यानाम् अष्टादशत्व यदङ्गीकृत तद्विश्लेषणेन विद्यास्त्रोतांसि वेदा इति समर्थयितु प्रतिपादयितु च शक्यते। प्रकृते सन्दर्भे विद्यासु एता वेदानिवार्य्यता मनसि निधाय भिया क्षुद्रधिया मया सुधिया समीपे आनम्रशिरसा किञ्चिन्निवेद्यते।

अपौरुषेयी वेदवाक्

डॉ0 जयदत्त उप्रैती
भू0पू0 आचार्य स0वि0अ0,
कुमाऊँ वि0 वि0 अल्मोडा, (उत्तराचल) 263601

इदमप्यत्रावधेयमस्ति यद् भारतीय प्राचीन सर्वमार्षवाङ्मय वेदान् ऋग्यजु सामाथर्वाचभिधान् अमनुष्यकर्तृकान् प्रतिपादयति तत्र वेदेषु मन्त्रानुपूर्वी खत्वपि नित्या। वेदेषु प्रत्यक्षाप्रत्यक्षपदार्थानाम्

अतीन्द्रियाणा सूक्ष्मभूताना मनः प्राणबुद्ध्यात्मपरमात्मादिविषयाणा च यथार्थोपदेशात् सृष्टिरचनास्थितिप्रलयमहाप्रलयादिवर्णना च विज्ञायते वेदानामपौरुषेयत्वम्। अपि च वेदानामान्तःसाक्षिरूपा अनेके मन्त्रा प्रतिपादयन्ति यत् पूजनीयस्येश्वरस्य सामथर्यादेव सर्गादौ वेदा ऋषीणा हृदयेषु प्रकटयाबभवुरिति किच, यादृश्या पदावल्या वेदा. समुपनिबद्धा. सन्ति तादृशी पदावली नैवासीत् वेदभाष्या प्रयुज्यमाना कस्यचित् समाजस्य प्राचीनकाले। सस्कृतभाषा समाजस्य व्यावहारिकी भाषा आसीत् न तु वेदवाक्। अपि वेदाना प्रामाण्य सर्वोपरि विद्यते। अतो वेदवाचा मनुष्यवाचा मिथो महदन्तरम् इत्यय विषय. शोधपत्रे सप्रमाण सविस्तारश्च प्रस्तोष्यते। इति।

भाषासु वेदानां प्रभावः प्रविधयश्च

डॉ0 रामाशीष पाण्डेयः

विद्यानगर (पश्चिम) हरम्

राँची (झारखण्ड·)

वेदस्य भाषा वेदभाषा वैदिकभाषा वा लौकिकसस्कृतात् पूर्वमेव ब्रह्मण कण्ठान्निर्गता तेषा निश्वासभूता सर्वत्र प्रसृता वेदसंहितायामुपलभ्यते। निरुक्तमतेन-**'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवु. तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादु.। उपदेशग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेम ग्रन्थं समाम्नासिषु वेदं च वेदाङ्गानि च।'** अनेन कथनेन ऋषीणा साक्षात्कृतधर्मत्व कालान्तरेऽवरेभ्य ऋषिभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य· संहिताया मन्त्राणामुपदेशत्वमनन्तर वेदवेदाङ्गरूपेण प्रसृतत्व चेत्यादीनि तत्त्वानि नूनमेव वेदमन्त्राणा प्राचीनत्व प्रमाणयन्ति। पाश्चात्त्या अपि विद्वास· आधुनिकाश्चापि भारतीया वेदमन्त्राणा प्रागैतिहासिकता विवेचयन्ति।

अष्टाविशतिः शताब्द्या उत्तरार्द्धे एकोनविशति· शताब्द्या· पूर्वार्द्धे च कतिपया· भाषाविद· श्लेगेल, ब्लूमफील्ड, मैक्समूलरप्रभृतय पाश्चात्त्या विद्वासः भाषाणा तुलनात्मकाध्ययनेन प्राप्तवन्तो यद् जर्मन-केल्टिक- ग्रीक-लैटिन-लिथुयानियन-स्कैण्डीनेवियन-ईरानियन-सस्कृतभाषाणाञ्च शब्देषु न केवल सामीप्यसम्बन्धो विद्यतेऽपितु व्याकरणस्य नियमेष्वपि आश्चर्यकर साम्य विद्यते। निष्कर्षरूपेण ते कथितवन्तो यदेताः सर्वा भाषा नूनमेव कस्या अपि एकस्या मूलभाषाया निष्पन्ना विद्यन्ते। ते कामप्यनवस्थिता भाषात्वेनाभावपरा शशविषाणवदनुपलब्धा सर्वासा भाषाणा मूलभाषा प्राग्भारोपीयभाषामेव स्वीकुर्वन्ति। तेषा मते भविष्यति काऽपि एतादृशीभाषा यस्या· सर्वा भाषा निर्गतास्तथा सा एव मूलभाषा भविष्यति। परमत्रावधेयमस्ति यत् प्राग्भारोपीयभाषा न काऽपि जगतितले प्राप्यते न वा तस्या भाषायामेकपत्रात्मकमेकशब्दात्मकमपि साहित्य विद्यते येन भाषाया अस्तित्त्वबोधो जायेत। विशेषत· पाश्चात्त्यभाषाविदा कल्पिता शशशृगायिता खपुष्पायिता वा भाषा कथ सर्वासा भाषाणा

व्युत्पादिका मूला वा भवितुमर्हतीति विद्वासो विचारयन्तु।

ऋग्वेद में भाषाचिन्तन

डॉ केदारनाथ शर्मा
रीडर, सस्कृत-विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

यूरोपीय समस्त वाङ्मय का मूल स्रोत जिस प्रकार ग्रीक भाषा मे ढूढा जाता है, उसी प्रकार भारतीय परम्परा वेद को ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओ का मूल मानती है। वेद भारतीय समस्त ज्ञान के रत्नाकर हैं। मनु ने सर्वज्ञानमयो हि स॰' कहकर वेद को समस्त ज्ञान का मूल माना है। भारत मे भाषावैज्ञानिक चिन्तन का जन्म प्राचीनतम वैदिक वाङ्मय ऋग्वेद काल मे ही हो गया था। ऋग्वेद मे भाषा (वाक्) के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाले अनेक सूक्त मिलते हैं ओर साथ ही भाषा (वाक्) को सृष्टि के रहस्य के रूप मे देखने वाले विचार का बीज भी इसमे मिलता है। ऋग्वेद मे मुख्य रूप से तीन सूक्त भाषा की महिमा का गान करने वाले हैं। ये तीन सूक्त हैं-1 अस्य वामीय सूक्त (1 164) 2 वाचस्पति या बृहस्पति सूक्त (10 71) 3 वाक् सूक्त (10 125)। अस्य वामीय सूक्त के 23वे मन्त्र मे सृष्टि की वाक्-मूलता, 41वे मन्त्र मे वाक् द्वारा जल सृष्टि, 45वे मन्त्र मे वाक् के चार प्रकार, 49वे मन्त्र मे वाक् द्वारा विश्वपोषण आदि की चर्चा मिलती है। ऋग्वेद का वाचस्पति या बृहस्पति सूक्त तो भाषाविषयक चिन्तन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमे भाषा की परिशुद्धि पर विशेष बल दिया गया है, क्योकि शुद्ध भाषा ही कल्याण का निधान हो सकती है (ऋक् 10 71 2)। इसी सूक्त के चतुर्थ मन्त्र मे भाषा की रहस्यमयता, पञ्चम मन्त्र मे शब्दार्थ ज्ञान की महत्ता एव आवश्यकता का विवेचन है। वाक् सूक्त मे भाषा (वाक्) द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी की सर्जिका, पालिका और सहारिका शक्ति के रूप मे वर्णित है। वाक् ही देवताओ की धारिका शक्ति मानी गई है (ऋक् 10 125 1)। वाक् ही त्वष्टा आदि देवताओ को आलम्बन देने वाली है, यही यजमानो को धन देने वाली है (मन्त्र 2)। यही रुद्रादि देवताओ की प्रेरिका शक्ति भी है और पृथ्वी मे व्याप्त है। -ऋक् 10 125 6

वेदों का पंजाबी पर प्रभाव

डॉ0 राजेन्द्र कुमार शर्मा, रीडर
पजाब विश्वविद्यालय वी वी बी आई एस एण्ड आई एस
होशियारपुर, पजाब-146021

वैदिक वाड्मय मे प्रयुक्त कुछ ऐसे शब्द हैं जो वेदो की भाति लौकिक सस्कृत साहित्य तथा वर्तमान पजाबी भाषा मे उसी रूप मे अथवा कुछ विकृत रूप मे प्रयुक्त होते है। दूसरे कुछ शब्द वेदो की भांति लौकिक सस्कृत मे तो मिलते हैं परन्तु, पजाबी मे आजकल नही मिलते। किन्तु एक अन्य प्रकार के विलक्षण शब्द भी हैं जो या तो वेद मे ही मिलते हैं या कुछ विकृत अथवा उसी रूप मे पजाबी भाषा मे आज भी उपलब्ध होते है तथा उनका प्रयोग भी होता है। सभवतः लौकिक सस्कृत साहित्य मे इन शब्दो का प्रयोग न हुआ हो। उदाहरणतः पजाबी मे-अक्कणा, अड्डा, अदा, घडम्म, खुझणा, कुलफ, उज, आप्पा, जिग, जबरी, जल्हा, तुरणा, डिगणा, निमता, पल्ली, पिस्सु, पोल्ला, बर, भल-भला, भाग, लक्क, रेत-रेता, साई, रुक्ख, रघड, साक, मेख, माडकू, हवान्ना, हेक, फुल्लिया, जनी इत्यादि अनेक शब्द तत्सम-तद्भव रूपो मे सीधे वेद मे मिलते है जो स्पष्टतः सिद्ध करते हैं कि ससार के अन्य भाषाओ की अपेक्षा पजाबी भाषा का वेद के साथ अत्यन्त समीप का सम्बन्ध है। इन दुर्लभ शब्दो के अर्थों तथा प्रयोगो के आधार पर हम वेदो के अर्थ को समझने मे भी सहायता ले सकते है। यही नही वेद मे लेट् लकार (Subjunctive) का प्रयोग जो लौकिक सस्कृत मे अनुपलब्ध है, वर्तमान पजाबी मे-गच्छासी, जासी, करसी, होसी इत्यादि रूप मे मूलभूत वैदिक लेट् लकार (मध्यम पुरुष) के रूप क्रमश - गच्छासि, यासि, करासि, और भवासि के सदृश है। पजाबी भाषा के आचल मे छुपे हुए तथा लौकिक सस्कृत मे अनुपलब्ध इन शब्दो तथा अन्य तत्त्वो को उद्धरणो सहित रखते हुए पजाबी भाषा पर वैदिक प्रभाव व निकटता को स्पष्ट करना तथा इसकी मूलभूत भाषा वैदिक/लौकिक सस्कृत भाषा के महत्त्व को दिखाना प्रस्तुत शोध-पत्र का विषय है।

ऋग्वैदिक ऋचाओं में ऋत की अर्थ-बोधकता

डॉ उमाकान्त यादव
रीडर, सस्कृत-विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

ऋचाओ मे ऋत का बहुल प्रयोग इसके मूल अर्थ को समझने मे कठिनाई उत्पन्न करता है। आचार्य यास्क ने 'ऋत' को 'जल' का पर्याय माना है। इसके अतिरिक्त सत्य और यज्ञ अर्थ भी स्वीकार किया है। प्राचीन भारतीय भाष्यकार प्रायः यास्क का अनुसरण करते हुए 'ऋत' को यज्ञ, सत्य और जल का बोधक मानते है। आधुनिक भारतीय भाष्यकारो मे 'अरविन्द' ने ऋत का अर्थ सत्य एव सदाचार ग्रहण किया है। 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' भी ऋत को मुख्य रूप से सत्य के अर्थ मे ग्रहण करते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होने सत्याचरण, यथार्थ, उदक, यज्ञ आदि अर्थ भी माना

है। पाश्चात्य विद्वानों में 'रॉथ' ने ऋत को 'व्यवस्था' के अर्थ में परिभाषित करते हुए इसे विश्व एव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित किया है। मैक्डॉनल, मैक्समूलर, ग्रासमान तथा वर्गेन आदि रॉथ की व्याख्या से प्रभावित हैं और वे ऋत को मुख्य रूप से 'व्यवस्था' के रूप में स्वीकार करते हैं। 'ऋत' को वेलणकर 'आधारभूत तत्त्व' के रूप में, लूडर 'सत्य' के रूप में, गाडगिल 'यज्ञ के भाव-अर्थ में, डॉ बी.बी. चौबे प्रकृति के अर्थ में तथा तिमरमान सत्य, यज्ञ, जल, के साथ-साथ सृष्टि-नियम के वाचक के रूप मे स्वीकार करते हैं। यदि ऋग्वेद में 'ऋत' से सम्बन्धित सदर्भों का अनुशीलन किया जाए तो वहाँ ऋत' विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ परिलक्षित होता है। जब ऋत' को अग्नि, सूर्य, बृहस्पति आदि दिव्य शक्तियों का जनक कहा जाता है तो वहाँ वह 'प्रकृति का प्रतिरूप' है।

वैदिक भाषाप्राशस्त्यम्

डॉ0 जितेन्द्र कुमार

सस्कृत-प्राध्यापक., दयानन्द-महाविद्यालय:

अजमेर (राजस्थान)

भाषा हि भावानामुत्कृष्टतमा निर्वाहिका। शास्त्रेऽधीतीनामनधीतीना वा समेषामपि हृदि भावा भवन्ति पर तेषामुद्वाहिका भाषा न सर्वेषा समानरूपा भवति। भाषातत्त्वविदस्तन्माध्यमेन निजहृदि जायमानाना भावाना सरलमपि सरस सरसमपि वा सहजमभिव्यञ्जन कुर्वते। भाषातत्त्व यथायथमजानन् स्वमनोविचाराणां स्वैर प्रकाशने सम्प्रेषणे वा नाल भवति। तस्माद् भाषाया महिम्नो विषये विद्वासोऽविद्वासो वा न कदाचित् विप्रवदन्ते। भाषा भाषणात्, भाष्यत भाषणादिव्यवहारोऽनुष्ठीयते यया सा भाषा। भाषाधीना हि खलु सर्वोऽपि लोकव्यवहारपरम्परा·। सम्यगेव भणित महाकविना दण्डिना भाषाविषये- इदमन्धन्तमः कृत्स्न जायेत भुवनत्रयम्। यदि शब्दाह्वय ज्योतिरासंसार न दीप्यते।।

इह एतादृशा. केचन शब्दाः प्रस्तूयन्तेऽत्र ये वेदे लोके च भिन्नयोरर्थयो. प्रयुज्यन्ते ये शब्दा लोके यस्मिन्नर्थे निबद्धा· सन्ति तेषा तेषामर्थाणा वेदा. विकृतिमापद्यन्ते विद्रूपताञ्च यान्ति इतोऽपि परमृग्वेदस्य सर्वप्रथमभाष्यकर्तृत्वेन समाद्रियमाणो वेङ्कटमाधवस्तु सर्वानतिशेते। स तु वेदव्याख्याया निरुक्तव्याकरणयो. ज्ञानेन वेदस्य केवल चतुर्थांशमेवावगन्तु शक्यत इति प्रतिपेदे1। वेदाध्ययने कृतभूरि-परिश्रमाः विद्वासोऽपि समग्रचिन्तन चेतसि निधाय प्रवृत्ता· स्युरित्यभिप्राय.।

विश्वजनीन वैदिक देवता सरस्वती

डॉ0 रेखा शुक्ला

रीडर एव विभागाध्यक्ष संस्कृत

जुहारी देवी गर्ल्स पी0 जी0 कॉलेज, केनाल रोड, कानपुर।

वेद भारतीय आध्यात्मिक जीवन एव सस्कृति के समुत्कर्ष का अनुपम मण्डार है। विज्ञान के मूल सिद्धान्तों, सामाजिक, सास्कृतिक एव भौतिक सामग्री को प्रस्तुत करने के साथ-साथ वह अलौकिक परमसत्ता के रहस्य को भी उद्घाटित करने में समर्थ है। वेदों में सरस्वती के विविध मन्त्र प्राप्त होते हैं। जिनमें सरस्वती के भौतिक स्वरूप (नदी) के साथ-साथ उसका देवी स्वरूप तथा आध्यात्मिक स्वरूप भी प्राप्त होता है। अपने भौतिक रूप में सरस्वती भारत भूमि की भौगोलिक सीमाओं की निर्मात्री है तथा भूगर्भीय जल का स्त्रोत है जो इस समय विलुप्त प्राय हो चुकी है। अनेक भूगभीय सर्वेक्षणों एव अनुसन्धान से सरस्वती के प्रवाह के विषय में जानकारी प्राप्त होती हैं। सप्त सन्धुओं तथा पञ्चनद के रूप में विद्यमान रही है। भूसर्वेक्षण एव विज्ञान के अनेक प्रवाह मार्ग बताए गए है। अपने देवी रूप में वह सम्पूर्ण मानव जाति की उपकारक नदी के रूप में प्राप्त होती है। वह विद्या एव वाणी की अधिष्ठात्री देवी है, जो मनुष्यमात्र के अज्ञानान्धकार को दूर कर उसे ज्ञानालोक से प्रकाशित करती है। सरस्वती अन्न बल और सन्तति को प्रदान करने वाली है। उसका दिव्य जल औषधीय गुणों से परिपूर्ण है। पितृयज्ञ में उसका आवाहन किया जाता हैं। वाग्देवी होने के कारण वह कला की भी अधिष्ठात्री देवी है।

ऋग्वैदिक जन-समूहः एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 मानिक लाल गुप्त

रीडर एव विभागाध्यक्ष इतिहास

वाई0 डी0 पोस्ट ग्रेजुएट कालेज,

लखीमपुर-खीरी

ऋग्वैदिक काल देश में रहने वाले लोगों के सर्वांगीण जीवन का चित्रण तथा समस्त जन-समुदाय के विभिन्न कार्य-कलापों को अभिव्यक्त करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय सामाजिक इतिहास से सम्बन्धित नवीनतम अनुसन्धानों और नूतन विचारो को गृहीत करते हुये अपने स्वतन्त्र विचार व्यक्त किये गये हैं, साथ ही अद्यतन शोधात्मक विधाओं और वैज्ञानिक पद्धतियो के आधार पर सामाजिक परिर्वतनों को उद्घाटित कर 'ऋग्वेद' की विश्व को क्या प्रमुख देन रही है? प्रकाश डाला है? ऋग्वेद भारोपीय भाषाओं के समूह में रचित विश्व की सर्वाधिक प्राचीन साहित्यिक कृति स्वीकार की जाती है। इस महान् रचना में ऋग्वैदिक आर्यो के लौकिक जीवन के साक्ष्य प्राप्त

होते हैं। ऋग्वैदिक ऋषियों ने धर्म व दर्शन को ही प्रमुखता नहीं दी थी, अपितु लौकिक सदर्भों को भी गम्भीरता से अभिव्यक्त किया।

वेदों में इतिहास सम्बन्धी धारणा तथा भाष्यकारों की यौगिकवाद के पक्ष में व्याख्याएं

डॉ0 रघुवीर वेदालकार

वैदिक संहिताओं में एक अनेक नामपद उपलब्ध होते हैं कि जिनका साम्य परवर्ती साहित्य मे उपलब्ध ऋषियों, नदियों, पर्वतो तथा अन्य भौगोलिक एव ऐतिहासिक स्थानों से है। उदाहरणार्थ-1 ऋषियों के नाम- विश्वामित्र, वसिष्ठ, जमदग्नि, भरद्वाज, अश्विनौ, गौतम, च्यवन, दधीचि इत्यादि ऋषि इतिहास मे सुप्रसिद्ध हैं। ये सभी नाम वैदिक संहिताओं में भी उपलब्ध हैं। 2 राजाओं के नाम- शन्तनु, पुरुरवा, नहुष आदि राजाओ का वर्णन भी पुराण आदि ग्रन्थों में प्राप्त होता है। वेदो में ये नाम उपलब्ध हैं। 3 नदी नाम- गगा, यमुना, सरस्वती आदि नदी वाचक शब्दों को वेद मे देख कर वेद मे लौकिक नदियों का वर्णन होने का अनुमान किया जाता है जबकि अन्य विद्वान् इनका यौगिक अर्थ करते हैं। 4 इसी प्रकार धुनि, चमुरि, इलीविश आदि नाम पद भी वेदो मे विद्यामान हैं जिनके आधार पर वेदो में इतिहास का भ्रम होता है। 5 अन्य नाम- इसी प्रकार उर्वशी, शुनःशेप आदि अन्य नाम भी ऐसे हैं जो वेदो में उपलब्ध हैं। परवर्ती साहित्य मे भी इनका इतिहास उपलब्ध होता है। 6 इसके अतिरिक्त वेदो मे ऐसे सूक्त भी विद्यमान हैं जो सवादात्मक शैली मे कहे गये हैं। यम-यमी सवाद, वामन-बलि आख्यान, विश्वामित्र-नदी सवाद, इसी प्रकार के है। इनके आधार पर इनके सम्बन्धित सूक्तों में काल-विशेष, व्यक्ति-विशेष के आख्यान का प्रतिपादन किया जाता है। इस पक्ष में एक प्रबल हेतु यह दिया जाता है कि मन्त्रो मे न केवल उक्त नाम ही उपलब्ध होते हैं, अपितु उन राजओ तथा ऋषियों की वशावलि का वर्णन भी वहाँ पर विद्यमान है। यथा-दीर्घतमो मामतेय, आंगिरसो गौतम इत्यादि। निरुक्तकार ने अनेक वैदिक शब्दो का निर्वचन करते हुए वेदार्थ की जो दिशा प्रदान की है उससे यही प्रतीत होता है कि यास्क वैदिक शब्दो को यौगिक तथा योगरूढ मानते हैं, रूढ नहीं। इस निबन्ध मे विस्तार से यास्क का एतद्विषयक पक्ष प्रस्तुत किया गया है। इसी में प्राचीन एव अर्वाचीन वेद भाष्यकारो के शब्दार्थों पर विचार करते हुए सप्रमाण प्रतिपादित किया गया है कि स्कन्द, उद्गीथ, वेकट, उत्वट, महीधर, सायण आदि सभी भाष्यकारो ने अपने-अपने वेदभाष्यों में यौगिक पक्ष का आश्रय लिया है। स्वामी दयानन्द तो इस पक्ष के प्रबल समर्थक हैं ही।

ऋग्वेद मे वर्णित ऐतिहासिक दाशराज्ञ युद्ध

नीरू रानी (शोध छात्रा),

सस्कृत-विभाग,

पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

'दशराज्ञ युद्ध' सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय की ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना रही है, जिसने उस समय की परिस्थितियो को भी प्रभावित किया। पराक्रमी राजा दिवोदास उसका पुत्र सुदास इस युद्ध का मुख्य पात्र था और पहाडी दस्युओ की बढती हुई शक्ति का दमन तथा सप्त-सिन्धु के बिखरे हुए एकत्रित करना इसका मुख्य उददेश्य था। ऋग्वैदिक दाशराज्ञ युद्ध से न केवल राजा सुदास शक्तिशाली हुआ अपितु युद्ध के उपरान्त स्थापित एकता से राजाओ का जन-साधारण का सामाजिक एव राजनैतिक स्तर भी ऊँचा हुआ तथा विश्व मे आने वाले समय मे मानव-मात्र के लिए एक अमृद्ध उदाहरण प्रस्तुत हुआ।

वेदों में विज्ञान एवं इतिहास में विसंगतियाँ

राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

वेदो मे विज्ञान प्रचुर है। सामान्य विज्ञान जैसे बल ऊर्जा आदि के बारे मे तो है ही, साथ ही वैमानिकी, सूर्य, प्रस्थ, ब्रह्माण्ड की रचना, बेतार प्रणाली द्वारा सदेश प्रेषण, दूरदर्शी आदि का उल्लेख है। यह विज्ञान तभी दृष्टिगत होता है जब मन्त्र के एक-एक शब्द तथा प्रयुक्त विशेषणो पर ध्यान दिया जाय। सासारिक कार्यों व आध्यात्मिक बातो को प्राकृतिक घटनाओ के उदाहरण देकर समझाया गया है। कुछ मन्त्रो मे स्वतन्त्र रूप से विज्ञान है। विज्ञान की बातो को उदाहरण देते हुये स्पष्ट किया गया है।

वैदिक आख्यान और आज की हिन्दी कविता

डॉ0 मृदुल जोशी

प्रवक्ता हिन्दी-विभाग

वैदिक साहित्य मे वर्णित असख्य आख्यानो को हिन्दी-साहित्य मे स्थान मिला है। आदिकाल से लेकर आज तक का हिन्दी-वाङ्मय ऐसे अनेक उदाहरणो से भरा पडा है। समकालीन हिन्दी कविता भी इसका अपवाद नही है। आज की निरन्तर परिवर्तित सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक एव राजनैतिक परिस्थियो के अनुकूल इन आाख्यानो का स्वरूप भी बदला है। **'कवयः क्रान्तदर्शिनः'** की सार्थकता को सिद्ध करता हुआ आज का कवि इन आख्यानो के माध्यम से वर्ण-व्यव्स्था, नारी-शिक्षा, शिक्षा का समानाधिकार, असतोष, न्याय, सत्य, सम्मान-रक्षा आदि अनेक मानवीय प्रश्नो

को उठाता प्रतीत होता है। बाह्य दबावो के चलते निज की भोगी गयी विवशता, यन्त्रणा, छटपटाहट, तनाव और इससे बचने के उपाय आज के कवियो की कृति मे आकृति ग्रहण करते है। वैदिक पृष्ठिभूमि पर आधारित इन आख्यानो का प्रतिपाद्य अपने मूल स्वर मे आधुनिक समाज के अत्यन्त निकट प्रतीत होता है। प्रस्तुत शोध पत्र मे मैने केवल कतिपय चयनित उन्ही खण्ड काव्यो का अध्ययन का आधार बनाया है, जो वैदिक कथा-सूत्रो के माध्यम से युगीन यथार्थ की प्रस्तुति करने मे सक्षम हो।

भारतीय परम्परा में प्रमुख प्रतीक

डॉ0 मधु जैन

रीडर, ललित कला विभाग

मुन्ना लाल एव जयनारायण खेमका गर्ल्स कॉलिज, सहारनपुर

प्राचीन काल मे हाथी का उपयोग राजकीय क्षेत्रो मे अधिक था। हाथी राजा की शक्ति का प्रतीक था। वह स्वय गजराज के रूप से राजस्व का भागी बन जाता था। हस ब्रह्मा के वाहन के रूप मे अत्यत प्रसिद्ध है। रूढि के अनुसार हस नीर-क्षीर विवेकी है, अत. विशुद्ध ज्ञान का प्रतीक है। हस आत्मा को कहते है। आत्मा मुक्ति है और हस भी मुक्ता चुगता है। हस श्वेत है, आत्मा निर्विकार, निर्मल। शब्दार्थ की दृष्टि से हस सूर्य का भी नाम है। निश्चिन्त, शब्द को आरोह-अवरोह से तरगायित करने वाला यह पक्षी विस्तार, सौन्दर्य, रस अमरता और व्यापकता का भी अर्थ धारण किये है। जिस क्रौच पक्षी के वध से आदि-काव्य का स्रोत फूटा वह भी एक प्रकार का हस ही है। दमयती और हस कला का विषय रहा ही है। काव्य की अधिष्ठात्री सरस्वती देवी का वाहन भी पैतृक सम्बन्ध के कारण हस ही है। कमल को हस भी तोडता है और हाथी भी। एक के तोडने मे स्त्रीत्व है, कोमलता है, दूसरे के तोडने मे पौरुष है, कठोरता है। हस और हाथी का कमल के साथ जहाँ कही भी चित्रण हुआ है भारतीय कलाकार सदा इस कोमलता और कठोरता के प्रति सजग है।

निरुक्त में ऐतिहासिक सन्दर्भ

कु0 मीनाक्षी पारीक

वेदागो मे निर्वचन प्रधान निरुक्तशास्त्र प्रतीक रूप मे बहुत से विषयो को प्रतिपादित करता है। निघण्टु के शब्दो पर व्युत्पत्ति एव निरुक्ति के सन्दर्भ मे आचार्य यास्क ने अपने निरुक्त मे ऐसे वैदिक मन्त्रो का सकलन उदाहरण के रूप मे किया है, जिसकी बहुआयामी प्रवृत्ति दिखाई देती है। उपर्युक्त विषयो के आलोचनात्मक सन्दर्भ मे यह शोध-पत्र निरुक्तगत उदाहरण सम्बन्ध पुराण इत्यादि

से प्रतीत होता है यथा-आर्ष्टिषेण, अगस्त्य इत्यादि के सन्दर्भ। निर्वचन के आलोक मे ही यह शोधपत्र ऐतिहासिक घटनाओं, ऐतिहासिक स्थानों के नाम, ऐतिहासिक वस्तुओं, प्राचीन सामाजिक, धार्मिक एव सास्कृतिक तथ्यों को भी समुद्घाटित करने का सफल प्रयास करता है। यह ध्यान देने योग्य विषय है कि यास्कीय निर्वचन अनेक विषयो पर आधारित हैं, जिनमे ऐतिहासिक आधार भी एक मुख्य आधार है। अत इस शोध-पत्र में आचार्य यास्क की निर्वचन पद्धति को ऐतिहासिक दृष्टि से समझने एव समझाने का प्रयास किया गया है, जिसका विवेचन पूर्ण शोध-पत्र मे किया गया जाएगा।

वेदों में अयोध्या, पञ्चनद्यः और सप्रसिन्धु का अर्थ-चिन्तन

डॉ दिनेशचन्द्र शास्त्री, डी लिट्

रीडर वेद-विभाग

गु0का वि वि , हरिद्वार

वेदों मे आये नामो और लोक में उपलब्ध नामों मे समानता देखकर ऐतिहासिक लोग वेदो में इतिहास सिद्ध करते हैं। वेदों मे ऐसे बहुत से स्थल मिलते हैं, जिनमें इस प्रकार की भ्रान्ति होती है। इनमें से पञ्चनद्य· सप्रसिन्धु और अयोध्या आदि मुख्य हैं।

यजुर्वेद (34 11) पर उव्वट, महीधरादि के भाष्यानुसार वेदों मे इतिहास ढूँढने वाले लोग पञ्जाब में बहने वाली दृषद्वती, शतुद्रि, चन्द्रभागा, विपाशा और इरावती का वर्णन मानते हैं। इसी तरह मैक्समूलर सम्प्रदाय के लोग ऋग्वेद (10 75) के आधार पर आर्यों के सिन्धु नदी पार करके भारत में बसने की बात करते हैं। यद्यपि अथर्ववेद (10 2 3, 32) मे आये अयोध्या शब्द की साम्यता से ऐतिहासिको ने इक्ष्वाकु द्वारा बसायी अयोध्या का वर्णन तो नहीं माना है, पुनरपि शब्द श्रवणमात्र की साम्यता से भ्रान्ति तो होती है। अत. इस शोधपत्र मे उपर्युक्त तीनो का विशद वर्णन किया जायेगा।

भारतीय नाट्य परम्परा के आधारः वेद

डॉ0 तरुण कुमार शर्मा

178, एलनगज, इलाहाबाद-211002

विद् धातु से निष्पन्न वेद विपुल ज्ञान के भण्डार हैं, विविध शास्त्रों एव कलाओं के मूल, स्पष्ट रूप में अथवा प्रतीक रूप में वेदों में उपलब्ध होते हैं। वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नाट्य परम्परा के मूल में भी हमारा वैदिक साहित्य ही है। अन्य अनेक नाट्य-शास्त्रियों ने नाट्य को पञ्चम वेद का स्थान प्रदान किया है। आचार्य भरत ने भी इसे पञ्चम वेद स्वीकार करते हुए अन्य चारों वेदों का सम्मिश्रित रूप मानते हैं। उनके अनुसार ब्रह्मा ने नाट्य वेद की सृष्टि करते समय

ऋग्वेद से पाठ्य-तत्त्व को, सामवेद से सगीत तत्त्व, को, यजुर्वेद से अभिनय को तथा अथर्ववेद से रस-तत्त्व को ग्रहण किया- **जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च। यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥** ऋग्वेद के दशम मण्डल का दशम सूक्त यम-यमी सवाद के रूप मे है जिसे हम दार्शनिक सवाद के रूप मे देखते है। इस सूक्त के द्वारा मानव जाति की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है। दशम मण्डल का ही पुरुरवा-उर्वशी सवाद (10-95) एक अत्यन्त रोचक सूक्त है। इस सूक्त मे पुरुरवा उर्वशी की चचलता की भर्त्सना करता है, परन्तु उसे अपनी आसक्त दृष्टि से ओझल होने से रोकने मे भी अपने को असमर्थ पाता है।

वेदों में काव्य सौन्दर्य

डॉ रीना अस्थाना

लखनऊ विश्वविद्यालय

लखनऊ

'पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति' महामुनि भरत ने भी नाट्यशास्त्र मे स्वीकार किया है कि चारो वेदो से नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति हुई है उन्होने ऋग्वेद से पाठ्य [सवाद, कथोपकथन आदि] सामवेद से सगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस के तत्त्वो को लिया। **"नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदागसभवम्॥ जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च। यजुर्वेदादभिनयान् रसान् आथर्वणादपि॥"** वेदो के अध्यय॰ से ज्ञात होता है कि उनमे उच्चकोटि के काव्य के सभी गुण विद्यमान है। वेदो मे भाव सौन्दर्य अर्थगाम्भीर्य, उच्च कल्पनाए रस छन्द अलकार आदि सभी तत्त्वो का प्रचुर मात्र मे समावेश है। इन सभी तत्त्वो का वर्णन प्रस्तुत शोध पत्र मे किया गया है।

संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान मिथकों पर वैदिक प्रभाव

कु0 रेखा अग्रवाल,(शोध छात्रा)

सामान्य रूप से मिथक का अर्थ है कि परम्परागत कथा जिसका सम्बन्ध घटनाओ और भावो से होता हैं। मिथक मूलत. आदिम मानव के समष्टि मन की सृष्टि है, जिसमे चेतना की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य होता है। वेदो मे जिन तथ्यो का वर्णन मिलता है, उन्ही का पुराणो मे पर्याप्त विस्तार देखने को मिलता हैं पुराणो मे अवतारवाद के प्रसग मे वामनावतार पर वेदो का ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। पुराण मे कहा गया है कि विष्णु ने देवताओ के उद्धार के लिए वामन (बौना) रूप धारण कर दैत्यराज बलि से दान स्वरूप दैत्य को छलते हुए अपने तीन पदो मे सम्पूर्ण

ब्रह्माण्ड को माप लिया था। यह वर्णन बाद के साहित्य मे ज्यो का त्यो अपना लिया गया। इस प्रकार पुराणो के वामनावतार सम्बन्धी मिथक पर वेदो का पर्याप्त दृष्टिगोचर होता हैं।

वेदों में गन्धर्व विद्या एवं ललित कलाएँ

डॉ सुमन दुबे
शोध सहायक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद।

सगीत विद्या के लिए प्राचीन काल मे गन्धर्व शब्द का व्यवहार किया जाता था। गान्धर्व का सम्बन्ध गन्धर्व से है। गन्धर्वविद्या के ज्ञाता को गान्धर्व शब्द से सम्बोधित किया गया है। गन्धर्वविद्या के अन्तर्गत गायन, वादन एव नृत्य तीनो ही सम्मिलित हैं। नारद का उल्लेख देव गन्धर्व के रूप मे बहुश· पाया जाता है। वेदो मे गन्धर्वविद्या के साथ ही साथ अन्य ललित कलाएँ भी सौन्दर्याभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही हैं जैसे- चित्रकला, काव्य, नाटक इत्यादि। कला या तो दृश्य हो सकती है, या श्रव्य, या दोनो। ललित कलाओ मे चित्रकला दृश्य है, काव्य और सगीत श्रव्य है, नाटक दृश्य और श्रव्य दोनो है। काव्य मे तो शब्दो का सहारा रहता है किन्तु चित्रकला एव सगीत कला मे तो शब्दो का सहारा भी नही रहता है। इसमे तो केवल स्वर ओर लय है जिनका कोई अर्थ नही प्रतीत होता। प्राचीन काल मे जहाँ अभिजात वर्गो मे गन्धर्व विद्या के प्रति हीनता की भावना उत्पन्न होने लगी थी। वही बदलते परिदृश्य मे आधुनिक समय मे इस गन्धर्व विद्या को सगीत कला के अन्तर्गत मानते हुए अभिजात वर्ग मे भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है। सगीत जैसी ललित कला को मोक्ष का साधन मानते हुए इसको आध्यात्मिकता से जोडा जाने लगा है। सगीत कला मे सिद्धि प्राप्त करने के लिए निरन्तर कठोर साधना एव उपयुक्त गुरु की महती आवश्यकता होती है तभी सगीत-साधक खरे सोने के समान चमचमाता हुआ समाज के सामने आदरभाव से प्रस्तुत होता है। अस्तु सगीत कला आत्मा से परमात्मा के मिलन का अमूल्य साधन है।

वेदों मे ललित कलाएँ

डॉ0 दुर्गाप्रसाद मिश्र,
सस्कृत-विभाग,
मेरठ कॉलिज, मेरठ (उ0 प्र0)

वेद मानव मात्र के लिए प्रकाश-स्तम्भ हैं। वेदो का ज्ञान विश्व सस्कृति की आधार शिला है। वेदो ने ही विश्व मे सर्वप्रथम ज्ञान और विज्ञान का प्रसार किया है। महार्षि दयानन्द ने वेद के

चार विषय माने हैं- विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान। **अथ चत्वारो वेदविषया सान्त, विज्ञानकर्मपासना ज्ञान काण्डभेदात्** । वेदों में जहाँ आचार शिक्षा, नीतिशास्त्र, अध्यात्म, दर्शन, मनोविज्ञान तथा सृष्टि के गूढ रहस्यों का विवेचन है। वही इनमें काव्य के प्रायः सभी तत्त्व विद्यमान हैं। अथर्ववेद स्वय इन्हें परमात्मा का अजर एव अमर काव्य मानता है-**'पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति।'** (अथर्व0 10.8 32) सौन्दर्य शास्त्र एव साहित्य शास्त्र के प्रर्वतक आचार्य भरत ने अपने नाट्य-शास्त्र की समस्त सामग्री वेदों से ही ग्रहण की है-**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसंभवम्।'** ललित कलाओं के लिए वेद तथा परवर्ती साहित्य में शिल्प शब्द का प्रयोग मिलता है। कौषीतांकि ब्राह्मण में शिल्प में तीन चीजों का समावेश माना गया **है-त्रिवृद् वै शिल्पं नृत्यं गीतं वादित्रमिति!'** यद्यपि शिल्पविज्ञान का तात्पर्य विद्वान् तकनीकी विज्ञान से सम्बद्ध करते हैं। शतपथ-ब्राह्मण में भी शिल्प में नृत्य गीत, वाद्य को लिया गया है-**शीतवाद्यादि शिल्पैः** (शत. ब्रा0- 3 2)। भावभिनय को नृत्य कहते है तथा अगसचालन को नृत्त। वेदों में दोनो का उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद संहिता में प्रजापति ब्रह्मा का स्वरूप

हेमबाला पाण्डेय

शोध छात्रा, सस्कृत-विभाग

बरेली कालेज, बरेली।

देवशास्त्र में देवत्रयी कीशृखला में ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की गणना की जाती है। ये तीनो देवता ही सृष्टि का निर्माण पालन तथा सहार करते हैं। इन देवत्रयी में ब्रह्मा सर्वोच्च देवता माने जाते हैं, क्योंकि वे सृष्टि का निर्माण करते हैं अर्थात् ब्रह्मा सृजन के देवता हैं। समस्त जगत् के वे स्रष्टा हैं। ये ब्रह्मा पुराणों में सर्वोच्च देव के रूप में वर्णित हैं, किन्तु भारतीय सस्कृति के प्राणतत्त्व तथा वैदिक साहित्य में शीर्षस्थानीय ऋग्वेद संहिता में ब्रह्मा के देवता विषयक सामग्री का सर्वथा अभाव है। ऋग्वेद में ब्रह्मा शब्द को देवता अर्थ मे न मानकर उसका ऋग्विज् अर्थ ग्रहण किया गया है अर्थात् ब्रह्मा शब्द यहाँ ऋग्विज् बोधक हैं। ऋग्वेद में ब्रह्मा के भावात्मक रूप का अभाव है।

वैदिक भावात्मक देवता

डॉ श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा

253-सी रेलवे डेयरी कालोनी

लोको ग्राउण्ड, गोरखपुर-273012

विश्व के सभी धर्मों एव सम्प्रदायों में देवों की धारणा प्राप्त होती है। उनके अनुग्रह के लिए

स्तुतिगान भी प्राप्त होता है। वैदिक देवशास्त्र विश्व का प्राचीनतम देवशास्त्र है। प्रस्तुत देवशास्त्र मे देवताओ के उद्भव एव विकास की प्रक्रिया अत्यन्त विलक्षण है। मन्त्रकाल मे वैदिक देवताओ के मूल स्रोत प्राकृतिक दृश्य घटनाये है। सूर्य, अग्नि, इन्द्र, वरुण, पृथिवी, पर्जन्य, वायु, इत्यादि प्रभूत देवताओ का उद्भव साक्षात् प्राकृतिक घटनाओ के परिणमस्वरूप है। ब्राह्मणकाल तक वैदिक उपासना पद्धति पूर्णत यज्ञ प्रधान एव कर्मकाण्ड युक्त हो चुकी थी। अत· इस युग मे ग्रावा-मूसल जैसे बहुत से यज्ञीय उपकरणो को भी देवतत्त्व मानकर स्तुति की गयी है। उत्तर वैदिक युग मे देवधारणा सम्बन्धी स्रोत अपेक्षाकृत विस्तृत हो गये है। ऋग्वेद के दशम मण्डल मे तथा अथर्ववेद मे बहुत से नवीन देवताओ का उद्भव हुआ। इन देवताओ के मूल मे प्राकृतिक दृश्य या घटनाये नही है। अनेक नवीन देवताओ के मूल मे मानवीय कर्म हैं, जैसे- दान एव ज्ञान। अनेक देवताओ के मूल मे शाश्वत शक्तियाँ है, जैसे- प्राण, काल, स्कम्भ, उच्छिष्ट। इसी प्रकार से कुछ ऐसे देवता भी प्राप्त होते हैं जो विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक धारणाओ पर आधारित हैं। कीथ ने इन्हे मानस देवता तथा मैक्डानल ने भाववाचक देवता की सज्ञा दी है जिनका चिन्तन सुतराम आवश्यक है।

वेदों में वर्णित गायत्री मन्त्र की संचरणशीलता एवं व्यापकता

धर्मपाल

शोध छात्र, एम फिल- सस्कृत-विभाग

जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

ऋग्वेद (3/62/10) यजुर्वेद (22/9, 36/3), सामवेद (मन्त्र 1462) मे वर्णित गायत्री मन्त्र **"ओइम्। भूर्भुव. स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्।"** अर्थात् जो सबका रक्षक, समस्त जगत् का प्राण, सब दु.खो को दूर करने वाला, सभी सुखो का दाता, परमेश्वर है। वह सर्वव्यापक और सबको उत्पन्न करने वाला है, सर्वश्रेष्ठ और ग्रहण करने योग्य शुद्ध स्वरूप, दिव्य गुणो से युक्त देव का हम ध्यान करते है, जो हमारी बुद्धि को उत्तम बनाये, रूप मे वर्णित मिलता है। इसकी महनीयता एव व्यापकता का ही प्रमाण है कि मनुस्मृति (2/81) मे गायत्री मन्त्र को वेदो का मुख कहकर प्रशसा की गई है। सविता देवता की प्रार्थना से प्रयुक्त किये गये इस मन्त्र मे रहस्यमयी सूक्तियाँ सन्निहित हैं। शायद तभी ससार का प्रत्येक जनमानस अपनी दिनचर्या मे जहाँ इसे स्थान देता है, वही इसे बुद्धिवर्धक मन्त्र भी माना जाता है। इस मन्त्र की सचरणशीलता एव व्यापकता इसी से परिलक्षित होती है कि वैदिक काल मे सृजित यह मन्त्र आज प्रत्येक युवा एव बुजुर्ग के मुख मे सद्यः रूप मे प्रस्फुटित हो उठता है, जब वह शौच इत्यादि से निवृत्त होकर स्नानोपरान्त भगवन्नाम स्मरण करता है। मनुस्मृतिकार ने इसी मन्त्र की महनीयता से चमत्कृत होकर

शायद कहा होगा कि "बुद्धि ज्ञानेन शुद्धयति", जबकि योगशास्त्र भी कहता है कि "दृष्टा दृशिमान्न शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्य", अर्थात् चेतना जीवात्मा देखने वाली शक्ति है, एवं शुद्ध है तथापि बुद्धि वृत्ति के अनुसार देखने वाली है। स्पष्ट है कि गायत्री मन्त्र के उच्चारण के द्वारा मानव अपनी बुद्धि को जहाँ सात्विकता से युक्त किये रहता है, वहीं शुद्धिबुद्धि से सम्पृक्त मानव अपने प्रत्येक कार्य में कुशलता अर्जन के साथ-साथ मार्ग भ्रष्ट भी नहीं होता।

वेदेषु स्त्री आचार्या

कु. प्लाइमा यादवराव, प्रवक्ता

महाराष्ट्र

ऋग्वेदेषु काचन स्त्रिय· ऋषिका, आचार्या, ब्रह्मवादिन्यश्चासन् वेदेषु प्राय: ऋग्वेदे तासा नाम्ना काचन ऋचा· अपि वर्तन्ते। ताभि. ऋषीणाम् समान ऋचा रचना कृता। वेदेषु मन्त्रद्रष्टार: ऋषय सिद्धयोगिनस्तथैव त्रिकालदर्शिन आसन्। वेदेषु स्त्रिय ऋषिकास्तथैव आसन्। वेदेषु पुमान् तथैव स्त्री आचार्या (ऋषिका) अपि सन्ति। ऋचा रचना कृतवत्य: तथैव या· ऋषि रूपेन स्थिता: तासु सूर्या, ममता, वाक्, घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता, निवावरी, गोरा, शश्वती, रोमशा, मानधात्री, गार्गी, मैत्रायणी आदय: सन्ति।

ऋग्वेद में ऋषिकायें एक अध्ययन

प्रतिभा सक्सेना

शोध-छात्रा

राज वि वि , जयपुर।

विभिन्न प्रमाणित साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि वैदिक मन्त्रों के दर्शन किये गए और इसमें पुरुष ऋषियों के साथ-साथ स्त्री ऋषिकाओं ने भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। ऋग्वेद में रोमशा, लोपामुद्रा, अदिति, अपाला, नद्य, विश्ववारा, आत्रेयी, शश्वती, आंगिरसी, शिखण्डनी, घोषा-काक्षीवती, श्रद्धाकामायनी, गोधा, इन्द्र-स्नुषा, जुहु-ब्रह्मजाया, अगस्त्य-स्वसा, सूर्या सावित्री, इन्द्राणी, उर्वशी, दक्षिणा-प्रजापत्या, इन्द्रमाताये और शची-पौलोमी इत्यादि मन्त्रद्रष्टा ऋषिकायें हुई, जिन्होंने अपनी तप: पूत साधना द्वारा सत्य का साक्षात्कार किया। सूर्या सावित्री' द्वारा दर्शित सूक्त में पाणिग्रहण सस्कार परम्परा एव महत्त्व को प्रतिपादित कर ज्योतिषशास्त्र एव उसमें वर्णित ग्रह-नक्षत्रों पर भी विचार किया गया है। वैदिक काल में सूक्तों मे प्रयुक्त मन्त्र प्रतीकात्मक रूप में वर्णित हुए हैं। वास्तव में ये मन्त्र वर्तमान समय के लिए भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं। जिसका प्रमाण

निम्न मन्त्र में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता **है-साम्राज्ञी श्वशुरे भव साम्राज्ञी श्वश्र्वां भव। ननान्दरि साम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु॥** (ऋ 10 84 46) हे वधू! आप सास, श्वसुर, ननद और देवरों की साम्राज्ञी के समान हो। आप सबके ऊपर स्वामिनी स्वरूपा हो। इस प्रकार ऋषिकाओ द्वारा दर्शित सूक्तों का भलीभांति प्रकार से अध्ययन-पर्यालोचन करने पर ज्ञात होता है कि वैदिक काल में न केवल पुरुष वर्ग ही अपितु महिलायें भी ज्ञान चक्षु को धारण करती थीं तथा अपनी ज्ञानमयी धारा के प्रवाह से सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय तथा लौकिक समाज को प्रेरणा एव आदर्श प्रदान करने वाली थी।

ऋग्वैदिक ऋषिकाओं का दार्शनिक क्षेत्र में अवदान

अर्चना कुमारी दुबे

प्रवक्ता-सस्कृत, दर्शनशास्त्र व वैदिक अध्ययन विभाग

वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान-304022

ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि उस युग में स्त्री-शिक्षा का यथेष्ट प्रचार था। स्त्रियाँ न केवल अध्ययन करती थीं, मन्त्रो का दर्शन भी करती थीं। इन मन्त्रों मे ऋषिकाओ के दार्शनिक ज्ञान का द्योतन होता है, साथ ही आध्यात्मिक एव सामाजिक भूमिकाओ पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पडता है। ऋग्वेद मानव-जाति का प्रथम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ मे ही ज्ञान की आराधिकाएँ 27 मन्त्र-द्रष्ट्री ऋषिकाओं की ऋचाएँ उपलब्ध होती हैं। रोमशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, शश्वती, अपाला, सिकता-निवावरी, श्रद्धा, सार्पराज्ञी आदि के मन्त्रो में दार्शनिकता के गूढ रहस्य छिपे हुये हैं। इनके मन्त्रों से ज्ञात होता है कि दर्शन के क्षेत्र में इन ऋषिकाओ का महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। जो महिलाओ के आदि प्रातिभ ज्ञान का प्रमाण है तथा कारयित्री प्रतिभा की दृष्टि से स्त्रियों की पुरुषों के साथ, समकक्षता को सिद्ध करती है। दस मण्डलों मे विभक्त ऋग्वेद के अन्तिम मण्डल से, यद्यपि 20 ऋषिकाओ का सम्बन्ध है, जिसे आधुनिक विद्वान् अपेक्षाकृत परवर्ती मानते हैं, किन्तु इस ग्रन्थ के प्रथम मण्डल मे भी ऋषिकाओं के मन्त्र मिलते हैं। प्रथम, पञ्चम व अष्टम मण्डल से सम्बद्ध सात ऋषिकाएँ हैं, जो आधुनिक विश्लेषकों के मतानुसार भी प्राचीनतर हैं। इस दृष्टि से प्रथम मण्डल की रोमशा और लोपामुद्रा ससार की प्राचीनतम महिला विदुषी और शब्दकार है।

वेद मन्त्रों का ऋषित्व

डॉ0 जगदेव सिह

वेद के सूक्तों के पूर्व निर्दिष्ट ऋषि-तत्त्व का ही विवेचन इस आलेख की परिधि है। अत.

वेद मन्त्रों के भी तर प्रयुक्त अन्य नानाविध सन्दर्भों में 'प्रयुक्त ऋषि' शब्द का विवेचन यहाँ अपेक्षित नहीं है। यास्काचार्य का कथन है कि ऋषि मन्त्र के द्रष्टा होते हैं। वेदों के स्तुतिपरक मन्त्रों के वास्तविक अर्थ का साक्षात्कार करने वालों को ऋषि नाम से पुकारा जाता है। तपस्या व ध्यान करते हुए इनको स्वयम्भू वेद के अर्थ का ज्ञान हुआ, इसलिए वे ऋषि कहलाए, यह अर्थ दर्शन ही ऋषित्व हैं उक्त विविचन भी यह स्पष्ट नहीं करता कि वेद मन्त्रों में ऋषि प्राण रूप या सृष्टि प्रक्रिया के उपादान मूल तत्त्व रूप हैं अथवा शरीरधारी मनुष्य थे, जिन्होंने और जिनके वशधरों ने वेदार्थ प्रसारित करने का कार्य किया है। विचारणीय है कि ऋग्वेद में ही 71 नाम ऐसे हैं, जो मन्त्रों के देवता भी हैं और महर्षि भी। ऋग्वेद के दशम मण्डल का देवता ओषधिस्तुतिः और ऋषि भिखम् है (वैद्य) है। इसी प्रकार दशम मण्डल के 161 वें सूक्त का देवता राजयक्ष्याघ्नम् और ऋषि राजयक्ष्मानाशन है। ऐसे प्रचुर उल्लेख हैं, जिनमे वेदमन्त्रों के देवता और ऋषि मनष्य नहीं प्रतीत होते।

ब्राह्मण ग्रन्थों के जीवनोपयोगी उपदेश

डॉ0 हरीश्वर दीक्षित

उपाचार्य एवम् अध्यक्ष

राजा हरपाल सिह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सिगरामऊ, जौनपुर-222175 (उ0प्र0)

विश्व के प्राचीनतम साहित्य वैदिक साहित्य मे पर्याप्त ज्ञान (सूत्रपरक उपदेश) प्राप्त होता है। इससे मानव उन उपदेशपरक सूत्रों को व्यवहार में लाकर अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करता है। चूँकि ब्राह्मण-ग्रन्थ वैदिक साहित्य के महत्त्वपूर्ण भाग हैं और इनमें संहिताओं की यज्ञपरक व्याख्या पूर्वक, विधि, निषेध, आख्यान आदि अनेक प्रबल प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि अमुककर्म करने से अमुक फल की प्राप्ति होती है। उपदेशों के माध्यम से मानव को सत्कर्म मे प्रेरित कर उसके जीवन को सुखी एव सफल बनाने हेतु अनेक सूत्रपरक उपदेश बताये गए हैं। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से जीवनोपयोगी उपदेशों का सप्रमाण वर्णन का प्रयास है।

निघण्टु में पठित 'ममसत्यम्' पद का अर्थ विचार

डॉ0 सत्यदेव निगमालङ्कार,

रीडर श्रद्धानन्द वैदिक शोध-सस्थान

गु.का वि वि हरिद्वार

निघण्टु के द्वितीय अध्याय के सत्रहवे खण्ड मे 'ममसत्यम्' पद पठित है। ससार मे अनेक बाद प्रचलित हैं, जिनमे व्यक्ति स्वातन्त्र्यवाद समाजवाद, राष्ट्रिय समाजवाद, साम्यवाद आदि प्रचलित है। ये सब वादी स्वमत का पोषण तथा परमत का खण्डन करते दृष्टिगत होते है। वेद मे भी यह 'ममसत्यम्' पद इन्ही वादो के समान स्वमत का पोषण कर रहा है। यथा विभिन्न वादीगण 'मेरा मत सत्य है' ऐसी घोषणा करते हैं, वेद भी 'ममसत्यम्' के माध्यम से इस डिण्डिम घोष को ध्वनित कर रहा है। किन्तु वहाँ 'ममसत्यम्' के कारणो पर प्रकाश डाला गया है। जो यज्ञकर्ता है, दानदाता है सगतिकरण अपनाता है तथा देवपूजक है वह 'ममसत्यम्' की घोषणा करने का अधिकारी है। प्रस्तुत लेख मे उपर्युक्त सभी वादियो के वादो की स्थापना करते हुए निघण्टु पठित 'ममसत्यम्' वैदिकवाद की विचारधारा से जगत् का कल्याण सम्भव है यह दर्शाया गया है।।

वैदिक छन्दों में त्रिष्टुप् छन्दः एक वैज्ञानिक पक्ष

कु0 नीरा यादव
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली राजस्थान

प्राचीन लक्षणकारो ने छन्दो के निम्नलिखित रूप मे लक्षण दिये है-कात्यायन मुनि ने ऋक्सर्वानुक्रमणी मे छन्द के लक्षण को **यदक्षर परिमाण तच्छन्द** निर्धारित किया है- यास्क ने निरुक्त मे छन्द की व्युत्पत्ति **छद् आच्छादने** धातु से की है। यद्यपि छन्दो के उद्भव एव विकास के सदर्भ मे निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। सम्पूर्ण वेद छन्दोमय हैं। अत विद्वानो के अनुसार वेदो का उत्पत्ति काल ही छन्दो का उत्पत्ति काल सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त छन्दो का वर्णन ब्राह्मणग्रन्थो, आरण्यको, उपनिषदो एव ऋक् प्रातिशाख्य, शाख्यायन श्रौतसूत्र, पिगल छन्द सूत्र सर्वानुक्रमणी, तथा निदान सूत्र आदि मे भी किया गया है।

औपनिषदिक उपासनाः स्वरूप एवं रहस्य

डॉ0 श्री निवास शर्मा
प्राध्यापक-सस्कृत राजकीय महाविद्यालय
बादली जिला॰ झज्जर (हरियाणा)

प्राणिमात्र के परमार्थ की प्राप्ति के लिए उपादेय उपायो का विशद विवेचन उपनिषदो मे उपलब्ध होता है। यद्यपि समस्त उपायो अथवा साधनो का अपना-अपना विशिष्ट स्थान एव महत्त्व होता है, पुनरपि इन साधनो मे उत्कृष्ट एव सरल साधन है-उपासना। महर्षि दयानन्द सरस्वती का

मानना है कि जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे ही अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक व अपने को व्याप्य जानकर ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है। इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि हैं।

औपनिषदम् अधीतिविधानम्

प्रो रामचन्द्रभट्ट

प्राचार्यः, वेदविज्ञानगुरुकुलम्

चन्नेनहल्लि, बेङ्गळूरु, कर्नाटकम

अधीतिः बोध., आचरण प्रचार इति विद्यायाः चतस्रः अवस्थाः। तासु अधीतेः प्राथमिकत्वात् तस्याः साधुत्वे इतरासा सरलतया सिद्धिः। मातृगर्भे शयानशिशुरेव स्वमनसा मनुत इति ज्ञायते। गर्भ एव शयानो वामदेवः अह मनुरभव सूर्यश्च इति बभाषे। सद्यो जातशिशुर्वेद्य नेत्तीति नाविदितमेतत्।

अधीतिः मानवस्य प्राकृतिकी प्रवृत्तिः। प्रकृतौ सस्कृत्याधानार्थं विशेषप्रयत्नः आस्थेय.। हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणः इतीदमार्षं वचनमवलम्ब्य सस्कृत्याधानमार्ग परामृष्टव्यः। अधीतौ आचार्यः पूर्वरूप.। अन्तेवासी उत्तररूपः। प्रवचनरूपेण सन्धानेन विद्यारूप फलं प्रपित्सितव्यम्। तर्हि प्रवचनविधान कथ भवेदिति प्रश्ने प्रवचनविधानम् अधीतौ स्वरूप प्राप्नोति। अधीतिप्रक्रियायाम् आचार्यान्तेवासिनौ सह भागभाजौ अग्रेसरतः पोषयतश्च परस्परम्। अधीतौ एतदेव सह वीर्यं नाम। तथा सति अधीत फलरूपेण तेजस्वि भवति। एतदेव अधिगमफलम् इति कथ्यते। बोध इति एषा विद्याया· द्वितीयावस्था। बोधानुकूला अधीतिः भवेदिति अनेन सिद्ध्यति। अधीतेरन्तिम फलम् आनन्दप्राप्तिः इति आर्षी संवित्। शोभतेऽस्य मुख य एव वेद इति वेदवचनमत्र प्रमाणम्। एतेन आनन्दानुभूत्यवसानम् अधीतिविधानम् आदर्तव्यम् इति सिद्धम्। ज्ञान सत्यमानन्दरूपञ्च भवेच्चेत् अधीतौ कीदृशाः कार्यकलापा. योजनीया इति नूतनान्तर्दृष्टिराधातव्या।

यज्ञोपचार द्वारा नेत्ररोगों की चिकित्सा

डा0 श्रीमती रेखा शर्मा एवम् डॉ0 सुधा दुबे

प्राणीशास्त्र-विभाग

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू

प्रस्तुत शोधपत्र में यज्ञ द्वारा नेत्र के विभिन्न रोगों का उपचार बताया गया है। इसके अलावा इस शोध पत्र में नेत्र रोग में उपयोग में लाई जाने वाली विशिष्ट हवन सामग्री का वर्णन किया गया

है।

वेदों का भारतीय भाषाओं पर प्रभाव

टी एन के कण्णन विद्यालकार

चैन्नई

भारतीय जीवन दृष्टि को प्राजल एव परिष्कृत करने मे वैदिक भाषा ने अपने अनुपम सन्देश से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वेदो के इन पावन कथन को भारत की प्रत्येक भाषा ने अपने ही परिधान से अलकृत किया है। तमिल भाषा भी वेदो के मानवीय उच्चादर्शों को स्वर्णिम आभा मे गठित करने मे दक्षिण की इतर भाषाओ की अपेक्षा अग्रणी रही है। **"सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या."** पृथिवी मेरी माता है, और मैं इस माता का पुत्र हूँ। तमिल सन्त कवि तिरूवल्लुवर ने अपने ही स्वर मे स्ववेदो मे दर्शित उन्नत विचारो को एक नई लय प्रदान की है। **एक सद् विप्रा.............** को बल्लुवर ने **"अगर मुदल्एल्लुतेल्लाम्"** लिखकर हमारे ऋषियो के वचनो का अनुमोदन किया है।

अतः वेदो मे प्रतिपादित जो गूढतम मान्यताये हैं या उच्चस्तरीय पक्ष हैं। उनमे इतनी गहराई है कि तमिल के विद्वानो ने भी अपने काव्यो मे अपनी निखरी तूलिका से चित्रित किया है।

वेद में विवाह संस्कार का मूल एवं प्रयोजन

देवकीनन्दन शास्त्री

शोधछात्र

वेद विभाग, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

परमात्मा मे नि.श्वास से निःसृत अपौरुषेय वेद मे गर्भधान, पुसवन आदि सभी प्रमुख सस्कारो की भाँति विवाह सस्कार का मूल एव प्रयोजन भी विद्यमान है। विवाह अथवा पाणिग्रहण सस्कार के मूल मे अथर्ववेद एव ऋग्वेद का अधोलिखित मन्त्र स्पष्ट प्रमाण है-गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्त मया पत्या जरदष्टिर्यथासः। भगो अर्यमा सविता पुरधिर्मह्य त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः।। ऋग्वेद 10/85/३6, अथर्व 14/1/50

वेद ब्रह्मचर्य के तप मे तपे हुए उत्तम शील, गुण, कर्म, स्वभाव युक्त युवा स्त्री-पुरुष को , स्व स्व सदृश स्त्री-पुरुष को धर्म से पति और पत्नी मान, जरावस्था पर्यन्त सुख पूर्वक साथ रहने की प्रतिज्ञा के साथ, पाणि ग्रहण अर्थात् विवाह करने की अनुमति देता है। वेद मे विवाह का एक

मात्र प्रयोजन पितृऋण से मुक्ति एव वश वृद्धि हेतु मनो वांछित श्रेष्ठ, गुण कर्म, स्वभावयुक्त सन्तति का निर्माण ही माना गया है।। शारीरिक भोग पिपासा, कामवासना पूर्ति वा उन्मुक्त व्यभिचार वैदिक सस्कार का प्रयोजन नहीं है।

औपनिषदिक कर्म-मीमांसा का वैश्विक प्रभाव

श्याम सुन्दर

शोध छात्र, सस्कृत विभाग

प वि वि चण्डीगढ

ईशोपनिषद् जिसे प्रथम उपनिषद् भी स्वीकार किया जाता है, के आरम्भ में ही जब ऋषि कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की कामना करता है (ईश0) तब उसी से उपनिषदों की कर्म के प्रति स्पष्ट दृष्टि का ज्ञान सरलता से हो जाता है। तैत्तिरीयोपनिषद् (1/2/1-३) में शिक्षा के सम्पूर्ण हो जाने पर गुरु द्वारा स्नातक को दिया गया उपदेश किसी विशिष्ट वर्ग/धर्म अथवा समुदाय के लिए नहीं, प्रत्युत सम्पूर्ण मानव जाति के लिए ग्राह्य है। यही नहीं, उपनिषदों का आचार्य तो कर्म के प्रति इतना अधिक सजग है कि वह अपने शिष्यों को उन्हें केवल अनिन्दनीय कर्मों का अनुसरण करने के लिए कहता है, न कि निन्दनीय कर्मों का। तैत्तिरीय उपनिषद् आचार्य यह भी उपदेश करता है कि भविष्य में भी जहा कभी कर्म के विषय में ऊहापोह की स्थिति बने तो अधकार में तीर चलाने की अपेक्षा वहा उपस्थित विद्वज्जन जिस प्रकार का निर्देश करें, उनका पालन करना चाहिए। बृहदारयक उपनिषद् (5/2/1-३) एक अत्यन्त रोचक कथा द्वारा दम दान तथा दया की सुशिक्षा देता है, इसी प्रकार उपनिषदों में अनेक स्थानों पर कर्म के अनेक रूपों को कहा गया है।

वैदिक साहित्य में सामाजिक-चेतना

शलका चितकारा (शोध छात्रा)

सस्कृत विभाग, पजाब विश्वविद्यालय

चण्डीगढ।

वैदिक साहित्य का अनुशीलन करने पर उसमें पदे-पदे अनेक ऐसे मन्त्र/सूक्त प्राप्त होते है जिन में वैदिक ऋषि के पारिवारिक/सामाजिक तथा राष्ट्रिय चिन्तन का बोध सहजता से हो जाता है। समाज शब्द सम् उपसर्गपूर्वक अज् (चलने के अर्थ में) धातु से निष्पन्न होता है अर्थात् साथ रहकर चलना, उठना, बैठना व्यवहार करना ही समाज है। वैदिक ऋषि भी 'स्व' की सकीर्ण भावना से ऊपर उठकर समाज की इसी सम् अज (साथ चलना) व्युत्पत्ति को सार्थक करते हुए उद्घोषणा

करता है कि साथ चलो, साथ बोलो, सबका मन एक सा हो। (सगच्छध्व सवदध्व स वो मनांसि जानताम्।। (ऋ010/191/2)

ऐसे ही अनेक मन्त्र वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं जिनमें वैदिक ऋषि की सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय की भावना परिलक्षित होती हे।

वेदों में ओषधीय वृक्ष एवं वनस्पतियाँ

डॉ0 विनोद चन्द्र विद्यालकार

विश्व साहित्य में वेदों का सर्वोच्च एवं गौरवपूर्ण स्थान है। आदिकाल से ही इन्हें ज्ञान-विज्ञान का उद्गम माना जाता रहा है। मनु ने इन्हें ज्ञान-विज्ञान का उद्गम माना है। मनु के मत में वेदों में सभी विद्याओं का भडार है-"सर्वज्ञानमयो हि स:" (मनु, 2.7)। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक माना है-"वेदेषु सर्वा विद्या: सन्त्याहोस्विन्नेति? सर्वा: सन्ति मूलोद्देशत:" ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ब्रह्मविद्या-विषय:)। उनकी सम्मति में वेदों में अवयव रूप विषय तो अनेक हैं, परन्तु मुख्य विषय चार हैं: विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान-"चत्वारो वेदविषया, सन्ति, विज्ञानकर्मोपासनाज्ञानकाण्डभेदात्" (ऋ भा भू, वेदविषयविचार·)। वेदों का गहनता से अध्ययन करने पर इन तथ्यों की यथार्थता स्वय सिद्ध है। इनमें अध्यात्म की प्रधानता तो है ही, साथ ही समाज-शास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, पदार्थ विज्ञान, शिल्प विज्ञान, चिकित्साविज्ञान आदि का भी समान रूप से विवेचन किया गया है।

जहा तक चिकित्सा विज्ञान या आयुर्वेद का प्रश्न है, चारों वेदों में ही इसके सभी अगों एव उपागों का विवेचन उपलब्ध है। परन्तु अथर्ववेद में विस्तृत विवेचन होने के कारण आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपाग कहा गया है। वेदों में विविध रोगों की चिकित्सा के साथ-साथ विविध (250 से अधिक) औषधीय वृक्षों एव वनस्पतियों की भी विशद प्रतिपादन किया गया है। इनमें से कतिपय प्रमुख औषधियों के गुणधर्म आदि का विवेचन इस शोधपत्र का प्रतिपाद्य विषय है।

अथर्ववेद में चिकित्सा-विज्ञान - एक विहंगम दृष्टि

हरिपाल सिह, एम.ए. (सस्कृत)

एल.एल.बी. एडवोकेट, रुडकी।

वेदो में अथर्ववेद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कदापि इसीलिये इसे ब्रह्मवेद भी कहा गया है। इसमें अध्यात्म, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, राष्ट्रप्रेम, आदर्श गृहस्थ की शिक्षाएँ एवं अनेक ज्ञान-विज्ञान के सुन्दर सूत्र मिलते हैं। किन्तु चिकित्सा विज्ञान का इसमें विशेष रूप से वर्णन है।

अथर्ववेद के सूक्तों में राम, कृष्ण एव अश्विनी का उल्लेख त्वचा के रोगों ओर कुष्ठ रोग को दूर करने के लिये वर्णित है। ज्वर इत्यादि का शमन ओर सन्धिवात चिकित्सा का भी वर्णन प्राप्त होता है। इसके बारहवें सूक्त के दूसरे मन्त्र में **अंगे शोचिषा** आदि मन्त्रों में सिर दर्द, खासी, सन्धि पीड़ा से मुक्ति का उल्लेख है। इसी सूक्त के तीसरे मन्त्र में शल्य क्रिया का भी स्पष्ट सकेत है।

वैदिक साहित्य में नारी

सुशील कुमार

शोधछात्र

वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर यह आक्षेप नितान्त निराधार ही सिद्ध होता है। वैदिक समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त सम्मानजनक थी। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि यदि माता-पिता पुत्र और कन्या दोनों को ही उत्पन्न करते हैं तो उनमें पुत्र उत्कृष्ट क्रिया कर्म का अधिकारी होता है। तो पुत्री सम्मानजनक स्थान की अधिकारिणी। (ऋग्वेद ३/३1/2)

इसी संहिता के एक अन्य मन्त्र में ऋषि पुत्र एव पुत्री दोनों को सुवर्ण के समान स्वीकार करता है। (ऋग्वेद 8/३1/8) इन मन्त्रों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक समाज में नर और नारी के सम्मान में कोई अन्तर नहीं था।

उपासना-पद्धति

डॉ0 स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

सामान्यतया कुछ विद्वानों का विचार है कि अध्यात्म विषय तो उपनिषदों में है। वेदों ससार की सामान्य ज्ञान है, परन्तु गम्भीरता से विचारने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि योग का सर्वांग स्वरूप वेदों में भी सन्निहित है। अतः साधनोपासना हेतु पञ्च अन्नमय, प्राणमय मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय कोशो का वेदो के परिपेक्ष्य में क्या स्वरूप है? तथा इनके शोधन का क्या उपाय है? इनका विवेचन शोधपत्र की विषयवस्तु है। साथ ही अष्टाङ्ग योग का वैदिक विवेचन भी शोधपत्र का प्रतिपाद्य विषय है।

प्रयोगात्मक दृष्टि से भारत के 16 प्रान्तों में तथा मारीशस, इग्लैण्ड, अमेरिका, नैरोबी (केन्या) कनाडा आदि स्थानों पर वैदिक योग का प्रशिक्षण तथा व्यावहारिक ज्ञान दिया है।

भगवती आराधना वाङ्मय में आयुर्वेद-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीयूष बाला

जम्मू-विश्वविद्यालय, जम्मू

आयुर्वेद एक चिकित्सा विज्ञान जो कि भारतीय दर्शन सांख्य, योग, रामायण, महाभारत, वेद आदि में वर्णित है और इसे भी अथर्ववेद का उपाग माना गया है, इसी तरह यह आयुर्वेद का ज्ञान समाज के प्रत्यक स्तर पर अपना विस्तार रखता है। इसी तरह भगवती आरधना जो कि एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसका लेखन अनुमानतः पाचवी या छठी शताब्दी में हुआ है, और यह ग्रन्थ के नामनुसार कुछ सकेत पूजा अर्चना आदियों की ओर देता है। परन्तु इस ग्रन्थ में आयुर्वेद का बहुत ही तत्त्व अन्तर्निहित है। लेकिन यह ग्रन्थ के व्यवहार सीमित होने के कारण इसके अन्तर्गत तत्त्वों को निखारा नहीं जा सका। इस पुस्तक को अध्ययन करने के बाद यह ज्ञात हुआ कि इसकी कई अध्यायों के विशेष-विशेष पादों में शुक्र, शोणित, गर्भ तथा अनेक कुछ आयुर्वैदिक सन्दर्भ अधुना उपलब्ध आयुर्वेद ग्रन्थों के वर्णन से समकक्ष करते हुए कुछ बातों का अवतारण किया गया है।

वेदों में शिक्षा की अवधारण

मुकेश मेधार्थी

शिक्षा मानव जीवन का "थम सोपान है शिक्षा बिना मनुष्य जीवन का विकास असम्भव है। वैदिक व्यवस्था के अनुसार बालक शैशव पार कर मातृमान् पितृमान् बन आचार्यवान् होने के लिए गुरुकुल में प्रविष्ट होता है तथा आचार्यरूपी अग्नि में अपने आप को समिधा बनाकर ज्ञानज्योति से प्रदीप्त होने का प्रयास करता है। सदा से ही शिक्षा का प्रयोजन **'आत्मानं विद्धि'** अर्थात् अपने आप को जानो। शिक्षा का मुख्य लक्ष्य प्रयोजन मानव पशुता के स्तर से ऊपर उठकर सस्कारी जीव का निर्माण करना है अर्थात् सच्चे अर्थों में शिक्षा **''मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्''** की भावना पैदा करना है, साथ ही **मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे** सबको स्नेह की दृष्टि से देखो। वैदिक साहित्य में शिक्षा जगत् की कोई भी ऐसी समस्या नहीं है। जिसपर विचार नहीं किया गया है, शिक्षा के समस्त पहलुओं पर विचारपूर्वक मन्थन करना शोधपत्र की विषयवस्तु है।

वैदिक साहित्य में शिक्षा

डॉ0 आशारानी राय

प्राचार्य, कानपुर विद्या मिन्दर

(पी जी) महाविद्यालय,

स्वरूपनगर, कानपुर।

मानव मस्तिष्क के इतिहास में भारतीय आध्यात्मिक विचारधारा की शक्तिशाली एव भावपूर्ण

आधारशिला रही है। इसमें ज्ञान की ऐसी प्रणाली विकसित हुई, जिसने न केवल वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखा वरन् ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों को भी जन्म दिया। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने राष्ट्रीय सस्कृति के सरक्षण में समर्थ, एक ऐसी विलक्षण शिक्षण-पद्धति को जन्म दिया, जिसे हम मानवता की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मान सकते हैं। भारतीय ऋषियों ने मानव की अन्त॰ शक्ति को पूर्णरूप में विकसित कर देना ही वैदिक शिक्षा का प्रथम और अंतिम लक्ष्य माना।

वैदिक वाङ्मय में अश्वमेध की अवधारणा

डॉ0 ब्रह्मदेव

सस्कृत विभाग

गुरुकुल कागडी वि वि हरिद्वार

वैदिक वाङ्मय में वेद जहाँ विभिन्न यज्ञों के मूल स्रोत हैं, वहीं ब्राह्मण आदि ग्रन्थ उनकी व्याख्या को एक सशक्त अभिव्यक्ति देते हैं। अथर्ववेद में विभिन्न यज्ञों का नामोल्लेखपूर्वक वर्णन है-राजसूय वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वर । अर्काश्वमेधावुच्छिष्टे जीवबर्हि मेदिन्तमः।। अथर्व 11 7 7

यहाँ बीजरूप में वर्णित राजसूय आदि यज्ञों में अश्वमेध का क्या स्वरूप है? अश्वमेध का अधिकारी कौन है? यह वैदि सस्कृति के मूलमन्त्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पूर्ति करने में कैसे चरितार्थ होता है? शतपथ में आगत **'सर्वा वै देवता अश्वमेधे अन्वायत्ताः तस्माद् अश्वमेधयाजी सर्वा दिशो आजयन्ति'** (शतपथ 13 1 9 3) के अनुसार अश्वमेध यज्ञ का कर्त्ता समस्त दिशाओं का विजेता बनता है, वह कैसे? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास इस लेख के माध्यम से किया गया है।

ऋग्वैदिक ऋषिकाओं का दार्शनिक क्षेत्र में अवदान

अर्चना कुमारी दुबे

प्रवक्ता, वैदिक अध्ययन विभाग

वनस्पती विद्यापीठ

सस्कृत-भाषा में प्राचीन काल से आज तक साहित्य-सर्जना का कार्य निरन्तर हो रहा है। इस सर्जना कार्य में न केवल पुरुष साहित्यकारों ने अपितु महिलाओं ने भी उल्लेखनीय योगदान किया है। ऋग्वेद से ज्ञात होता है कि उस युग में स्त्री-शिक्षा का यथेष्ट प्रचार था। स्त्रियाँ न केवल अध्ययन करती थीं, मन्त्रों का दर्शन भी करती थीं। वैदिककालीन पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों ने मन्त्रों का दर्शन

किया है। पुरुष मन्त्र-द्रष्टा को ऋषि तथा स्त्री मन्त्र-द्रष्ट्री को ऋषिका नाम से कहा गया है। इन ऋषिकाओं द्वारा दृष्टमन्त्र इनके दार्शनिक ज्ञान की श्रेष्ठता का प्रमाण हैं। इन ऋषिकाओं की आध्यात्मिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ रही हैं।

आपस्तम्बीय कौटुम्बिक-अभिचार

डॉ0 प्रयाग नारायण मिश्र
अतिथि प्राध्यापक
सस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ-विश्वविद्यालय, लखनऊ

गृहस्थ आश्रम की मूल प्रवृत्ति तथा चरम परिणति दोनों ही कुटुम्ब की आधार-भित्ति पर आश्रित हैं। दाम्पत्य-जीवन से प्रारम्भ होने वाले कौटुम्बिक सुख-सम्पदा के लिए सम्पूर्ण समाज आदिकाल से ही कृतसङ्कल्प देखा जा सकता है। दाम्पत्य जीवन में आदर्श प्रणय, सन्तत्युपगम, सर्वविध स्वास्थ्य समृद्धि तथा भगवदनुग्रह की प्राप्ति हेतु विविध आनुष्ठानिक प्रयोगों के साथ अनेक आभिचारिक प्रयोगों के दर्शन वैदिक वाङ्मय की अपनी विशेषता है। अन्य वैदिक मन्त्र संहिताओ के साथ अथर्ववेद तो ऐसे आभिचरिक प्रयागों का आकर ग्रन्थ ही है। वैदिक-सस्कृति के आभिचारिक प्रयोगों में माङ्गलिक अभिचारों का कौटुम्बिक दृष्टि से अप्रतिम महत्त्व है। इन कौटुम्बिक अभिचार कृत्यों की सुदीर्घ परम्परा वेदाङ्ग वाङ्मय के कल्प साहित्य में प्रस्फुटित रूप से देखी जा सकती है। वैदिक कल्पसूत्रों की व्यापक सुदीर्घ शृखला में आपस्तम्ब कल्पसूत्र की अपनी अनुपम दृष्टि तथा अद्वितीय व्यवस्था है जो वैदिक अभिचार कर्मों की निकष पर अधिष्ठित होने के कारण गार्हस्थ्य जीवन में कौटुम्बिक कल्याण की दृष्टि से तत्कालीन आर्य सस्कृति से प्रारम्भ होकर अद्यावधि अत्यधिक सुसगत, सामयिक तथा औरचित्यपूर्ण है। अतः कौटुम्बिक लोक कल्याण के विविध आयामों से सुसगठित होने के कारण आपस्तम्बीय कौटुम्बिक अभिचार कृत्यों का सार्वभौमिक माङ्गलिक स्वरूप है। किसे वैज्ञानिक दृष्टि से वैदिक आलोक में प्रदर्शित करके प्रस्तुत शोध पत्र को समलकृत किया गया है।

वैदिक षड्जादि स्वर और भारतीय संगीत

डॉ0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री
अध्यक्ष- सस्कृत विभाग
रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

"कौन-कौन सा छन्द किस स्वर में गाना चाहिए, इस बात को जानने के लिए उनके साथ में षड्जादि स्वर लिखे जाते हैं जिनसे मनुष्य लोग गानविद्या में भी प्रवीण हों" (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- दयानन्द सरस्वती) स्वर हैं-षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषद। छन्द सप्तक के तीन प्रकार हैं- प्रथम-गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् और जगती। द्वितीय-अतिजगती आदि। तृतीय-कृति आदि। गायत्री आदि सप्तछन्द षड्जादि सप्तस्वरो में गाये जाते हैं। षड्जादि स्वर आकाश में स्व (स्वय) रा (राजमान) होने से स्वर कहाते हैं और श्रोताओं के हृदय को आकृष्ट करने वाले होते हैं। मयूर षड्ज, वृषी ऋषभ, अजा गान्धार, कौञ्ची मध्यम, कोकिला पञ्चम, अश्व धैवत तथा हाथी निषाद आदि स्वर उच्चरित करता है। षड्जस्वर का उत्पत्ति स्थान नासिका, कण्ठ, तालु, जिह्वा और दन्त हैं। गान्धार स्वर अनुनासिक है। शिर से ऋषभ, वक्षस्थल से मध्यम, शिरा और कष्ठ से पञ्चम, ललाट से धैवत, तथा सर्वसन्धि स्थलों से निषाद को उत्पन्न समझाना चाहिए। षड्ज ही शेष स्वरों की प्रकृति है। षड्ज और पञ्चम अचल है। पूर्वाङ्ग मे षड्ज अचल तथा उत्तराङ्ग में पञ्चम अचल होता हे। पूर्वाङ्ग उत्तराङ्ग में जिस स्वर की प्रथम स्थापना होती है, वह कूटस्थ होता है। अन्य स्वर विवादी और सवादी होते हैं।

वेदो में योग

कमलजीत धरणी

शोधछात्र, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

योग मानव जाति की सबसे प्राचीन और सबसे समीचीन सपति है। यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है कि योग ही सर्वोत्तम मोक्षोपाय है। भगवान् से मिलने में योग भक्ति तथा ज्ञान का प्रधान सहायक है। प्राचीन ऋषियों के प्रातिभ ज्ञान की अन्तर्दृष्टि की उत्पत्ति में योग ही प्रधान कारण था। धर्म प्रचारकों और दार्शनिकों ने योग की प्राकृष्ट उपयोगिता मानी है तथा उसका विवेचन अपनी अपनी दृष्टि से किया है।

ऋग्वेद में अलङ्कार सौन्दर्य

डॉ0 महेश दत्त शर्मा

(रीडर एव अध्यक्ष, सस्कृत विभाग)

एन एम एस एन दास (पी जी) कालेज

बदायूँ (उ प्र)

वैदिक साहित्य समस्त उत्तरवर्ती काव्य परम्पराओं का उद्गम स्थल है। वेदों की शब्दावली

स्वाभाविक रूप से अलङ्कृत है, उसे प्रयासपूर्वक अलङ्कारो से वेष्टित नही किया गया है। प्रकृति के स्वच्छ एव स्वतन्त्र वातावरण मे ऋषियो द्वारा अनुभूत अनेक भावो का चित्रण प्राकृतिक उपादानो द्वारा ही अलङ्कृत है। द्युलोक से उतरती हुई अपनी प्रभा से समस्त लोको को आभा मण्डित करती हुई दिव्य सुन्दरी उषा की विभिन्न गतिविधियो मे, कल-कल-निनादिनी नदियो की तीव्रगामिनी जलधाराओ मे, खनखनाते हुई एव अक्षपटल पर फेके जाते हुए जुआ के पासो की निम्नोन्नत चालो मे, गोधूलि वेला मे अपने आवास की ओर लौटती हुई अपने बछडो की ओर वात्सल्यभाव से रभाती हुई शीघ्रगामिनी गोओ की भाग-दौड मे जो अलङ्कार ऋग्वेद मे दृष्टिगोचर होते हैं, वे स्वाभाविक, सहज और चित्ताकर्षक हैं। इन्द्र, उषा, पर्जन्य के अलङ्कृत वर्णन मानवीकरण और बिम्बविधान की दृष्टि से भी मनोहारी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वेदो मे मन्त्रो मे विभिन्न वर्णनो के माध्यम से सर्वत्र सौन्दर्य का ही चित्रण किया गया है। जो उत्तरवर्ती अलङ्कार प्रधान काव्यशास्त्र का जन्मदाता है। प्रस्तुत शोधपत्र मे इसी विषय का प्रतिपादन किया गया है।

वैदिक मतानुसार मुक्ति कैसे सम्भव है?

डॉ0 सुखदा सोलकी

रीडर सस्कृत विभाग

डी ए वी पी जी कालेज

देहरादून-248001 (उत्तराँचल)

जीव जिस प्रकार का कर्म करता है, उसी प्रकार का फल जीव को मिलता है। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र कर्मों के फल भोगने मे ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है। जब त्रिविध दुःखो का अत्यन्त विच्छेद हो जाता है वह मुक्ति कहलाती है **"मुञ्चन्ति पृथग्भवन्ति जना. यस्यां सा मुक्ति "** 'मुच्लृ मोचने', धातु से मुक्ति शब्द सिद्ध होता है, अतः सुख विशेष (मुक्ति) ओर विषय तृष्णा मे फसकर दु·ख विशेष का भोग करना नरक कहलाता है, जैसे कि सस्कृत मे कहा गया है कि **"स्व· सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः अतो विपरीतो दु.ख भोगो नरक इति"**। वह सर्वशक्तिमान् परमात्मा सृष्टि का पालन और सहार करता है। विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष का ज्ञान भी उसी सर्वशक्तिमान् द्वारा वेदो के माध्यम से प्रदत्त है। धर्मयुक्त सत्यभाषणादि कर्म द्वारा जीव मुक्ति तथा मिथ्याभाषणादि अधर्म से बन्धन को प्राप्त होता है।

वैदिक वाङ्मय में युद्ध-विज्ञान

मजु नारग डी0 लिट्0

रीडर एवम् अध्यक्षा, सस्कृत विभाग
एम के पी (पी.जी) कालेज, देहरादून

वैदिक वाङ्मय में इन्द्र के चार प्रकार के, शूरवीरों के तीन तथा **पञ्चक्षितीनां भवस्तत सु न आभर**" (ऋग्वेद 5/35/2) धनुष वैदिक आर्यों का प्रमुख, परमोपयोगी तथा बहुप्रचलित एव वज्र शक्तिशाली आयुध था। वज्र लौह, स्वर्ण तथा अस्थि निर्मित विविध प्रकार के होते थे। इन्द्र का यह प्रमुख आयुध होने के कारण वह **'वज्रिन्'** नाम से अभिहित किया जाता था। मुख्य रूप से शतपर्वा, तिग्मतेजा, हेति, प्रहेति, त्रिषन्धि, अयोमुखी, सूचीमुखा, धूमाक्षी, कृधुकर्णी, अश्रुमुखी, अग्निजिह्वा तथा वज्रशिखा नामक वज्रों का विवरण प्राप्त होता है। शत्रु को बन्धन में डालने के लिये पाशों का प्रयोग किया जाता था। इनमें वरुण, ज्या तथा नाग आदि पाशों के विषय में वर्णन किया गया है। चक्र तथा कवचादि के नाम तथा स्वरूप आदि के विषय में भी मन्त्र प्राप्त होते हैं। शत्रु को आतङ्कित करने के लिये तथा उसको दुर्बल बनाने के लिये विविध प्रकार की शक्ति का उपयोग किया जाता था। स्नेही जनों से प्रसन्न होने पर अनेक बार इनको उपहार स्वरूप भी प्रदान किया जाता था। इनके अतिरिक्त परशु, गदा, वाशी, ऋष्टि, निषङ्ग, रम्भिणी, कृत्या, स्फोटक अस्त्र, चक्र, विद्युत् आग्नेयास्त्र तथा धूमास्त्रादि शक्तिशाली तथा प्रभावपूर्ण शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया जाता था।

उर्वशी-पुरूरवा आख्यानः वैदिक वाङ्मय से दिनकर कृत उर्वशी तक

डॉ0 नीरजा टण्डन
रीडर हिन्दी विभाग
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

चिरकाल से ज्ञान- विज्ञान के अजस्र स्रोत को प्रवाहित करने वाले वैदिक वाङ्मय मे आख्यान साहित्य का एक विशिष्ट स्थान है। किसी तथ्य के विषय में ज्ञान कराने वाले आख्यान साहित्य का मूलस्रोत भी वेद ही है। ऋग्वेद से ही अनेक दानात्मक, उपदेशात्मक, सृष्टिविधायक, सवादात्मक आख्यान मिलते हैं। इनमें अगस्त्य-इन्द्र का आख्यान, अक्रूर और स्यमन्तकमणि का आख्यान, विद्या एव ब्राह्मण का आख्यान, विश्वामित्र एव नदियों का आख्यान, उषा और सूर्य का आख्यान, पुरूरवा और उर्वशी का आख्यान आदि अनेक आख्यान उल्लेखनीय हैं। ये आख्यान समय-समय पर अनेक साहित्यकारों द्वारा वेदों से आहरित किये गए और अपने-अपने युक के अनुरूप इनमें परिवर्तन परिवर्धन होते गए।

यजुर्वेद के आलोक में तत्कालीन समाज का अवलोकन

डॉ0 सविता भट्ट
रीडर सस्कृत विभाग
डी.ए.वी (पी जी) कॉलेज, देहरादून।

यजुर्वेद अहिसावादी तथा श्रेष्ठ कर्मो से परिपूर्ण ज्ञान का अमूल्य स्रोत है। यजुर्वेद के आलोक मे तत्कालीन समाज का अवलोकन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि यजुर्वेदीय समाज के आदर्श पशुओ की रक्षा करना, निष्काम कर्म की भावना, सत्याचरण, सद्भावना, बुराई से बचना, स्वयवर, चोरी का त्याग, सन्मार्ग गमन, निर्भयता, सदाचार, अहिसा, दया, दीर्घायु जीवन की कामना, विश्वबनधुत्व का भाव, जाति-पाति से रहित उत्थान विचारना, विश्वशान्ति, मासाहार का निषेध, आस्तिकता, यज्ञ, श्रद्धा आदि गुणो का ग्रहण तथा ईश्वर को सबका पालक, रक्षक तथा कर्मफलो को देने वाला मानना, इत्यादि नियमो पर आधारित थे।

वास्तव मे समाज के दिग्भ्रमित व्यक्तितयो को सन्मार्ग पर लाने मे यजुर्वेद के आदर्श दिव्य स्रोत हैं, जिसका पान करने से समस्त पिपासाए शात होती हैं। मात्र आवश्यकता है वैदिक समाज का अवलोकन करने की और उसके नियमो और आदर्शो को ग्रहण करने की।

वैदिक साहित्य में अभिव्यकत ललित कलाएँ

डॉ0 (श्रीमती) निधि सिन्हा
रीडर हिन्दी विभाग
डी ए वी (पी जी) कॉलेज, देहरादून।

साहित्य और कला मानव और समाज की अपनी विशिष्ट शक्तियाँ है। कला और साहित्य समाज सापेक्ष है। भारतीय वाड्मय और हमारी सस्कृति के मूलाधार 'वेद' भी इससे अछूते नही है। जहाँ वेदो मे मानव समाज का सर्वांगीण विकास अकित है वहाँ ललित कलाओ का वर्णन अनेक स्थानो पर मिलता है। ऋग्वेद मे गणेश को एक दत कहा गया है। वेदो मे प्रस्तर और काष्ठ की मूर्तियो का उल्लेख मूर्तिकला की पुष्टि करता है। इसके अतिरिक्त चित्र कला का सम्बध धार्मिक विधानो के साथ प्रस्तुत हुआ है। ऋग्वेद मे लौहमयनगर, सहस्र स्तम्भ वाले प्रसादो के साथ ही प्राचीन आर्यो के सामवेद तथा सामगान उनकी सगीत प्रियता के द्योतक हैं। अत· वेदो मे ललित कलाओ का पर्याप्त उल्लेख हुआ है।

वैश्वीकरण का नीतिशास्त्रीय आधार

सुरेन्द्र डी सोनी
व्याख्याता (इतिहास)
राजकीय लोहिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चूरू (राज0) ३३1001

विगत शताब्दी अपने अवसान के साथ-साथ दुनियाँ के राष्ट्रों को वैश्वीकरण के ऐसे चक्रव्यूह में धकेल गई कि प्राकृतिक और मानवीय ससाधनों के दोहन की होड-सी मच गई है। जिन देशों का दोहन हो रहा है, यहाँ के नेतृत्व को हो रहे क्षय का अनुमान नहीं है और जो दोहन करने में लगे हुए हैं, वे सब कुछ हडप नहीं पाने की अतृप्ति के चलते अशान्ति से घिरे हुए हैं।

'वैश्वीकरण', जो वस्तुतः समाधान होना चाहिए था, समस्या होकर रह गया है और भारत, जो वैश्वीकारण के समर्थक राष्ट्र के रूप में उभर रहा है, के मूल दर्शन में वैश्वीकरण की वह अवधारणा व्याख्यायित है जो ससार के समस्त जीवों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। वेद, जो ज्ञान के विश्वकोश हैं, वैश्वीकरण की समसामयिक धारा को एक नई एव प्रेरक दिशा प्रदान कर सकते हैं और इसके लिए तो ज्ञात इतिहास के सर्वाधिक प्राचीन ग्रथ ऋग्वेद के कुछ सूक्त ही पर्याप्त हैं।

ऋग्वेद में उपलब्ध चिकित्सासूत्र

डॉ0 अखिलेश कुमार
प्राचीन भातीय इतिहास
विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

वेद लौकिक एव अलौकिक ज्ञान का साधन है वेद चतुष्टय के उपवेदों का उल्लेख करते समय ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद माना गया है। आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति ते त्रय. स्थापत्यवेदमपरमुपवेदश्चतुर्विधः।। आयुर्वेद तदायुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः (चकर स0 सूत्र स्थान ३0/2३) अर्थात् मनुष्य का दीर्घायुष्य सम्बन्धी विचारक उपवेद है। अन्यमत के अनुसार आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद (चरक सूत्र ३0/21 तथा सुश्रुत स0 1/6) अथवा उपाङ्ग है। ऋग्वेद में चिकित्सा सम्बन्धी तथ्यों पर प्रभूत विचार किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र का विषय "ऋग्वेद मे उपलब्ध चिकित्सासूत्र" है। जिसके अन्तर्गत जिन तथ्यों का प्रकाशन किया गया है।

वेदों की विश्व को प्रमुखतम देनः आत्मानुभूति

डॉ0 श्वेता शर्मा

प्रवक्ता, सस्कृत,एफ0 सी0 कॉलेज, हिसार।

वेद "ब्रह्म" वा "ब्रह्मात्म ज्ञान" नाम से भी अभिहित है और ब्रह्मवत् "अपौरुषेय" आदि भी माने जाते है। स्वामी दयानन्द के मतानुसार, उनमे मूलत. तो सभी विद्याएँ विद्यमान है, परन्तु प्रमुख "ईश्वरानुभव" ही है। यह परमात्मानुभव, आत्मानुभव के बिना सभव ही नही है, क्योकि परोक्ष परमात्मज्ञान का मार्ग, प्रत्यक्-आत्मज्ञान से ही होकर गुजरता है। गीता तथा कठोपनिषद् आदि भी वेदो के मुख्य वेद्य "ब्रह्मात्मा" को ही मानते हैं। माधवाचार्य के अनुसार भी इस "बुद्धे. परतस्तु स:" सरीखे "अज्ञेयतत्त्व को मात्र आत्मा ही जान सकती है अन्य कोई नही। ज्ञातव्य है कि इस आत्मज्ञान के अभाव मे ही लोक कष्टलेशाकुल है:-"आत्मान वेद् विजानीयादयमस्मीति पुरुष:किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसज्वरेत् ।। "बृहदा0 4 4 12 मानव का कर्तव्य, गुरु-शास्त्र साहाय्य से, जड देहात्मभाव से उभर कर और स्वस्वरूप आत्मभाव मे स्थिर होकर, जीवमुक्त बनना है। अत: आत्मानुभूति ही वेदो की विश्व को, प्रमुखतम देन है।

वेदों में वर्णित ललितकलाएँ

डॉ0 अनीता सोनकर

41/475, नरही, लखनऊ-226001

'ऋग्वेद' मे प्राप्त होता है कि विश्वकर्मा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया-"बाहुभ्या द्यावाभूमी स जनयन् स धमति। 'त्वष्टा' को 'अपसाँ अपस्तम., कारीगरो मे श्रेष्ठ बताया गया है। वैदिक काल मे मूर्ति का निर्माण करने वाले अवश्य थे, किन्तु यह कला कितनी विकसित थी, यह ज्ञात नही होता है। ऋग्वैदिक कति 'उषा' नायिका द्वारा अन्तरिक्ष ओर द्युलोक को प्रकाश और विविध रगो से व्याप्त कर देता है। मरुतो के अश्व लाल और हरे रगो के है। 'अश्विनी' देव ने आर्यो के लिए 'बकुर' नामक वाद्ययन्त्र बजाकर दस्युओ को भगा दिया। इसी प्रकार 'कर्करि' नामक वाद्ययन्त्र की चर्चा भी प्राप्त होती है। वेदो मे भी सप्तस्वर ही प्राप्त होते है। गीत गाने वाले को 'उद्गाता' कहा गया। 'उषा' देवी की तुलना एक ऐसी नर्तकी से की गई है, जो सुन्दर और विविध वर्णों के वस्त्र धारण करती है। 'ऋग्वेद' मे 'इन्द्र' देवता को 'नृतो' अश्विनी देवता को नृत्' अर्थात् नृत्य करने वाले कहकर सम्बोधित किया गया है। वेदो के अनुसार नृत्य पृथ्वी तक सीमित न होकर प्रकृति मे अन्यत्र भी है। आज ये ललितकलाएँ भारतीय और पाश्चात्य स्वतन्त्र कलाशास्त्र के प्रमुख तत्त्वो के रूप मे वर्णित हैं।

आर्य सभ्यता-विभिन्न क्षेत्रों में योगदान

स्नेहलता दुबे
शोध छात्रा (वेद)
दी द उ विश्वविद्यालय
गोरखपुर (उ प्र)

मानव की बाह्य एव आन्तरिक स्थितियों के सुसत्कृत एव परिष्कृत समूह को सस्कृति कहा जाता है। वैदिक आर्यों की सस्कृति का अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक निरन्तर प्रकट एव प्रच्छन्न रूप में चले आना इस सस्कृति की विलक्षणता है। आर्य अत्यन्त शान्तिप्रिय एव सम्पूर्ण सृष्टि के चराचर में शान्ति की व्यापकता की प्रार्थना करने वाले लोग थे।

ज्ञान की साधना करना तथा उपार्जित ज्ञान से दूसरो का मार्गदर्शन करना एक नियमित याज्ञिक प्रक्रिया थी, जो कि आर्यसस्कृति का अभिन्न अग थी। उनकी जीवन पद्धति और उनकी विचार-परम्परा के विकास के सभी सोपान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और तदनन्तर अथर्ववेद की संहिताओं, आरण्यकों, उपनिषदों एव ब्राह्मण-ग्रन्थों से प्रामाणिक रूप में उपलब्ध होते हैं। धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र, भाषा-विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, शिल्पकला एव ललित कलाएँ तथा विभिन्न वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के उद्भव का मूल स्रोत ये वैदिक साहित्य ही है।

वेदों में सौमनस्य द्वारा लोकमाङ्गल्य की मूल अवधारणा

डॉ0 कनक रानी
वरिष्ठ प्रवक्ता-सस्कृत विभाग,
आर्य महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
शाहजहाँपुर (उ प्र)

ससार में समस्त क्रियाये विचारोपरान्त सचालित होती हैं, अत एव लोकमगल के मूल मे कल्याणकारी भावना ही अनिवार्य रूप वांछित है। लोक-कल्याण का मूल है सौमनस्य। निश्चय ही सौहार्द्रता, सवेदना, पारस्परिक प्रीति, सामजस्य और एकत्व आदि से परिवार में सुख समृद्धि की वृद्धि होती है। परिवार हो या समाज, सुख शान्ति के लिये सामजस्य की अनुभूति आवश्यक है। द्वेष, कलह, ईर्ष्या और मनोमालिन्य समाज के स्वस्थ विकास में बाधक हैं, अतः वेदों में स्पष्ट कहा गया कि हृदय की एकता, मन की एकता, द्वेष का अभाव, प्रेम और सद्भाव से समाज मे स्वत ही सहृदयता एव प्रेममयता का सचार होता है।

चूकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अत एव मनुष्य के विचारो का कार्यों का प्रभाव समाज पर पडना स्वाभाविक ही है। सद्विचारो से विचारो की समानता से समाज मे स्वस्थता एव सशक्तता का समावेश होता है। मनुष्य का मन नितान्त निर्मल हो, द्वेष-विद्वेष से सर्वथा रहित हो, मैत्रीभाव से पुष्ट हो तो प्राणिमात्र की कल्याण कामना स्वय प्रतिफलित होती है। ऋग्वेद मे सहचित्तता, सहचिन्तनशीलता, सहगमनीयता, सहवदनीयता आदि की प्रतिष्ठा कर लोक माङ्गल्य का मार्ग प्रशस्त किया गया।

ऋग्वेद के मन्त्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ0 (श्रीमती) पुष्पा गुप्ता

लक्ष्मीबाई महाविद्यालय

अशोक विहार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110052

मानव की मानसिक प्रक्रियाओ का विज्ञान है। वह जो भी करता है। अथवा कहता है। वह सब उसकी मानसिक क्रियाओ का प्रतिफल होता है। जन्म से ही भय, घृणा, आश्चर्य, क्रोध, शोक, रति, वात्सल्य, क्षुधा आदि मूल प्रवृत्तियाँ प्रत्येक प्राणी मे विद्यमान रहती है। ये नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ परिस्थिति विशेष मे मनुष्य को किसी विशेष प्रकार से प्रेरित करती है। प्रत्येक मूलप्रवृत्ति के ज्ञानात्मक, उद्वेगात्मक एव क्रियात्मक ये तीन पक्ष होते है। सर्वप्रथम मनुष्य किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करता है। तत्पश्चात् वह किसी उद्वेग का अनुभव करता है और अन्त मे उस उद्योग से अभिभूत वह विशिष्ट प्रकार से प्रतिक्रिया को पृथग् नही किया जा सकता। वे दोनो परस्पराश्रित है।

वेदों में वर्णित सिंचाई व्यवस्था

नवीन कुमार

(शोध-छात्र)

प्राचीन भारतीय इतिहास, सस्कृति एव पुरातत्त्व विभाग,

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

वेदो मे वर्णित ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना वास्तव मे अन्तर्राष्ट्रीय एकता का एक मानक उद्धरण है। सम्पूर्ण मानव जीवन के उद्देश्यो को पुरुषार्थ की सज्ञा दी गयी है, जिनमे अर्थ का विशेष महत्त्व है। वैदिक कालीन समाज ग्रामीण, पशुपालन एव कृषि प्रधान था। कृषि प्रधान समाज मे अर्थव्यवस्था कृषि से प्रभावित रहती है तथा कृषि का अनुकूल एव प्रतिकूल होना सदैव सिचाई

पर निर्भर रहा है। वेदों में यदा-कदा सिचाई के बारे में साक्ष्य मिलते हैं, जो विश्व को मानव की कृषि में प्रयुक्त सिचाई व्यवस्था से अवगत कराने है।

वेदेषु सामाजिकं सौमनस्यम्

डॉ0 दीपा अग्रवाल
रीडर, सस्कृत विभाग
इलाइबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद

सुमनसः भाव एव सौमनस्यम्। सौमनस्यस्य प्रथम तत्त्वमस्ति प्रेम-मातृभावो वा, द्वितीय चास्ति परस्परसहयोगेन सर्वेषा कल्याणार्थं जीवनयापनम्। कृषिसस्कृतौ वर्णाश्रमपुरुषार्थनुयुत जीवन यापयन्त ऋषय. सदैव समष्टिगत चिन्तनमेव कृतवन्तः। भवतु नाम तचिन्तन बुद्धिपुत्रपौत्रादीना जीवजगदात्मपरमात्मज्ञानाना वा प्राप्त्यर्थं भवेत्। परिवारे समाजे वा सर्वे पञ्चजना ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रनिषादाश्च सद्बुद्धियुताः परस्परं सहयोगभावनया समृद्धि ज्ञान च स्वकीयगुणकर्माभ्या लभमाना अखिलसमाज पोषयन्त पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्तये प्रयत्न कुर्वाणा आसन्। प्रत्येक वर्गस्य समानरूपेण शिक्षाया· उन्नतेश्चाधिकार· तत्रासीत्। स्त्रीपुरुषयो. अपि पूर्णं सामञ्जस्यमासीत्। यदि गृहपति. पुरुषो गृहस्य स्वामी सरक्षक आसीत्, तर्हि माताऽपि गर्भधारणपोषणाभ्या पितुः श्रेष्ठ स्थान प्राप्तवती आसीत्। समाजस्य अर्द्धां गत्वात् स्त्रिया सह पूर्ण सौमनस्य जनानामासीत्। परिवारे कोऽपि ज्येष्ठः कनिष्ठो वा नासीत्। समानरूपेण सर्वे व्यवहरन्त आसन् तथापि वयोज्ञानयो दृष्ट्या पूर्ण सम्मानमासीत् प्रत्येक मानवस्य। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', 'माताभूमि. पुत्रोऽह पृथिव्या ', 'सरस्वती न सुभगा मयस्करत्', 'जीवेम शरद शतम्' 'पश्येम शरद शतम्', 'कस्मै देवाय हविषा विधेम', 'स्याम पतयो रयीणाम्', सदृशानि समष्टिगतचिन्तनयुतानि वाक्यानि ऋषीणा सामाजिक सौमनस्यमेव प्रदर्शयन्ति। वेदेषु प्रत्येक प्रकृतितत्त्वेषु देवत्वकल्पना, धर्मप्राण जीवन, धृतिक्षमादमाऽस्तेमाहिसासत्यादीना मानवमूल्याना प्रतिष्ठा, गुणकर्मानुसारिणी वर्णव्यवस्था ऋषीण सर्वत्र आत्मोत्कर्षपरक चिन्तनमेतेत् सर्वं सामाजिकसौमनस्यमेव।

वैदिक विज्ञान वैशिष्ट्यम्

डॉ0 प्रवीण देवी
प्रवक्ता सस्कृत
जनता महाविद्यालय अजीतमल, औरैय्या (उ0प्र0)

विविधक्षेत्रुषु वेदाना योगदान, यथा-प्राकृतिक विज्ञानम्, अध्यात्म, दर्शन, धर्म·

सास्कृतिक-परम्परा., ज्योतिषादयः पूर्णरूपेण दृश्यन्ते। वर्तमानयुग. "वैज्ञानिक युगः" इति ज्ञायते। अत एव "प्राकृतिक-विज्ञान" वैदिक विज्ञान वैशिष्ट्यम्" वा इत्यधिकृत्य अतिसक्षेपेण इद शोधपत्र प्रस्तौमि। विश्वस्य दर्शनम् अनन्तविज्ञानस्य स्रोतोऽस्ति। वेदेषु द्वे विद्ये वर्तेते अपरा परा चेति। तत्र तत्र यया पृथ्वी तृणमारभय प्रकृतिपर्यन्ताना पदार्थाना ज्ञानेन यथावदुपकारग्रहण क्रियते सा अपरोच्यते। अपरा विद्या एव तु विज्ञानम्। सम्पूर्णपदार्थाना यथार्थज्ञान विज्ञान इति कथ्यते। मानवो विज्ञान विना पगुः। ऋग्वेदे वैज्ञानिकतथ्याना निरूपण पर्याप्तमस्ति।

विविधक्षेत्रेषु ज्ञानस्रोतांसि वेदाः

रामनारायणः शास्त्री

प्रवक्ता सस्कृत-विभाग

राजकीय लोहिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय

चूरू (राजस्थान) ३३1001

"विविधक्षेत्रेषु ज्ञानस्रोतांसि वेदा." इति शीर्षकमवलम्ब्य विचारणात् पूर्वं मन्येऽह यत् के वेदाः कति च ते कथ च वेदशब्दस्य व्युत्पत्तिरिति विचारणा युक्तिसगता भविता। वेदाना नामविषये सख्याविषये च पौर्वात्याः पाश्चात्त्या· प्राचीना अर्वाचीनाश्च सर्वेऽपि विद्वास एकमता· सन्ति, नास्त्यत्र काचिद् विप्रतिपत्तिः। चत्वारो वेदाः, ऋग्यजु.सामाथर्वाख्या इति।

अखिलेऽपि ब्रह्माण्डेऽस्मिन् ये के च पदार्थः, ये के च प्राणिनः, यानि कानि च वस्तुजातानि तानि सर्वाणि ते च सर्वे मानवोपयोगायैव सन्ति। मानवैश्च कथ तेषामुपयोगो विधेय इत्यपि वेदे नितरा दरीदृश्यते।

स्वामिना दयानन्देन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाया प्रश्नोत्तररूपेण लिखित यत् वेदेषु सर्वा विद्या. सन्ति न वा। सन्ति मूलरूपेण। आयुर्वेद-रसायन-भौतिकी-गणितादीना सर्वांसा विद्याना मूलस्रोतासि वेदेषु निहितानि-इत्यनेन सारसक्षेपेण कथयितु शक्यते।

विविध क्षेत्रेषु ज्ञानस्रोतांसि वेदाः

डॉ0 पतञ्जलिमिश्र.

प्राध्यापकः महात्मागाधी काशीविद्यापीडम्

वाराणसी (यू0पी0)

मानवजीवनस्य परमपुरुषार्थ· स्वस्वरूपबोध· नित्यानित्यवस्तुविवेकेन समस्तक्रिया

कलाप-सम्पादनेन मोक्षावाप्तिश्च विद्यतेतरामित्यविदितमेव विपश्चिताम्। आधिमौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकस्य अनुकरणीयानुसरणीयाश्च विद्यन्ते।

वैदिकव्यवस्थायां शिक्षायाः सामाजिकजीवनस्य च अवधारणा

डॉ0 शिवकुमार शर्मा

सस्कृत प्रवक्ता

श्री तु0इ0का0 राजापुर, चित्रकूट

ओ३मित्यतोऽधिगता वेदा अस्माभिर्यथा तथैवो३मित्यत एव ससरणशीलोऽय ससार· समधिगत.। तस्मिश्च किन्नाम जगत्? कि च वयम्? कि चो३मिति पदम्? इत्याद्यनल्पाना प्रश्नानामभिप्रायमधिगन्तुमवबोधयितुञ्च जिज्ञासून् प्रति जिज्ञासवो वयम्। यत ओ३मित्यतो वेदा अतो वेदेष्वेवोपरिगताना जिज्ञासाश्रमभूताना प्रश्नाना समाधान दुग्धे सर्पिरिव तिष्ठति। तर्हि ते वेदा कि शिक्षाया विना स्वस्मिन्निहितमर्थमवबोधयितु क्षमाः? सापि शिक्षा कि या वैदिकी षोडशसस्कारपूर्विका सामाजिकजीवनस्य व्यवस्था तया विना सम्प्राप्ता भविष्यति? भविष्यति चेदाकाशपुष्पस्य प्राप्तिरेव। महर्षिदयानन्देन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाया स्वभाष्येण सुभूषिता ऋग्वेदस्य तिस्र ऋचो दृष्टव्याः। यासु शिक्षाया. सामाजिकजीवनस्य चावधारणा प्रस्तराङ्कनम् इव भवति।

यजुर्वेदशिल्पम्

आचार्या डॉ0 प्रियवदा वेदभारती

व्याकरणाचार्य

नजीबाबाद, बिजनौर (उ0प्र0)

अत्र प्रस्तूयन्ते विविधानि शिल्पानि यानि खलु यजुर्वेदे प्रत्यक्षवृत्त्या परोक्षवृत्त्या वा समुपलभ्यन्ते-

1 वाहनशिल्पम्.- वाहनशिल्पेषु 'अन्तरिक्ष गच्छ स्वाहा, द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा' (यजु0 6121) "श्येनो भूत्वा परापत" (4/३4) आदिमन्त्र-खण्डैवीयुयानानाम्, "समुद्र गच्छ स्वाहा" (6121)"सुनावमारुहेयमस्रवन्तीमनागसम्"(2117) आदिमन्त्रैर्नौकानाम्, रथे तिष्ठन्नयति वाजिन (29/4३) रथाना जयता यन्तु घोषः (17/42) आदिमन्त्रै. रथाना स्फुट प्राप्यते।

2 युद्धशिल्पम्:- धन्वना गा धन्वनाजि जयेम (29/19) सृकाहस्ता निषङ्गिण. (16/61) सहस्रमृष्टिः शततेजाः (1/24) वर्षमिषवः, (16/64 66) आदित्या इषवः आदिभिः परश्शतैर्मन्त्रै. एकधा

शतसहस्रेषु प्रक्षेपण समर्थाना धनुषाम्, असिभुशुण्डी- शतघ्नीतोमरादीनामस्त्राणा किञ्च आग्नेयास्त्रवारुणास्त्रादीना सङ्केतः समुपलभ्यते युद्धशिल्पे।

३ कार्यशिल्पम्:- कृषिशिल्पे 'सूश्च में प्रसूश्च में सीरञ्च मे लमश्च मे'' इत्यादिमन्त्रेषु उत्तमबीजाना वपननिर्देशेन सह भूमिकर्षणार्थं सीतासीरालाङ्गूलयुगादिनिर्माण- निर्देशोऽपि प्राप्यते।

4 गृहशिल्पम् - गृहशिल्पे-ह हन्ता दुर्या. (1/11) हत्याधुक्त्वा यजुर्वेदे सर्वर्तुसुखदानि सूर्यकिरणवायुअन्ति विशालावकाशयुतानि सुहानि मृहाणि मनुष्यैर्निर्मातव्यानीति सङ्केतः। गृहनिर्माणसाधनीभूतानाभीष्टकानामपि यजुर्वेदे (1३/21)मन्त्रे उल्लेखः।

विविधक्षेत्रेषु ज्ञानस्रातोरूपेण वेदवाङ्मयम्।

एन0एस0 सुशीलम्या

ओम् शान्तिधाम, बगलौर

भारतीयसस्कृतिपरम्परायाः आदिर्न के नापि निश्चेतु शक्यते। अनादिर्वेद एव तत्र परम प्रमाणम्। भगवन्तो निखिलरूपेण प्रवृत्तमिद वेदवाङ्मयमिति बृहदारण्यकोपनिषदि सगीयते। दयानन्द-सरस्वतीस्वामिनोऽपि अत्र विषये महासम्मति प्रकटयन्ति। ऋषयस्तु केवल मन्त्रद्रष्टार· न तु कर्तारः। गुरुशिष्यपरम्परयैव अधुनापि वेदवाङ्मयस्य अध्ययनपरम्परा प्रवर्तमाना परिदृश्यते।

वैदिकसंहितासु शल्यचिकित्सास्वरूपः

प्रीति सिनहा

उपाचार्य लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

वेदेषु विज्ञानसन्दर्भे चिकित्साशास्त्रस्य अतिविकिसितरूप दरीदृश्यते। अस्यान्तर्गतवेदेषु अनेकाः चिकित्सा· वर्णिताः सन्ति यथा प्राकृतिकचिकित्सा, सूर्यकिरणचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, जलचिकित्सा, मन्त्रचिकित्सा, होमचिकित्सा, आश्वासनचिकित्सा, वनस्पतिचिकित्सा, शल्यचिकित्सादयः।

खण्डत्रयविभक्ते प्रस्तुते शोधपत्रे प्रस्तावनारूपेण सर्वप्रथम शल्यचिकित्साया अर्थ· प्रकारश्च विवेचयिष्येते। सममेव वेदेषु चिकित्सकरूपेण वर्णितयोरश्विनिकुमारयोर्संक्षिप्त- परिचयः प्रस्तोष्यते। एतौ तत्र आरोग्यदीर्घायुष्यपौरुषशक्तिसन्ततिसमृद्धिदातारौ स्वीकृतौ।

शोधपत्रद्वितीयखण्डे ऋक्यजुस्सामाथर्वसंहितासु प्रतिपादितायाः शल्यचिकित्साया. प्रसङ्गा· मन्त्रपुरस्सर प्रस्तोष्यन्ते। शृङ्खलायामस्या प्रसङ्गानुरूप आयुर्वेदाख्योपवेदोऽपि प्रतिपादनीयः। यद्यपि वेदेषु रुद्राग्निवरुणेन्द्रमरुतादयः देवाः दैव्य इति कथिताः तथापि ऋग्वेदे तुलनात्मकरूपेण अश्विनिकुमारयोरेव

शल्यचिकित्साचातुरी मुख्यतया वर्णिता यथा अन्धाय ऋज्राश्वाय दृष्टिदान, दधीचेः कृते अश्वशिरस. प्रत्यारोपण, राज्ञः क्रीडायाः छिन्नचरणपत्निविश्पलायै लौहचरणप्रत्यारोपण, छिन्नभिन्नशरीरस्य रेभर्षेरङ्गाना सन्धिविधानञ्च। प्रसङ्गेऽस्मिन् वेदेषु वर्णिताना शल्यचिकित्सोपकरणाना विवेचनमपि करिष्यते येन परम्परया शल्यपद्धति. प्रकाशिता भवति। शोधपत्रस्य अन्तिमे उपसहारात्मके च चरणे आधुनिकशल्यचिकित्सा परिप्रेक्ष्य वैदिकशल्यचिकित्सा समीक्षिष्यते।

अथर्ववेदे प्राणतत्त्वम्

डॉ0 (श्रीमती) विजयलक्ष्मी

एस0डी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर।

अथर्ववेदः आयुर्वेदः यतो हि वेदेऽस्मिन् मुख्येन आयुर्विषयक वर्णनम्। अतो निश्चप्रचमिद कथयितु शक्यते यदयं जीवनवेदः। अथर्ववेदे जीवनतत्त्व प्राणतत्त्व विशद वर्णितम्। अथर्ववेदे जीवनतत्त्व प्राणतत्त्व विशद वर्णितम्। अथर्ववेदस्य सप्तशतोत्तरैकत्रिंशत् सूक्तेषु चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशतानि सूक्तानि आयुर्विज्ञानमाधृत्य उदीरितानि। "प्राणो वै भूतानामायुः" उक्तिमुक्तेय प्राणानामपरिहार्यत्वमनिवार्यत्वञ्च विज्ञापयति। अथर्ववेदे अनेकेषु मन्त्रेषु प्राणाना स्वरूप महत्त्वञ्च सम्यक् प्रतिपादितम्। तत्रैव अथर्ववेदस्य एकादशे सूक्ते "प्राणापानौ व्यानोदानौ" इति वर्णन प्राप्यते। अस्य विषयस्य प्राणविषयकाणा मन्त्राणमध्ययन मम प्रयासः।

PROFESSIONS IN THE RGVEDA - A STUDY

Mrs N SIVAGAMIKKANI,

Research Scholar, (Vedangas) Department of Sanskrit,

Madurai Kamaraj University,

Madurai-625021 TamilNadu

The Rgveda It consists of a collection of 1028 hymns (Suktas) which are skillfully composed in praise of the ritual deities like Agni Soma, Marut, Indra, Varuna etc , collected in ten cycles or mandalas The Rgveda hymns are a poetic testament of a people's collective reaction to the wonder and awe of existence

A study of the Rgveda reveals that the people of that age were not solely devoted to religious rites and philosophical speculations There was a complete society in which people pursued various occupations Though economy was largely agricultural and pastoral, various industries were also resorted to Apart from the above, in the Rgveda we perceive the glimpses of the occupations practiced by the people of that time The article examines the same

CONSTRUCTION OF SOME IMPORTANT CITIS FROM BAUDHAYANA SULBASUTRA

V K Sharma and Yogita Bana

In this paper construction of following cities from Baudhayana Sulba Sutra are described

1-Prauga citi 2- Ratha-cakra citi 3-Drona citi 4- Kurma citi

First citi is in the shape of triangle second is in the shape of chariot wheel Third is in the shape of circle or square and fourth is in the shape of tortoise Areas of citis, number of bricks used in different layers etc are described here

VEDAS AND THE CONCEPTS OF MANAGEMENT & LEADERSHIP

Arya Sanyasi Mahatma Gopal Swami Saraswati

Arya Vanaprastha Ashram

Arya Samaj, B-69, Sector 33, Noida (UP)

Vedas are the treasure house of all true knowledge, and the prime source of all that is knowable World over, there is ongoing search for excellence, more so in the field of 'management' & 'leadership' God is not only an ethical ideal but also a management ideal of 'par excellence', because in relation to Creation, God is performing essentially the same functions, which any enlightened management is expected to perform in relation to its enterprise As creator, Sustainer, Ordained and Controller of Universe, one finds in all activities of God, lot of objectivity, lot of planning, lot of co-ordination, lot of orderliness, lot of immaculately perfect control systems to keep every thing going on, with all checks and balances Without understanding God, His qualities, attributes and functions, the way, He operates His systems and laws, the way, He acts silently, steadily & meticulously, the way He exercises control, the science of management would itself remain incomplete— incomplete as it is

even now, after years' of management research & innovation. And for understanding God, there is no better scripture other than the Vedas, which, as the name implies, are pure knowledge,— a gift of God to human beings, revealed alongside the creation of universe for the benefit of entire mankind

The paper throws considerable light on the above aspects with supporting 'Veda Mantras', which, if put into practice, can be a major contributory factor for bringing excellence in management, improving its qualitative aspects, and enhancing its effectiveness Alongside, the management, the leadership aspect is equally important, because in all management matters, it is the 'leadership' that counts The paper suggests a number of 'Veda Mantras' highlighting essential attributes of 'leadership' as also providing the clues for improving the quality of leadership The paper also asserts that every 'Veda Mantra' , which is addressed either to 'Agni' or 'Indra', unless it is in the context of God Almighty, can be interpreted in terms of enhancing leadership effectiveness in societal organizations in qualitative terms

THEORY OF POLITY AND ADMINISTRATION (IN THE VEDAS) AND THEIR IMPLEMENTATION BY THE ARYANS

Dr L P Upadhyay

Head, Deptt of Snaskrit,

D A V College Jalandhar

The vedas are ocean of knowledge containing gems of lofty ideals which lead to all round progress of humanity They suggest significant theories of Polity and Administration which were implemented by the Aryans These theories throw light on mode of election and coronation of the king, the duties and rights of him, his subjects, ministers, officers, attendants and the like On the basis of the aforesaid references , it is justified to say that the theory of polity an administration revealed in the vedas is outcome of the mature genius of the Aryans and hence, it deserves to be implemented properly to promote the standard of polity and administration even today

MANAGEMENT: A VEDIC INTEGRATION OF TRANSITIONS IN MANAGEMENT

Dr Subhash Sharma **

Director, Indian Institute of Plantation Management, Bangalore,

The concept of 'management has been changing over a period of time During ancient times, 'management was an art, a state craft With the advent of industrial revolution, 'management' become 'science' and an art was transformed into 'science' Subsequently, 'management' became a discipline and a profession that could be formally taught to all those who are interested in becoming managers In this discipline, we find convergence of various other disciplines such as economics, psychology, ethics etc The 'core knowledge' of the discipline of management draws heavily from other disciplines and through value addition, integration and synthesis of ideas from various disciplines of 'management' has been created with its own concept at the thought, discourse and action

This paper provides a Vedic integration of transitions in management thought from ancient times to modern times by providing a Vedic integration of various intellectual traditions that have influenced the development of management ideas and concept Father, the paper provides some integrative models of 'transcendental management' and suggests the need to create an intellectual

bridge between the 'Harvard' and 'Haridwar' metaphorically representing the concepts of corporate management and self-management

VEDAS AND THE IMPLICATIONS OF THE CONCEPTS OF ABSOLUTION, REPENTANCE, PUNISHMENT AND JUSTICE

Arya Sanyasi Mahatma Gopal Swami Saraswati

Arya Vanaprastha Ashram, Arya Samaj,

B-69, Sector-33, Noida (UP)

In all semetic religions and even according to orthodox tenets of Pouranic Hinduism, the concept of Absolution or forgiveness occupies an important place In brief, the concept implies, that despite the fact, that a person may commit any number of sins the God is there to forgive him, provided he takes recourse to some intermediary of God, viz, any prophet, messenger of God, deity, Guru, or priest etc, or offers a special worship, or, follows certain traditional rituals On this basis, a very well known proverb has come to stay in individual and social lives of human beings viz, "to err is human, and, to forgive is divine" The truth is that the concept of absolution has no place in Vedas Thanks to Maharishi Swami Dayananda Saraswati, who categorically proclaimed in a debate ('Shastrarth') with Father Dr T J Scott at Bareilly (UP) on the 27th August 1879 that all the four Vedas, i e, Rig, Yaju, Sam and Atharva did not prescribe or sanction at all the concept of absolution Every human being is bound by the results of his actions There is no room for any apology or bribery with the God in any manner, whatsoever There is no escape or pardon from the results of wrong actions or evil deeds One has to suffer and endure for his evil thoughts deeds and actions either in this birth or next birth in accordance with dictates of God's justice The paper throws considerable light on various aspects of the aforesaid concepts, wherever possible, through the help of appropriate Veda Mantras The study is limited to the four Veda Samhitas only because according to the author, whatever is not in conformity with Vedas, enjoys no validity or sanctity

VEDIC VIEW OF RAHU AND KETU

Dr (Mrs) Bidyut Lata Ray

Head, Dept of Sanskrit

Neelamakhava College,

Kantilo, Nayagarh 752078

The Rahu has been depicted in the Rgveda under the term Svarbhanu This point on the zodiac is also called Tama, Rahu, Saimhikeya and Vidhuntuda Rahu means one who eats away the sun and the moon It was actually observed by the Vedic seers that the cycle of eclipses occurred during specific intervals of time Until the origin of old Surya Sidhanta it appears that the vedic seers were under the erroneous assumption that the Rahu gulped down the luminaries during the eclipses Grahana means the nothingness of Graha of loss of Graha

The Ketu is the unseen Graha at about 1800 away from Rahu Ketu is propitiated by a few Rgvedic hymns It is noted to be a spot or insignia by Amarakosa It governs the Antaravedi region It is formed from the arc of Regati star on the fourteenth day of darkhalf of Caitra masa in Raksasa Samvatsara

It governs the Karkataka sector of the zodiac Bhat describes Ketu as Comets which revolve around the sun in highly eccentric orbits The Rgveda mentions 'Udutyam jatavedasam devam vahanti ketavah', meaning the comets carry the rising sun Meteoritic streams are the products of the disintegrated comets Whether Ketu is a non-shining graha or a comet, it requires further investigation But, it is clear from the hymns the Ketu is an astrological phenomenon

CONCEPT OF MATHEMATICS IN VEDAS

B GAYATHRI DEVI

Department of Mathematics

Garden City College

BANGALORE - 560049

This article describes Indian contributions to science in Vedic period, brings out quite clearly the continuity of scientific thought as a part of our cultural heritage Science and technology are potential instruments of social and economic change India is a land of religion with a rich scientific tradition is admitted by all scholars The impression that science stared only in Western countries was deeply embedded in the minds of educated people all over the world In the present paper I put forward my views about the existence of basic science subject in Vedas

SCIENCE OF MEASUREMENT BY CHHANDAS

By Arun Kumar Upadhyay IPS

M Sc (Math), AIFC cuttak

Measurement of various quantities and standardization of units is the basis of Physics and all related sciences and technology Chhanda means measure of "vak" Vak is usually considered spoken or written (seen) speech It also means space to which it reaches and its measure is measure of space (akasha) and its various derivatives like matter, time, light and other derived units Chhanda has been derived from root verb "chhada" or Chhadi", which means a covering Cover indicates shape, size, and form of any article or its space, Process of measurement is movement of measuring rod which is a motion Measuring rod and motion-both meanings are conveyed by word pada or its English equivalent foot which is a length unit also

Five 'ma" Chhanda give five classes of measuring units Seven "Brihati' Chhanda from gayatri to jagati give sizes of levels from solar system to galaxy In particular gayatri is measure of the lokas in the sense that 5 higher lokas starting from man are in ratio of 2 Exp 24-24 being number of letters in gayatri Ati-chanda from ati-jagati to ati-dhriti are size of 7 levels beyond galaxy It is seen that units and uses of length-time units accurately describe size and time-scales of universe Seven kriti chhandas indicate mass, volume and shape Asrivi-chhandas indicate directions and combinations of basic units These chhandas of desh-kala-dik describe and measure the whole of physical sciences

THE VEDA AND THE CONCEPT OF 360 DEGREES OF ANGLES OF A CIRCLE

- Dr M L Raja, M B B S D O

Director- Avinash, Shri Krishna Hospital

Pallipalayam, Erode-638006, Tamil Nadu

The concept of 360 degrees of angles of a circle has its origin from Veda only Rgveda Samhita (1-164-48) reveals, "the arcs are 12, the wheel is one, 3 are the hubs, within it are collected 360 spokes " Thus Rig Veda clearly shows there are 360 spokes for one wheel, which also denotes 360 days of a Savana year Also refer, Rgveda Samhita 1-164-11 The Earth revolves round the Sun in a unidirectional motion So the Earth's positions at each Sunrise vary with the time According to Yuga calculation, one Savana year of men consists of 360 days So, the Earth will be at 360 different positions, at Sunrise, in 360 days of one Savana year Further, the time measurements are also fully based on the angular distance traveled by the Earth round the Sun in the ecliptic Thus 1 year is the time required for the Earth to travel 360o (one full circle), 1 month for 30o (one arc), 1 day for 1 degree (spoke-amass), I ghatika (1/60th of a day) for 1 minute-Lipta (1/60th of a degree), 1 vighadika (1/60th of a ghadika) for 1 second-Vilipta (1/60th of a minute) and 1 Gurvakshra (1/60th of a vighadika) for 1 third-tatpara (1/60th of a minute) of angular distance Thus there is an exact confluence of the spatial distance in the ecliptic, traveled by the Earth in its unidirectional motion and the time measurements developed in our Nation Thus the time, space and direction concept (Dik Desa Kala Vardhamana) of the most modern science and the concept of 360o of angles of a circle had already been revealed clearly in the Veda, in the remotest antiquity itself

VEDIC APPROACH TO THE CONCEPT OF TIME

Dr Suresh D Heroor

Prof & Head Dept of Sanskrit

N V Degree College Gulbarga

Today the study and research in the field of the Vedic literature is essential not only for a complete understanding of Indian Intellectual heritage but also from the view point of modern science and technology Many Vedic verses establish scientific context directly and thus signify the relevance of the research in the Vedic sciences As the source of all the branches of knowledge the Q Vedas naturally speak of 'time' also When we experience that one thing follows or succeeds another either in the same or another space, we get our sense of time, our ideas of now earlier, later present past or future The scientist of the millennium Albert Einstein observed- 'The distinction between past, present and future is only an illusion, although a very tenacious illusion" has greater similarity with the concept of time of the Vedas And Professor Carl Sagan's observation that- "The similarity between our modern cosmological theory of the cyclical universe and the ancient indo concepts of Kalpa and Kalachakra is really astounding" needs no commentary The 'Vivartavada' Propounded by the illustrious Adi Shankaracharya gets corroboration from such quarters like Niles Bohr, Werner Heisenberg, Minkowski, Dr F Ottoschradur, and others, makes an interesting study The present paper takes up the various concepts and aspects of time discussed in the Vedas in the light of the modern science

VARIOUS ASPECTS OF NUMBER FIVE IN ATHARVA VEDA

Dr Prof Mrs V Balambal

M A B T Ph D F R A S (London)

University of Madras, Chennai

Numbers play important role not only in Mathematical sciences but in every one's life too All the Vedas concentrate on the significance of numbers Each single digit number has its own value and significance Though some great scholars are of the opinion that there is no history in Vedas, an in-depth study of the Vedas reveals the contribution of the Vedas to the life style of the Aryans If not much political history could be culled out, the four Vedas seem to be the original source materials for the social, economic and cultural history of the Aryans Though volumes could be written with the help of the Vedas, the present study concentrates on the various aspects of the single digit numbers, especially number FIVE as known from the verses of Atharva Veda

The five natural elements, races, regions, directions, organs, senses, breaths and passions stated in the Atharva Veda will be dealt with in detail in relation to social, political, economic, religious and spiritual aspects Apart from the hymns in Atharva Veda, published works are also used for the study

VEDIC EDUCATION AND ITS RELEVANCE

Mrs Usha Sunder, Research Scholar

Sanskrit Department

University of Madras

Education is manifestation of the perfection already in man It is not filling the mind with lot of facts Perfecting the instrument and getting complete mastery of ones mind is the ideal education The very essence of education is concentration of mind Education provides a person modesty and character Therefore the duty of the teacher is to remove all the obstructions from the way

Hence it is said that - (Vidhya Dadhaati Vinayam Vinayaad yati Paartatatam)

Such an education was prevalent in ancient India based on the Vedas The Vedas emphasis only such an education which is well amplified in the statements, Swadhyaayo Adhyaethavyathaa etc , The Vedas and following them the Upanishads, particularly the Taittriya Upanishad Chandogya Upanishad etc , present to us glimpse of the type of education that was practiced in India The present paper will focus on some of these, with some well known anecdotes, from the vedic literature

WOMAN'S EDUCATION IN RGVEDIC PERIOD

Prof Dr Shailaja Malekar

12, Sheshadri Bungalow

Gurukul Housing Society

Vidyanagar, Karad

Today we see many women working along with men in many fields, like pilots, police officers, engineers, administrators etc But how many women are properly respected by male dominated society Today we see the spread of woman's education many folds, but how many of them take higher education? How many women can work freely without sex abuse Due to compulsion, women are working to meet the needs of family If we look at _Xosn Period and the woman, one can infer that women were receiving proper education and had a respectable place in the society

THE CONCEPT OF BRAHMAN IN RGVEDA AND EARLY UPANISADS

Dr Dharmaraj Adat

Reader Sanskrit Sahitya

Skt University Kalady Kerala

Brahman is the pivotal concept in Adwaita Vedanta It is nirguna, the only one truth, the absolute eternal and the ultimate reach of speech The whole of idealistic thinking in India consider Brahman as their integral part

All most all the philosophies in India enlisted as Vedic or Astika proclaims their indebtedness to the Vedas Among the Vedas the prominent one is, of course, the Rgveda As a usual practice all the idealistic philosophers claim their fundamental concepts to the Vedas Regarding the concept of Brahman also they argue as originated in the Vedas But if we analyze the pre-history of the concept of Brahman, we can see the fact that such an interpretation and theories around it are often based on considerations extrinsic to the strictly Vedic tradition. Even though the Vedic poets, the early composers and recites of the Vedic verses used the word Brahman along with its derivatives not less than 232 times in the Rgveda itself, it is not the above mentioned ideas that provoked their minds, In order to understand their mind, the social condition in which they lived in is to be analyzed critically and objectively

The word is derived from the root brhi (brhi vrddhau, Brmhate iti brahma) to increase, with the suffix main Therefore Brahman literary means that which is increased by all the animals, which does not decrease in spite of being always eaten, which by nature increases having the virtue of nourishing the whole world, or by which all beings increase (Brahmaparivrdham bhavati sarvapranibhih yad tadannam Brhi vrddhau brmhernalopasceti manin, sarvasya jagato bharanat, Vardhante anena bhutaniti va)

The early Upanisads like Taittiriya also follows mainly the same ideas in connection with the concept of Brahman

ADORNMENT OF WOMEN IN THE RGVEDA - A STUDY

R SURENDRANATH THANMBURAJ

Research Scholar, Department of Sanskrit,

Madurai Kamaraj University

Madurai 625021 TamilNadu

Vedas are considered as the base of ethics and morality The four Vedas give sufficient knowledge about the mankind of the time, the society, circumstances and the realm of its interaction too The life of the Rg Vedic Aryan was plain and simple and his necessaries were very few He was a modest man of moderate means with the brilliant equipment of the mind and soul Under his simple semi-stitched and loosely flowing garments there lay concealed a restless and inquisitive person possessing intelligence of much depth With the meager evidence found in the Rgveda, the nature or women's dress, ornaments, hair toilet and other physical embellishments as also, incidentally, a few items of furniture generally used by the fair sex of the Rg Vedic times has been discussed in the article

EDUCATION TO WOMEN IN THE RGVEDA - A STUDY

Mrs P Kallianikutty,

Ponnath,Thiruvilluva mala

TRISSUR, KERALA

The Vedas are the earliest literary productions preserved in any branch of the indo-European family The Vedic literature is distinguished by refinement and beauty of thought, and skill in the handling of language and meter It is mostly religious in its content and form

Among the four Vedas, the Rgveda is the earliest and most important The poets who created the great literature of the Rgveda were bards of divinities and were mostly attached to the royal courts Their learning and wealth of poetry had become the property of the family which descended from father to son The family itself had become an institution for imparting education - the family lore - where the sons and the daughters were taught in the language and literature of the times Women, were educated both in the spiritual as well as temporal subjects The spiritual side comprised of training in the religious lore and in the historical tradition and mythology And the temporal side comprised of a training in the fine arts as well as in the military science in certain special cases The article envisages the concept of education particularly women enshrined in the Rgveda

EVOLUTION OF THE CONCEPT OF GOD IN RIGVEDA SAMHITA

Swami Tattwamayananda

Sri Ramakrishan Ashrama

Vivekananda Vijnana Bhavanam

Punkunnam, Thrissur - 680002

In Rigveda we can find the gradual evolution of the concept of the Ultimate Reality - from polytheism to pantheism, henotheism and then to monotheism, from monotheism and to monism The Rigvedic concept of the Ultimate reality is both monistic and dualistic in setting In most of the hymns referring to various Gods such as Surya, Agni, Indra, Aditi, Varuna, Mitra etc We can find that the underlying divine principle is the same one Parmatman The Rig-Veda also states that all Gods and Goddesses are under the control of the plurality of gods gradually evolved further and, as the intellectual and spiritual thought progressed, pluralism grew into monotheism There are many verses extolling a single deity as the greatest and highest among the deities 'Hiranyagarbhasukta' (RV-X-121) Sometimes, it is asserted that the same One Reality is behind the fire principle, the same one Truth is behind the Sun which illumines the universe the same Usha makes everything effulgent and so on

THE CONCEPT OF "DHARMA IN VEDAS"

C M S Gurunadha Rao,

Principal,

TSR & ERR Govt Degree College,

PAMARRU, Krishna, (A P)

धारणाद् धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयति प्रजा That which supports, that which holds together the peoples of the universe, that is DHARMA (Mahabharatha Kara Parva 69 59)

For a healthy and beneficial life DHARMA is needed Our Sanatana Dharama is based on "The Sruti" consisting of four Vedas Veda is perfect knowledge It was revealed by Brahma, heard by risis and inherited by all of us

Dharma propounded by VEDAS was characterized in ITIHASAS and KAVYAS Rama in TRETA YUGA was considered to be incarnation of Dhrama VIDURA in "Mahabharatha" was nice interpreter of "Dharmic Values" Thus in ancient Indian culture Vedas defined dharma, Brahmasutras stood for dharma, Kavyas (Classic) were written to emulate the values of dharma When dharma is protected we get protected

THE GOOD SHALL DISSIPATE THE EVIL

Brigadier Chitranjan Sawant, VSM

UPNAN 609 NOIDA-201303, INDIA

Tapasya or penance along with prayer strengthens the will power The will power is a powerful weapon to solve both the mundane and the spiritual problems It is also a weapon of war, be it of words, clash of interests, a terrorist onslaught or a world war The will to achieve the aim gives one an invisible but invincible weapon as powerful as Vajra

The Vedic concept of war also placed great reliance on fighting man's morale As is the general so will the foot soldier be Indeed the high morale of the general and his jawans is a war-winning factor The symbolic story of India's Vajra made of a rishi's bones highlights a total war where saints and soldiers are equal participants in a mission to make the good prevail over the evil The killing of the demon king is a metaphorical story for the common folk And it helps muster men and women for the cause of the good against the evil

Swami Dayanand Saraswati, a 19th century seer and commentator of the Holy Vedas writes in his book "Satyarth Prakash" defense of a country is to be attended to daily The deception plans of the enemy and his stratagem codes must be broken, Stalk the enemy like a tiger Attack him from a position of strength like a lion In the Vedic philosophy of war the enemy is not to be given a kid glove treatment A pre-emptive strike against the evil forces will be the best form of defense of the forces of good

NUPTIALS IN THE RGVEDA - A STUDY

M Phil

Department of Sanskrit

Madurai - 625021 TamilNadu

The great sage Krsna Dvaipayana also known as Vyasa arranged the Vedas into four books called the Rgveda, Yajurveda, Samaveda, and the Atharva Veda The Rgveda deals with the higher Gods envisaged by hymns of praises of various Gods The oldest document of the religious literature of

the Indo - Aryans is the Rgveda There are few specific hymns that are particularly concerned with popular rites and ceremonies The wedding, the funeral and the conception are narrated in them

The vivaha is the most important of all the vedic Samskaras They presuppose that every man, in his normal conditions, is expected to marry and run a home Even before them, in the Vedic period, to which only a few of the Samskaras can be traced back in their ceremonial form, the marriage ceremonies were developed and they have found literary expression in the Rgveda and the Atharva Veda Marriage has been a flourishing institution in the Rg Vedic society that is why several features of marriage are found in the Rgveda The evidence is mostly of an inconclusive nature and the material absolutely scarce My aim has been in this paper to cull out the tenets of marriage ceremonies enshrined in the Rgveda

CONCEPT OF MOTHER IN THE RG VEDA - A STUDY

SRIVIDHYA,

Department of Sanskrit,

Madurai Kamaraj University

Madurai - 625021 TamilNadu

The Vedas are the fountainhead from which all knowledge flows and on which Vidism is based and it comprise the oldest known religious literature of India They consist of collection of hymns and ceremonial formulas Among the four Vedas, the Rgveda is the oldest and the most important samhita Some of the hymns have been interpreted as secular and the poetry has great literary merit Matr is the term by which 'mother' is expressed in the Rgveda The mother out lived the wife because the wife reached the climax of her power and importance when she became a mother The importance of the mother grew in proportion to the number of children she bore The concept of mother hood has been analyzed and studied with sublime reverence in the philosophical traditions and the Rgveda is no exception The concept is studied in the present paper

ENTERTAINMENTS IN THE RG VEDA - A STUDY

S JAYABHARATHI

Department of Sanskrit

Madurai Kamaraj University

Madurai - 625021 TamilNadu

Vedic literature is the most celebrated treasure of our past that is prevalent even today This splendid branch of knowledge has been handed down from time immemorial by verbal transmission So they are called Sruti The famous literal meanings of the word 'Sruti' are sacred knowledge orally transmitted by the Brahmans from generation to generation, sacred eternal sounds or words uttered by Risis, mantra portions of the Vedas etc The Rgveda is composed of songs of praise and it is the very foundation of all Vedic literature which is the most ancient literary document and the oldest poetry extant in the world

The Veda is a treatise to philosophy and theology which reflects a good deal of popular life An indispensable part of life, particularly of folk life, consists in entertainments and amusement The Vedic people, like the people of any other age, would not be satisfied merely with the daily chores

prayers and sacrifices They needed recreation and devised amusements of various kinds From R V VII 87 5 it seems that people used swings either for their own recreation of for the pleasure of their children Effort is being taken in this paper to find out the concept of amusements and entertainments envisaged in the Rgveda

THE CONCEPT OF RELEASE IN THE VEDIC SCHOOLS SAMKHYA AND YOGA

T S KUMARAN, Research Scholar

Department Of Sanskrit,

Madurai Kamaraj University Madurai-625021India

The ultimate aim of all Vedic schools is release however, they vary in their internal rudiments in the concept of release The first Vedic school Samkhya forms the philosophical background to the yoga system which affirms the essential and preliminary preparations to the approach of release put into the condensed forms called sutras The atheistic school is prime and old whose founder is kapila This system of Kapila is rationalistic in its original form This system is atheistic and theoretical whereas the yoga system is theistic and practical Chronologically, the philosophy of Samkhya as a system precedes that of yoga The existence of a 'personal god' is accepted in the yoga system whereas it is not so in the Samkhya system In the main, the two systems are very much alike However, there are some significant differences which warrant yoga, a separate system of philosophy The metaphysical position of the two is fundamentally the same, but they differ in their view of ethical, practical and philosophical concepts But Patanjali, the Author of Yoga Sutras admits a personal god as seen within the realm of prakrti and with the devotion on the personal god-Isvara one becomes fit for release The Yoga Sutras affirm Isvara as a special being teacher of even of the earliest the omniscient and whose designator is the sacred sound called 'pranava' or 'OM' The metaphysical aspects Isvara and Samadhi in the Yoga Sutras are essential for attaining release since the aspect of Isvara is helpful to cross the realm of prakrti by self-surrender and knowledge of Him as well as Samadhi is the final plane through which one can be released

THE SAMKHYA TRAITS IN THE RGVEDA - A STUDY

Er P K SASIDHARAN NAIR

Professor and Head, Department of Sanskrit,

Madurai Kamaraj University, Madurai - 625021 TamilNadu

The Rgveda underlines the path of knowledge of the wisdom The whole of the Vedic literature comprising Samhita, Brahmana, Aranyakas and Upanisads has emanated from the Supreme Being It is believed that these books are revealed and versioned In the Rgveda, the collection of mantras, are called Riks is obviously the oldest and it is the first and foremost of the Veda and others Vedas are more of less extension and enlargements of some portions of the Rgveda The Rgveda is entirely in verses and a major portion of it is for use in sacrifice

The notion of the Purusa as sacrifice and sacrifices remains one of yet another series of speculation which may have had some influence in the formulation of Samkhya In Rg X 121 the "golden germ" (Hiranya-garbha) is represented both as the creator and as a product of creation There are instances where the concept of Purusa is described in Rgveda In the article effort is being taken to

study how far the concept of Purusa is influenced in the Samkhya of Kapila which is generally held as a school which does not accept the necessity of a God for explaining the evolutionary process

POSITION OF MIMAMSA IN THE VEDIC PERIOD

Dr Shriped Bhat

Reader Deptt of Sanskrit & Asian Studies

Tilak Maharashtra Vidyapeeth

The beginnings of Mimamsa school of Indian Philosophy may be traced to the Veda itself, where it is used to denote doubt and discussion regarding the rules of ritual and doctrine The entire Veda, excluding Upanishads is said to deal with dharma or acts of duty, of which the chief are sacrifices The main purpose of Mimamsa philosophy was a methodological interpretation of dharma of duty embodied in the ritualistic portion of the Veda A large number of the portion of the Yajurveda contains formulas regarding the performance of sacrifices It seems the doctrines of the Purvamimamsa were well developed centuries before the Christ Era and that there were some attempts have been made to form the rules of Vedic texts, finally they were codified under the name of Jaimini, the author of the Purvamimasasutras

Hence an attempt has been made here to know the position of Mimamsa before the period

THE CONTRIBUTION OF THE VEDAS IN ADVAITA PHILOSOPHY

Prof Dr P G Shukla Bhartiya

Vidya Bhavan, Mumbai-400007

1- The Seeds of Advaita Vedanta in the vedas, The Rgveda, The Yajurveda, Samaveda and Atharvaveda, They are developed and advanced in the Upanishads

2- Angas and Upangas has to study in details The Advaita Vedanta shastra Mimamsa shastra is divided in purva-mimansa and uttara Mimamsa purva-mimansa deals with Rituals and Uttar Mimamsa deals with Vedanta i is also called Darshana It deals with mainly Brahman, Jiva, Jagat, maya, Avidya, Ajnana and moksha, preached through stories

3- Aim of Upanishads-

Mainly there are 12 Upanishads They help us to realize Brahman 30 Jiva tries to study Brahma vidya Then Jiva realizes Brahmam and it becomes one with Brahmam which is called moksha it is the goal of life Then soul is esceimpted from life of Birth and death

4 Adi Shankaracharya established the Advaita Vedanta (Monism) Thus A Vedanta developed by other great acharyas Thus A Vedanta developed by other great Acharyas, Thus - Indian Philosophy became great in the world

THE CONCEPTION OF ETHICS IN VEDAS

DR K RAJAGOPALAN

Lecturer Rashtriya Sanskrit Vedyapeeth

The Vedas constitute the back-bone of the entire cultural development of the whole world

The Vedas are considered to be the word of God by Hindus The Vedas contain the highest wisdom and have been revered as the most sacred texts in India These are the oldest, apourusheya, nitya and beneficial to mankind Many eminent sanskrit authors and profound thinkers of India regard vedas as eternal infallible and therefore, the final authority, in all matters

Vedas have remained a guide book of Humanity, since the inception of creation In Vedic teachings, sublime thoughts suggesting purity of ideas, truthfulness of speech and nobility of action are embodied The Veda proclaims the sublime message of pure humanism The Vedas prescribed an ethical code of conduct for internal strength and spiritual development The Vedic God is omni-potent, omnipresent and all-knowing The Vedas have declared man as the Amrita-putra The Vedic culture stresses upon high ethical conduct It condemns all evil-doings and says that evil-doers cannot cross the path of the Rta The Upanishads also gave a clarion call to all humans to awake, be cautious and keep the company of the learned to acquire this knowledge of the self

The highest level of consciousness of human values is called purushartha chatushtaya The Veda declares that "The human body is an instrument to attain salvation The physical temperance is a sacrifice and if the butddhi is purified through the discipline of the man then it sublimates the self to divinity In traditional educational system also having taught his pupil, the Vedas in a proper manner, the guru addresses him- satyam veda, dharmam chara, swadhtatanmaa pramadah, satyaanna pramaditavyam etc These are embodiment of ethical conceptions discussed in Vedas An attempt is made to highlight the ethics like speaking of truth, equality and collectivity, friendship with living beings atithi bhaavana dharmaacharana, importance of purushartha chatushtaya, world peace living for the welfare of the society prayer for being pious abandonment of jealousies pious life etc

SPIRITUALITY IN THE VEDAS

R Rangan M B A

Vivekanand Yoga Anusandhan

Prashavti Kutiram

Bangelore Karnatak

Though all traditions of sanatana Dharma in general have a great respect in the Vedas Even without studying the subject matter of the Vedas, many of the believers consider that the major portions of the Vedas deal only with the rituals that can achieve some materialistic benefits and they have nothing to do with spirituality

On the other hand, the non believers consider the Vedas as primitive work of art that presoribe superstitious rituals which have no relevance with modern days But it should be examined weather these two points of views are true or not, weather the major portions of the Vedas have any spiritual basis

The fact is that the Vedas have a spiritual basis The Vedas are not mere prescriptions of rituals, but the texts that are endowed with high spiritual secrets that remain as the foundations of the human culture The terms like Indra, Varuna, Agni, vayu and Soma are not mere namesake demigods who are only meant for offering some materialistic pleasures as boons as we see in Puranas, but are the higher spiritual forces that can help in our inner growth

COMPLEMENTARITY OF THE TWO SPACES IN THE NASADIYA HYMN

S C Goswami

67, Vaishali, Pitampura, Delhi-110088

The Nasadiya Sukta presents one of the most advanced theories which seek to explain the origin of the visible universe In these seven hymns lie the modern scientific concept of the three-dimensional space in which we live in this physical world, and the abstract mathematical space which evades human comprehension For these two spaces the Vedic seer uses the terms vyoma and parama vyoma in the Nasadiya Sukta of the Rgveda, the former for the physical space and the lattes the the abstract mathematical space It is this abstract space which is the abode of the adhyaksa (Governor) or the One that has no plural, the observable plurality of the phenomenal world is only a functional necessity The One appears as Many because we human observers are many Of that One it is we who have developed many concepts, all these concepts are complementary concepts of that One We picture that One differently, all these experiences and descriptions are complementary In short, all the features, aspects, in formations, evidences and phenomena of that Governor represent the complementarily of One and Many, the One is in the abstract mathematical space and the many in the three-dimensional physical space

ORIGIN OF THE UNIVERSE AND NASADIYA SUKTA OF RIGVEDA

Reader, Department of Physics

D B S (P G) College, Dehradun

The Vedic knowledge of origin of the Universe is in a very condensed form Such an aphorism, code or hidden meaning of Vedic hymns expresses the essence of knowledge in a minimum number of words Before presenting the Vedic cosmology, we shall briefly review some of the key issues in modern scientific theories of cosmology In order to understand origin of universe scientists devise theories or models called cosmological models which gives descriptions of the universe that can be checked against observation Most of the theories are based on general theory of relativity, quantum mechanics and gravitational law of attraction There are basically two types of cosmological models (1) Hot Big Ban Model(2) Steady State Model, The third one is Quasi Steady State Cosmology (QSSC) model which is modified form of steady state model Jayant Vishnu Narlikar and his colleagues Fred Hoyle, Geoffrey Burbidge proposed this theory in 1993

The Vedic seers had an intellectual urge to know how the Universe came into existence How did the process start? What was the first principle or TATTVA that put the creative process into action In fact there are several Sukta in Rigveda which provide us knowledge of force of gravitation birth of star and origin of the universe Among the various Suktas of Rigveda Nasadiya Sukta has been most popular among scholars Nasadiya Sukta makes its own contribution to our understanding of the origin of the Universe

OUR COSMIC UNIVERSE (MAHAVISWA-) AS KNOWN THROUGH VEDAS AND MODERN SCIENCE

V K Malavya Sarma M Sc (Appl Phy),

Marketing Consultant (Retd)

Visakhapatnam-530017

Any subject can be studied and interpreted in three aspects, namely Philosophic, Meta Physical, and Physical Vedic knowledge is unique in the sense it gives all the three aspects with deeper and complete knowledge on the subject Scientific knowledge on the other hand deals mainly with Physical aspect, that too on a subject, which can be seen and (or) observed It will be very interesting therefore to study the concepts of Cosmic Universe as known to our Maharshis through their Vedic revelations and the modern scientists through their theories and research

Here the author has attempted to bring out the similarities or otherwise on the following six concepts of cosmic universe as known through Vedas and Modern Science 1 Origin of the Universe, 2 Macro composition of the Universe, 3 Age of the Universe, 4 Composition of Universal Matter, 5 Atomic composition of the Universe and 6 Consciousness as the Universal force These six concepts reveal the Macro cosmic, Micro cosmic and the dynamic nature of the Universe

GOD & COSMOS

Dr R V Subrahmanyam

Reader in Physics & Regional Co-ordinator

Dr B R A O U RCC, C S R Sarma College

Ongole-523001 Andhra Pradesh

Life is unreal and transitory Attachment is damnation and disassociation is salvation As man advances in age, his lust abates Gunas of God rekindle the spark of intelligence or Divinity in human beings God (Purusha) only exists The cosmos has no real existence Mukti or salvation is the dissolution of the three bodies The creation is the 'deception played by self, upon the self, in the self' The conception of God affirms the fact that it leaves no room for creation and if anybody believes in creation, it can not but be self deception

Death is painful to a worldly man A desire less man never weeps when he dies A full-blown Jnani never dies His prana never departs Conquer the fear of death Conquest of fear of death, conquest of death is the highest utility of all spiritual sadhana

CONTRIBUTION OF THE UPANISHADS TO PHILOSOPHY THE VEDAS

Mrs Sneh Parija

A1/1 palasapalli, Bhutanshuar Orisa-751020

The Vedas are acknowledged to be the most ancient source of knowledge available now In fact, it is the earliest source of different sources of knowledge The contribution of the Vedas in different disciplines of knowledge such as physics, chemistry, mathematics, geology, languages, literature, fine arts, performing arts, astronomy, spiritualism, religions, philosophy, and cultural tradition is stupendous One life-time is not long enough to do adequate research in any one of these disciplines Still scholars and researchers will continue their work in their favorite field which they are passionate about, and present their findings, interpretation, application to the world My area of research will be contribution of the Vedas in the field of philosophy, specifically the contribution of the Vedanta/Upanishads to the discipline of philosophy

The etymological meaning of the word 'philosophy' is 'love for the truth' It signifies a natural

and a necessary urge in human beings to know themselves, and the world in which they live and move about and if there is a principle that governs this world in which we see an order It is impossible for man to live without philosophy In fact philosophy is too important a subject to be left to the philosophers ,

The Vedas are the oldest literary monument of the Aryan mind The origin of Indian philosophy is indeed the Vedas Vedic Philosophy, is an autonomous system, has remained practically unaffected by external influences

A CURSORY EXAMINATION OF THE TRADITION OF SCIENTIFIC ENQUIRY IN THE UPANISHADS

M Jayaraman

Acharya, Veda Vijyana Gurukulam

Channenahalli, Bangalore, Karnataka

The Upanishads simply extol the attitude of questioning The sages and the seers of the Upanishads were very well aware of the fact that the Truth can be brought out only by a questioning mind earnest enough The Upanishads on various occasions, praise the questioner for his fearlessness and satya-nishtaa (commitment to Truth) A few instances have been gleaned form the Upanishads to substantiate this point

1 The famous Yama - Nachiketas dialogue in the Kathopanishad

2 In the Chandogya Upanishad, dialogue between a father and son (Uddalaka and Shvetaketu)

3 There are two instances in the Prashnopanishad that clearly show how care was taken to nurture an atmosphere conducive to questioning

4 There is yet another instance in Prashnopanishad (the sixth question of Sukesha) that highlights the vital role of intellectual honesty in rendering the question - and - answer process effective in achieving its purpose Today, it is often noticed that quite a few scarcely care to understand this healthy tradition

This paper, an attempt at an honest portrayal of our tradition, goes to emphasize the need for an impartial perception of the ancient wisdom of the Rishis in their totality

SOME PSYCHOLOGICAL SUKTAS OF THE VEDAS: A PROFILE

Dr Radhamadhab Dash

Reader & former Head

P G Dept of Sanskrit, Utkal

University Bhubaneswar

Western Psychology is defined as the study of behavior, experience and mind Mind and consciousness have become focal points of research during the last decades of the 20th century While Russian Psychology has much to offer on the subjects of will and its powers, other western psychologists still lack clear conception of mind, consciousness and will However, in Psychotherapy and Educational Psychology, the importance of will power (Sankalpa), faith (Sraddha), devotion (Bhakti) meditation (Dhyana) and auto- suggestions for maintaining health and curing diseases have

been recognized as primary methods of overcoming stress and conflict Recent neuropsychological researches have shown that a positive mind-set does produce typical brain functioning, which has curative effect Positive expectations produce positive effects However, the empirical scientific methods of psychology have proved to be inadequate to substantiate these facts Therefore, recent researchers have often relied on intuitive knowledge and experiential wisdom The modern coinages such as 'Experiencing', 'Self-fulfilling Prophecy' 'Expectancy', 'faith-healing' and so on are the remedial techniques very lately recognized by modern Psychology But, they had been the age- old practices of India dating back as early as the Vedas Several mantras in all the four Vedas can be very well interpreted in the light of these coinages Illustratively three suktas have been taken up here for such an analysis The Paper attempts to give a conceptual analysis of the typical ethos of Indian Psychology its difference from modern psychology, the relevant coinages referred to followed by the Vedic genesis of the above three suktas in term of these coinages

SOME FOCUSED HIGHLIGHTS ON THE VEDIC STRATEGY OF PSYCHOTHERAPY

Dr Samarandra Saraf

Retd Prof of Anthropology

Notwithstanding the arrogance-cum-ignorance of a section of the European Ideologists of yesteryears who propagated the view that the ancient most cultural heritage of the world is not a whit better than "the songs of the shepherds" (for it marked their familiar cognitive category because of its being analogous to the revelation received by Moses), the Vedas and the scriptural lore relating thereto have often, rather generally, been treated as the repository of theology here and philosophy there The proposed talk takes up the position that these scriptural sources as a rich legacy of antiquity can as they must, also be treated as the highest and the noblest fruition of the human intellect in so far as they stand out prominently as the earliest treatises on applied psychology albeit loosely structured and little organized

An attempt is sought to be made to highlight how the Vedic seers and sages had viewed psychotherapy (without, however, so naming it) at such remote point of time as several centuries before Christ, how they had employed such psychological measures and strategies into their prestigious psychotherapeutic inventory as get reflected in the systems of Indian philosophy generally and in the indigenous system of health care and cure specifically For, of all the therapeutic systems of the world, it is only Ayurveda that stands as the lone repertoire which is holistic, systemic, organic and eco-logic in its overall perspective and orientation in so far as its definition and modus operandi are concerned --- ' svasthasya svasthya raksanam aturasya vikaraprasamanam ca taking care of health of the healthy (hygieia) and cure of the sufferers (panakela) being their professed claim and their mundane goal

ARANYAKAS: PHILOSOFIXATION OF THE RITUAL

Mrs Bhagyalata A Pataskar

Director-Vedic Sanshoodhan

Mandal Pune

This paper aims at stressing the process of the philosophization of the rituals in

the Aranyakas

1 In the Brahmana text we find the peak of the sacrificial culture

2 The world of the Upanisads is totally different, which talks of Atman, Brahman origin and dissolution of the Universe All these are the intellectual activities hardly having anything to do with the rituals

3 The Aranyakas used the terms of the Brahmana texts but the meaning allotted to them is totally different The Taittiriya Aranyaka (10 64) identifies the

sacrificial terms such as यजमान इध्म वेदि बर्हि शिखा यूप आज्य पशु अग्नि दक्षिणा होतृ उद्गातृ अध्वर्यु ब्रह्मा दिक्, अग्नीत्, आत्मा अध्वा शरीर उरस्, लोम वेद हृदय काम मन्यु, तप दशमयित्र दम वाक्, प्राण चक्षु मन दिक्, श्रोत्र तमेचमबजपअमसलण

The entire process of sacrifice is inwards Through equating atma to yajamana sraddha to patni etc the Aranyakas are supplying guideline for the meditation and are not prescribing or propagating any ritual

The Sankhayana Aranyaka presents an Adhyatmika Agnihotra (10 1) आध्यात्मिकमग्नि होत्रमाचक्षते। This is followed by the description of different sacrificial deities residing in different parts of the body What he drinks eats and makes others eat and drink is in fact offering an oblation to these deities and satisfying them

4 By philosophisation of the ritual I mean the ritual or the ritualistic details are symbolized through the method of equation Once they become symbols the objects for what they stand become important which always forms the subject matter of the philosophy

5 It goes without saying that it cannot be running away from or feeding up of the ritual but the deep association with and the contemplation to the ritual gradually and also naturally turned into developing the philosophy out of it A dedicated artist can only reach the level of philosophy of art

THE CONCEPT OF YAJNA IN VEDAS

Dr Brahma Muni (Dr S B Kale) & Dr Sau V S Kale

Ishkripa Vidyanagar Parli vaijanath 431515

Dist Beed M S Indian

Vedas are the oldest in the world and given by the supreme for the benefit of the man Vedas contain all true and shaswat knowledge in seed from For the welfare of the soul vedas have given guidelines updesh adesh in relation to all lines of life Vedic culture & civilization gives much more importance to the Yajna Hence many a times vedic civilization Western people could not understand properly the Yajna hence they also condensed Yajna Modern Science also could not understand it properly

Maharshi Dayanand was the first in the modern world to show the real concept of Yajna In Vedas and its and Karma & Karmkand The concept of Yajna is very vast As vast as the universe & the supreme energy God According to Veda Yajna is not only the agnihotra and agnihotra is hinsarahit karma

अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभि । अथर्व 9 15 14

God is the first Yajnic and doing Yajna in the universe nature Every work of creation development maintenance purification reproduction etc are with cosmic Yajna

अग्निमीडे पुरोहित यत्रस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ऋ01 1 1

According to Dayanand interpretation of Vedas Yajna means any works beneficial to all himself is Yajna Yajna including Sangtikarm, Devpuja & Dan efforts to realize the self & God efforts to obtain

YAJNA AND ENVIRONMENT

Prof Gira T Ataliwala

H O D , Sanskrit Deptt

C U Shah Arts College,

Lal Darwaja, Ahmedabad 380001 Gujrat

'अय यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभि' (यजुर्वेद 23/62) Declaring this & thus its importance has been established During pregnancy and even after the birth, human body is absolutely dependent on naval Similarly whatever is thrown in the Yajna (Pious fire), it burns & creates highest energy which is either beneficial or harmful Material thrown in the fire has certain good qualities which transform into profound energy which is beneficial for the world So, fragrant sweet, nourishing & destroyer of diseases-such materials are used The fire created by using such materials in Yajna has a special quality which destroys the foul smell & kills the germs

Today when the whole world is deeply concerned about the polluted environment, it is absolutely essential that fire, water, earth, air & sky remain pure and unpolluted It has been clearly mentioned in यजुर्वेद that purification of air & water is possible through the use of above material in Yajna This result into pious rain This rain purifies farming and plantation, which are used by animals as well as human-beings Consequently everybody becomes pure physically & mentally

CONCEPT OF YAJNA AND ITS IMPACT

Dr Goda Venkateswara Sastry

Director

Viswamitra Maharishi Vedic Research Centre, Madipadu, Chennai

The word yajna has a great significance in the Vedic tradition Originally yajna had only ritualistic significance This had obtained wider connotations later It is derived from the root 'Yaj' by adding the suffix 'Nang' Various meanings are given to this word such as worship, prayer, offering, oblation and sacrifice

yajna is rich in symbolic associations By yajna Gods were able to bring forth all things and beings in the world Human beings used this ritual for securing wealth and welfare yajna is not just a rite but also an attitude, a device, a resolve and an act One who is engaged in the yajna transforms his physical body into a vehicle of divinity Dakshina or parting away the wealth and Bhojana -giving food to other are the two important limbs of a yajna It is only by sacrifice that one ascends in his life and gets liberated When one is willing to part away the accumulated objects he gets the spirit of sacrifice making him pure and fit for perfection Sacrifice is a must in all fields to come up Unless one is ready to sacrifice something in the present he cannot obtain higher things in life This is one of the all time effects of concepts of yajna

CONCEPT OF YAJNA AND ITS IMPACT

Chandrakantha Kamath M

J R F Department of Sanskrit

Guru Nanak Dev University, Amritsar Punjab

The incorporation of two meanings in each mantra of Veda was by no means deliberate or calculated, but perfectly natural in the context of spiritual experience and its communication The external sense is only sign, a symbol (Sanketa), and is intended to discern the real but internal import This holds good also for rituals The external rituals are only symbolic of the internal transformations that must take place Yajna is of utmost importance in the Veda Its meaning as given by the commentators is quite different from that given by rishi Madhuchhandas and other Vedic Seers The Sacrifice, Yajna, the central fact of Vedic worship was arranged as a symbol of the great act of once own offering of what one has and is to the gods, the higher powers of universal nature both within and without as-within as the psychological and spiritual, without as the forces of physical nature It is a fundamental mistake to regard Yajna merely as a ritual or rite Veda describes Yajna as journey, as climbing a hill, as battle and also as worship or rite 'Yaj' is to strive and 'Jna' meaning divine knowledge, which means striving for knowledge Summing up Yajna is a collaborative activity between human and Deva's (psychological powers within)

THE YAJNA PROCESS AND RUDRABHISHEK A POSSIBLE RELATION

Smt Kunda Kane

Ex Scientist at Barl and currently Researcher

in Vedanta and Yajna Process

Associated with Bihar School of Yoga Munger

In the Vedic Society Yajna was the principal means of upasana Upasana means the efforts put in by individuals at physical, mental and spiritual levels for the development of the self in harmony with other members of the society as also other animate objects around it In fact, yajna was the way of life of the then society It was a fulcrum sort of which balanced the acts of the individuals These acts could be religious, individualistic or social Yajna process used to invoke cosmic powers personified as Devatas to achieve peace, prosperity and wholesome development of mind In the Dravya Yajna where oblations to Devatas were made through sacrificial fire Agni Devata had a unique position Such yajna processes were Agni centric All of us know that Rig Veda Samhita begins with the word Agni It is an important vedic devata Rig Veda contains more than 250 Suktas for Agni Devata alone In a way, it is indicative of the importance of Agni Devata Another important devata found in Rig Veda is Rudra Suktas are devoted in praise of Rudra also Interestingly, these suktas are made use of (viniyog) mainly in the yajna processes In the post Pauranik time Shiva Abhishek got acknowledged and accepted to worship Lord Shiva The main objective in this form of upasana is also more or less the same as that of the yajna Is this a mere coincidence or it is indicative of any relationship between the two devata? Further, could there also be an equivalence (or such other relation) between the two processes followed to worship them?

VEDIC TECHNOLOGY OF RAIN

Vedmurti Ketan Kale

Dr T Venugopal,

Prof Vidyadhar Vaidya

Mrugendra Vinod

Rains, are undoubtedly the most significant factor for life, with the greatest role for what various schools of thought describe as inherent fickle of nature, chance, randomness luck, and Divinity

The Vedic tradition through a simple phrase 'Deva Varsheshti' resolves the phenomenon of rain as an act of Infinite Wisdom for the Just maintenance of numerous organisms including humanity thus, arises the scope of malfunction due to corrupt actions and remedy through prescribed procedures The procedures are tangible and so are the results But the subtle mechanism of cause effect chain initiated by these is arbitrated by 'Pratyak Chetanaha' which is essentially beyond material modes of testimony Thus the scope of enquiry is naturally focused on the study of procedure including the materials and expected effects over environment In this study, we are performing Rain Induction Yajna in two formats One we call

For intensive further study we have formulated a Six Year Plan for experiments This Project Parjanya will help us gather sufficient data to evaluate the figures of merit for this kind of Rain Induction Technique Similar techniques for various other interests may also be studied to reestablish the Vedic Technology of Yajna for material benefits

SCIENCE OF NADIS IN THE UPANISADS

Dr Indu lata Das

Joint Project Coordinator

National Sanskrit Project NCERT

Nadis are channels along which motor and sensory impulses travel in the form of air and perform different physical and mental functions There are seventy two thousand Nadis in a human body Out of these, one hundred and one are very important, of which three are most important ones These are Ida, Pingala and Susumna Susumna Nadi is the most important Nadi in the body of a human being Man attains liberation when the Kundalini moves through the Susumna and reaches the Sahasrara Chakra

Like many important sciences, the science of Nadis is one of the most important and most beneficial sciences, which the Vedas have gifted to the world, The Upanisads are the first literature in the world to record the discovery of the Nadis, their functions and their latent potential to transform a sorrowful mundane human being to a bondage free blissful liberated soul

MEDICINAL PLANTS IN THE SERVICE OF "SANATANA DHARMA"

Smt C V L KARUNA

Lecturer in Botany

MARIS STELLA COLLEGE

VIJAYAWADA, Krishna AP

Vedic culture is scientific in its approach From times immemorial Indians worshipped trees and they protected the lives of humans We believe in rebirth, karma and omnipresent ALMIGHTY Thus our ancestors built this culture based on YAGNA, DANA & TAPAS

For fulfillment of above duties we seek the help of plants Many plants are used in YAGNA and they in turn create the cloud, which ultimately rain helping the soil in raising plants This is a cycle and is an essential one Besides a number of medicinal plants help the doctor in curing numerous ailments

Large number of plants and their medicinal properties are extensively studied in the branch of science called PHARMACOGNOSY and the plant medicines are dealt with in PHARMACOLOGY Ancient knowledge reflected in AYURVEDA helps to cure the ailments, sustain and increase the longevity of human beings

NEEM- A MIRACLE PLANT OF ANCIENT INDIA

Dr R C Dubey

Reader, Department of Botany & Microbiology

Gurukula Kangri University

Haridwar - 249404

Undoubtedly, Neem (Azadirachta indica) has been traditionally used in India in multifarious ways since time immemorial Besides, it is worshipped in many states, its different parts were applied in several ways such as for wound healing, as insect repellent, therapeutic drugs, disinfectants (boiled leaves), in industries for preparation of Neem-based products, botanical pesticides in plant disease control, increasing soil fertility agro-products, etc

Recently, several experiments have been conducted to assess the furgitoxic properties of volatile constituents emanating from different parts of Neem such as bark, leaves, seed cake and oil The volatile constituents of Neem oil highly inhibited the growth of the soil-borne fungal pathogens However, this effect was more pronounced when these were applied in agriculture field and covered with a transparent polythene sheet after proper irrigation during summer (mid May-June)

ANTIBACTERIAL ACTIVITY OF APAMARGA

Navneet, Prabhat and Shri Krishan*

Department of Botany & Microbiology

*Department of chemistry

Gurulula Kangri University, Haridwar

Apamarga (Achyranthes aspera Linn) was extracted with different extract ants i e Petroleum ether, acetone, water and methanol The extracts were tested for their antibacterial activity against Staphylococcus aurous, Streptococcus mutant, S Sanguis, S Salivarius, Lactobacillus acidophillus E coli and Bacillus subtitles by using agar will diffusion method The results indicated that the plant showed strong and broad spectrum activity as compared to amphicilline Aqueous and methanolic

extracts showed greater activity The results indicated that the whole plant extracts are effective against streptococcus mutans, the causative agent of dental plaque

ETHNO-MEDICINAL IMPORTANCE OF THE ATHARVAVEDIC FLORA

Prof R.K.Sahni

5- KA-11, Jawahar Nagar

Jaipur 302004

Since time immemorial, nature's own supreme creation man has complexity been dependent on the plants and has made use of every bit of the plants to fulfill his ever increasing needs of life Primitive man tried to cure diseases by using plants growing abundantly around him Reports confirm that the Greeks and Romans were familiar with medicinal plants e g Hippocrates, 460-370 BC, Aristotle, 384-322 BC, Theophrastus 370-278 BC, According to Trivedi and Nehra (2004), Indian traditional system of medicine prescribing plant extracts in therapy dates back to early age of the Rgveda (4500-1600 BC), But all sages, thinkers and philosophers from Brahma down to Jaimini opine that the Vedas are as old as the advent of Man and they were revealed by the omniscient

Undoubtedly we have a vast, promising and yet unexplored repository of Medicinal plants in the Vedas, Therefore, the ardent scholars who are well versed equally in Sanskrit and in Botany should contribute their mite to enrich and make the lid off of the hidden treasure of the Vedas It is the endeavor of the author to initiate in-depth the studies in this direction

A SYMBOLIC FORM OF NEWTON'S LAW IN VEDIC SUKTAS

Paramba Shree Yogamaya

Research Student, Dept of Sanskrit

Utkal University, Vani Vihar

Bhubaneswar-751004 (Orissa)

"Science in the Vedas" though merely seems to be contradictory to each other since the modern intellectual quest is there to examine No purposeful study can able to discard the call or challenge of time But we should not be moved by it

In this context the question arises 'can we find the exact modern scientific theories in the Vedas' ? The answer is definitely 'no' Because the aim and vision of modern science are completely different form those of vedic seers Though the root of science is in the vedas since self-enlightenment is the ultimate aim there In the vast periphery of knowledge the roots of modern scientific theories are found in a symbolic form and they have a special nomenclature also So, for untying the unrevealed secret perfect interpretation is necessary Again the question peeps in our mind 'are the vedic hymns relevant in this ultra modern age of science and

Society- The development of the society is the aim of both the seers and scientists Among the various interpretations of the vedas the scientific interpretation of Maharshi Dayananda is one and important to note Giving respect to all types of interpretation the modern scientific one is taken here as the base for presentation

In the query to modern scientific theories two vedic hymns are taken here for discussion There is a search for the famous Newton's theories in these vedic hymns-Rg I 35 2 & Rg X 27 16 The

symbolic form needs a new-mode of interpretation This paper aims to promote a substantial advancement in the field of research for presenting something new to the world

MICROBIOLOGY IN VEDAS AND LATER SANSKRIT LITERATURES

Dr Chakradhar Frend

Research Scholar

M Sc (Microbiology), PhD (Vedic Microbiology)

MAHARISHI ACADEMY OF VEDIC SCIENCES,

3/B, HIGHLAND PARK, BEHIND POLYTECHNIC,

AHMEDABAD

Vedas means absolute consciousnesses Risis who had experienced this absolute consciousness by dint of yogic power composed the four Vedas It took hundreds of years to record their experience Vedas thus is source of knowledge of para and apara vidhya Sciences are allied subjects of Vedas Among other sciences, we get glimpses of microbiological knowledge in it Pondering on following data, one can readily understand the contribution of Vedas to the world

Vedic Microbiological suktas and their risis Kankotan sukta (Rigveda1/91) by Rishi Agastya, Krimijambhanam Sukta (Atharvaveda 2/31), Kriminashnam Sukta (Av 2/32) and Krimignam Sukta (Av 5/23) by Rishi Kanva and his descendents, Rakshogngham Sukta (Av 5/29) by Rishi Chatan, Kriminashnam Sukta (Av 4/37) by Rishi Badrayani

This paper intends to present the microbiological scenario in Vedic period In modern era many foreigners have contributed in modern sciences by doing translations of Vedas and Ayurvedas during the period of 1800 to 1900 importantly The case with microbiology is not different Main purpose of the paper is to glorify the role played by the Bharitya rishis and other intellectual giants in establishing this science of 'invisible organisms' thousands of years ago

SCIENCE AND TECHNOLOGY IN THE VEDAS AND ANCIENT INDIAN SCRIPTURES

P P SUDARSAN, Research Scholar,

Department of Sanskrit,

Madurai Kamaraj Unversity

Madurai 625021 , TamilNadu

The glorious past of India convinces that it must have earned an esteemed, elevated position in the world, in culture and civilization with its rich knowledge of science and development of literature is the oldest known to mankind From studies it is evident that a scientific temperament was existent in the ancient Indians They had sound and accurate knowledge not only in the fields of metaphysics and religion but applied sciences such as physics, mathematics, astronomy, chemistry biology, medicine and engineering

The bold questioning by ancient Indians gave birth to theories, axioms, principles and an

unique approach to a way of life The spiritual aspects of ancient Indian culture are more commonly known The fact that science, technology and industry were a part of this culture is little known For historical reasons the achievements of ancient Indians in various fields of science and technology are not popularly known to Indians

Therefore, it is essential in general perspective of mankind instead of inventing parallels, the proper study of ancient literature should be made so that we may meet the challenges of the new millennium It has been my aim to study the ancient scriptures based on the Vedas

EXOGENIC COSMOLOGICAL PATTERNS AND HEREDITARY TRAITS IN ASTRO-GENETICS

PROF SHRIVASTAVA BRIJENDRA

269, Jiwaji Nagar, Thati Pur

Gwalior 474011 MP

Vedas declare that the Macro-cosmic Being Sahastra-Sheersha Purusha subsists in individuals beyond comprehension of ten sensory organs-dashangulam Jyotish shastra as vedanga unfolds this secret doctrine of macro-micro relationship through Astro-Genetics in perceptible scientific manner The Macro-Cosmic Being after remaining in mother's womb, when descends after three quarters of year-tripaad oordhva- it carries imprints of cosmic geometry of conception-time and repeat it in altered aesthetic geometric manner at the time of birth Cosmic patterns at birth of parents grand parents are also reflected in the horoscopes Cosmo gram of child

The physiological, physical, intellectual and emotional traits and diseases of parents and grand parents are carried over by genes in an organism Many of such traits are manifested in child whereas many traits are altered or remain dormant or simply transferred to next generation New characteristics also evolve in genetic process Astro-Genetics establishes that as DNA replicates through double helices cosmic patterns of parents while repeating themselves at the time of conception and delivery of their child transfer all such traits to child represented by parental and pre-natal cosmic patterns depending on strength of such patterns

A random study of hundreds of horoscopes of parents and their children by me with Astro-Genetic simple parameters has demonstrated that Zodiacal Sign rising as Lagan at birth of parents or grand parents repeat itself at the time of birth of child (A) rising as Lagan sign or becoming Moon sign (B) Lagana or Moon of parents may also occupy an altered but equally interlinked position in the horoscope of child called square (90, 180 270 degrees angle) or trine (120, 140 degrees angle) position when measured from the Lagan or Moon Sign of parents (C) Afflicted Brihaspati indicates verifiable hereditary diabetic traits and (D) afflicted Surya-Shani suggest asthmatic traits Lagan represents characteristics of physique, physiology Moon rules mind, intellect emotions The inherent degree of strength of weakness of Lagan and Moon, therefore, will reflect the degree of prominence of the inherited traits represented by Lange Sign and Moon Sign

EFFECT OF CERTAIN INSECTICIDES AGAINST CHOREDOCUS ILLUSTRIS (ACRIDIDAE) ADULTS UNDER LABORATORY CONDITIONS

Tanu Sharma, Shashi Mala and Absar M Khan

Section of Entomology, Department of Zoology

Aligarh Muslim University, Aligarh-202002 (U P)

Probably man's struggle against pests of crops is as old as agriculture itself The number of known insect species causing damage to crops are about 1,000 out of which 70 species are responsible for maximum loss It has been estimated that the losses of field crops in India are up to the tune of nearly Rs 600 crores per year So the entomologists and farmers must evolve methods to develop and apply the effective control measures against insect pests in order to save the crops in the field as well as under the storage condition In the present study, to evaluate the effect due to insecticidal action, choroedocus illustris adults were treated against different concentrations of insecticides viz Cypermethrin, Malathion, Methyl Parathion and Monocrotophos The concentrations used to dip the maize leaves, upon which the insect feeds, were 0 005%, 0 01%, 0 025%, 0 05%, 0 1%, 0 25%, 0 5%, and 1 0% (v/v) respectively Our results showed that the choroedocus illustris adults, indicated the highest mortality 86 00% at 1 0% concentration of Monocrotophos The mortality decreases with decrease in the concentration of insecticide Least mortality response is noted against Malathion, which

EXPOSITION OF PRESENT TECHNOLOGY CONCEPTS AS INTRINSIC IN CLASSICAL AND VEDIC PRECEPTS

Dr Neeraj Chaubey

K N Institute of Technology, Sultanpur, U P

It has regularly been pointed out even from the corner of top scientists and technologists of the entire globe that the concepts of present day Science and Technology are found as intrinsic in Vedas Upanishads, Puranas and other classical works Many principles, hypotheses and laws of present day Technology and Science are now being found to be deeply rooted in Vedas

It is strange that the concepts of Relativity of space and to recent advances in Space Technology, Astrophysics, Exeo-Biology and Cosmology were not unknown to our sages and researchers, as has been pointed out in the master place contribution titled GRAVITATION by Misner, Throne and Wheeler (a Nobel Laureate) that the same concepts were given by Maharshi VYASA in the MAHABHARATA (on A D 400) What to talk of the above, when the great Astrophysicist of the country Padma Vabhushan Prof JAYANT NARLIKAR has provided in his popular text' THE STRUCTURE OF THE UNIVERSE (2) (Oxford University Press) that the Classical Scripture VISHNU PURANA (3) comes up with the suggestions of a time scale in proximity and close comparability of present day Astronomy and Space Technology The present work is an attempt to advocate that when Vedas, Upanishads and Puranas etc have already revealed in most primitive times those concepts which are prevailing in modem Science and Technology, then, the same should be incorporated in the contexts of modem Science and Technology, Further it is also to point out as to how in what manner it is needed to decode the other formulations and scripts so that the same may add to present day Technology and Civilization A highly encouraging result is likely due to such an attempt towards advent of Knowledge and Civilization

HOMAFUMAL CONTROL OF SIMULATED ACID RAIN AND ITS EFFECTS ON GLYCINE.MAX

Purti Chaturvedi (Research student)

Deptt of Botany, Meerut College Meerut

C C S University, Meerut, U P

"Agnish me Aapash me veerudash me oshadhyash me kristpachyash me akristpachayash me, gramayash me Pashva Aaranyaash me vitlam ch me vittish me Bhutam ch me Bhutish me yajanya Kalpantam" Yajurved 18/14 Meaning - By way of Homa process, rain is formed because of the specific temperature created by 'Agni", current in clouds (vidut) Rain water sprouts pearls out of sea Shells and disease free superior water

Creepers, trees, vegetables, herbs, medicines, self growing grains, Agriculture all products, human beings living both in town and village, animals and birds become disease free and superior because of Homa Metals others vegetations coming out of land also improves in yield by way of Homa process Vedic literature, Homa and acid rain are the three pillars of this work This work tries to establish that Homa, a simple practice, can control the Hazardous effects of acid rain and infuse a healthy environment

This is the first scientific attempt to determine the effect of Homa fumes in control of Acid Rain which are injurious and inhibit to establish the plant The present experiment was aimed at assessing the scientific significance of vedic Environmental pollution control process

Vedic literature suggests that the Homa process can help in controlling environmental conditions significantly Effect of Homa fumes was studied on glycine max plant throughout its three months life cycle SAR (simulated Acid rain) was added to the experimental process to study the effect of Homa process on SAR Homa performed twice (Sunrise/sunset) daily

CONCEPT OF GRAVITY AND HELIOCENTRIC THEORY IN ANCIENT VEDIC LITERATURE

Bhanu Prakash Gupta

Dr S R Verma

Reader D B S (PG) College, Dehradun

Vedas are recognized to the most ancient and oldest literature available to us Vedic knowledge is said to be the true knowledge because this knowledge is the Divine message heard by the Great Seers in the state of deep meditation called "Samadhi" or Communication with The God" Number of attempts was made by various scholars to expound the Vedic mantras in their own way Number of commentaries is given to expound the hidden notion of Vedic Hymns, but as all these commentaries differ from on another, it appear that these commentators do not translate Vedic hymns properly and be scientifically

In our methodology we consider that the context of the Vedic Sukta is completely find out of the "Rishi and "Devata" words of the Sukta We consider "Devata" of the Vedic hymns is the personification for the Natural Force e g

Thus using a new approach of scientific interpretation of the Vedas and ancient Indian literature we can prove that the concept of Heliocentric Theory and Gravitational Power of the Earth and the sun was expounded by Indian astronomers and Seers much earlier when they were rediscovered by the western scholars like Copernecus, Aristotle, Newton Kepler etc The purpose of abstract is to introduce a methodology, suitable for the scientific interpretation of the Vedas Beside using this methodology the we will explore the Vedic hymns and other ancient Indian literature relative

to the concept of Gravity and heliocentric theory

LAW OF GRAVITATION AS FOUND IN VAIDIKA LITERATURE

Dr (Mrs) Vijaya Rani, Kurukshetra

Dr V K Goyal, Kurukshetra

Generally it is thought that modern science is originated and developed only recently and it has nothing to do with our ancient Sanskrit literature But it is a misconception A serious and deep investigating insight into the sanskrit work including Vedic literature, reveals that many scientific facts and solutions to many problems of science (e g Physics, chemistry, Mathematics, Astrology etc) are hidden in them Sometimes they have been dealt with directly and sometimes indirectly in a symbolic language Swami Dayanand, yogi Arvindo and many other thinkers of India and abroad are of the opinion that vedas contain many truths of science and truths of religion. They also contain such truths of science, which modern world does not at all possess Internal evidences from Rgveda (X 71-1-2) suggest that the vedic sages placed themselves under the discipline of Satyam (truth), Rit (Eternal order) and Tapas (spiritual austerity) and then they revealed the innermost reality through their vak They put forth the scientific facts before the world through the awakening of their purest intellect The present paper proposes to explore some relevant references from the Vedas, which point out about the law of Gravitation and the Gravitational force which controls and governs the universe

SCIENCE OF AGRICULTURE IN VEDAS

Dr K B Archak

Reader & Chairman

Department of Sanskrit Karnatak University Dhawad

The present paper aims at bringing to light different aspects of the science of Agriculture on the basis of the Vedic sources There are many references in the Rgveda and the Atharva Veda to the land under cultivation, water supply ploughing of land the harvest and the like The Vedic statements prove that the agriculture made real headway during Vedic period The Vedic people were primarily pastoral, and naturally cows and bulls were their most valued possession These animals were regularly used for ploughing and drawing carts That the cow should give warm or cooked milk was a standing wonder That the dark or red cow could give shinging milk was little short of a miracle (Rg 8 93 13) Irrigation was known to Vedic Aryan people Rgveda mentions the aspects of agriculture like the operation of tilling the soil, the cutting of furrows in the field with wooden ploughshare drawn by full, the sowing of seeds, cutting of the corn with the sickle threshing the bundles of corn, and finally sifting and winnowing

The Shatapatha Brahmana describes the main agricultural operations as above In fine, it may be said that several developments took place leading to scientific agriculture were achieved by the Vedic people Several changes in agriculture from Vedic period to the modern time can be found Yet, the standard of agriculture during vedic period was no inferior to that of the present time

MENTAL HEALTH OF WOMEN AS FOUND IN MANUSMRT

T N SHIVA KUMAR B Sc L L B H M I B M

On hearing the very name MANU or MANUSMRT I, almost every woman gets irritated or angry It is because, there is a quote in that text-9-3 as न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति NA STRI SVATANTRYAMARHATI It means as-"There is no occupation for a woman to be independent " unfortunately, this has been wrongly translated as-"Woman does not deserve freedom", and women are ill-treated in the society Even those, who have not read this text and do not know what it contains, are misquotations, this wrong translation, for their own ulterior motives We can also notice that , many people, who do not know, the earlier portion of this quote and the context in which it is said, are also wrongly or miss-quoting this quotation, to raze women These (Senseless) selfish wrong users, are the cause for the blemish, to this teat

Every one wants to quote, that which is convenient for them But, no one remembers that, half knowledge is dangerous By the above example, we can notice that how women, are suffering with MENTAL Agony in the society Let us try to understand, the proper purpose, for which MANUSMARTI mentions as-"there is no occasion for a woman to be independent", rather than- "women does not deserve freedom", which is a wrong interpretation of the quote In addition to this full understanding of this quotation of MANUSMARTI, we should also clearly understand the other quotations of MANUSMRTI, which safeguards the interest and well-being of the women in the society It is only then, we can get rid-off the false notions about MANUSMRTI and also lead a peaceful life in the society

Here in this paper, I am trying to highlight the importance of the guidelines given in MANUSMATI and a few other texts which help us to improve the man and woman real

Township This develops confidence in a woman towards life It is the HEALTHY MENTALSTATE of any woman

CONTRIBUTION OF VEDIC WISDOM TO MENTAL HEALTH CARE AND SOCIAL WELL-BEING- A STUDY

Dr Khagendrea Patra

Sanskrit Ex-chairperson

WSC, University of Leiden

Netherlands Rourkela, Orissa

The present world is facing innumerable problems including poverty, unemployment terrorism and various diseases Modern man has also been trying to overcome all such adverse situations with the help of developed Science and Technology So far as health problem is concerned present Medical Technology guides mankind a lot to cure physical diseases through various medicines and surgical operations etc But in spite of all such efforts lot of people in the world are still suffering from mental and social disorders, which prove that present Medical Science seems to be insufficient for complete eradication of health problem Indeed, the exponents of Medical Science have realized that without promoting a state of well-being in the individual mind and society, the task of health care will not be colleted So they have recognized alternative methods of health care which include Spiritual Therapy Moreover, the sources of Spiritual Therapy are Vedic Literature, Bhagavad-geeta and others Our objective here is to explore the holistic methods for taking care of health So it is proposed here to throw some light on the contribution of Vedic wisdom to mental health care and social well-being with a holistic approach

AYURVEDA IN VEDAS

Dr M Srinivasulu

Dept of Kayachikitsa, (medicine)

M Sc (Phy), M D (Ayu), (Ph D)

Govt Ayurvedic College, Hyderabad, A P

Life is beginning less and so is the knowledge about it and the earliest existence of Ayurveda is said to be manifested before creation The science of life (Ayurveda) developed by the ancient seers and later due to secular character Out of four vedas, Ayurveda discussed more Atharva veda rather than Rig and Yajur vedas Eight names were given for Vedic granthas of Atharvaveda in which Bheshajaved and Yajurved are best dealt with Ayurveda Ayurvedic topics discussed in this paper are of Shounakeeya branch of Atharvaveda

Though the matter is scattered, some of them are, knowledge of Anatomy (including 118 organs, 360 bones etc) blood circulation aphrodisiac, achievement of conception, physician and his role, diseases and it's causative factors (end toxins, Krimi and imbalance of trososha), drugs and its miracles, obstetrics and gynecology and many more prayers and measures

CONTRIBUTION OF VEDAS TO THE SCIENCE OF MEDICINAL PLANTS

Dr V S Kale & S B Kale Brahmmuni

Ishkripa Vidyanagar, Parli-Vaijanath 431515

Dist Beed M S India

Vedas are the oldest in the world and contain all science and true shashawat knowledge in all fields of life The knowledge is perfect and in totality remedy Veda defines Aushdhi as the thing which removes the pain Vedas gave pachmahabhoot, plants, animal, their products as medicines Even they used Minerals and Kshar bhasm as medicines Vedas & Ayurveda have contributed much to the science of medicinal plant

Vedas gave the use of medicinal plants from all sides to help the human being & Animals The plants can be helpful to develop the health to maintain the health at the same time can act as medicine

SECRETS OF MEDICINAL PLANTS IN THE RGVEDA

Miss Bhagavati R

Lecturer in E& C

K H K Polytechnic Institute, Dharwad-8

The Vedic seers had perfect knowledge of the benefits of plants and its medicinal values as found in the Vedas They also had ordained mode of worship of plants and their association with celestial plants For instance, रवत्थ, औदुम्बर, पिप्पल, पलाश and other plants are seen to have raised to the celestial sphere by the seers, and the medicinal properties of such plants have been brought light

In this connection, the present paper highlights the medicinal value of plants referred to in the

Vedas It may be observed in the following mantra किस्विद् वनं क उ स वृक्ष अस् यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षु (Rg 10 31 7) The plants are considered as the source of food, energy, cloth, shelter and medicine The utility and the medicinal values of the plants in the Vedas illustrate the scientific approach of the Vedic text So also, the plant called 'Rohini' referred to in the Atharva Veda, was being used for the treatment of bone- fractures

POKHARAN, KHETOLI, JAISELMER, SAM SAND DUNES AND RAM DEVRA: DUSTY HOMES OF INDIAN BDELLIUM AND OTHER VEDIC MEDICINAL PLANTS

Dr Purushottam Kaushik, Professor & Head

Department of Botany and Microbiology

Gurukul Kangri University, Haridwar -249404

Indian bdellium, pilu, bada pilu, laghu pilu, ark, mandhar, kareer, babul, kumta, ajasringi, soma, ingudi, nimb, rohitak, vata, ashwattha, sirisha, shobhanjana, (Shatavar) Ashwgandha, dhumasa, jeevanti, ghrit kumari, Sudha, arundhati, atibala and Prosopis juliflora are some of the vedic valuable medicinal plants, which were recorded in an excursion of the area How ever, Their number is scanty and conservational measures are recommended

MINERAL NUTRIENT VALUE OF ATIBALA (ABUTILON INDICUM LINN.)

Shri Krishna, Amit Kumar and Navneet

Department of Chemistry

Department of Botany and Microbiology

Gurukul Kangri University, Haridwar

Atibala (Abutilon indicum Linn) is used to cure several diseases in both the Ayurvedic and Unani system of medicine The ash of different parts i e leaves, stem, root, flowers, seeds and whole plant was prepare to Analyze the elements from different parts of the plant The ash content was analyzed by atomic absorption spectroscopy and inductive coupled plasma techniques The leaves contain high concentration of calcium, iron and cobalt The seeds are rich in copper, manganese and nickel content The stem and root contain higher amount of magnesium and sodium respectively Flowers are rich source of potassium The ash is more soluble in acid as compared to water and ethyl alcohol The ash prepared from leaves is highly soluble in acid, water and alcohol while that of seeds in acid The deficiency of Na, K and Mg causes diarrhea and vomiting, while Fe and Cu deficiency cause anemia, hypoglycemia microcitic anemia and the deficiency of Mn cause abnormality in central nervous system Ni is required for Iron metabolism and Co for Vitamin B12, formation

HUMAN ANATOMY IN THE VEDAS

Dr Pragna Jogesh Joshi, Lecturer,

Maharshi Academy of Vedic Sciences

3/B Highland Park B/h Polytechnic Ahmedabad

Vedas aim at a better life and are rich with different sciences related to human welfare Health Care is one of them and is generally known as Ayurveda The name itself suggests that it aims at long and healthy life However Ayurveda is considered to be a up Veda i e secondary science derived from the vedas Obviously the vedas contain basic material about anatomy and other subjects related to Ayurveda The root of this science is in the Vedas Anatomy and functioning of different organs of the body are the main concern of Ayurveda Proper knowledge of all the organs and their specific functions is necessary for diagnosis and treatment Atharvaveda has ample references about it Atharvaveda (10/2) describes all the principal organs of a body from head to toe Charak Samhita (4/6/6) says that there are 360 bones in a human body Atharvaveda (10/8/4) also speaks of 360 bones Another Sukta (2/33) has the names of the organs in a descending order and has listed each organs like heart liver which are the internal part of a body and are not visible Atharvaveda (1/17/3) refers to both the types of arteries viz blood vessels (veins) and artery and their number given is respectively one thousand and one hundred Atharvaveda also mentions Manyu which according to Sayana are the veins of neck and also mentions muscles at another place

Moreover Atharvaveda also mentions the seven constituent elements of a body (Rasa Rakta Mansa Meda Asthi Majja and Shukra) which are found in the later works of Ayurveda We also find detailed description of Embryology and midwifery

ENVIRONMENTAL CHANGES BY YAJNA LEADING TO RAIN

P P Pathak

Department of Physics

Gurukula Kangri University

Haridwar

A scientific analysis of possible changes in the atmosphere due to yajna is presented It is well known that yajna for different purposes have variation in details of methods and ingredients to be used as Samagri and Samidhas This analysis is aimed particularly at the yajna to be performed for rain making The analysis shows that the changes in the atmosphere lead to the formation of electrified clouds and rain This Vedic method of artificial rain is concluded to be superior in many respect than method of modern science which use cloud seeding with chemicals by flying to cloud heights Besides it is also cost effective and non polluting Rather the rain water will be containing pleasing smell as well as having medicinal value

THE ACOUSTICAL & PERCEPTUAL IMPACT OF VED MANTRAS ON HUMAN ANATOMY & THE ENVIRONMENT-II

R Swarup

Head Department of Physics

D S College Aligarh

The mysterious scientific & technological phenomena enumerated as the source of knowledge

in Vedas need renovation on the fast growing trends of innumerable entities emerging in the recent global frame work The growing misuse of Science & Technology is imposing a series of troubles such as 'Energy-Crisis,' Problem of Pollution', 'Nuclear Terrorism' the made race of 'Atomic weapons' etc menacing the whole flora and fauna, quite incongruous to the motto of Vedas the 'Vasudhavia Kutumbakam & Krnvanto Visvamaryam. In order to revive the vital strength of Vedas lying in Veda-Mantras, Just like Einstein's mass-energy equation E=mc2 , one has to realize their inner merits, glories and grandeurs in the shape of the finger prints recorded as acoustical and electromagnetic signals emerging during chanting of Veda Mantras Out of wide range spectrum of these radiations, from Veda Mantras one may scientifically filter the desired vibrations as per need of creation, destruction or preservation and the second quantization of quantum field theory the backbone of recent high energy physics and the astronomy describing the nucleonic and cosmic matters An appropriate pronunciation of Veda Mantras can be used to focus the tremendous energy from the sun, so as to get rid off the energy crisis on the one hand and on the other one can concentrate the cosmic radiations from the interstellar space and the solar flares for any desired destruction, devastation, creation or conservation An attempt is being made for the analysis synthesis and the perception of Sanskrit geminate, non-geminate and the crystal sounds observing various acoustic cues which are responsible to differentiate them The speech technology development of Veda-Mantras as the study of acoustic phonetic and prosodic aspect and to create a comprehensive data base for spoken Indian languages A thorough analysis reveals that Sanskrit in Vedas is one of the richest language in the world in the sense that it has several special type of words (clusters) with some times two or four consonants occurring consequently whose man machine (computer) interface in the laboratory and field environment to discover the acoustics, phonetics, linguistics speech digitization, signal processing s, computer perceptions (with sampling rate of 16 K 16 bit per second) as the natural stimuli of Veda-Mantras The analysis and synthesis of sonic and ultra-sonic components of Mahamrituanjaya-Mantra (The Death Winning Chanting of Veda Sound) is the future target to established physical reality of delaying death advancing birth and increasing life full of joy and immense harmony as per gesture of Vedas

CHANGES IN ENVIRONMENTAL CONSTRAINTS VIS-A-VIS EARLY SINDH VEDIC CULTURAL ADOPTIONS.

Dr S Rama Krishna Pisipaty, Geoarchaeologist

Department of Sanskrit & Indian Culture

Sri Chandra Sekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya

Enathur Kancheepuram

The first civilization is now generally placed in the third millennium BC with an advent of metal It mars the raise of civilizations lie at Mesopotamia Egypt Central Asia China, etc It has also been found from the Neolithic village communities of Baluch hill to the urban settlements of the Indo-Saraswati region, to be a rapid but continuous development, which follows a common general pattern that can be discovered at other places in the Chalcolithic Age By the end of the second millennium BC, these urban elements diverted and were converted into other forms Of course, the greater cultures do not die, they simply fade away and change into other forms Needless to say that multi factors are involved in the progress or collapse and emergence or evolution of the new practices The influencing factors and causes behind the collapse of the first urban civilization and then the human crises behind evolution of the new way of practices like vedic rituals (firing of herbals, offerings to Fire God, worship of nature and elements, etc) are the subject matter of the present paper Further, it marks an

attempt to find the possible causes behind the raise of new social systems of practices, which not only prevail thousands of years but also were the major universal practice of the early human

ENVIRONMENTAL ETHICS IN VEDAS AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT

Anupam Dwivedi, Research Scholar

Deptt of Economics, Allahabad University

O purifying Earth, you I invoke !

O patient earth, by sacred word enhanced

Bearer of nourishment and strength of food and ghee

O earth, we would approach you with due praise !(Atharva Veda XII 1 29)

The Indian religious traditions are intertwined with equally disparate cultural, social, linguistic, philosophical and ethical systems that disparate cultural, social, linguistic, philosophical and ethical systems that have developed over a vast history compounded with movement of peoples, foreign interventions, and internal transformation in structures and identities experienced over time

One of the most successful and well noted applications of the Indian ethic of non injury emerged with the nonviolent struggle Mahatma Gandhi in the first of twentieth century Gandhi was adamant about the need for such an ethic in our treatment of animals as in our behavior towards each other and towards other human beings (Gandhi 1959 34-35) A spectacular environmental movement, called the Chipko was directly in influenced by Sarvodya Another case which drew world wide attention where similar nonviolent resistance tactics have been used to raise awareness of environmental concerns the Narmada Dam Project in South Gujrat

The suggestion is that there are indeed resources with in the traditional system- Yoga, Jaina, Buddhist, Hindu, Sikh, Islamic, Christian, Gandhian, all of which have helped give shape to a modern, secular India- to increase awareness of environmental concerns and to instigate the extension of ecological values and modal practices to the plethora of environmental problems facing Indians, as they do most human beings in other parts of the world This is a laudable suggestion and one with which a number of environments thinkers are likely to agree or if they disagree engage in discussion with

RETROSPECTION OF SAMGANA

DR MEERA DAS GUPTA

Kanya Gurukul Vidyalaya, Dehradun

'Vedas' are the divine source to achieve world astounding conception of religion and knowledge Such a conception was possible to realize because the 'Supreme God' revealed Himself through ' Vedas' which were learnt by ancient 'Maharshis' i e our 'Seers' This divine revelation given to man through Vedic lore, is considered to be the most perfect as it covers all spheres of human knowledge, action and inaction

Music is an inseparable ingredient of vedic composition which is one of the unique features to establish their divine origin Thus the conception of Music also has taken its source from Vedas - especially 'Samaveda' The two aspects - Pravriti Dharma and Nivriti Dharma of vedic culture employs

music for noble purpose Hence this kind of music from which eternal bliss emanates is itself blissful

Samaveda is the musical version of Rigveda, The hymns of Rigveda which are used as Libretto or Sahitya or Yoni, for the melodies are called 'Samansgitishu samakhya The Samaveda hymns are in two primary sections - Samhita or Archica and Gava The former is in two sub - divisions - Purvarchica Uttararchica and the latter part has the subdivision of Gramgega / Aranyageva and Uha / Uhya Ganas

The second main division called Gana gives the melodies Some Ganas to be sung in public in villages called Gramgeya and some of the Ganas may be special and to be sung only in seclusion of the forests known as Aranyageya The melodies of Gramgeya are utilized in Uha and Aranyageya in Uhyagana The singers or Samans vary from each other for their singing style and meter Though there were fifteen school of singers in Vedic Period only three are available now - Ranayniya, Kanthumiya and Jaiminiya It has five parts and three singers The names of the swaras used in singing Veda are Udatt, Anudatt Mandra, Atiswarya Krushta The notes are in descending manner and starts from Madhyam The classical notes of modern music derived from the Swaras of Sama through they are slightly different in nature

The Vedic Music was performed for the eternal bliss This quality enhances the transcendental aspect of music which is not within the easy reach of ordinary musicians with conventional aspect of music This aspect belongs to the realm of Arean culture alone and the perfect attainment of knowledge was possible 2000 B C before the world could think of it

VEDIC SOCIETY AS REVEALED IN THE ATHARVAVEDA

Dr Rajendre Nath Sarma

The Atharvaveda (AV) is the secular document of the Vedic age This is borne out by a number of facts It is not a religious work like the other three Vedas Its purpose and nature are fundamentally different from those of the Trayi The AV is an invaluable literary record from the point of view of the history of Indian civilization It presents a picture of the middle and the lower-middle class Aryan Society with all its spiritual and superstitious ideas embedded in its faith It is in fact a Society that is bound by a religion of spells and incantations

The most outstanding feature of the AV is its intimate portrayal of the Aryan household It reflects the true picture of life from the cradle to the coffin and reveals the pre-occupation of the people with a desire to make their life happy The contents of the AV reveal a culture and Society much more developed than those of the Rgveda It reflects the real popular beliefs and customs in a manner that is absent in the other Samhitas

The great importance of the AV lies in the very fact that it is an invaluable source of knowledge of the real popular belief as yet uninfluenced by the priestly religion of faith The Vedic Society in the AV is really a good issue for discussion So many aspects are there in the AV which deserves discussion Farming and animal husbandry find a greater emphasis in the AV In one of the hymns belonging to the third Kanda, we find a rare eulogy of the farmers as the people of fod who yoke the bullocks to till the land (AV III 17 1) The well-being of the Society depends on the well-being of the family This relation is fully evident in the hymns of the AV for the restoration of harmony for the success of married life Mutual harmony and understanding between husband and wife is fundamental to the well-being of the family In the present paper, an attempt has been made to deal with the Vedic Society as revealed in the AV

"VEDAS" THE STORE HOUSE OF DIFFERENT SCIENCES

Dr S P Padhmanaban

Sanskrit Department

University of Madras

It is said that the entire Vedas are the source of Dharma Vedo akilo Dharma Moolam And it only on this principle of Dharma, the world exists and survives Further, It is stated that, it is only from the Vedas, manifested all branches of learning Thus, Yoga Jnaanam tatha sankhyam vidhya Shilpaadhi Karma cha Vedacchastraani vignanam In accordance with this statement, we find, various branches of learning including Science and Technology is prevalent today There is nothing that cannot be traced to the Vedas In the present paper, some of the important branches of learning would be highlighted as found in some of the vedic texts

RELIGIOUS WORLD VIEW OF THE VEDAS AND THE CONCEPT OF YAJNA

Dr (Mrs) Archana Barua

Department of Humanities and Social Science

Indian Institute of Technology

North Guwahati - 7813039

The religion of the Vedic Aryans is continuation of the primitive faith of the Indo-Europeans that is evident from common roots of the words like Drv (to shine) with Latin Deus, Sanskrit Deva etc The spirit of veneration was indicated by the words yaj, (to worship), which is common to many Indo European languages The Vedic pantheon not only had common Gods like Mitra and Iranian Mithra, several others were incorporated that were uniquely formed in their new home, e g , the river deity Saraswati etc There was also a gradual change in the mode of worshipping during the later Brahmanisation phase, the earlier mode of communication with gods, in which Agni acted as a priest and messenger between man and gods, is gradually replaced to a belief that sacrifice is a means not for persuasion but for compelling the gods to grant favor Still a reminiscence of older idea of sacrifice as what man owes to gods, not vice versa, was persistent in later Vedic literature sacrifice as pictured as a debt due to the gods In this article a philosophical exploration of this phases of development from the early Vedic era toward later Brahmanisation phase is explored from a philosophical perspective

THE MESSAGES OF GODS OF RGVEDA

Dr S S Gupta

Rgveda has 33 main Gods The author, in an earlier work tried to identify them with the help of science He was lucky to be able to do so His studies revealed that the wise Rishis of Rg Veda knew that there are five main natural phenomena Gods- Akasha, Prithvi, Vayu, Agni and Jala, i e in scientific terminology, the basic elements (Panch-Tatva) and quite a good number of Gods that are the associate gods of these five main gods Besides these natural phenomena Gods, there are other Gods also The author, thereafter, classified these 33 Gods into (1) Natural Phenomena Gods, (2) Craftsman Gods, (3) Gods connected with soul and (4) God Indra

These four types of Gods give messages for the welfare of man The collection of them gives

a perfect guide line for the welfare of the world, both living and otherwise

WORSHIP OF FEMALE DEITIES IN VEDAS

Dr C Lalitha Rani

R S V Peetha Tirupati

We Worship numerous energy forms as deities We start our worship with Adisakthi or Para Sakthi She bestows all happiness to entire humanity Saraswati is worshipped for Knowledge, Sita is worshipped for character empowerment, Lakshmi is worshipped for prosperity Parvati blesses with welfare in all deeds [Sarva Mangala] Vedas shows the way for salvation through worship of all these deities

In addition we take all natural resources like rivers, trees, earth etc as divine inheritances which shower happiness and prosperity on mankind We worship in the form of female deities Gangamatha , Godavari Matha, Krishaveni Matha, Prithvi Matha All These are worshipped by us as mothers Indian culture gives highest regard for mother All these energy forms are given due respect in our day to day life in the form of mothers Every Maharshi starts his prayer with prostrations before Adisakthi, and every poet starts his work with pranams to Saraswati All these worships are part and parcel of Vedic Way of life I would be dealing with these feminine forms of energy in these pages

VEDAS THE ONLY SOURCE OF KNOWLEDGE FOR ALL FIELDS

Dr Brahmmani

Dr Sau V S Kale

Ishkripa Vidyanagar

ParliVvaijanath 431515, Dist Beed M S Indian

Today's age is the modern scientistific age Science has reached to the climax with various assumptions Now there is a age of intellectual right & property right The reality is quite different Maharshi Dayanand on the bases of Vedas showed that the universe is a perfect creation of supreme energy GOD with a purpose and perfect knowledge The universe the things, the sun the moon, the air, the food the body, mind, brain, plants, animals all the every things is created for the welfare of the soul

Maharshi Dayanand in the modern age removed all miss-interpretations misconnects of Vedas and dignified glorified and made universal global, open to all & showed that the vedas contain all types of true knowledge and sciences

Vedas contain the true knowledge, Vedic knowledge is preventive Constructive creative, all in one Almost all the branches of knowledge developed in modern age and all which will be in future are having the root base in Vedas The modern world think that man has developed these independently but it is not true and hence problems are unsolved

AN APPROACH TO DEATH IN VEDAS

Vishal Bhardwaj

J R F Department of Sanskrit

Guru Nanak Dev University, Amritsar Punjab

Death casts a dark shadow over life If death ends everything, people have asked what is the meaning of life? The unhappy thoughts of death had led to the formulation of doctrines that have been widely accepted by people in India in later ages and else where, of which the essential points is pessimism But the Vedas are not pessimistic They are radiantly optimistic There are two ways of approach to the death in Vedas, one materialistic, the other spiritual From the materialistic point of view, the Vedic sages find that men like other creatures are born mortal These sages want men to live long and not die premature Insistent prayers for longevity indicate a strong will to life Secondly, apart from the materialistic approach, there is also the spiritual approach to death in Vedas Man is not merely the body, but also the soul and while the body is mortal the soul is immortal The Vedic sage considers himself to be ' a brother of Devas (Rg, viii, 83 8) as such he would make a heaven of the earth and live like a Deva Not only immortality, but also mortality or death is the shadow of god Jnanayoga lifts man to a level where the fear of death cannot affect him (AV X, 8 44)

So after discussing about the materialistic and spiritual approach to death in Vedas, we can come to the conclusion that the tragedy of death is superseded by the triumph of the spirit of man over it

RGVEDA AND GAYATRI

Dr M N Joshi

Reader- Dept of Sanskrit

Karnatak University Dharwad

Rg-Veda is the essence of our ancient Indian thought as per several philosophers The complexity and the abstract aspects of Rg-Veda is something very unique and hard to understand at once Our Indian sages have cautioned us to review our own position in terms of eligibility before we can embark on either understanding for ourselves or in trying to explain to others very complex aspects of Rg-Veda and in particular the Gayatri mantra in Rg-Veda We, surely are pygmies compared to those sages who have gone in great detail into Rg-Veda after observing Nature Yet, it is but human to try to understand and understand further, things that are mysterious, however small we are in our own capabilities and understanding Here we are trying to enter and learn the vast ocean of knowledge in the Rg-Veda through this work on the Gayatri-Mantra It

A study of the Rg-Veda is essential for a clear glimpse of Indian thought Rg-Veda constitutes a source of the later practices and philosophies of the Indians and a detailed study is necessary for a proper understanding of such a though and practice We find a freshness and simplicity, as also an inexplicable charm like in the breeze of the spring or the blooming flower of the morning about these first efforts of the human mind to comprehend and express the mystery of the world

NATIONAL INTEGRATION AND POLITY IN THE RGVEDA

Dr R Laxmi

S G L in Sanskrit

Smt K S J Arts and

Dr S M S Commerce College for Women, Dharwad-8

The term National Integration and its relevant aspects are no innovation It is true that modern society is making great efforts to bring about National Integration although politically the Indian Republic is a Sovereign State since 1947 The age of the Vedas particularly the Rgveda was marked by small tribal groups and a nation was just emerging, the origin being the clan, the political unit The Rajan was the head of a group of clans A critical study of the Rgveda gives rich information on the ideas of a Nation and a State In fact, it is no exaggeration to say that the period of the Vedas was a nation in the making In this paper, an attempt is made to glean relevant mantras from the Rgveda which are enough to substantiate this point

ARCHAEOLOGICAL SIGNIFICANCE OF GEMS VIS-A-VIS VEDIC ARYAN TRADITION

Dr Manoj Kumar Kurmi

Aurangabad

Vedic or Aryan culture is the first civilized culture of Indian Sub-continent Vedic or Aryan people are mainly concentrated on the Indus and Saraswati river basins in the north-western part of Indian Sub-continent a After the independence the attention of this archaeologist was focused on the alchemical investigation of the vedic, Aryan or Harappan sites in India During the last five decades more than fifty Aryan or vedic Harappan sites have been excavated in India which have revealed abundant semi precious stones (Gems) artifact along with other rich archaeological remains They used a variety of gems (Ratna) like, carnalian, Jasp, Agate Lapis-Laznli, Turquoise Opal Amythyst Chalcedony, Pearl etc for making beads ornaments and other artifacts

Remarkable observation that Vedic people were also aware about their astrological importance That is why they imported raw material from far away places and finished product were spread all over the world Ethno-archaeological data supported this view This tradition is still going on In the different region of the Indian sub-continent's

his research paper attempts to highlight the archaeological and astrological significance of the Various gems used by the Vedic people

KHASHA-THE BELEAGUERED COUSINS OF INDO-ARYANS IN THE HIMALAYAS

O C Handa,

11, Shiwalik Bhawan,

Sanjauli, Shimla - 171006

Khashas, the most venturesome and majority race of the Himalayan interiors, has so far remained little known These people charted the course history of this region much before the arrival of Aryans in the Indian plains They swayed over a vast mountainous territory from Kashgar in the west to Nepal in the east and possibly further eastwards The Khashas might have come into closer contacts of the India-bound Aryan groups, who were in transit in Iran, and whence the Khashas imbibed influences and developed certain common ethnic traits Thus, the Khashas and the Aryans, having started from the same point as the pastoral nomads diverged into two entirely different directions

They had to brave violent blizzards and snowstorms on the high Himalayan mountain passes To ensure safety for their flocks from the fury of those elements, they deified those entities as Rudra and started propitiating him on the mountain passes by making offering of stones - the only conceivable thing on such unearthly places One can still find that process being repeated on the high passes

In the course of ratio-cultural interfusion, the Rudra and the Naga cults blended to produce a unique mountain pantheistic system In that system, the Naga element gained precedence over the Rudra-cults Consequently, ophiolatry in the Himalayan region is much more powerful than what it is in the plains Significantly, most of the Naga deities have been brahmanised as the Rishis and Munis in the interiors of this region, yet they continue to enjoy their traditional importance as the master of subterranean and heavenly sources of water

The Khashas have been a great race of the simple-hearted, self-contained and innocent people Nevertheless, despite the sterling human qualities, these people did not achieve definite identity even in their homeland The Khasha folklore is a treasure of innumerable unrecorded episodes of the regional history, yet it has so far remained neglected and unexplored The hars of the trans-Giri area of Sirmaur district and the adjoining Jaunsar-Hawar area of Uttar Pradesh record some of the little known yet very important episodes of the political history of this region Therefore, there is a need to rediscover this beleaguered race

RGVEDIC SARASVATI AND HER CORRESPONDING NAMES IN THE GREEK AND THE ROMAN MYTHOLOGIES

Prof Mohammad Israil khan

F/D-56, New Kavi Nagar

Ghaziabad-201002 U P

The Greek and the Indian mythologies have many a similarity In spite of apparent polytheism in their mythologies, there is astonishing similarity in respect of deities in Greece, Italy and India Some of the deities of the Greek mythology correspond to those of the Latin mythology It speaks of inter-relationship among the mythologies of these countries and tempts us to suppose that in the olden days India, Greece and Rome had come together to know each other The Vedic goddess Saraswati corresponds to the Roman goddess Minerva and the Greek goddess Athene Athene, is also called Athena, whom the Romans identify with Minerva

We find a great deal of similarity between the personality of Saraswati and the Greek Muses Saraswati in the post-Vedic mythology, represents all sorts of vidyas arising from eloquence and wisdom Nay, she has been held to be the goddess of eloquence and wisdom

In the Greek mythology, we find nine Muses and they represent various sciences, namely Clio represents history, Euterpe, lyric poetry, Thalia, comedy, Melpomene, tragedy, Terpsichore, dance and song, Erato, love song, Polymnia, sublime hymn, Urania, astronody and Calliope, epic poetryu

ANCIENT INDIAN RITUALS, TRADITIONS & VEDIC SCIENCE VIS-A VIS MODERN SCIENCE

Bharat Singh, Neera Rani, R Swarup*, B S Rajput**

Ghaziabad, U P

Ancient Indian thinkers and philosophers in the field of mathematics, cosmology, physical and chemical sciences, surgery, environmental, life and medical sciences had established their outstanding landmark stones quoting evidence from 4-vedic Darshans, 4-Heterodox Darshans including Tantra, Charak samhita and other sources of Indian Philosophy The complexity of nature had been simply resolved by the ancient natural scientific approach

Vaisheshik darshana going much beyond Quantum Mechanics the most powerful mathematical tool to deal with the micro-system of nature i e atoms, molecules, nucleonic and cosmic matters No wonder if you understand the fundamental principle of uncertainty, the backbone of quantum theory was originated from Indian philosophy as accepted in Heisenberg's reply letter to Nails Bohr The outstanding results due to Ancient Indian Science regarding the structure of matter, principles of causality and uncertainty, origin of universe, mathematical inventions of zero, infinity, large numbers up to 1062 , small numbers 10-12 , geometries, symmetries etc are much superior and beyond the reach of most modern contemporary science

ARYANS & VEDAS

Dr S P Iswara, Retired Geneticist

Smt L A Iswara Retired Principal

Govt Degree College Andhra Pradesh

7 Amla Apartments, Krishna College Road

Visakhapatnam-530013

This paper deals concisely with the formation of Aryavarta from the time of actual formation of the earth Various theories on the origin and spread of Aryans and their culture discussed, showing that Aryans are not foreigners but Indians only The Eternal character of Vedas, their origin and continuation was Elucidated The mechanism of preservation is suggested with scientific support To begin with, let us trace the geological changes that happened to the land mass of the world in the Prehistoric period that led to the formation of "Aryavarta" the cradle of Aryan Civilization

Modern Scientists traced the earth's history backward up to 4 500 million years Maharshi Dayananda Saraswati in his book called Rigvedadi Bhashya Bhoomika calculated the origin of earth to be 4,320 million years back Both these estimates almost agree which is remarkable and hence could be true This period is supposed to be the beginning of a New 'Creation' Cycle

Due to drift in the various continents of the 2nd hemisphere divisions occurred and new land masses formed The land mass that gave rise to India moved in the North Easterly direction and met the Asian continent which brought the formation of Himalayas The area between the Himalayas and Vindhyas was known as "Aryavartam" where Aryan civilization reached its greatest glory There are several theories about the word "Aryan" A few others proposed that Aryans are native tribe of what we call presently Punjab Their culture was evolved as they shifted to Aryavartha Those who consider similarity in the languages with Sanskrit do so through the following words

1)Pitar (Sanskrit) Pater (Greek), Pater (Latin) Vater (German), Father (English)

2)Matha (Sanskrit) Mater (Latin), Meter (Greek), Mutter (German) Mother (English)

Some of the historians proposed that Aryans after migration to India only produced Rigveda Hence the description in it matches the Punjab Area Accepting this naturally leads to the conclusion

that the Barbaric Aryans after migrating to India (The divine and holy) got civilized by virtue of staying in India That means learning from the already existing people in that area endowed the Aryans with intelligence and capacity for higher metaphysical thoughts and philosophy, Thus they could Create Vedas and Vedic culture Then their stay in India only inspired them towards exalted thoughts and intellectual awakening Perhaps this is true even today There may be few takers of this idea Hence Aryans were of Indian origin only

HUMAN COGNITIVE PROCESS- AN ANCIENT INDIAN MODEL

Dr Varanasi Ramabrahmam

Lecturer in Physics

Indira Gandhi College of Arts and Science

Kathirkamam Pondicherry

Human Cognitive process as a combination of the triad Knower-Knowing-Known and the language learning process as a combination of the triad Subject-Verb-Object will be understood in the light of ancient Indian wisdom as revealed in the Upanishads and will be presented

A physics awareness of Advaita (No Two) concept will be used to model human mental processes such as- Knowing / Learning Perception / Thinking / Logic, Understanding / Experiencing / Awareness of meaning of a sentence This awareness will further be used to prepare a flow-chart / block-diagram involving gross energy - transformations in human cognitive process

The model will be refined using the awareness of Sri Aurobindo and Sri Ramana Maharishi on human consciousness Implications of this model to natural language comprehension field of artificial intelligence will be presented combining with the ideas of connectionism

SOTERIOLOGY OF INDIAN DANCE

Akanksha Jain and S C Goswami

JD - 5D, Pitampura, Delhi - 110088, India

Since the beginning of human history man has sought expression of the inner self through dance and music, first in the worship of the incomprehensible forces of nature and later in their defecation This is specially true for the Indian classical tradition of music which includes vocal and instrumental music, and dance The esoteric dimension of Indian dance forms is one of the central mysteries of the Hindu religion The tradition of Indian dance is thus fundamentally rooted in the sonic dimensions of the Vedas the Upanisads and the Puranas Indian dance has therefore been nearly always religious in character It provides us with a clue to the ancient Hindu view of the universe and the nature of Reality The different dance forms are the complementary forms of a single whole represented by the dancing God Ntaraja or Siva The summum bonum of Indian dance system is to realize the true nature if the cosmos man and God in a creative synthesis or 'yoga' Indian dance system involves all the eight stages of yoga' namely, abstention, regulation, body posture breath control, shutting out external impressions, concentration meditation, and the attainment of non-duality of subject and object Among the various forms of dance the folk dance is the most popular one among the masses as it catches the imagination of the shepherd the fisherman, the farmer, the laborer the cart man, the housewife, because it is a spontaneous expression of the emotion of the heart The vastness of the ocean, the infinite sky the murmuring waters of the Ganga, the awe-inspiring Himalayas the

chirping of birds, the cries of animals, the paddy fields, are all capable of triggering the mind and the body to dance to the tune of the Infinite

RGVEDIC TRADITION OF KERALA

Dr C M Neelakandan

Reader & Co-ordinator of School of Vedic studies,

Shri Shamkaracharya

University Kalady, Kuala

The methods, by which the Brahmins in India preserved the Vedic tradition form centuries ago, are worth mentioning Also the devises they used to transmit this wonderful texts form generation to generation are many, which deserve special study There are two methods of using Vedas in oral chanting which were in use form ancient days They are Swadhyaya and Prayoga, the day-to-day chanting of Vedas and the Vedic exegesis All these were done in India by the Brahmanas orally, reproducing the Vedic text form memory, not using the 'Book' Thus it can be said that the only religion in the world that was not a 'Book religion' till now was Vedic religion in India The oral tradition was its soul by which the text of Veda and its different modes of chanting were transmitted without any change form time immemorial There are many peculiarities of the chanting learning of Rgveda in Kerala This paper is an attempt to bring out some such important peculiarities of the Rigvedic tradition of Kerala

SAMAVEDIC TRADITION OF KERALA

Ravindran K A *

Samaveda is one which consists of collection of hymns that are set to one or more melodies The hymns found in the Samhita portion are mostly taken from the Rgveda There are some independent hymns also, the number of which is below 100 Tradition says that Samaveda had 1000 branches This is clear from the statement in Mahabhasya- sahasravartma/ But only three breaches of this old trusties are available today They are Kauthuma, Ranayaniya and Jaiminiya The Kauthuma and Ranayaniya recessions exist today in Karnataka, Maharashtra, TamilNadu and Bengal while in Kerala, Jaiminiya recession is more prevalent Both Kerala and Tamil Brahmins follow this recession Kauthuma Samhita is otherwise called Chandogya Samhita and Jaiminiya Samhita is called Talavakara Samhita The Kauthuma and Ranayaniya branches have no difference in the text where as Jaiminiya Samhita shows textual variation from the others

The text of Jaiminiya Samhita, which is studied by the Kerala Brahmins contains altogether 1698 hymns distributed in five kandas- Agneya, Aindra, Pavamana, Dvadasaha and Uttara Of these five kandas the first three kandas contain hymns that are adopted musically for the sacrificial procedure These kandas are divided further into chapter Thus the Samhita of Jaiminiya Samaveda obtaining from Kerala contains 112 chapter

CONTRIBUTION OF VEDAS TO THE WORLD OF MUSIC

Dr T Seetharamalakshmi

Professor of Music (Rtd)

Veda and Nada (Music) are inseparable The very opening prayer is bhadram karmebhih srunuyama devah, meaning the ears, the repository of sound from all directions are pressed into service Ears have no lids, only eyes have lids This 'make' has great suggestion to derive Sound is at first That is 'Vedanada', its anusandhana is a upasana which affects body, mind and spirit to place it fully satiated The mantras of veda are open for svara - recitation Svara plays key role in the recitation and employment and interpretational process of veda - mantras Svara is the jiva of music Music is a special art and a special training exclusive to devoted sadhakas For both viz , Veda and Music,

The paper discusses the genesis of nada and its journey through recitation of Rcs, Yajus, Samans and Atharvanie hymns In the endeavor of recitation 'kaku, (intonation) also matters great The same is true in any musical rendering In music we have extensions of nada like ekasvara, dvisvara, trisvara etc , and ultimately culminating into sapta svaraas Based on these seven notes design came in vogue A dilation on the same would be discussed

CONTRIBUTION OF ASSAM TO VEDIC STUDY

Ratul Bujar Baruah

Kamrup, Assam

Throughout the centuries, Sanskrit has been found to occupy an important role in Assam The Vedic study and the performances of the Vedic sacrifices were carried on in ancient Assam The prevalence of Vedic culture among the Brahmins of ancient Assam is noticed in the inscriptions Some ancient kings were found to possess the knowledge of the Vedas Vedic study enjoyed popularity here in Assam in ancient times and also the performance of various sacrifices sanctioned by the Vedas was in vogue in this region During the age of the Shatapatha-Brahmana, the Vedic culture was said to have crossed the river Karatoya Some Brahmanas acquired expertise in the Vedic studies Sacrificial deeds as performed by the Hindus of ancient Assam are also referred to in the inscriptions of ancient Assam Sacrificial ceremonies were performed to remove sins and also on the expectation of a pious life The king Ratnapala has been described as the maker of houses for the learned persons having proficiency in the Vedas and the sacrificial houses with Yupas King Bhutivarman has been mentioned as the performer of the Vedic Asvamedha sacrifice In the Kalikapurana also there in the mention of the Vedas and Vedas and Vedic sacrifices

ART OF LIVING AND REDRESSALS FOR DIFFERENCES· VEDIC VIEW

Dr C L Prabhakar

Vedas are not only religious texts but they are Library Basically the mantras of the texts govern the behavior of beings towards prosperity and wellbeing They prescribe good behavior and various methods for a happy living It is an Art to live It is biological to be born But it is an art, a skill to live There should be highly defensive amour like get influenced by power of mantras, skill, intelligence and craft in order to remove problems and live happily Happiness is peace (santi) happiness is not only to the individual but to the world, the Environment and the Cosmos

Man is prone to bad habits and condemnable behavior which endanger the health and longevity So there is need that he should be taught morale, behavior and cleanliness, at the same time a need to control over indriyas and the breath process (Pranayama) The procedures and sadhana techniques taught now are not extraneous to vedic view All these are a part of Vedic wisdom The paper covers a few of them Further this paper explores such suggestions, instructions and injunctions available from suktas of Veda like Rudraprasna (RV &YV), Camakaprasna (YV) Aghamarshana (YV)

sukta and Manyu suktas (RV) of Vedas

THE INTERPRETATION OF RGVEDIC HYMN X.95

Dr T Vasudevan, Lecturer

Sree Sankaracharya University of Sanskrit

Ernakulam, Kerala

The hymn X 95 of Rgveda is a Samaveda-sukta, an intriguing dialogue between Pururavas and Urvasi The depth and beauty of this hymn and its myth attracted scholars and poets of both ancient and modern times In his famous play Vikramorvasiya, Kalidasa attempted to modify the theme according to his perception of ideal love and happy life on earth In one way or other, this hymn has been subjected to naturalistic, ritualistic spiritual, anthropological, sociological types of interpretations In one way or other all these contribute to the interpretation of this hymn and helps for a better understanding by introducing dimensions hitherto unnoticed The Proposed paper surveys the major concerns of these interpretations and suggests new explanations based on literature and rituals

THE MAGNETO-DYNAMIC DETECTION AND THE RESOURCE CAPABILITY OF POLLUTION AND THE GANGA WATER IN VEDIC ETHICS

R Swarup, Head Department of Physics

Neera Rani & Bhart Singh

D S College Aligarh

The dragon of pollution due to luxurious life style of modern era seems to engulf the natural existence of both the anatomic and un an-atomic worlds of universe preserved due to vedic ethics from the very primitive The pollution is contaminating all the system of nature air water, earth, space, sky and even the purity of holy Ganga described as 'Patit-Pawani' seems to be at stake and thus menacing the whole flora and fauna Lord shivas engulfing the Kalkut visha (poison) during purification of ocean water the well known Pauranik ethics transforming him in the shape of Bhagwan Shankara (the God) is a clear-cut indicator of the resource capability of polluted systems In the want of appropriate scientific technique at present and the forgotten vedic technology of devolution in the past is causing the dangers for the survival of our future generation as in the name of advancement of modern science and technology to meet out our luxurious needs, we are pouring tremendous poison in the environment deteriorating its life saving contents so that after about 10 decades our future generations will die even by respiration or drinking Vedic principles and means of purification of internal as well as external systems may be transformed as the maneto dynamic detection and the remedial measures of polluted systems These polluted systems when kept in the high magnetic field yield magneto-potential records just like ECG of heart, which may characterize the purity of different systems of nature and their contamination The magneto-dynamic filters may be installed to isolate the pollutants from the contaminated systems as resource Thus the destructive character of polluted systems may be canalized in their transformed shapes beneficial for various creative useful processes maintaining the conservation principle of veda The resource capability of Ganga water as antibacterial, anti-fungal, preservation outstanding absorber of nuclear radiations, big medical, mineral and energy valued fluid

having pollution index many times superior to the best quality drinking water

VEDIC SCIENCES FRONTIERS OF KNOWLEDGE-VEDA

Prattipati Ramaiah i o f s

H-331,H-block, sena vihar

Kammanahalli main road, Bangalore- 560063

Knowledge of humans in general is limited Knowledge acquired by yogis after reaching some higher stage in yoga practice is full of truth and is of eternal in nature Yogi after attaining a particular Samadhi stage becomes a Maharshi Maharshis have the power of discrimination to reveal Veda Mantras and secrets of Veda

LIVER WORTSS - A FORTUNATE MANIA FOR HERBAL MEDICINES

H Vashistha1, R C Dubey2 and B Singh3 1- Department of Microbiology

S Bhagwan Singh (PG) Institute of Biomedical Sciences and Research

Balawala, Dehradun - 248161, India

2- Department of Botany and Microbiology, Gurukul Kangri Vishvavidyalaya, Haridwar - 249404, India

3- Department of Biochemistry, S Bhagwan singh (PG) Institute of Biomedical Sciences and Research, Balawala, Dehradun - 248161, India

The Indians in China and North America have used various plants as herbal medicines from ancient times. Liverworts have been used as drugs and some species have been recognized as having effective cures The surfaces of some liverworts are similar to those of the cross sections of animal livers and due to his property they were believed to cure ailments of liver, remove yellow jaundice and hepatitis and an external cure to reduce inflammation In India the villagers of the north-west Himalaya used Marchantia polymorpha and M palmata as medicines for boils and abscess

In the present study, the extracts of some selected bryophytes were screened using different solvent system (water, acetone and ethanol) against the growth of Escherichia coli (causing Urinary Tract Infection), Salmonella typhi (causing typhoid), Candida albicans (causing subcutaneous infection like eye ulcer), Aspergillus nigar (causing amoebiosis) as test pathogens for the presewnce of antimicrobial properties, out of which three (Conocephalum conicum, M polymorpha and plagiochasma appendicultum) displayed good response against the pathogens Acetonic extracts were found to be much effective than ethnolic and aqueons extracts The bacterial pathogens were recorded more sensitive than fungal and protozoan pathogens

VEDIC AURA ENERGY - A SOURCE OF KNOWLEDGE

Dr M V S Murthy

Ph.d, M Tech, M Sc (Engg) d i i m

Lee grand appts road no2,

west marredpally

secunderabad (a p) India cell 9440596188

The AURA is the light that we can see as been halos (Parama Jyoti) abounds the heads of all deities of any Religion It is mentioned in the 11th chapter of Atharva Veda as Diya Kanti Valaya Letter a Russian Scientist Kirmilian photographed and named it as Aura in 1939 It is found in our research that Aura is unlike any energy in the Universe, Aura is a multiple combination of Light, magnetic and Electrical Energy and it is more effective

As a Rtd Scientist, an instrumental named Universal Sensors was invented to Measure and quantify the aura Energy, in Manner's (m') scale in 1998 It works on Frequency as every matter has its aura individual frequencies (Robert Milicon) It has helped us to explore, identify, detect any animate and inanimate matter in the universe The following applications have been done Its applications have been tested in the following fields of science and it proves its superiority above the present science

Medical Science It instantly scans and identify any diseases of life (Human, Animals, Agriculture), Searches suitable medicine for any disease in the existing therapies (Ayurveda, Unani, Homeo, Allopathy or alternative etc) Searches ness medicines for any unknown diseases and its sources and origin (Saars) does healing Earth Sciences It can identify rocks Minerals Ground water, Oil etc including extension and depth Vastu & Human Biology Only structural Vastu is being done as per earlier literatures It should be done on existing Radiation Energies Symmetry and numerology also Suggest Remedial measures to neutralize negative energies in plots of residential business & industry

Police & Military science A sample of Hair, stain, Finger print Foot print Photograph Sweat Hand writing, Voiced tape is needed to identify culprits attends Ballistic work works as a police dog long range metallic detector & detects Harmful Chemicals It doe Global-positioning system (G P S)

Science in Vedic Rituals Energy levels have been published on Meditation Measuring Chakra energies, Energies has been calculated on different Tantra (agnihotra), mantra yantras etc

DIFFERENT DIMENSION OF VEDIC MATHEMATICS

Dr P K Srivatsa

Management and Software Consultant & Trainer

Bangalore, India

- (Mahaviracharya GSS I 16)

"In all the worldly life or worldly matters, or even in the religious things, whatever be the dealings, everywhere enumeration is essential Why say much? In the entire 3 worlds, living or non-living, whatever is transacted, that cannot be without mathematics"

It is a well known fact that India has a glories scientific and mathematical heritage dating back to the vedic era In spite of lot of research conducted on this literature much needs to be done in understanding and appreciating them in a proper perspective It is really unfortunate that the wonderful discoveries made by our Ancient Indian Seers and Scientists have not got due regards, which they richly deserve and there is a lack of application of the same Presently, our aim is to create awareness

about the different dimension of mathematical concepts in the Vedic literature which vary from microcosm to macrocosm The Rishis of your perceived Mathematics in nature and expressed many of the profound truths in a subtle mathematical way apart from constructing slakes, which were lyrically beautiful, but mathematically precise This calls for a profound and holistic understanding of the subjects In this paper,·an integrated approach is made to bring the different dimensions of mathematics like Sutras, Slakes, Subtle codifications (even when dealing with astronomical concepts), the concept of Yantra, Mantra and Tantra Bandas, the concept of coordinal numbers, beautiful geometric patterns as enunciated in Sulba Sutras, numbers and entities, Ankakshara etc Why say much, we find the mathematics being applied in worship also, in the form of the Yantra and Mantra Bandhas (e g , the celebrated Sri Yantra, Sudarshana Yantra, Gayatri Yantra etc) which can be termed as the Hardware and the Software in the Adhyathmic dimension

KARANJA (PONGAMIA PINNATA)· A MIRACULOUS MEDICINAL VEDIC PLANT

Ram Kr Paliwal*, Pawan Kumar Sagar*** and Navneet**

* Department of Chemestry (Faculty of Science)

** Department of Botany and Microbiology (Faculty of Science)

Gurukul Kangri University Haridwar (Uttranchal) - 249404

*** Drug Testing Laborite, Rishikul Govt Ayurvedic Pharmacy, Haridwar – 249402 U A

Ayurvedic, which is considered as an "Upveda", is basically a part of "Atharvaveda" it's most developed hopeblism of the world The use of Pongamia pinnata (vent) as a medicine is a very old tradition in India A vast description of plants having medicinal values is available in Ayurveda Number of diseases for which modern medicine ha no cure viz medicinally it is applied scabies, herpes, leucoderma and other cutaneous diseases treated of karanja seeds Leaves and stems juice of karanja medicinally used for cleaning foul ulcers, gonorrhea, flat ulcers and Beri-beri, Leprosy, Flower juice used to9 treatment of diabetes Recent investigation

Fresh extract of karanja root found anti cancer compounds Karanja root found anti cancer compounds Karanja has been used extensively by our Rishis and practioners of Ayurveda since time immemorial

"THE VEDIC SAGE OF MAURITIUS"

Dr P S Roodurmun

Mahatma Gandhi Institute

Moka Mourtitus

When the Indians left for Mauritius about two centuries ago, one of the most precious wealth they carried with them was the Vedic Dharma - be it in the form of Satyartha Prakash or Ramacaritamanasa or Sukhasagara - all in the forms of handwritten manuscripts - specimens of which are still preserved in the Indian diasporic archives of Mauritius The few pandits who also went along with them kept alive this light of Vedic Dharma through recitation of Vedic mantras on the occasion of religious ceremonies and festivals though hardly any one could understand their meaning on their

purport They were assisted in this task by the missionary Swamis who started visiting the island country afterwards on frequent intervals But an actual boost was given to Vedic dharma in Mauritius when Chiranjiva Bhardwaj went there at the behest of Mahatma Gandhi who had realized the urgency of sending Hindu missionaries over there with a view to protecting, preserving and promoting vedic thought and practices there among the Indian Community

MEDICINE VANASPATI IN THE RGVEDA

Prof Satya Pal Narang

Head, Department of Indology

French Institute of Pondicherry, 11

Saint Louis Street, Post Box,33,

Pondicherry-605001

Vedic etuis had not only connection with nature, but had a serious observation of the flora particularly the trees, their ingredients, origin, sources purpose, utility and observation regarding their properties and classification Later it developed it as a science in the Vedic literature and works of Ayurveda and Vckuayuraveda

The object of this paper is to analyze the material of Vanaspati available in the RV interpret it and to classify it in various categories along with the history of the material and some comparative thoughts there of Relation of Vanaspati with the Sun, fire Apas Avins and Vachaspati is available in the RV Their origin is from Divas, Pthival and antariksa They are generated by swap and clouds Batter field was the place of their utility to heal up the warrior through various medicines of the trees which was called Vanaspati Soma was their king

VEDIC MARRIAGE: A SOUTHEAST ASIAN PERPECTIVE

Dr Kanta Bhatia,

Reader dept of Sanskrit,

Bharati College University of Delhi

Vedas are the origin of all religions So the marriage ceremony also has its roots in the Vedas Although the ceremony like Sagai (fixing of marriage) Panigrahan, Kanyadaan, Mangal phere etc have not been mentioned in the Vedas by names, but the mantras describing these ceremonies as are described in Dhamasutras and Dharmashastras in details with proper sequence This paper is an -depth study of the marriage traditions prevalent in India and other Southeast Asian countries like Nepal, China, Srilanka and Islamic countries We also take a look at how Vedas mantras are referred to as the origin of these traditions

ANGIRAAKALPA: A STUDY

Mrs Pranati Mishra (mahapatra)

c/o Dr Harekrushna Mishra

Visvs Bharatı, Santınıketan

Angırasakalpa a kalpal Tantra text belong to the Paıppalada tradıtıon of Atharvaveda ıs a pecuhar text of the tradıtıon. Thıs text ıs only avaılable ın Manuscrıpt lıbrarıes lıke Orıssa State Museum, Parıja Lıbrary of Utkala Unıversıty and Sarasvatıbhavan Lıbrary of Sampurnananda Sanskrıt Unıversıty of Varanası There are also some other personal collectıons of scholars and rıtualıstıc Pandıts of mayurbhanj and Purı localıtıes where Paıpaladıns are yet stayıng with theır unturned tradıtıon Here ın thıs paper a humble attempt has been taken to trace out ıts Paıpalada orıgın and subject matters as well

VARNA, CASTE AND SOCIAL STRATIFICATION IN THE LIGHT OF VEDAS

Dr Dınesh Prasad Salclanı

Reader, Hıstory & --

H N B Unıversıty

Srı Nagar Uttranchal

The present paper proposes to study the real nature of the Varna system, dıfference between Varna and caste and socıal stratıfıcatıon ın the Vedıc socıety Many Indıan and European scholars of ancıent Indıan hıstory have wrıtten a lot on the theme In most of the hıstorıcal studıes the emphasıs has been to trace out the roots of the present day evıls lıke untouchabılıty ın the Vedıc Verna system The Vedıc Varna system never speaks about untouchabılıty, dıscrımınatıon agaınst any Varna or Varna fixatıon by bırth Vedıc Varna system was based on the prıncıpal of dıvısıon of labor and not on the basıs of bırth In thıs system ıf a shudra attaıns the wısdom of a Brahmın he can become a Brahmın and vıce versa Moreover nobody was superıor or ınferıor sınce no work ıs smaller or bıgger

There are many slakes ın Vedas, whıch vındıcate our poınt Therefore, hıstorıans should not be bıased whıle pıckıng certaın reference for justıfyıng theır versıon rather all references should be examıned wıthout lovıng or hatıng the past

A NOVEL MODERN MATHEMATICAL APPROACH TO PATTERN RECOGNITION IN VEDIC HYMNS AND GANDHARVA

Prof Dr P K Srımanı

P G Department of Mathematıcs

Central College, Bangalore Unıversıty

Bangalore - 560001 Indıa

In thıs paper, a detaıled ınvestıgatıon of the pattern recognıtıon ın Vedıc Hymns and Ghandharva Veda ıs carrıed out by applyıng the elementary as well as advance mathematıcal concepts The embedded patterns wıth regard to the structure, theory and theme are unfolded through thıs approach at dıfferent levels ı e from basıcs to the advanced

Musıc, also known as the Ghandharva Veda, was gıven the status of an Upveda or subsıdıary of Samaveda, forms an ıntegral part or Indıa's culture and herıtage Indıan Musıc wıth ıts wonderful

structure system, approach, variety is the greatest living system of Music in the world Music - "the Art par excellence" is considered as divine and worshipped from the bygone days as the life energy of all beings The Veda mantras and the divine music of Samaveda are in fact very powerful, vitalizing as well as catalytic agents The fascinating world of Music has given immense pleasure to millions of listeners from the time immemorial However, it is not fully understand from a scientific angle It is something remarkable that the three basic ingredients of Indian classical music viz , Ragam, Talam and Sahitya involve many mathematical aspects Therefore, this necessitates a scientific study of the Ghandharva Veda in its various dimensions

GLIMPSIS OF MUSIC IN ATHARVAVEDA

Prof Sushma Kulshrestha

Hony Director

Kalidasa Academy Of Sanskrit Music & Fine Arts

Member, faculty of Arts

University Of Delhi

Music and dance occupy a prominent place in fine arts Gitam vadyam tatha nrtyam trayam sangitamucyate Music includes music vocal, music instrumental and dance All these three are described and referred to at a number of places in Atharvaveda on different occasions as well as in the usage of similar and metaphors In this paper, an attempt has been made to being forth a picture of the trio of music prevalent in the times of the Atharvaveda

GEMS OF MUSIC IN RGVEDA

Abha Kulshreshtha

Research Scholar

Deptt Of Buddhist Studies

University of Delhi

Among the Sixty-four arts propounded by Sage Vatsyayana in his world-acclaimed treatise Kamasutra, music occupies the foremost position In the list of Vatsyayana, there are five arts that are pertaining to music In the present paper, an attempt has been made to bring forth the scenario of music prevalent in the Rgvedic period

RESONANCE OF VEDIC MATHEMATICS

Dr S L Singh,

Prof & Principal (Retd) , Gurukul Kangri University

Haridwar - 249404

This talk intends to identify various impact areas of mathematics of Vedic tradition

RGVEDIYA-MANTRESU DEVANAM UTPATTI VICARAH

Dr Harekrushna Mishra

Lecturer, Dept of Sanskrit, Pali & Prakrit

Vidya Bhavana, Visva Bharati

Santiniketan - 731235 (W B)

dyotanatmakah devah yadyapi rcayameva ekosadviprah iti vahucareitah tathpi tesam vahutvam srsti-prakarameva vedesu vedottara-vaidikesu laukikesvapi granthesu vahudha samupalabhyate / prastutesmin sodhapravandhe rkvedantargatanam mantranam pramanikatvena grahanam bhavisyati ityayam pravandhapranmukhah

ANGIRASAKALPA : A STUDY

Mrs Pranati Mishra (Mahapatra)

C/o Dr Harekrushna Mishra

Visvs Bharati, Santiniketan

Angirasakalpa a kalpal Tantra text belong to the paippalada tradition of Atharvaveda is a peculiar text of the tradition This text is only available in Manuscript libraries like Orissa State Museum, Parija Library of Utkala University and Sarasvatibhavan Library of Sampurnananda Sanskrit University of Varanasi There are also some other personal collections of scholars and ritualistic Pandits of Mayurbhanj and Puri localities where paipaladins are yet staying with their unturned tradition Here in this paper a humble attempt has been taken to trace out its Paipalada origin and subject matters as well

VEDIC MATHEMATICS AND THE CONCEPT OF GENERALIZED FUNCTIONS.

G S Panday

Indian Institute of Advanced Study,

Rastrapati Nivas

Shimla – 171005, India

Ever since the dawn of Vedic civilization on this planet mathematic has been assigned the highest position among all disciplines During the early Vedic age the number system and the basic arithmetical operations were fairly developed Even the idea of fractions was known to early Vedic scholars Also, the Vedic rishis were familiar with the ideas of zero and infinity both, which paved the way for the development of the celebrated Vedanta philosophy

Very recently, the theory of generalized functions has provided a great impetus for the progress of Pure and Applied Mathematics, Mathematical Physics and Engineering Sciences In the proposed talk our aim is to trace the origin of generalized functions in Vedic literature and also to highest its influence on the future course of modern mathematics and mathematical science

ITS IMPOSSIBLE FOR SCIENCE TO UNCOVER THE MYSTERY OF CONSCIOUSNESS

R Brahmachari

* Reader, Department of Applied Physics,

University of Calcutta

According to monism of Advaita Vedanta, the ultimate reality of this creation is the Divine Cosmic Consciousness Brahman and hence, not only every individual atom or molecules, but the subatomic particles are also conscious So it becomes very easy for a vedantist, Paramatman to a Hindu yogi and God Almighty to a Hindu devotee A Hindu believes that the said Supreme Lord Brahman is beyond our sensual perception and can only be perceived with ananya bhakti or absolute devotion and not with the crude scientific instruments

Most of the scientists agree that it is not possible to make a machine, intelligent enough to understand its own driving mechanism So, it can be said that it is not possible for the human machine to understand its ultimate driving force, the consciousness To explain this point, Rishi Yajnavalkya says to his wife Maitreyi, "With what would you understand It (the Brahman), by whom you understand everything?"

"VEDIC SACRIFICE IN VEDIC CULTURE"

Rajul Bhardwaj

Lecturer & H O D

Doon Institute Of Management and Reasearch

Shyyampur, Rishikesh (Dehradun)

The present paper attempts to discuss the nature and role of Vedic sacrifice in Vedic literature Issues of Vedic practices will be discussed along with their purpose, in so taking into account the historical approach to sacrifices/ offering (yajna/agnihotra/homa/ agnithoma/havan) and its evolution in time The period covered is from the early era of Vedic literatures known as Samhitas, until the later era dominated by the Upanishads Issues of yajna practices in the present days will be addressed along with their relevance

REMARKABLE CONTRIBUTIONS OF THE VEDAS AND VEDIC LITERATURE TO THE WORLD OF MATHMATICS

Dr V Madhukar Mallayya

ragom, T C 25 / 1895,

Meltra - C 27, B T R Lane

Near Gandhari Amman Temple,

trivandrum - 695001, Kerala

The Vedas are the earliest documents of Indian thought and are the foundations of Indian culture Several casual references to various important mathematical ideas found in the Vedas are now current everywhere in the world and they have rendered untold service to the progress of the science of numerals The modern world is highly indebted to the Vedas for their everlasting contribution of the highly ingenious concept of decimal system of enumeration Invention of this decimal system is an important landmark in the history and development of the science of computations Several Vedic references to progress sequences are also found The Chandasutra, Vedangajyotisa, Taittiriya samhita, Satapatha Brahmana, Sulba sutras etc have also contributed their invaluable share to the development of mathematics Among the most remarkable contribution of the vedic literature to the world of mathematics mention may be made of the highly eulogized rule of proportion having wide applications in the science of computations (Golden rule as it is called in the west because it transcends all other rules in arithmetic just as gold transcends all other metals), the theorem of hypotenuse (the so called Pythagoras theorem of modern mathematics) having vast influence on the whole of geometry and an various contractions, the basic concept of permutations and combination, meruprastara and matrameru (pascal,s triangle and Fibonacci sequence of modern mathematics) and so on. Spotlighting the the torch of our investigations on the mathematical contents of the Vedas and the Vedic literature the old mathematical knowledge in its depth and fullness can be recovered from them and restated in modern terms in a faithful and intelligible manner Such original studies will arouse the interests of various scholars in the mathematical insights and d inspirations of the ancient Indian mind

MOTIVATION INSIDE OUT - VEDIC APPROACH FOR MODERN PROBLEM

Dr, Mala Kapadia

Our history of last two millenniums is forcing humankind to pause and review where we are going It is essential for our own survival on levels personal, social and business to understand life from various perspectives The only power that will ensure success is personal power Emotional Empowerment is knowing, choosing & living with Respect, Rhythm, & Responsibility These are the new 3 R's for our success in next millennium They form the foundation of the Self-science vedas are known as Atman Veda or self-science and deal with tools and techniques of empowerment Psychotherapy in Veda is ancient yet Universal and hence effective in modern times

personal excellence is not only overcoming limitations, it means expanding and achieving higher potentials within This requires emotional empowerment Science of emotions is emerging with a renewed understanding as we expand our paradigms Vedas are the science of Manu or mind and the art of healthy and happy living They are also known as Brahma Veda or Amrita Veda for the same reasons

The paper deals with challenges in the field of education, psychology and management The solutions from Vedic wisdom are narrated in way that shows practical application of our sciences

IMPACT OF VEDIC CULTURE & RELIGION IN THE SOCIETY THROUGH RAMAYANA

Smt N K Prasanna Nayaki, B Sc , M A

Lecturer in Sanskrit, Government Pre-University College

Nagamangala - 571432, Karnataka

Ramayana is known to be one of the most accepted documents of reference in Hindu Religion and Philosophy and has never been contradicted for its completeness Ramayana is published widely in different forms The personalities in the Ramayana, both the heroic and non-heroic are described to be highly learned Vedic Scholars, thereby open for a critical review for their social and behavioral patterns It is possible to trace a large fraction of the society being ignorant of the contents of Vedas and Upanishads but such Indian sections, either regionally or in the time-frame, are hardly traceable without the Ramayana have behavioral consistency compared the roles of many other epics, as could be seen between the roles of Rama and Krishna, making Ramayana more easily adoptable by a simple thinking mind- a strong reason for its wide acceptability in the society With this background that the Indian society has a strong signature of Ramayana, with its leading characters being time-proven role models for the society, an analysis of these characters and the influence of the Vedic Culture and religion on their behaviors give an overview as to how the Vedic Culture has influenced the current society, in spite of the scientific advancements, modernization and the western cultural mix-ups

ELEMENTS OF LITRARY CRITICISM IN THE RGVEDASAMHITA

Dr N K Sundareswaran*

* Sr lecturer in Sanskrit sahitya

Sree Sankarachraya University of Sanskrit

Kalady Kerala - 683574

A major chunk of Rgveda samhita is , no doubt, a collection of songs in praise of gods or glorified natural powers But besides these and other ritualistic and sacrificial songs we get a very good number of literary compositions of commendable merit To put it other way round the unification element in the diversity of thought is this poetic spirit

Rgvedic seers were not only good poets but they had developed their own ideas of literacy criticism also We can easily trace the roots of at least some of later literacy theories in the Rgveda samhita

The present paper aims at an assessment of such ideas of literary criticism in the Rgveda samhita with special reference to the Jnanasukta

VEDIC YOGNA - PATH FOR COSMIC HARMONY & BLISS

Balvir Talwar, Dy General Manager (Business Excellence)

BHEL, Haridwar

According to Bhagawad Gita, consciously or sub-conciously, every living being seeks bliss Man is Existence- Knowledge-Bliss Therefore, Bliss is the highest and most dominant motivation in all-human affairs Man is continuously prone to seek infinite, stable, independent Anand within himself Infinite Anand cannot accumulates through Pravratti or though possession This requires Nivratti or renunciation, renunciation of selfish interests and only working for the sake of corporation, society, and mankind From Rigveda to Bhagawad Gita, the Indian concept of sacrifice for the Bliss has undergone a radical transformation from ritualistic external sacrifices for the sake of mundane goals to that of intrinsic inner psychological offerings of one's being though work to supreme power

and God Like any wise moral philosopher, Sri Krishna insists upon the purity of motive even in the sacrifice The sacrifice performed as duty, with no desire for its fruits (nishkama Karma) is highest sacrifice and is Yajna

In this paper, a new outlook to concept of Yajna has been attempted by taking clues from Vedic Philosophy In essence, Yajna is following the law of sacrifice and service, values based decision making, effective inspirational communication and focus on improvement in the quality of social life Yajna comprises those actions for the earning money (Artha) and fulfilling the desires (Kama) which are based on values (Dharma) with the salvation (Moksha) as the ultimate goal in personal, corporate and social life

THE PLACE OF VEDA IN ASSAMESE

Gokulendra Narayan Deva Gosswami, AES

K K H Govt Sanskrit College

Guwahati 781 014 Assam, India

The Vedas have the impact and influence on every corner of India The influence of the Vedas, from time to time, on the life of the people may be observed

The impact of two Vedas on the Assamese literature (ancient) can be easily traced In the Sri Sri krsnalila kirttana by Bhattadeva (1558-1638 A D), kirttana Ghosa by Sankaradeva (1449-1569 A D) the obeisance to the Vedas (vedastuti) is included with high esteem In this paper an attempt has been made to throw a light on the topic

THE CONCEPT OF LAW IN VEDAS DR. AJAYA KRISHNA VISHVESHA

LL M , Ph.D , P C S (J) Chief Judical magistrate,

Rampur

In ancient India, the jurisprudential conceptions originated and evolved from the Vedas because Vedas are the eternal and unlimited sources not only of law but also of every sciences concept social and legal etc because -

VEDA SMRITI SADACHARA SWASYA CA PRIYAMATMANH ETAD CA TURVIDHI PRAHU SAKASAD SHARMASYA LAKSANAM - MANU

Not only the Manu Dharmashastra but all the Dharmashastras also recognized that -

1- Vedas are the sources of law, therefore, the concept of law in Vedas is self established as it is known to all the persons having the knowledge of Veda and pharmashastra

the Dharma in ancient Indian jurisprudence being Vedamilak, i e , having its basis in the Veda is both inviolable and supreme We find that the modern jurisprudence is not certain about the answer to the question what is Law? There is no agreement amongst jurists on the answer to this question in the west, such problem did not arise before the ancient Indian jurists because all Law Codes are authoritatrve as they based on Vedas This fact proves that the concept of law emanates from the Vedas and it was accepted in this since by all the ancient Indian thinkers

The Vedic learning was forgotten and neglected by Indians as they began to look upon the west for guidance The result was an it ought to have been the humiliation a sufferings of slavery became their destiny During overlook from has also the character of Vedic Rta the concept of Dharma

overtook from has also the character of inviolability and supremacy It is really the evidence of the advancement of the ancient Indian jurisprudence that the Dharma has been spoken of as supreme even the state or the King yielded to the authority of the Dharma During Dharmashastra period Dharma occupied the same sanctity as the Rta in the Vedic literature In BRHADARANYAKOPANISAD Dharma resemble the concept of Rta, meaning supremacy and inviolability of Law Even a week man can aspire to score victory over a strong man with the help of the king Dharma is truth, therefore, one who speaks truth, speaks Dharma and if one speaks Dharma one speaks truth.

CONTRIBUTION OF THE REGVEDIC RTA TO THE IDEA OF JUSTICE

Prof S D Sharma

M A , LL M , Ph D

Prof - Chairman and Dean, Law Faculty,

Kuruksgetra University, Kurukshetra (RTD)

The basis of justice in ancient Indian legal philosophy is inherent in the RigVedic Rta Though all the hymns which contain the term Rta are equally importance and convey the idea of supremacy of law and justice, but here due to paucity of space only some of those are referred to which have been studied by the occidental and oriental thinkers in their studies on law and justice

In the cycle of the appearance and disappearance of the universe Rta is the first to appear in order to sustain the universe The Veda says

RTAMCASATYAM CABHT DHAYAITA PASODHIYAHJAYATA

TATO RATROJAYATA TATAH SAMUDRO ARNVAH - Rg x, 190 1

"From fervor to its height Eternal Law and truth were born " the gods approached the ways of Holu Law there was a gathering vast as heaven itself The waters feed with praise the growing babe born nobly in the womb, the seat of law - Rg 1 65,3,4, Rgveda describes Rta in various ways, it is very different to find out the correct reddening of an Rgveda The Rta has been so frequently used in different contexts that it gives different meanings here we can take some of the most important texts for our study These are the texts some of which have been heavily relied upon by the eminent scholars "Vishnu is described the embryo of Rta " - Rg 1 156 3 "Mitra and Varuna have obtained their mighty powers though the Rta " - Rg 1,2,8

MANAGEMENT" - THE VEDIC DIMENSION

Dr Rajat Agrawal

Lecturer, Faculty of Engineering & Technology

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar

Management, which is practice and taught in classroom now a day, is borrowed from West Present management scholars suggest four main functions of management to achieve the objective of an enterprise of an enterprise These are planning, organizing, leading and controlling The discussion of principles of management in west is base on these four functions of management

Management is that area so study which is strongly influenced by social system of a country in different parts of globe different countries are developing management systems according to their

culture Japanese systems of management, Swedish system of management are example of this development This is true because priorities of different cultures are different At India our priorities are monitored through Purushartha Chatushtaya Four dimensions of Purushartha Chatushtaya i e Dharna, Artha, Kama and Moksha give the right path for progress in life Apart from this there are many beautiful quotations available in Vedic scriptures which can help us in developing as Indian model of Management based on vedic culture Present paper discusses some of the traits of management from vedic scriptures

VEDIC SURGICAL SKI9LL OF ANCIENT INDIA

Dr S K Joshi

Reader / Head of Deptt, Surgery

Govt Ayurvedic College

Gurukul Kangri, Haridwar

Ayurveda, the science of life and acquaintance of existence, having the same aim of relieving the suffering it serving since immortal The surgery is one of the most important and difficult fields of Medical science In eight disciplines of Ayurveda the Shalya - Tantra is significant and widely eeriest in those diseases, which nacre not curable by the medicines Ancient Indian Surgery exists in India from the Vedic period In ancient India Surgery developed along with other branches of Ayurveda The other disciplines also look for the assistance of salya-tantra in many places The Knowledge of surgery is present in different places of all four Vedas The Vedas are considered as knowledge par excellence handed down from generation to generation by a unique method of oral communication Thaw only available oldest treatise of surgical skill in the world is Susruta samhita Susruta Samhita is a manuscript, which covers all the aspect of medical science

It is the Susruta samhita that we first come across systemic methods of arranging the surgical know-how of the older surgeons, and of collecting the scattered information of the science from the gigantic range of the Vedic literature In present research paper the treasure of vedic literature is elaborated in reference to surgical skill

CONCEPT OF YAGNA & ITS IMPACT

Prof Sudha Dubey

Department of Zoology

Holkar Science P G College

Indore (MP) - 452001

The present paper deals with the Scientific aspects of yajna and ways to purify the environment by yajna It also describes multiple positive consequences such as Soothing and energizing the minds of people around vigorous medicinal effects by inhalation by Yajna fumes / Vapors / gases, removal of germs, bacteria, viruses and toxicity in the surrounding area and purification of the environment The gross as well as the Subtle energy of the mantra and yajna together are Said to have significant effect on nature's energy fields

VAARI: THE WATER

Dr D R.Khanna and Dr R. Bhutiani

Dept of Zoology & Environmental Science

Gurukul Kangri University, Haridwar

The paper deals with the water in Vedas, its importance and role in human health, besides this the study also reveals the types and purification of water according to vedas in comparison to modern science

RESOLVING WORK-FAMILY CONFLICT THE VEDANTIC PERSPECTIVE IN INDIAN WAY

* Dr V K Singh,
* Incharge FMS GKU Hardwar

* Mr Sudhansu Joshi
* Student MBF GKU Hardwar

Work conflict is the extent to which an individual experiences incompatiable role pressure within the work domain and family conflict as the extent to which imcompatible role pressure are experienced within the family

The western thought and management practical have influenced the socio-cultural milieu in India A growing need is felt in rediscovering our cultural roots and evolving a style of management which is in congruence with our own value systems

This papers discuss the western strategies for resolving work-family conflict vis a-vis to the Indian way i e through vedentic perspective (Indian culture and Indian ethos)

VEDIC MANAGEMENT - A CENTER OF ENORMOUS CREATIVITY

Dr S P Singh*
*seniour Lecturer Faculty of Management Studies
Gurukula Kangri University Hardwar

Numerous theories concepts and models of management have been propounded in the years gone but they all proved to be ephemeral For management to be successful and free from ENCUMBRANCES it has to be systematic scientific and must conform to the modern science For anything to be in conformity modern science it must be Vedic For management to be Vedic it must be based on Vedic Consciousness Any other system of management in the world today not is as perfect is the Vedic System of Management because all systems of management derive their policies and prodedures from the theories of economy production and sales but they are not fully in accord with all the Laws of Nature that manage the order and evolution in the universe This is the reason that all the existing systems of management are of instable and unsatisfactory Only Vedic Management has that unlimited broad base of the total organizing power of Natural Law from where it draws upon the infinite creativity of the infinite orgaizing power of the holistic value of Natural Law and also simultaneously draws upon the enormous creativity of the specific Laws of Nature The Vedic Consciousness of the manager is the basis of Vedic Management which organizes and maintains the universe in perfect order and harmony as well as supports the progress of everything and everyone singly and collectively in the process of evolution

ASSESSMENT OF ELEMENTS IN NYCTANTHES ARBOR-TRISTIS LINN (HARSINGAR)

Shri Krishana Pramod Kumar and Navneet*
Department of Chemistry
*Department of Botony and microbiology
Gurukula Kangri University Hardwar 249404

The traditional use of plants in India is based on experience. Although much more work is needed to isolate the organic compounds in medicinal plants. Negligible attention has been made towards inorganic elements (essential and trace). Traditional indigenous system of medicine is based on the hypothesis that diseases are a manifestation of an imblance of elements in the body. In the present investigation minerals and elements (Na, K, Ca, Mg, Fe, Cu, Mn and Co) in various parts (leaves, flowers, stem,bark, root and seeds) of the *Nyctanthes arbor-tristis* have been determined using inductive coupled plasma (I.C.P.), atomic absorption spectroscopy (A.A.S.) and flame photometry (F.P.M.).

The highest concentration of sodium (5275 ppm), iron (16595 ppm) and cobalt (177 ppm) has been found in root, calcium (228659 ppm) and magnesium (124227 ppm) in leaves, potassium (288695 ppm) in flowers, mananes (523 ppm) in bark, copper (415 ppm) in seeds of *Nyctanthes arbortristis*.

Keywords - I.C.P., A.A.S. and F.P.M., elements, traditional medicinal plant

HEPATO-PROTECTIVE ACTIVITY OF HERBO MINERAL DRUG

Dr. Kaushal Kumar
Dr. Vinod Upadhyay
Kumlesh Kumar
Nitin Jain
Ravindra Kumar Joshi

In this regard this traditional herbo mineral drug has advantage of using subtances with which the system is already familiar. There is a wide scope of such preparation for global implication in Hepatic disorder.

ओ३म्

अन्ताराष्ट्रिय वैदिक सम्मेलन

की गठित समितियाँ

संख्या	समिति नाम	सदस्य
1	आवास समिति	डॉ0 चन्द्रपाल खोखर-सयोजक
		डॉ रामकुमार डागर
		डॉ0 पकज मदान-सह सयोजक
		डॉ0 बी0पी0 चमोला
		डॉ0 मनोज मनोविज्ञान
		डॉ0 सुरेन्द्र कुमार (योग)
2	स्मारिका	**स्मारिका सम्पादन समिति**
	(Souviner)	प्रो0 महावीर अग्रवाल
		प्रो0 ज्ञानप्रकाश शास्त्री
		डॉ0 श्रीकृष्ण
		डॉ0 रजत अग्रवाल
		डॉ0 दीनदयाल वेदालकार
3	भोजन प्रबन्ध समिति	प्रो0 महिपाल सिह
		डॉ0 मनुदेव बन्धु
		डॉ0 गगा प्रसाद गुप्ता
		डॉ0 ब्रह्मदव
		डॉ0 सोहनपाल आर्य
4	टैन्ट व्यवस्था एव विश्वविद्यालय भवन सज्जा	श्री करतार सिह
		डॉ0 प्रभात
5	परिवहन समिति	डॉ0 पी0पी0 पाठक (सयोजक)
		डॉ0 वी0के0सिह
		डॉ0 लक्ष्मी प्रसाद पुरोहित
		डॉ0 राजकुमार (कम्प्यूटर)
		श्री विपुल शर्मा **(Engg)**
		डॉ0 दीनदयाल वेदालकार
6 (अ)	कार्यालय व्यवस्थापक एव पजीकरण समिति	डॉ0 प्रभाकर प्रधान
		डॉ0 नवनीत

	विश्वविद्यालय	डॉ0 रजत अग्रवाल
		डॉ0 देवेन्द्र गुप्ता
		डॉ0 मनोज कुमार
		डॉ0 राजीव शर्मा
		डॉ0 प्रदीप कुमार **(Project Fellow)**
		श्री कुलदीप कुमार **(Computer Operator)**
		श्री मनोज कुमार (सस्कृत भवन)
(ब)	कार्यालय (महाजन भवन)	डॉ0 दिनेश भट्ट
		डॉ0 एम0एम0 तिवारी
		डॉ0 मनोज कुमार (गणित)
		डॉ0 भारत वेदालकार
7	सम्मेलन कक्ष सत्र सचालन एव टेक्निकल सेशन समिति	डॉ0 कौशल कुमार
		डॉ रणधीर सिह
		डॉ दिनेश चन्द्र शास्त्री
		डॉ दिनेश भट्ट
		डॉ आर सी दुबे
		डॉ पी सी जोशी
		डॉ वी के सिह
		डॉ वागीश पालीवाल
		डॉ डी एम मलिक
		डॉ शशिकान्त
		डॉ मयक अग्रवाल
8	विश्वविद्यालय भवन मच अन्य सज्जा पुस्तक प्रदर्शनी एव दुकान आवटन समिति	डॉ जगदीश विद्यालकार
		डॉ देवराज खन्ना
		डॉ प्रभात सेगर
		डॉ नवनीत
		डॉ एम एम तिवारी
9	प्रेस समिति	श्री कमलकान्त बुधकर
		डॉ प्रदीप जोशी
		श्री हेमन्त आत्रेय
		श्री पकज कौशिक (प्रौढ शिक्षा)
		श्री कुलभूषण
10	यज्ञ समिति	प्रो ज्ञानप्रकाश शास्त्री
		डॉ सत्यदेव निगमालकार
		डॉ प्रभात सेगर

		डॉ योगेश
		डॉ भारत वेदालकार
11	सास्कृतिक समिति	डॉ अम्बुज शर्मा
	एव ध्वनि विस्तार	डॉ राकेश शर्मा
	समिति	शशिकान्त वशिष्ठ
		डॉ वीणा विश्नोई
12	योगधाम आवास	श्री रमेश मुनि
	समिति	श्री मुकेश मेधार्थी
		श्री सदीप
		श्री रोहित
		श्री सदीप शर्मा
		श्री वेदप्रकाश
13	प्राथमिक चिकित्सा	डॉ सुनील जोशी (आयुर्वेद कॉलेज)
	समिति	एव उनके सहयोगी स्टाफ
14	सुरक्षा व्यवस्था	सरदार करतार सिह
	समिति	एव उनके सहयोगी
15	पुरस्कार एव सम्मान	प्रो0 महावीर अग्रवाल
	व्यवस्था समिति	डॉ प्रभात सेगर
16	विदेशी अतिथि	प्रो डी के माहेश्वरी
	स्वागत व व्यवस्था	डॉ एस पी सिह
	समिति	डॉ वी के सिह
17	स्वागत समिति	प्रो0 भारत भूषण विद्यालकार
		प्रो मनुदेव बन्धु
		डॉ रूपकिशोर शास्त्री
		डॉ श्रीकृष्ण
		डॉ दिनेश चन्द्र शास्त्री

प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री
आचार्य एव उपकुलपति



हरिद्वार में पधारने पर नगर पालिका हरिद्वार की ओर से अन्ताराष्ट्रिय वेद सम्मेलन के सभी प्रतिभागियों का स्वागत है।

नगरपालिका परिषद, हरिद्वार की उपलब्धियाँ

(बोर्ड गठन फरवरी-2003 के पश्चात्)

- 11वे वित्त आयोग के अन्तर्गत शासन से प्राप्त रु0 18178 लाख एव पालिका अशदान रु0 90 89लाख कुल रु0 272 67 लाख की लागत से 33,800 मीटर लम्बी कुल 267 सडको का निर्माण किया गया।
- अवस्थापना निधि के अन्तर्गत कुल रु0 154 30 लाख की लागत से कुल 1736 मीटर लम्बी 98 सडको का निर्माण किया गया।
- मलिन बस्ती योजना के अन्तर्गत रु0 100 00 लाख की लागत से 09 मलिन बस्तियो मे सडको एव नालियो का निर्माण कार्य किया गया।
- अर्द्धकुम्भ-मेला अनुदान से रु0 372 95 लाख की लागत से 16601 मीटर लम्बी 78 सडको के निर्माण के अतिरिक्त 05 नालो की सफाई, 163 सफाई उपकरण एव 01 जे0सी0वी0 लोडर क्रय किया गया। इसके अतिरिक्त प्राप्त अनुदान के अन्तर्गत रु0 11 63 लाख की पथ प्रकाश सामग्री एव जूना अखाडा मे 10 सीटर सार्वजनिक शौचालय का निर्माण भी किया गया।
- चन्द्राचार्य चौक, सिहद्वार चौक एव रोडीबेलवाला मे पजाब नेशनल बैक एव भारतीय स्टेट बैंक द्वारा पोषित तीन डीलक्स शौचालयो का निर्माण किया गया।
- बाढदैवीय आपदा के निधि के अन्तर्गत रु0 5 64 लाख की लागत से ज्वालापुर ईदगाह रोड पर एक पुलिया का निर्माण किया गया।
- हरिद्वार सासद निधि के अन्तर्गत रु0 25 931 लाख की लागत से 12 सडको का निर्माण किया गया।
- हरिद्वार विधायक निधि द्वारा रु0 44 878 लाख की लागत से नगर मे 20 सडको, 02हाईमास्ट 01 ट्यूबवैल व 01 पार्क का सौन्दर्यीकरण किया गया है।
- हरिद्वार विकास प्राधिकरण के सहयोग से विभिन्न सास्कृतिक कार्यक्रमो हेतु भल्ला कॉलेज के निकट एक टॉऊन हॉल का निर्माण कार्य पूर्ण किया गया।
- देवपुरा स्थित पार्क, ललता रॉ पार्क एव भल्ला पार्क का सौन्दर्यीकरण किया गया।

सत्यपाल ब्रह्मचारी
नगर पालिका अध्यक्ष ''हरिद्वार''

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये।। साम0



डॉ० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा सचालित पातञ्जल योगधम आर्य नगर हरिद्वार की प्रमुख गतिविधियॉं

1 वर्ष म दो बार ध्यान याग शिविर

(I) वशाखी स पूर्व 6 अप्रेल स 12 अप्रैल तक।

(II) दशहर स पूर्व एक सप्ताह

2 (I) दैनिक याग यज्ञ व सत्सग

(II) विशेष अवसर पर वद पारायण यज्ञ

3 गामवर्धन एव दुग्ध उत्पादन

4 विरक्त सन्यासी वानप्रस्थी ब्रह्मचारिया एव साधक साधिकाओ हतु भोजन आवास व्यवस्था।

भावी - योजनाये

1 एक वर्षीय याग डिप्लामा कार्स

2 पुराहित प्रशिक्षण शिविर

3 योगिक सगाष्ठी एव सम्भाषण प्रतियागिता।

यौगिक शोध सस्थान द्वारा साहित्य प्रकाशन

1 वदो मे याग विद्या शाध प्रबन्ध

2 योग दर्पण सचित्र अष्टाग योग परिचय

3 यज्ञ योग विद्या

4 योगाचरण एव शिष्टाचार

5 गीत कुसमाञ्जलि

6 दिव्य गीताञ्जलि

7 दिव्य दिनचर्या

8 श्रद्धा सोपान

9 "वेद योगामृत" पत्रिका का मसिक प्रकाशन

10 अध्यात्म प्रकाश

11 अष्टाग योग प्रकाश।

महामत्री दूरभाष - 254038
पातजल योगधम आर्यनगर
ज्वालापुर हरिद्वार
उत्तराचल